महाभारत

का

सौप्तिक व स्त्री पर्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल

॥ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवादसहित ॥

THE MAHABHARAT

SAUPTIKPARV

The Sanskrit text of Maharshi Vyas
with complete English and Hindi translations



जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद ने



"तन्त्रप्रभाकर प्रेस में" छपकर प्रकाशित किया।
Published by
Ram Krishna & Co. of Moradabad

पुस्तक मिलने का पता—
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद।

To be had of the publisher
Ram Krishna & Co.
Moradabad.

सौप्तिक व स्त्रीपर्वका सूचीपत्र — INDEX TO STRI AND SAUPTIK PARV

सौप्तिकपर्व

स्त्रीपर्व

Sauptik Parv

STRI PARV





महाभारत

सौप्तिक पर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतींचैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते सहिता वीरा प्रयाता दक्षिणामुखा । उपास्तमनवेलायां शिबिराऽभ्याशमागता ॥१॥ विमुच्यवाहांस्त्वरिता भीता समभवस्तदा । गहनं देशमासाद्य प्रच्छन्नान्यविशन्त ते ॥ २ ॥ सेनानिवेशमभितो नातिदूरमवस्थिता । निकृत्ता निशितैः शस्त्रैः समन्तात् क्षतविक्षता । दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य पाण्डवानेवचिन्तयन् ॥ ३ ॥ श्रुत्वा च निनदं घोरं पाण्डवानां जयैषिणाम् अनुसारभयाद्भीताः प्राङ्मुखाः प्राद्रवन् पुनः ॥ ४ ॥ ते मुहूर्त्तं ततो गत्वा श्रान्तवाहाः पिपासिताः । नामृष्यन्त महे

अध्याय १ ॥

श्रीनारायण नरोंमें उत्तम नरको और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जय नाम महाभारत इतिहासको वर्णन करताहूं सञ्जयबोलेइसके पीछे वहवीर एकसाथही दक्षिण ओरको चले और सूर्य्यास्तके समय डेरोंके पास आये ।१। तब वहशीघ्रही रथोंको छोड कर भयभीत हुये और घनदेश को पाकर गुप्त निवासी हुये ।२। अपनी सेना के निवासस्थान से कुछ थोड़ेही अन्तरपर नियत हुये तेजशस्त्रोंसे छूटेअंग चारोंओर से घायल उन वीरोंने लम्बी और उष्णस्वासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी । ३ । फिर विजयाभिलाषी पांडवों के घोर शब्दको सुनकरपीछा करनेके भयसे भयभीत होकर पीछेकी ओरको चलदिये । ४ । वह सब एकमुहूर्त्त चलकर तृपार्त्त और थकीसवारी वाले सह न सके वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन

SAUPTIK PARV II.

CHAPTER I.

Having bowed down to Narayan, to the best of males and to, Saraswati, let us speak of the history of the Victory. Sanjaya said: "Then the warriors went together southwards and approached the camp at sunset. They came down from their cars in terror and entered a dense forest a short distance from their camp. With wounded ... sighs, they thought of the Pandavas. Then hearing ... Pandavas, they receded further

श्वासाः क्रोधामर्षवशङ्गताः। राज्ञो वधेन सन्तप्ता मुहूर्त्तं समवस्थिताः॥५॥ धृतराष्ट्र उवाच। अश्रेद्ध्य यमिदं कर्म कृतं भीमेन सञ्जय। यत् स नागायुतप्राणः पुत्रो मम निपातितः॥६॥ अवध्यः सर्वभूतानां वज्रसंहननो युवा। पाण्डवैः समरे पुत्रो निहतो मम सञ्जय॥७॥ न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं गावल्गणे नरैः। यत् समेत्य रणे पार्थैः पुत्रो मम निपातितः॥८॥ अद्रिसारमयं नूनं हृदयं मम सञ्जय। हतं पुत्रशतं श्रुत्वा यन्न दीर्णं सहस्रधा॥९॥ कथं हि वृद्धमिथुनं हतपुत्रं भविष्यति। न ह्यहं पाण्डवेयस्य विषये वस्तुमुत्सहे॥१०॥ कथं राज्ञः पिता भूत्वा स्वयं राजा च सञ्जय। प्रेष्यभूतः प्रवर्त्तेयं पाण्डवेयस्य शासनात्॥११॥ आज्ञाप्य पृथिवीं सर्वां स्थित्वा मूर्द्धनि सञ्जय। कथमद्य भविष्यामि प्रेष्यभूतो दुरन्तकृत्॥१२॥ कथं भीमस्य वाक्यानि श्रोतुं शक्ष्यामि सञ्जय। येन पुत्रशतं पूर्णमेकेन निहतं मम॥१३॥ कृतं सत्यं वच

और राजा के मारेजाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त्ततक नियत हुये। ५। धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेनने यह कर्म्म अश्रद्धाके अयोग्य किया जो दसदश हजार हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा। ६। हे संजय वह मेरापुत्र जो कि सब जीवोंसे अवध्य वज्रके समान दृढ़ शरीरवालाथा युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारागया।७। हे गोल्गणके पुत्र संजय मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है जो मेरा पुत्र पांडवों के सम्मुख होकर मारागया। ८। हे संजय निश्चय करके मेरा हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी विदीर्ण नहीं होता। ९। मृतक पुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहेगा मैं पांडवों के देश में निवास करने को विचार नहीं करताहूं। १०। हे संजय मैं राजाका पिता आप राजा होकर पांडवोंका आज्ञावर्त्ती होकर सेवकके समान कैसे कर्मकरूंगा। ११। हेसंजय पृथ्वी पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियतहोकर कैसे उसकी आज्ञाका पालनकरूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला। १२। हे संजय वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजी के वचनको सत्यकिया हे संजय कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्त्तीहूंगा और किस

for fear of chase. But they could not go very far with their feeble bodies and tired beasts, and had to stop again. The great warriors, enraged, dissatisfied and sorrowful at the fall of their prince, staid there for a while," Dhritarashtra said, "It grieves me to hear that Bhim slew my son who was like a myriad of elephants. 6. He was unslayable by others, with body hard as vajra, yet he was slain by the Pandavas. Fate is surely insurmountable; for my son fell down before the Pandavas. Surely my heart is hard as it does not break on hearing the news of the death of my hundred sons. How can an old pair live without sons! I donot think that I shall live with the Pandavas. Being a king and father of a king, how can I obey the Pandavas! 11. Having ruled over kings and kingdom, I cannot obey him who destroyed my hundred sons. My son has proved the prediction of Vidur

स्तस्य विदुरस्य महात्मनः । अकुर्वता वचस्तेन मम पुत्रेण सञ्जय ॥ १४ ॥ अधर्मेण हते तात पुत्रे दुर्योधने मम । कृतवर्मा कृपो द्रौणिः किमकुर्वत सञ्जय ॥ १५ ॥ सञ्जय उवाच । गत्वा तु तावका राजन्नातिदूरमवस्थिताः । अपश्यन्त वनं घोरं नानाद्रुमलतावृतम् ॥ १६ ॥ ते मुहूर्त्तन्तु विश्रम्य लब्धतोयैर्हयोत्तमैः । सूर्य्यास्तमनवेलायां समासेदुर्महद्वनम् ॥ १७ ॥ नानामृगगणैर्जुष्टं नानापक्षिगणावृतम् । नानाद्रुमलताच्छन्नं नानाव्यालनिषेवितम् ॥ १८ ॥ नानातोयैः समाकीर्णं नानापुष्पोपशोभितम् । पद्मिनीशतसंछन्नं नीलोत्पलसमायुतम् ॥ १९ ॥ प्रविश्य तद्वनं घोरं वीक्षमाणाः समन्ततः । शाखासहस्रसंछन्नं न्यग्रोधं ददृशुस्ततः ॥ २० ॥ उपेत्य तु तदा राजन् न्यग्रोधं ते महारथाः । ददृशुर्द्विपदां श्रेष्ठा श्रेष्ठं तं वै वनस्पतिम् ॥ २१॥ तेऽवतीर्य्य रथेभ्यश्च विप्रमुच्य च वाजिनः । उपस्पृश्य यथान्यायं सन्ध्यामन्वासत प्रभो ॥ २२ ॥ ततोऽस्तं पर्वतश्रेष्ठ

प्रकार से भीमसेनके वचन सुननेको समर्थहूंगा । १४ । हे संजय अधर्म से मेरे पुत्र दुर्योधनके मरनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया । १५ । सञ्जय बोले हे राजा आपके वीर थोड़ीदूर जाकर नियतहुये और नानाप्रकार के वृक्ष लताओंसे संयुक्त घोरवनको देखा ।१६ । उन्होंने जल पीनेवाले उत्तम घोड़ों समेत एक मुहूर्त्त विश्रामकरके सूर्यास्तके समय एक ऐसे वनको पाया । १७ । जो कि नानाप्रकार के मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुत प्रकारके वृक्ष लतादिकोंसे भराहुआ बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित ।१८ । नानाप्रकार के जलों से युक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कमलिनियों से पूर्ण और नीले कमलों से संयुक्तथा । १९ । इसकेपीछे चारोंओरको देखते उन वीरोंने उस तव वनमें प्रवेश करके हजारों शाखाओं से युक्त वटके वृक्षको देखा ।२० । हे राजा घोर उन नरोत्तम महारथियों ने वटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाके अपनेर रथों से उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके बहसब अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्तहुये । २२ । इस के पीछे पर्वतों में उत्तम

by his waywardness. How can I obey that great destroyer? How shall I be able to hear Bhim's voice? What did Kritvarma Kripacharya and Ashwathama do, when my son was unjustly slain!" 15 Sanjaya said, " Your warriors stood at a short distance and saw the forest of large trees and creepers. They watered their horses and having rested themselves for a while, they found the evening come upon them in a part of the forest abounding in deer, birds, trees, creepers, serpents, water, flowers and lotus lakes. Wandering in various directions they came under a large banyan tree. 20. They came down from their cars and left their horses. They made ablutions and performed evening service. In the meantime the sun disappeared and the night, nourisher of all beings, prevailed. It was a starli

मनुप्राप्ते दिवाकरे। सर्वस्य जगतो धात्री शर्वरी समपद्यत ॥ २३॥ ग्रहनक्षत्रताराभि प्रकीर्णाभिरलंकृतम् । नभोंऽशुकमिवाभाति प्रेक्षनीयं समन्ततः ॥ २४ ॥ इच्छया ते प्रव दन्ति ये सत्त्वा रात्रिचारिणः । दिवाचराश्च ये सत्त्वास्ते निद्रावशमागताः ॥ २५ ॥ रात्रिञ्चराणां सत्त्वानां निर्घोषोऽभूत् सुदारुणः । क्रव्यादाश्च प्रमुदिता घोरा प्राप्ता च शर्वरी ॥ २६ ॥ तस्मिन्रात्रिमुखे घोरे दुःखशोकसमन्विताः । कृतवर्मा कृपो द्रौणिश्चो पविविशुः समम् ॥ २७ ॥ तत्रोपविष्टाः शोचन्तो न्यग्रोधस्य समीपतः । तमेवार्थमति क्रान्तं कुरुपाण्डवयोः क्षयम् ॥ २८ ॥ निद्रया च परीताङ्गा निषेदुर्धरणीतले । श्रमेण सुदृढं युक्ता विक्षता विविधैः शरैः ॥ २९ ॥ ततो निद्रावशं प्राप्तौ कृपभोजौ महारथौ । सुखोचितावदुःखार्हौ निषण्णौ धरणीतले ॥ ३० ॥ तौ तु सुप्तौ महाराज श्रमशोकसम न्वितौ । महार्हशयनोपेतौ भूमावेव ह्यनाथवत् ॥ ३१॥ क्रोधामर्षवशं प्राप्तो द्रोणपुत्रस्तु भारत । नैव स्म स जगामाथ निद्रां सर्प इव श्वसन् ॥ ३२ ॥ न लेभे स तु निद्रां वै

अस्ताचल में सूर्य्य के पहुचने पर सब जगत की धात्री रात्रि वर्त्तमान हुई पूर्ण ग्रह नक्षत्र और ताराओं अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्ण विन्दुओं से जटित वस्त्रके समान शोभायमान हुआ । २४ । जो रात्रि में घूमनेवाले जीवहैं वहसब नींद के स्वाधीन वर्त्तमान हुये फिर रात्रि में घूमनेवाले जीवों के शब्द भयानकहुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्त्तमानहुई । २६ । रात्रिके उसघोर मुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा बराबर समीप बैठे उस वटके सम्मुख कौरव और पाण्डवों के होनेवाले नाश को शोचते । २८ नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठ गये । २९ । इसकेपीछे दुःखके अयोग्य और सुखके योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूतहुये ।३०। हे महाराज थकावट और शोकसंयुक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वह दोनों अनाथोंके समान पृथ्वीपर सोगये । ३१ । हे भरतवंशी क्रोध और अशान्ती में वर्त्तमान और सर्पोंके समान श्वासलेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहींपाया ३२ शोकसे ज्वलितरूप उस वीरने निद्राको नहींपाया तबउस महाबाहुने उस घोरदर्शन

night and the sky looked as if spangled with gold dots. Sleep prevailed over creatures and the night rovers made a hideous noise. Carnivorous rakshases were glad at the prospect of that dreadful dark night. 26. Merged in grief and sorrow, Kritvarma Kripacharya and Ashwathama sat together. Thinking of the great destruction of the Kauravas and Pandavas tired and sleepy, they sat wounded with arrows. Kritvarma and Kripacharya, unaccustomed to bear such hardships, lay on the ground 30 Full of grief and tired, the two great warriors accustomed to sleep on precious beds, slept on bare earth like helpless ones. Enraged and dissatisfied, sighing like serpents,

दह्यमानो हि मन्युना । वीक्षमाणस्तु महाबाहुस्तद्वनं घोरदर्शनम् ॥ ३३ ॥ वीक्षमाणो वनोद्देशं नानासत्त्वैर्निषेवितम् । अपश्यत महाबाहुर्न्यग्रोधं वायसैर्वृतम् ॥ ३४ ॥ तत्र काकसहस्राणि तां निशां पर्यणामयन् । सुखं स्वपन्ति कौरव्य पृथक् पृथगुपाश्रयाः ॥ ३५ ॥ सुप्तेषु तेषु काकेषु विस्रब्धेषु समन्ततः । सोऽपश्यत् सहसायान्तमुलूकं घोरदर्शनम् ॥ ३६ ॥ महास्वनं महाकायं हर्यक्षं बभ्रुपिङ्गलम् । सुदीर्घघोणानखरं सुपर्णमिव वेगितम् ॥ ३७ ॥ सोऽथ शब्दं मृदुं कृत्वा लीयमान इवाण्डजः । न्यग्रोधस्य ततः शाखां प्रार्थयामास भारत ॥ ३८ ॥ संनिपत्य तु शाखायां न्यग्रोधस्य विहङ्गमः । सुप्तान् जघान सुबहून् वायसान् वायसान्तकः ॥ ३९ ॥ केषांचिदच्छिनत् पक्षान् शिरांसि च चकर्त ह । चरणांश्चैव केषांचिद्बभञ्ज चरणायुधः । क्षणेनाहन्स बलवान् येऽस्य दृष्टिपथे स्थिताः ॥ ४० ॥ तेषां शरीरावयवैः शरीरैश्च विशाम्पते । न्यग्रोधमण्डलं सर्वं

वनकोदेखा । ३३ । कि नानाप्रकार के जीवों से सेवित वनके कोणको देखते महाबाहुने बटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा । ३४ । हे कौरव उस वृक्षपर हजारों काकोंने रात्रिमें निवास किया और भयकर निवासी होकर सुख से निद्रा युक्त हुये । ३५ । चारोंओरसे उन विश्रब्ध काकोंके सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी ने अकस्मात् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा । ३६ । जो कि बड़ाशब्द बड़ा शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़ के समान तीव्रगामी था । ३७ । हे भरतवंशी उस गुप्त आनेवाले के समान पक्षी ने मृदुशब्द करके बटकी शाखाको चाहा । ३८ । काकोंके कालरूप उसपक्षीने बट वृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा । ३९ । चरणरूपी शस्त्रधारीने कितनोंही के पक्षसमेत शिरोंकोकाटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा उस बलवानने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा । ४० । हे राजा उनके शरीरों के अंग और शरीरों से बटके वृक्षका मंडल सब ओरसे ढकगया । ४१ । इसके पीछे वह उलूक वनकाकोंको मारकर प्रसन्नहुआ वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्नहुआ । ४२ ।

Ashwathama could find no sleep. That brave warrior did not sleep for grief and looked on at the dreadful forest. Looking at the various creatures of the forest, he saw a great number of crows on the banyan tree sleeping soundly and composedly in their nests. 35. While the crows were thus sleeping, Ashwathama saw an ill-omened owl creeping towards them. With ominous sound, large, yellow body, yellow eyes, long claws and hooked beak, it flew fast like a garur. It flew softly and stealthily to a branch of the banyan tree and killed many crows. Having claws for weapons, it cut off the heads and wings of some and feet of others. It destroyed many of the crows in a moment. 40. The parts of their bodies covered the circular ground beneath

सञ्छन्नं समन्ततः ॥ ४१ ॥ तांस्तु हत्वा ततः काकान् कौशिको मुदितोऽभवत् । प्रतिकृत्य यथाकामं शत्रूणां शत्रुसूदनः ॥ ४२ ॥ तद्दृष्ट्वा सोपधं कर्म कौशिकेन कृतं निशि । तद्भावकृतसंकल्पो द्रौणिरेकोऽन्वचिन्तयत् ॥ ४३ ॥ उपदेशः कृतोऽनेन पक्षिणा मम संयुगे । शत्रूणां क्षपणे युक्तः प्राप्तकालश्च मे मतः ॥ ४४ ॥ नाद्य शक्या मया हन्तुं पाण्डवा जितकाशिनः । बलवन्तः कृतोत्साहा लब्धलक्ष्याः प्रहारिणः ॥ ४५ ॥ राज्ञः सकाशे तेषां तु प्रतिज्ञातो वधो मया । पतंगाग्निसमां वृत्तिमास्थायात्मविनाशिनीम् ॥ ४६ ॥ न्यायतो युध्यमानस्य प्राणत्यागो न संशयः । छद्मना तु भवेत्सिद्धिः शत्रूणां च क्षयो महान् ॥ ४७ ॥ तत्र संशयितादर्थाद्योऽर्थो निःसंशयो भवेत् । तं जना बहु मन्यन्ते ये च शास्त्रविशारदाः ॥ ४८ ॥ यच्चाप्यत्र भवेद्वाच्यं गर्हितं लोकनिन्दितम् । कर्तव्यं तन्मनुष्येण क्षत्रधर्मेण वर्तता ॥ ४९ ॥ निन्दितानि च

रात्रिमें उलूकके कियेहुये उस छलयुक्त कर्मको देखकर उस छलमें संकल्पकरनेवाले अकेले अश्वत्थामाजीने विचारकिया । ४३ । कि इस पक्षीने युद्धमें मुझको उपदेश कियाहै मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमानहुआ । ४४ । अब विजयसे शोभापानेवाले पराक्रमी कृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले और प्रहारकरनेवाले पाण्डव मेरे हाथ से मारने के योग्य नहीं हैं । ४५ । और मैंने राजाके सम्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञाकरीहै पतंग और अग्निकेसमान अपने नाशकरनेवाली वृत्ति में प्रवृत्तहोकर मुझ न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्यागहोगा और छलकरके बड़ी सिद्धिसमेत शत्रुओं का बड़ानाशहोगा । ४७ । इसहेतुसेजो संशयात्मक अर्थके निस्संशयात्मक अर्थहोना योग्यहै जो विद्यावान् मनुष्यहैं वह इसको बहुत मानते हैं । ४८ । ऐसे स्थानपर जो वचनचाहे गर्हित और लोकनिन्दितभी होवें वह क्षत्रिय धर्ममें प्रवृत्तहोनेवाले मनुष्यको अवश्यकरना योग्यहै ४९। अशुद्ध अन्तःकरणवाले पांडवोंने ऐसे छलसे भरेहुये कर्मकिये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दित हैं इस विषय में पूर्व समयमें न्यायके देखनेवाले धर्मका विचारकरनेवाले मुख्यताके ज्ञाता लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन करनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं । ५१ । शत्रुओं के थकजाने पृथक् होने और भोजनकरने चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको मारना चाहिये । ५२ । जो सेना आधीरात्रिकी निद्राकेसमय निद्रासे पीड़ित और

the tree. The owl was much pleased at the destruction of its enemies, the crows. Seeing the deceitful work of the owl at night, Ashwathama thought within himself " The bird has taught me. I think the death of the enemies is not far off. The victorious Pandavas cannot be slain by open warfare and I have made a vow to the king to slay them. My case will surely be like that of an insect falling in fire, if I fight honestly with them. I can destroy them in great numbers by deceit and wise men will not find fault with me. I must act upon pernicious proverbs The deceitful Pandavas have performed various wicked deeds and we hear many verses to the effect that we should slay enemies and their warriors when they are tired, dispersed, engaged in eating

सर्वाणि कुत्सितानि पदे । सोपचारानि कृतान्येव पाण्डवैरकृतात्मभिः ॥ ५० अस्मिन्नर्थे पुरा गीता श्रूयन्ते धर्मचिन्तकैः । श्लोका न्यायमवेक्षद्भिस्तत्त्वार्थास्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ५१ ॥ परिश्रान्ते विदीर्णे वा भुञ्जाने वापि शत्रुभिः । प्रस्थाने वा प्रवेशे वा प्रहर्तव्यं रिपोर्बलम् ॥ ५२ ॥ निद्रार्त्तमर्द्धरात्रे च तथा नष्टप्रणायकम् । भिन्नयोधं बलं यच्च द्विधा युक्तञ्च यद्भवेत् ॥ ५३ ॥ इत्येव निश्चयं चक्रे सुप्तानां निशि मारणे । पाण्डूनां सह पाञ्चालैर्द्रोणपुत्रः प्रतापवान् ॥ ५४ ॥ स क्रूरां मतिमास्थाय विनिश्चित्य मुहुर्मुहुः । सुप्तौ प्राबोधयत्तौ तु मातुलं भोजमेव च ॥ ५५ ॥ तौ प्रबुद्धौ महात्मानौ कृपभोजौ महाबलौ । नोत्तरं प्रतिपद्येतां तत्र युक्तं ह्रिया वृतौ ॥ ५६ ॥ स मुहूर्तमिव ध्यात्वा बाष्पविह्वलमब्रवीत् । हतो दुर्योधनो राजा एकवीरो महाबलः । यस्यार्थे वैरमस्माभिरासक्तं पाण्डवैः सह ॥ ५७ ॥ एकाकी बहुभिः क्षुद्रैराहवे शुद्धविक्रमः । पातितो भीमसेनेन एकादशचमूपतिः ॥ ५८ ॥ वृकोदरेण क्षुद्रेण सुनृशंसमिदं कृतम् । मूर्धाभिषिक्तस्य शिरः पादेन परिमृद्नता ॥ ५९ ॥ विनर्दन्ति च पाञ्चालाः क्ष्वेडन्ति च हसन्ति

नाश युक्त प्रधान पृथक् २ शूरोंवाली और दोभाग होनेवाली होय । ५३ । उसपर प्रहार करना चाहिये प्रतापवान अश्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके समय सोतेहुये पांडवों के मारने का निश्चय किया । ५४ । उसने निर्दयी बुद्धि में नियतहोकर बारम्बार निश्चयकरके अपने मामा और और भोजवंशी कृतवर्म्मा इन दोनों सोनेवालोंको जगाया । ५५ । तब उनजगनेवाले महात्मामहाबली लज्जायुक्त कृपाचार्य और कृतवर्म्माने एकमुहूर्त्तभर ध्यानकरके आंशुओंसे व्याकुल नेत्रहोकर यह वचनकहा कि बहबड़ा बलवान एकवीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ हुई । ५७ । युद्धमें बहुत नीचों समेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रम वाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके हाथ मारागया । ५८ । महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दनकिया यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दय कर्म्मकिया । ५९ । पांचाल देशी गर्जते हैं क्रीड़ा करते हैं हँसते हैं सैकड़ो शङ्खों को बजातेहैं और प्रसन्नचित्त दुन्दभियों को भी

and walking or otherwise at a disadvantage. One may attack an enemy at midnight or when they are divided. "Thus glorious Ashwathama thought of slaying the Pandavas and with this view awakened his uncle and Kritvarma. 55. The two heroes on awakening shed tears and said after meditation:— " Brave Duryodhan for whom we made the Pandavas our enemy, is slain. The lord of eleven akshauhinis has fallen in fighting with Bhim. He did a wicked deed in touching the king's head with his foot. The Panchals are exulting, laughing and sounding their conchs and drums. The sounds of their muisical instruments fill the air. We hear the neighing of their horses, the grunt of their elephants and the leonine roars of

ताभ्यांसर्वेहिकार्यार्था मनुष्याणांनरर्षभ। विचेष्टन्तश्चदृश्यन्ते निवृत्तास्तु तथैव च॥९॥कृतः पुरुषकारश्च सोपि दैवेन सिध्यति। तथास्य कर्मणः कर्तुरभिनिर्वर्तते फलम्॥१०॥उत्थानन्तु मनुष्याणां दक्षाणां दैववर्जितम्। अफलं दृश्यते लोके सम्यगप्युपपादितम्॥११॥ तत्रालसा मनुष्याणां ये भवन्त्यमनस्विनः। उत्थानन्ते विगर्हन्ति प्राज्ञानान्तन्न रोचते ॥१२॥ प्रायशो हि कृतं कर्म नाफलं दृश्यते भुवि। अकृत्वा च पुनर्दुःखं कर्म दृश्येन्महाफलम्॥१३॥ चेष्टामकुर्वंल्लभते यदि किञ्चिद्यदृच्छया। यो वा न लभते कृत्वा दुर्दशौ तावुभावपि॥१४॥ शक्नोति जीवितुं दक्षो नालसः सुखमेधते। दृश्यन्ते जीवलोकेस्मिन् दक्षाः प्रायो हितैषिणः॥१५॥ यदि दक्षः समारम्भात् कर्मणो नाश्नुते फलम्। नास्य वाच्यं भवेत् किञ्चिल्लब्धव्यं वाधिगच्छति॥१६॥ अकृत्वा कर्म यो लोके फलं विन्दति विष्ठितः। स तु वक्तव्यतां याति द्वेष्यो भवति प्रायशः॥१७॥ एवमेतदनादृत्य

देखनेमें आते हैं। ९। जो उपाय कियाहै वहभी दैवसे ही सिद्ध होताहै इसीप्रकार इन कर्मवालोंका कर्म्म सफल होताहै। १०। सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छे प्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसे रहितहै वह लोकमें निष्फल दिखाई देता है। ११। मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होतेहैं वह उद्योगको बुराकहते हैं उसको बुद्धिमानलोग अच्छा नहीं मानतेहैं। १२। बहुधा कियाहुआ कर्म्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देताहै फिर दुखदाताहै और कर्मको न करके बड़े फलको देखताहै। १३। कर्मको न करके दैवयोगसे जो कुछ पाताहै और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाताहै वह दोनों दुर्लभहैं। १४। सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होताहै और आलस्य युक्त मनुष्य सुखसे वृद्धि नहीं पाताहै इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधान लोग बहुधा वृद्धिके चाहनेवाले दिखाई देतेहैं। १५। जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारब्ध कर्म से कर्म फलको नहीं भोगताहै उसकी कुछ निन्दा नहीं होतीहै जो प्राप्तहोनेके योग्य अभीष्ट को नहीं पाता है। १६। और जो कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह निन्दित होताहै और बहुधा शत्रु होता है। १७। जो मनुष्य इस प्रकार से इसको

The works of men are accomplished by both. Enterprises become successful by the help of providence. 10. The work of wise men when well performed can bear no fruit without God's blessing. The lazy and unenterprising speak ill of work and are therefore depised by the wise. A work done often bears no fruit and the mind is thereby afflicted. The fruit of work, by providence alone or by prowess alone is difficult to attain A careful and earnest worker is able to live, while a lazy person finds life a difficulty. 15 He who does not get the fruit of actions by Fate, is not to be blamed, but he who gets the fruit without work, creates enemies. He who works contrary to this principle creates difficult es this is the opinion of wise men. A work becomes fruit

र्ते यस्यलोऽन्यथा । स करोत्यात्मनोऽनर्थानेष बुद्धिमतां नयः ॥ १८ ॥ हीनं पुरुष कारेण यदि दैवेन वा पुनः । कारणाभ्यामथैताभ्यामुत्थानमफलं भवेत् । १९ । हीनं पुरुषकारेण कर्म त्विह न सिध्यति । दैवतेभ्यो नमस्कृत्य यस्त्वर्थान् सम्यगीहते । दक्षो दाक्षिण्यसम्पन्नो न स मोघं विहन्यते ॥ २० ॥ सम्यगीहा पुनरियं यो वृद्धानुपसेवते । आपृच्छति च यः श्रेयः करोति च हितं वचः । २१ ॥ उत्थायोत्थाय हि सदा प्रष्टव्या वृद्धसम्मताः । ते स्म योगे परं मूलं तन्मूला सिद्धिरुच्यते ॥ २२ ॥ वृद्धानां वचनं श्रुत्वा योऽभ्युत्थानं प्रयोजयेत् । उत्थानस्य फलं सम्यक् तदा स लभतेऽचिरात् । २३ ॥ रागात् क्रोधाद्भयाल्लोभात् योऽर्थानीहेत मानवः । अनीशश्चावमानी च स शीघ्रं भ्रश्यते श्रियः ॥ २४ ॥ सोऽयं दुर्योधनेनार्थो लुब्धेनादीर्घदर्शिना असम०त्र्य समारब्धो मूढ त्वादविचिन्तितः ॥ २५ ॥ हितबुद्धीननादृत्य संमन्त्र्यासाधुभिः सह । वार्यमाणोऽक

निरादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करताहै यह बुद्धिमानों की नीति है । १८ । फिर जब उद्योग अथवा दैवसे रहितहो तबइन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फलहोता है । १९ । इसलोक में उपायसे रहित किया हुआ कर्म्म सिद्ध नहीं होताहै जो मनुष्य देवताओंको नमस्कार करके अच्छीरीति से प्रयोजनों को चाहता है वह आलस्यसे रहित और सावधानी से संयुक्तहै कर्म की निष्फलता से नाशको नहीं पाताहै । २० । फिर अच्छेकर्मकी इच्छा यहहैजो वृद्धोंका सेवनकरता है जो अपने कल्याणको पूछताहै और उनके हितकारी वचनों को करताहै सदैव उठर कर वृद्धों के अङ्गीकृत पुरुष पूछने के योग्य हैं वहपुरुष अभीष्ट सिद्धकरने में बड़े तेजहैं और मूलरखनेवाली सिद्धी कहेजातेहैं।२२। जो मनुष्य वृद्धों के वचनों को सुनकर उपाय में प्रवृत्तहोता है वह थोड़ेही समय में उपायके फलको अच्छीरीति से पाता है जो मनुष्य रागक्रोध भय और लोभ से अभीष्टों को चाहता है वह अजितेन्द्रिय और अपमान करने वाला शीघ्रही लक्ष्मीसे रहितहोकर नाशहोताहै ।२४। सो इसलोभी और अदूरदर्शी दुर्यो धनने अज्ञानतासे यह विना विचाराहुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेध करनेवाले शुभचिन्तकों को अनादर करके नीचोंकी सलाह से बड़े गुणवान

less without the help of providence or prowess. One cannot accomplish work without earnestness and the blessing of heaven. 20 One doing work successfully, should ask the opinion of old men. The advice of old men lays a safe foundation for work. One doing a work with the advice of old men, accomplishes it with but little trouble. He who, being avaricious and resentful, wishes to accomplish his work, soon becomes despised and loses wealth. The avaricious and careless Duryodhan began his work foolishly and gave no heed to the advice of old men. He made the Pandavas his enemies. An ill-natured man cannot be patient and gets into trouble by the ill success of

च । धमन्ति शङ्खान् शतशो हृष्टा घ्नन्ति च दुन्दुभीन् ॥ ६०॥ वादित्रघोषस्तुमुलो विमिश्रः शङ्खनिस्वनैः । अनिलेनेरितो घोरो दिशः पूरयतीव ह ॥ ६१ ॥ नदतां हेषमाणानां गजानाञ्चैव बृंहताम् । सिंहनादश्च शूराणां श्रूयते सुमहानयम् ॥६२॥ दिशं प्राचीं समाश्रित्य हृष्टानां गच्छतां भृशम् । रथनेमिस्वनाश्चैव श्रूयन्ते लोमहर्षणाः ॥६३॥ पाण्डवै र्धार्तराष्ट्राणां यदिदं कदनं कृतम् । वयमेव त्रयः शिष्टा अस्मिन्महति वैशसे ॥ ६४ ॥ केचिन्नागशतप्राणाः केचित् सर्वास्त्रकोविदाः । निहताः पाण्डवेयैस्ते मन्ये कालस्य पर्ययम् ॥ ६५ ॥ एवमेतेन भाव्यं हि नूनं कार्येण तत्त्वतः । यथा ह्यस्येदृशी निष्ठा कृते कार्येऽपि दुष्करे ॥ ६६ ॥ भवतोस्तु यदि प्रज्ञा न मोहाद्‌ व्यपनीयते । व्यापन्नेऽस्मिन्महत्यर्थे यन्नः श्रेयस्तदुच्यताम् ॥ ६७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणायां प्रथमोऽध्यायः १ ॥

बजाते हैं । ६० । शङ्खोंके शब्दोंसेयुक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द दिशाओंको पूर्णकरते हैं । ६१ । हींसते घोड़े और चिंघाड़ते हाथियोंके बड़ेशब्द और शूरवीरोंकेभी यह सिंहनाद सुनेजातेहैं ।६२। पूर्वदिशामें नियत होकरअत्यन्त प्रसन्नचित्त आनेवालों के रथ नेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं । ६३ । पांडव लोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाशकिया है इसबड़ेभारी नाशमें हम तीनशेष हैं । ६४ । कितनेही सौ हाथीके समान पराक्रमी और कितनेही सवशस्त्र विद्याओं में कुशल थे वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये मैं समयकी विपरीतता को मानताहूं । ६५ । निश्चय करके इस प्रकारके इनमेंही कर्म मूलसमेत विचार करनेके योग्यहैं जैसे कि कठिन कर्मके करनेपर भी ऐसीदशा है । ६६ । आपकी बुद्धि यदि मोहसे दूर नहो तो इसबड़े प्रयोजनके वर्त्तमान होनेपर जो हमारा हितकारी और भलाहै उसको कहो ६७ ।

---

their warriors. 62. We hear the rumbling of their car wheels. The Pandavas have destroyed all our warriors except us three. Some of them had the strenght of a hundred elephants and clever in fighting. The times are changed no doubt. - 65. Surely we must give our thought to all these things; for we are reduced to this condition in spite of our great efforts. Let us know please, what is best to be done under the circumstances, if your intellect be *not* confounded with distress." 67.

कृप उवाच । श्रुतन्ते वचनं सर्वं यद्यदुक्तं त्वयाविभो । ममापि तु वचः किञ्चिच्छृणुष्वाद्य महाभुज ॥ १ ॥ आबद्धामानवाः सर्वे निबद्धाः कर्मणोर्द्वयोः । दैवे पुरुषकारेच परं ताभ्यां न विद्यते ॥ २ ॥ न हि दैवेन सिध्यन्ति कार्याण्येकेन सत्तम । न चापि कर्मणैकेन द्वाभ्यां सिद्धिस्तु योगतः ॥ ३ ॥ ताभ्यामुभाभ्यां सर्वार्था निबद्धा ह्यधमोत्तमाः । प्रवृत्ताश्चैव दृश्यन्ते निवृत्ताश्चैव सर्वशः ॥ ४ ॥ पर्जन्यः पर्वते वर्षन् किन्नु साधयते फलम् । कृष्टे क्षेत्रे तथा वर्षन् किं न साधयते फलम् ॥ ५ ॥ उत्थानञ्चाप्यदैवस्य ह्यनुत्थानस्य दैवतम् । व्यर्थं भवति सर्वत्र पूर्वकस्तत्र निश्चयः ॥ ६ ॥ सुवृष्टे तु यथा दैवे सम्यक् क्षेत्रञ्च कर्षित । बीजं महागुणं भूयात्तथा सिद्धिर्हि मानुषी ॥ ७ ॥ तयोर्दैव विनिश्चित्य स्वयंनैव प्रवर्त्तते । प्राज्ञाः पुरुषकारेतु वर्त्तन्ते दाक्ष्यमाश्रिता ॥ ८ ॥

अध्याय २ ॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमनेकहा वह तुम्हारा सबवचन सुना हे महाबाहु अब मेरे कुछ वचनकोभी सुन । १ । कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके कर्मों में सब बँधेहुये हैं इनदोबातों से कुछ अधिक वर्त्तमान नहीं है । २ । हे श्रेष्ठ अकेले दैव सेही संसारके कार्य्य पूरेनहीं होतेहैं और न केवल उद्योगही से सिद्ध होते हैं इसदशामें दोनों के मिलनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होतीहै । ३ । सबछोटे बड़े प्रयोजनइन्हीं दोनों बातोंसे बँधेहुयेहैं और सब कार्य्यजारी होकर पूर्णहोते दिखाई पड़ते हैं । ४ । पर्व्वतपर वर्षा करनेवाला पर्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता है उसीप्रकार जोतेहुये खेतमें भी किसफलको प्राप्त नहीं करताहै । ५ । प्रारब्ध को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होताहै इन दोनोंको सर्वत्र निश्चयकरते हैं । ६ । जैसे कि अच्छेप्रकार दैवकेवर्षने और खेतके जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होताहै उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्धकरना है । ७ । इनदोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही विना उपायके फलदेनेको प्रवृत्तहोताहै इसीप्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चयकरके उपाय में प्रवृत्तहोते हैं । ८ । हे नरोत्तम मनुष्योंके सबकर्म उन दोनोंमेंही जारी और पूरेहोते

CHAPTER II

Kripacharya said, " I have heard all that you said; now hear me: all men are bound by Fate and prowess; and by nothing more. All works are neither performed by *Fate* alone nor by prowess; both must be united to accomplish deeds. All small and large works depend upon those two things and we see their continuation and end. The rain falls on mountains and fields and gives fruits at both places. 5. Fate and prowess are fruitless without each other; this is an admitted fact. Human enterprises depend upon fate as the hopes of a cultivator do on rain. Fate, however, is more powerful as it can give fruit without toil. Wise men engage in doing things after deep thought.

द्वैरं पाण्डवैर्गुणवत्तरैः ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्यं कर्त्तुमर्हति । तपत्यर्थे विपन्ने हि मित्राणां न कृतं वचः ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तामहे यत्तु वयं तं पापपूरुषम् । अस्मानाप्यनयस्तस्मात्प्राप्तोयं दारुणो महान् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता । बुद्धिश्चिन्तयतः किञ्चित् स्वं श्रेयो नावबुध्यते॥२९॥ मुह्यता तु मनुष्येण प्रष्टव्याः सुहृदो जनाः । तत्रास्य बुद्धिर्विनयस्तत्र श्रेयश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूलं कार्य्याणां बुद्ध्या निश्चित्य वै बुधाः । तेत्र पृष्टा यथा ब्रूयुस्तत्कर्त्तव्यं तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते वयं धृतराष्ट्रञ्च गान्धारीञ्च समेत्य ह । उपपृच्छामहे गत्वा विदुरञ्च महामतिम् ॥ ३२ ॥ ते पृष्टास्तु वदेयुर्यत् श्रेयो नः समनन्तरम् । तदस्माभि पुनः कार्य्यमिति मे नैष्ठिकी मतिः अनारम्भात्तु कार्य्याणां नार्थः सम्पद्यते क्वचित् ॥ ३३॥ कृते पुरुषकारे च येषां कार्य्यं न सिध्यति । दैवेनोपहतास्ते तु नात्र कार्य्यं विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि कृपसंवादे द्वितीयोध्यायः॥२॥

पांडवों से शत्रुताकरी । २६ । बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्य्यकरनेके योग्य नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका वचन नहीं किया । २७ । हमलोग उसपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी यह भयकारी अनीतिप्राप्तहुई ।२८। अबतक इसदुःखसे तपायेहुये मुझचिन्ता करने वालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है । २९ । और अचेत मनुष्य से सुहृज्जनपूछनेके योग्यहैं उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखता है ।३० । इसस्थानपर पूंछहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्य्योंके मूलोंको बुद्धिसे निश्चयकरके जैसे कहैं वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा । ३१ । हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछैं वह हमारे पूछने पर जो कहैं वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । वहीहमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के प्रारम्भ किये विना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होताहै । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्यपूरा नहीं होताहै वह निस्सन्देह दैवके मारेहुये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. We have fallen in this distress by following that sinful man. I donot know yet how to secure our safety. An unwise man's good, and safety lies in seeking the advice of his friends. 30. He should act upon the advice of wise men. We should seek the advice of Dhritrashtra and Gandhari. We should go to wise Vidur also. These persons will show us the way how to proceed. Our safety lies in doing this and I am resolved to do so. Nothing is gained without pains and surely they who fail are afflicted by Fate " 34.

सञ्जय उवाच । कृपस्य वचनं श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम् । अश्वत्थामा महाराज दुःखशोकसमन्वितः ॥ १ ॥ दह्यमानस्तु शोकेन प्रदीप्तेनाग्निना यथा । क्रूरं मनस्ततः कृत्वा तावुभौ प्रत्यभाषत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धिर्या या भवति शोभना । तुष्यन्ति च पृथक् सर्वे प्रज्ञया ते स्वया स्वया ॥ ३ ॥ सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम् । सर्वस्यात्मा बहुमतः सर्वात्मानं प्रशंसति ॥ ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा साधुवादे प्रतिष्ठिता । परबुद्धिं च निन्दन्ति स्वां प्रशंसन्ति चासकृत् ॥ ५ ॥ कारणान्तरयोगेन योगे येषां समा मतिः । अन्योन्येन च तुष्यन्ति बहु मन्यन्ति चासकृत् । ६ ॥ तस्यैव तु मनुष्यस्य सा सा बुद्धिस्तदा तदा । कालयोगे विपर्यासं प्राप्यान्योन्यं विपद्यते ॥ ७ ॥ विचित्रत्वात् चित्तानां मनुष्याणां विशेषतः । चित्तवैक्लव्यमासाद्य सा सा बुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्य कुशलो ज्ञात्वा व्याधिं यथाविधि । भेषजं कुरुते योगात्

अध्याय ३ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज तब अश्वत्थामाभी कृपाचार्य के उस वचनको जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकमें संयुक्त । १ । ज्वलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन दोनोंसे बोले । २ । कि पुरुष पुरुषमें जो२ बुद्धि होतीहै वही श्रेष्ठहै वहसब पृथक् पृथक् अपनी २ बुद्धिमे प्रसन्न रहते हैं । ३ । और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं । ४ । सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियतहै दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी बारम्बार प्रशंसा करते हैं ।५ । सभा में अन्य २ कारणों के वर्त्तमान होने से जिनलोगोंकी बुद्धि एकसी है वह परस्पर प्रसन्नहोते हैं और बारम्बार अपने को बहुत मानते हैं । ६ । उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पातीहै वे परस्पर विनाशको पाते हैं । ७ । मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह बुद्धि उत्पन्न होती है । ८ । हे प्रभु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोगकी निवृत्ती के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, " Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief, said to the two warriors "Every man thinks himself wise and bears an opinion different from others. All men do what pleases them and praise their own wisdom. They praise themselves and blame others. 5. Those who are of the same opinion in an assembly, live happily; but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion rises out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine Men try to accomplish their work by their own wisdom and

द्वैरं पाण्डवैर्गुणवत्तरैः ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्य्यं कर्तुमर्हति । तपत्यर्थे विपन्नेहि मित्राणां न कृतं वचः ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तामहे यत्तु पयं तं पापपूरुषम् । अस्मानाप्य नयस्तस्मात्प्राप्तोयं दारुणो महान् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता । बुद्धिश्चिन्तयतः किञ्चित् स्वं श्रेयो नावबुध्यते॥२९॥ मुह्यता तु मनुष्येण प्रष्टव्याः सुहृदो जनाः । तत्रास्य बुद्धिर्विनयस्तत्र श्रेयश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूलं कार्य्याणां बुध्या निश्चित्य वै बुधाः । तेत्र पृष्टा यथा ब्रूयुस्तत्कर्त्तव्यं तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते वयं धृतराष्ट्रञ्च गान्धारीञ्च समेत्यह । उपपृच्छामहे गत्वा विदुरञ्च महामतिम् ॥ ३२ ॥ ते पृष्टास्तु वदेयुर्यत् श्रेयो नः समनन्तरम् । तदस्माभि पुनः कार्य्यमिति मे नैष्ठिकी मतिः अनारम्भात्तु कार्य्याणां नार्थः सम्पद्यते क्वचित् ॥ ३३॥ कृते पुरुषकारे च येषां कार्य्यं न सिध्यति । दैवेनोपहतास्ते तु नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि कृपसंवादे द्वितीयोध्यायः॥२॥

पांडवों से शत्रुताकरी । २६ । बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्यकरनेके योग्य नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका वचन नहीं किया । २७ । हमलोग उसपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी यह भयकारी अनीतिप्राप्तहुई ।२८। अबतक इसदुःखसे तपायेहुये मुझचिन्ता करने वालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है । २९ । और अचेत मनुष्य से सुहृज्जन पूछनेके योग्यहैं उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखता है ।३० । इसस्थानपर पूछेहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्य्योंके मूलोंको बुद्धिसे निश्चयकरके जैसे कहैं वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा । ३१ । हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें वह हमारे पूछने पर जो कहैं वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । वहहमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के प्रारम्भ किये विना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होताहै । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्यपूरा नहीं होताहै वह निस्सन्देह दैवके मारेहुये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. . We have fallen in this distress by following that sinful man. I donot know yet kow to secure our safety. An unwise man's good, and safety lies in seeking the advice of his friends. 30. He should act upon the advice of wise men. We should seek the advice of Dhritrashtra and Gandhari. We should go to wise Vidur also. These persons will show us the way how to proceed. . Our safety lies in doing this and I am resolved to do so. Nothing is gained without pains and surely they who fail are afflicted by Fate " 34

सञ्जय उवाच। कृपस्य वचनं श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम्। अश्वत्थामा महाराज दुःखशोकसमन्वितः ॥ १ ॥ दह्यमानस्तु शोकेन प्रदीप्तेनाग्निना यथा। क्रूरं मनस्ततः कृत्वा तावुभौ प्रत्यभाषत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धिर्या या भवति शोभना। तुष्यन्ति च पृथक् सर्वे प्रज्ञया ते स्वया स्वया ॥ ३ ॥ सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम्। सर्वस्यात्मा बहुमतः सर्वात्मानं प्रशंसति ॥ ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा साधुवादे प्रतिष्ठिता। परबुद्धिश्च निन्दन्ति स्वां प्रशंसन्ति चासकृत् ॥ ५ ॥ कारणान्तरयोगेन योगे येषां समा मतिः। अन्योन्येन च तुष्यन्ति बहुमन्यन्ति चासकृत्। ६ ॥ तस्यैव तु मनुष्यस्य सा सा बुद्धिस्तदा तदा। कालयोगे विपर्यासं प्राप्यान्योन्यं विपद्यते ॥ ७ ॥ विचित्रत्वात् चित्तानां मनुष्याणां विशेषतः। चित्तवैक्लव्यमासाद्य सा सा बुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्य कुशलो ज्ञात्वा व्याधिं यथाविधि। भेषजं कुरुते योगात्

अध्याय ३ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज तब अश्वत्थामाभी कृपाचार्य के उस वचनको जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त । १ । ज्वलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन दोनोंसे बोले । २ । कि पुरुष पुरुषमें जो२ बुद्धि होतीहै वही श्रेष्ठहै वहसब पृथक् पृथक् अपनी २ बुद्धिसे प्रसन्न रहते हैं । ३ । और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं । ४ । सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियतहै दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी बारम्बार प्रशंसा करते हैं । ५ । सभा में अन्य २ कारणों के वर्त्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर प्रसन्नहोते हैं और बारम्बार अपने को बहुत मानते हैं । ६ । उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पातीहै वे परस्पर विनाशको पाते हैं । ७ । मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह बुद्धि उत्पन्न होती है । ८ । हे प्रभु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोगकी निवृत्ती के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, "1. Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief, said to the two warriors "Every man thinks himself wise and has opinion different from others. All men do what pleases them and praise their own wisdom. They praise themselves and blame others. 5. Those who are of the same opinion in an assembly, live happily; but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion rises out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine Men try to accomplish their work by their own wisdom and

मघवानिव दानवान् ॥ २७ ॥ अद्य तान् सहितान् सर्वान् धृष्टद्युम्नपुरोगमान् । सूद यिष्यामि विक्रम्य कक्षं दीप्त इवानलः । निहत्य चैव पांचालान्शान्तिंलब्धास्मि सत्तम ॥२९॥ पाञ्चालेषु चरिष्यामि सूदयन्नद्यसंयुगे । पिनाकपाणिः संक्रुद्धः स्वयं रुद्रः पशुष्विव ॥३०॥अद्याहं सर्व पांचालान्निकृत्य च_निहत्य चाअर्द्दयिष्यामिसंग्रामेरणे पाण्डुसुतांस्तथा ॥ ३१ ॥ अद्याऽहं सर्वपाञ्चालैः कृत्वा भूमिं शरीरिणीम् । प्रहृत्यैकैक शस्तेषु भविष्याम्यनृणः पितुः ॥ ३२ ॥ दुर्य्योधनस्य कर्णस्य भीष्मसैन्धवयोरपि । गमयिष्यामि पाञ्चालान् पदवीमद्य दुर्गमाम् ॥ ३३ ॥ अद्य पाञ्चालराजस्य धृष्ट द्युम्नस्य वै निशि । नचिरात् प्रमथिष्यामि पशोरिव शिरो बलात् ॥ ३४॥ अद्य पांचा लपाण्डूनां शयितानात्मजान्निशि । खड्गेन निशितेनाजौ प्रमथिष्यामि गौतम ॥ ३५ ॥ अद्य पाचालसेनां तां निहत्य निशि सौप्तिके । कृतकृत्य सुखीचैवभविष्यामिमहामते ३६

इतिश्री सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणायां तृतीयोऽध्याय ॥ ४ ।

मृतकरूप पांचाल देशियोंको डेरे में पराजयकरके और पराक्रम करके ऐसे मारूंगा जैसे दानवों को इन्द्र मारताहै । २७ । अब उन धृष्टद्युम्न आदिक सब पांचालों को एक साथही ऐसे मारूंगा जैसे कि ज्वलित अग्नि सूखे बनको हे श्रेष्ठ मैं युद्धमें पांचालों को मारकर शान्तीको पाऊंगा । २९ । अबमैं युद्धमें पांचालों को मारता पांचालोंको के बीच में ऐसाहूंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रभीहोते हैं । ३० । अब अत्यन्त प्रसन्न सब पांचालोंको मारकाटकर इसीप्रकार से युद्धमें पाण्डवोंकोभी पीड़ावान करूंगा । ३१ । अब मैं पृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरोंसे पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर पिताके ऋणसे अऋणहूंगा । ३२ । अब मैं पांचालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथ के कठिन मार्ग में पहुंचाऊंगा । ३३ । अब मैं रात्रिके समय थोड़ीदेर में पांचालोंके राजाधृष्टद्युम्न के शिरको ऐसेमथूंगा जैसे कि पशुकेशिरको मर्दन करते हैं । ३४ । हे कृपाचार्य्य जी अब मैं पांचाल देशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये पुत्रोंको रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मथूंगा । ३५ । हे बड़े बुद्धिमान अब मैं रात्रिके युद्धमें उस पांचालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहुंगा ।३६।

---

lying within their t.nts. I shall de-troy them in their camp and shall do a difficult deed. I shall now slay them as Indra does the danavas. I shall destroy tl em as fire does dry forest. I shall roam among them as Shiv the wielder of Pinak roams among animals. 30. Having slain the Panchals, I shall destroy the Pandavas. Having destroyed the Panchals, I shall be free from the debt of my father. I shall cut off the head of Dhrishtadjumn of Panchal like that of a beast. I shall cut off the sleeping sons of the Panchals and Pandavas with my sharp swo d. I shall satisfy my rage by slaying the army ... night ॥ 36 ॥

कृप उवाच । दिष्ट्या ते प्रतिकर्त्तव्ये मतिर्जातेयमच्युत । न त्वां वारयितुं शक्तो वज्रपाणिरपि स्वयम् ॥ १ ॥ अनुयास्यावहे त्वां तु प्रभाते सहितावुभौ । अद्य रात्रौ विश्रमस्व विमुक्तकवचध्वज ॥ २ ॥ अहं त्वामनुयास्यामि कृतवर्मा च सात्वतः । परानभिमुखं यान्तं रथावास्थाय दंशितौ ॥ ३ ॥ आवाभ्यां सहितः शत्रून् श्वो निहन्ता समागमे । विक्रम्य रथिनां श्रेष्ठ पाञ्चालान् सपदानुगान् ॥ ४ ॥ शक्तस्त्वमसि विक्रम्य विश्रमस्व निशामिमाम् ॥ चिरं ते जाग्रतस्तात स्वप तावन्निशामिमाम् ॥ ५॥ विश्रान्तश्च विनिद्रश्च स्वस्थचित्तश्च मानद । समेत्य समरे शत्रून् वधिष्यसि न संशयः ॥ ६ ॥ न हि त्वां रथिनां श्रेष्ठ प्रगृहीतवरायुधम् । जेतुमुत्सहते कश्चिदपि देवेषु वासव ॥७ ॥ कृपेण सहितं यान्तं युक्तञ्च कृतवर्मणा । को द्रौणिं युधि संरब्धं योधयेदपि देवराट् ॥ ८ ॥ ते वयं निशि विश्रान्ता विनिद्रा विगतज्वराः । प्रभातायां रजन्यां वै निहनि

अध्याय ॥ ४ ॥

कृपाचार्य बोले कि प्रारब्धमे बदलालेने में तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्नहुई है आप इन्द्रभी तेरे रोकनेको समर्थ नहीं है । १ । हमदोनों एकसाथही प्रातःकालके समय तेरेपीछे चलेंगे अब रात्रिमें कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राम करो । २ । मैं और यादव कृतवर्मा अलंकृत रथोंपर सवार होकर तुझ शत्रुओंके सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे । ३ । हे रथियों में श्रेष्ठ प्रातकाल के समय तुम हम दोनों केसाथ सम्मुखतामें पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों समेत मारोगे । ४ । तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इसरात्रिमें विश्रामकरो हे तात तुमको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई तब तक इसरात्रि में शयनकरो । ५ । विश्रामयुक्त शयन से सावधान चित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे बड़ाई देनेवाले इसमें संशय नहीं है । ६ । देवताओं के मध्य में इन्द्रभीतुझ रथियों में श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारी के विजय करने को उत्साह नहीं करता है । ७ । कृतवर्मा से रक्षित और कृपाचार्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र भी युद्धनहीं करसक्ता । ८ । हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे

CHAPTER IV

Kripacharya said, "It is by Fate that you are resolved to take revenge; even Indra can not deter you from your purpose. Both of us together, will follow you in the morning; let us set aside our armour and banner and take rest for the night. Kritvarma, the Yadav, and I will follow you, destroyer of foes. Tomorrow you, accompanied by us, will destroy your Panchal foes. You have the power to slay. Take rest during the night; for you have not slept yet. 5. With your mind fresh after repose, you will slay the foes without doubt. Even surrounded by gods, Indra cannot conquer you, brave warriors! rotected by Kritvarma and followed by Kripacharya enraged Ashwa

ष्याम शास्त्रवान् ॥ ९ ॥ तव शस्त्राणि दिव्यानि मम चैव न संशयः । सात्वतोपि महे ष्वासो नित्यं युद्धेषु कोविदः ॥ १० ॥ ते वयं सहितास्तात सर्वान् शत्रून् समागतान् । प्रसह्य समरे हत्वा प्रीतिं प्राप्स्याम पुष्कलाम् । विश्रमस्व त्वमव्यग्रः स्वपचेमां निशां सुखम् ॥ ११ ॥ अहञ्च कृतवर्मा च त्वां प्रयान्तं नरोत्तमम् । अनुयास्याव सहितौ धन्विनौ परतापनौ । रथिनं त्वरयायान्तं रथमास्थाय दंशितौ ॥१३॥ स गत्वा शिविरं तेषां नाम विश्राव्य चाहवे । ततः कर्तासि शत्रूणां युध्यतां कदनं महत् ॥१४॥ कृत्वा च कदनं तेषां प्रभाते विमलेहनि । विहरस्व यथा शक्रः सूदयित्वा महासुरान् ॥ १५ ॥ त्वं हि शक्तो रणे जेतुं पाञ्चालानां वरूथिनीम् । दैत्यसेनामिव क्रुद्धः सर्वदानवसूदन ॥ १६ ॥ मया त्वां सहितं संख्ये गुप्तञ्च कृतवर्मणा । न सहेत विभुः साक्षाद्वज्रपाणि रपि स्वयम् ॥ १७ ॥ न चाहं समरे तात कृतवर्मा न चैव ह । अनिर्जित्य रणे पाण्डून् व्यपयास्याव कर्हिचित् ॥ १८ ॥ हत्वा च समरे क्षुद्रान् पाञ्चालान् पाण्डुभिः सह ।

सहित प्रात काल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे । ९ । तेरे और मेरे दिव्यअस्त्रहैं और बड़ा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धोंमें निस्सन्देह सावधान है । १० । हेतात हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द को पावेंगे तुम सावधान होकर विश्रामकरो और इस रात्रिमें सुखपूर्वक शयनकरो । ११ । मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एक साथ रथपर सवार होकर तुम शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथी के पीछे चलेंगे ।१२। इसके पीछे तुम उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्ध में नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले शत्रुओं का बड़ाभारी नाश करोगे । १४ । प्रातः काल के समय उनका नाशकर के ऐसे विहारकरो जैसे कि महा असुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है । १५ । तुम युद्धमें पाञ्चालों की सेनाके विजय करनेको ऐसे समर्थहो जैसे कि सब दानवों का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करताहै । १६ । वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुम मेरेसाथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं सहसक्ताहै । १७ । हे तात मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये विना कभी लौटकर नहीं आवेंगे । १८ । हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पांचालों समेत पाण्डवों

thama is irrestible in battle even by Indra. We shall slay our foes in the morning when our fever has abated after repose at night. You and I possess divine weapons and Kritvarma, the great Yadav archer, is clever in fighting. We three, united together, are sure to destroy our foes. Take care to sleep for the night. Kritvarma and I, cased in armour, will follow your car. You will slay them tomrrrow as Indra does asura. 15. You can slay the *Panchal* warriors as Indra does the asurs. Even Indra cannot resist you protected and accompanied by me and Kritvarma as you shall be in fight *Kritvarma* and I will never return without conquering the Pandavas in battle.

निवर्तिष्यामहे सर्वे हत्वा वा स्वर्गगा वयम् ॥ १९ ॥ सर्वोपायैः सहायास्ते प्रभाते वयमाहवे । सत्यमेतन्महाबाहो प्रब्रवीमि तवानघ ॥ २० ॥ एवमुक्तस्ततो द्रौणिर्मातुलेन हितं वचः । अब्रवीन्मातुलं राजन् क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ २१ ॥ आतुरस्य कुतो निद्रा नरस्यामर्षितस्य च । अर्थांश्चिन्तयतश्चापि कामयानस्य वा पुनः ॥ २२ ॥ तदिदं सम नुप्राप्तं पश्य मेऽद्य चतुष्टयम् । यस्य भागश्चतुर्थो मे स्वप्नमह्नाय नाशयेत् ॥ २३ ॥ किं नाम दुःखं लोकेऽस्मिन् पितुर्वधमनुस्मरन् । हृदयं निर्दहन्मेऽद्य रात्र्यहानि न शाम्यति ॥ २४ ॥ यथा च निहतः पापैः पिता मम विशेषतः । प्रत्यक्षमपि ते सर्वं तन्मे मर्माणि कृन्तति ॥ २५ ॥ कथं हि मादृशो लोके मुहूर्तमपि जीवति । द्रोणो हतेति यद्वाचः पाञ्चालानां शृणोम्यहम् ॥ २६ ॥ धृष्टद्युम्नमहत्वाजौ नाहं जीवितुमुत्सहे । स मे पितुर्वधाद्वध्यो पाञ्चाला ये च सङ्गताः ॥ २७ ॥ विलापो भग्नसक्थस्य यस्तु राज्ञो मया

को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे । १९ । हे निष्पाप हम प्रातःकाल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायकहैं हे महाबाहु मैं यह तुझसे सत्यही कहताहूं । २० । हे राजा मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र अश्वत्थामाने मामाजीको उत्तरदिया ।२१। किरोगी क्रोधयुक्त धनादिकके सोचकरनेवाले और कामी इनलोगोंको निद्रा कहांसे होसक्तीहै । २२ ।अब यहमेरा क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै यह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयनका नाशकरताहै । २३ । इसलोकमें क्या दुःखहै कि पिता के मरण को स्मरणकरता और जलता हुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै । २४ । मुख्य करके जैसे प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया वहसव आपके नेत्र गोचर है वह मेरे मर्म्मों को काटताहै । २५ । लोकमें मुझसा मनुष्य एकमुहूर्त्त भी कैसेजीसक्ता है जोमैं पाञ्चालोंका वचन सुनताहूं कि द्रोणाचार्य्य मारेगये । २६ । मैं धृष्टद्युम्न को न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहींकर सक्ताहूं वहमेरे पिताके मारनेसे काटने के योग्यहै और जो पांचालदेशी इकट्ठे हैं वह सबभी वध्यहैं । २७ । इसकेविशेष

We shall return after slaying the Pandavas and the Panchals or shall go to paradise. Believe me, brave man, we shall help you in tomorrow's battle." Hearing the good advice of his uncle, Ashwathama replied in anger, "How can one find sleep over anger, loss of wealth and love sickness! It is only a fourth part of my rage developed; but it is enough to destroy my sleep at night. Is it a small thing that I find no rest by night or day as I remember the death of my father. You have seen how my father was slain by those sinful men and it cuts me to the quick. 25. One like me cannot live in the world when one hears from the Panchals that Dronacharya is slain. I cannot live without slaying Dhrishtadyumn. He and his followers deserve death by taking part in the slaughter of my father. Besides, whose heart will not burn at *Duryodhan's lamentations that I have heard*!

श्रुतः । स पुनर्हृदयं कस्य क्रूरस्यापि न निर्दहेत् ॥ २८ ॥ कस्य ह्यकरुणस्यापि नेत्राभ्या मश्रु नाव्रजेत् । नृपतेर्भग्नसक्थस्य श्रुत्वा तादृग्वचः पुनः ॥ २९ ॥ यश्चायं मित्रपक्षो मे मयि जीवति निर्जितः । शोकं मे वर्द्धयत्येष वारिवेग इवार्णवम् । एकाग्रमनसो मेद्य कुतो निद्रा कुतः सुखम् ॥ ३० ॥ वासुदेवार्जुनाभ्यां हि तानहं परिरक्षितान् । अविषह्यतमान्मन्ये महेन्द्रेणापि मातुल ॥ ३१ ॥ न चास्मि शक्तः संयन्तुं कोपमेतं समुत्थितम् । न तं पश्यामि लोकेऽस्मिन् यो मां कोपान्निवर्त्तयेत् । इति मे निश्चिता बुद्धिरेषा साधुमताच मे ॥३३॥ वार्त्तिकैः कथ्यमानस्तु मित्राणां मे पराभवः । पाण्डवानाञ्च विजयो हृदयं दहतीव मे ॥ ३४ ॥ अहन्तु कदनं कृत्वा शत्रूणामद्य सौप्तिकं । ततो विश्रमिता चैव स्वप्ता च विगतज्वरः ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि मंत्रेणायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका विलापसुना वह किस निर्दयके भी चित्तको नहीं भस्म करेगा । २८ । फिर टूटी जंघावाले राजाके उसप्रकारके वचनों को सुनकर कौनसे निर्दय मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे । २९ । मेरेजीवतेहुये जो यह मेरामित्र पक्ष विजयकिया वह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलकावेग समुद्रको बढ़ाताहै अब मेराचित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है । ३० । हे श्रेष्ठ मैं वासुदेवजी और अर्जुनसे रक्षित उनलोगों को महाइन्द्रसे भी सहने के योग्य नहीं जानताहूं । ३१ । और इस उठेहुये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहींहूं मैं इसलोकमें ऐसा किसीकोभी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरेक्रोधसे रहित करसके इसीप्रकार साधुओं की अंगीकृत इसमेरी बुद्धिकोभी कोईनहीं लौटासक्ता । ३३ । मेरे मित्रोंकीपराजय और पाण्डवोंकी विजय जो दूतोंने वर्णनकरी वहमेरे हृदयको भस्मकररही है।३४। अब मैं रात्रिके युद्धमें शत्रुओंका नाशकरके फिर तापसे रहितहोकर विश्राम शयन करूंगा ३५ ॥

Who will not shed tears after hearing that prince with the broken thigh. The defeat of my friends during my life time increases my grief like a surge's swell My mind is made up and I can have no repose 30 Protected by Vasudev and Arjun they are irresistible even by Indra. I cannot check my rising anger. None can check my anger or turn me from my purpose The news of my friend's des' and enemies' victory burns my breast. I shall be able to find rest after slaying my enemie at night " 35

कृप उवाच । शुश्रूरपि दुर्मेधाः पुरुषोनियतोन्द्रियः । नालं वेदयितुं कृत्स्नौ धर्मार्थौ विति मे मतिः ॥ १॥ तथैव तावन्मेधावी विनयं यो न शिक्षते । न च किञ्चन जानाति सोपि धर्मार्थे निश्चयम् ॥ २ ॥ चिरं ह्यपि जड़ः शूरः पण्डितं पर्य्युपास्य ह । न स धर्मान् विजानाति दर्वी सूपरसानिव ॥ ३ ॥ मुहूर्त्तमपि तं प्राज्ञः पण्डितं पर्य्युपास्य ह । क्षिप्रं धर्मान् विजानाति जिह्वा सूपरसानिव । शुश्रूषुस्त्वेव मेधावी पुरुषो नियतेन्द्रियः । जानीयादागमान् सर्वान् ग्राह्यञ्च न विरोधयेत् ॥ ५ ॥ अनेयस्त्ववमानी योदुरात्मा पापपूरुषः । दिष्टमुत्सृज्य कल्याणं करोति बहु पापकम् ॥ ६ ॥ नाथवन्तन्तु सुहृदः प्रति षेधन्ति पापकात् । निवर्त्ततेतु लक्ष्मीवान्नालक्ष्मीवान्निवर्त्तते ॥ ७ ॥ यथा ह्युच्चावचै र्वाक्यैः क्षिप्तचित्तो नियम्यते । तथैव सुहृदां शक्यो न शक्यस्त्ववसीदति ॥ ८ ॥ तथैव

अध्याय ५ ॥

कृपाचार्य्य बोले कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषी भी सम्पूर्ण धर्म अर्थ के जाननेको समर्थ नहीं है यहमेरामतहै । १ । इसीप्रकार शास्त्रों के स्मरण रखनेवाली बुद्धिकास्वामी पुरुष जबतक नीतिको नहीं सीखताहै तबतक वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै । २ । अत्यन्त अज्ञान शूरवीर मनुष्य बहुत कालतक भी पण्डित के पास वर्त्तमान सेवाकरके धर्मोंको ऐसेनहीं जानताहै जैसे कि व्यञ्जनके स्वादुको चम्मच नहींजानताहै । ३ । ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्त्तभी उसपंडितके पास बैठकर शीघ्रही उनमे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके स्वादुको जिह्वा जानलेती है । ४ । बुद्धिमान जितेन्द्रिय और सेवाकरने वाला पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य वस्तुओं से विरोध नहीं करताहै । ५ । जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुष है वह सच्चेमार्ग में पहुँचाने के योग्य नहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्यागकरके बहुतसे पापों को करता है । ६ । फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करतेहैं और धनकास्वामी उसपाप से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहींलौटताहै । ७ । जैसेकि विषयोंमें प्रवृत्तचित्त पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन किया जाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ापाताहै । ८ । इसी प्रकार

CHAPTER V.

Kritvarma said, "I think that one having no control over passions cannot be benefited by advice even if one be willing to hear, and the same is the case with one who has read the shastras but no Politics. A foolish warrior cannot learn his duties in the society of learned men as the spoon does not know the flavour of things, but a wise man learns it in an instant as the tongue does the flavour. A wise and obedient pupil having control over passions learns all the books and is willing to acquire useful things 5. An unwise and sinful man cannot go in the right path and commits many sins by disregarding the

सुहृदं प्राज्ञं कुर्वाणं कर्म पापकम् । प्राज्ञाः संप्रतिषेधन्ति यथा शक्ति पुनः पुनः ॥ ९ ॥ स कल्याणे मनः कृत्वा नियम्यात्मानमात्मना कुरु मे वचनं तात येन पश्चान्न तप्स्यसे ॥१०॥ न वध पूज्यते लोके सुप्तानामिह धर्मतः । तथैवापास्तशस्त्राणां विमुक्तरथवाजिनाम ॥ ११ ॥ ये च ब्रूयुस्तवास्मीति ये च स्युः शरणागताः । विमुक्तमूर्धजा ये च ये चापि हतवाहनाः ॥ १२ ॥ अद्य स्वप्स्यन्ति पाञ्चाला विमुक्त कवचा विभो । विश्वस्ता रजनीं सर्वे प्रेता इव विचेतसः ॥ १३ ॥ यस्तेषां तदवस्थानां द्रुह्येत पुरुषोऽनृजुः । व्यक्तं स नरके मज्जेदगाधे विपुलेऽप्लवे ॥ १४ ॥ सर्वास्त्रविदुषां लोके श्रेष्ठस्त्वमसि विश्रुत । न च ते जातु लोकेऽस्मिन् सुसूक्ष्ममपि किल्बिषम् ॥१५॥ त्वं पुनः सूर्यसङ्काशः श्वोभूत उदिते रवौ । प्रकाशे सर्वभूतानां विजेता युधि शात्रवान् ॥ १६ ॥ असम्भावितरूपं हि त्वयि कर्म विगर्हितम । शुक्ले रक्तमिव न्यस्तं भवेदिति मतिर्मम ॥ १७ ॥

ज्ञानीलोग पापकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार वारम्वार निषेध करते हैं । ९ । कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता में करके मेरे वचनको कर जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहो । १० । इस लोकमें सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसीप्रकार शस्त्र रथ और घोड़ों से रहित मनुष्योंका मारना धर्ममे प्रशंसा नहींकिया जाताहै । ११ । जो कहे कि मैं तेरा हूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केश होय और जो मृतक सवारी वालाहै । १२ । हे समर्थ इन सबका मारना भी निषेध हैं कवच से रहित मृतकके समान अचेत विश्वास युक्त सब पाञ्चाल लोग सोतेहैं । १३ । जो कुटिलपुरुष उसदशावाले उन पाञ्चाल देशियोंसे शत्रुताकरेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकरूपी समुद्र में डूबेगा । १४ । तुम लोकके सब अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ विख्यातहो इसलोकमें कभी तुमसे छोटासा भी पाप नहीं हुआ । १५ । फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम प्रात काल के समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओं के लोगोंको विजय करोगे । १६ । मेरे मतसे तुममें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म्म ऐसा असम्भवहै जैसेकि श्वेतवस्त्रवालापर रक्तवर्ण होना असम्भवहै । १७ । अश्वत्थामा

lessons taught to him. Well wishers turn a man from sin, but it is the fortunate who follows their advice. It is the duty of fathful friends to offer advice, but he who does not hear it falls into difficulty. . Similarly, wise men hinder a wise friend from falling into evil ways You should carefully listen to my advice so that you may not fall into difficulty. To slay a sleeping, unarmed and carless man is not commendable like that of a refugee or of one with dishevelled hair or of one whose beast in dead The Panchals are sleeping without armour like dead men. He who slays them in that state, will fall into bottom loss perdition. You are a famours warrior of the world and have never committed a sin. 15. You can slay your foes in day light

अश्वत्थामाब्रवीदिदं । एवमेव यथात्थ त्वं मातुलेह न संशयः तैस्तु पूर्वमयं सेतुः शतधा विदलीकृतः ॥ १८ ॥ प्रत्यक्षं भूमिपालानां भवतामपि सन्निधौ । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ १९ ॥ कर्णश्च पतिते चक्रे रथस्य रथिनां वरः । उत्तमे व्यसने सन्नो हतो गाण्डीवधन्वना ॥ २० ॥ तथा शान्तनवो भीष्मो न्यस्तशस्त्रो निरायुधः । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य हतो गाण्डीवधन्विना ॥ २१ ॥ भूरिश्रवा महेष्वासस्तथा प्रायगतो रणे । क्रोशतां भूमिपालानां युयुधानेन पातितः ॥ २२ ॥ दुर्योधनश्च भीमेन समेत्य गदया रणे । पश्यतां भूमिपालानामधर्मेण निपातितः ॥ २३ ॥ एकाकी बहुभिस्तत्र परिवार्य महारथैः । अधर्मेण नरव्याघ्रो भीमसेनेन पातितः ॥ २४ ॥ विलापो भग्नसक्थस्य यो राज्ञः परिश्रुतः । वार्तिकानां कथयतां स मे मर्माणि कृन्तति ॥ २५ ॥ एवमधार्मिकाः पापाः पाञ्चाला भिन्नसेतवः । तानेवं भिन्नमर्यादान् किं भवान्

बोले हे मामाजी जैसा आप कहते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन पाण्डवोंनेही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ाहै । १८ । शस्त्र त्यागनेवाला मेरापिता राजाओं के समक्षमें आपलोगों के भी देखतेहुये धृष्टद्युम्न के हाथसे गिरायागया । १९ । रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथ चक्रके पृथ्वीमें घुसजानेपर बड़े दुःखमें डूबाहुआ उस अर्जुनके हाथसे मारागया । २० । इसीप्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे रहित शान्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखंडीको आगेकरके अर्जुनके हाथसे मारेगये । २१ । इसीप्रकार युद्धमें शरीर त्यागने के निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारतेहुये सात्यकिके हाथसे मारागया । २२ । दुर्योधन गदासमेत भीमसेनके सम्मुख होकर राजाओंके देखते अधर्मसे मारागया । २३ । वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया । २४ । मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काटताहै । २५ । उस प्रकारसे पांचालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि धर्मका पुलटूट गयाहै आप इसप्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो

You should keep aloof from such a heinous sin as the white is from the red, " To this Ashwathama replied, " You speak the truth uncle But the Pandavas have already broken the bridge of virtue. My father, who had laid aside his weapons, was slain by Dhrishtadyumn in your own presence. Karan the bravest of warriors was slain by Arjun when the wheel of his car was stuck in mud, 20. Similarly Bhishm the son of Shantanu, without arms and weapons, was slain by Arjun led by Shikhandi. In the same manner, Bhurishrava, who had exposed himself to death in the field of battle, was slain by Satyaki in spite of the remonstrations of all the warriors. Duryodhan was unjustly hit by Bhim in the presence of all the kings. He received an unfair blow when he was alone and the enemy surround

विगर्हति ॥२६॥ पितृहन्तॄनहं हत्वा पाञ्चालान्निशि सौप्तिके । काम कीट पतंगो वा जन्म प्राप्य भवामि वै ॥ २७ ॥ त्वरे चाहमनेनाद्य यदिदं मे चिकीर्षितम् । तस्य मे त्वरमाणस्य कुतो निद्रा कुतः सुखम् ॥ २८ ॥ न स जातः पुमाँल्लोके कश्चिन्न स भविष्यति । यो मे व्यावर्तयेदेतां वधे तेषां कृतां मतिम् ॥ २९ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा महाराज द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । एकान्ते योजयित्वाश्वान् प्रायादभिमुखः परान् ॥ ३० ॥ तमब्रूतां महात्मानौ भोजशारद्वतावुभौ । किमर्थं स्यन्दनो युक्तः किञ्च कार्यं चिकीर्षितम् ॥ ३१ ॥ एकसार्थप्रयातौ स्वस्त्वया सह नरर्षभ । समदुःखसुखौ चापि नावां शङ्कितुमर्हसि ॥ ३२ ॥ अश्वत्थामा तु संक्रुद्धः पितुर्वधमनुस्मरन् । ताभ्यां तथ्यं तदाचख्यौ यदस्यात्मचिकीर्षितम् ॥ ३३ ॥ हत्वा शतसहस्राणि योधानां निशितैः शरैः । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ ३४ ॥ तं तथैव हनिष्यामि न्यस्तवर्माण

। २६ । मैं रात्रिके समयनिद्रा युक्तमें अपने पिताके मारनेवाले पांचालोंको मारकर जन्मपाकर चाहे कीट पतङ्गभी होजाऊं । २७ । और मैं इसीहेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यह मेरे कर्मरूपसे भी इच्छाहै उसयुक्त शीघ्रता करनेवालेको कहां निद्रा और सुखहै । २८ । वह पुरुष लोकमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि उन पांचाल देशियोंके मारनेमें यह मति देकर मुझको लौटावे । २९ । संजय बोले हे महाराज प्रतापवान् अश्वत्थामाजी इसप्रकार कहकर और एकान्त में घोड़ोंको जोड़कर शत्रुओं के सम्मुखगये । ३० । बड़े साहसी कृतवर्मा और कृपाचार्यजी दोनों उससे कहनेलगे कि किसनिमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्म्मकरना चाहते हो । ३१ । हे नरोत्तम तेरे साथ हम दोनों चलेंगे एकसा सुखदुःखवाले हमदोनोंपर तुमको सन्देहकरना उचित नहीं है । ३२ । पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका यह सत्य सत्य विचार उनसे वर्णन किया जो उसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी । ३३ । तेजबाणोंसे लाखों शूरवीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया । ३४ । निश्चय करके

ed him in large numbe s. The lamentations of the king, with broken thigh, reported to me by the informers, break my heart ! *Why* do you not blame the Pauchals who are so lawless and sinful ! I shall avenge *my father's* death by slaying the Panchals at night, though I have to be born among reptiles. I am therefore in a hurry to work and can find no rest No earthborn man can turn me from my resolution of slaying the Panchals" "Sanjaya continued, "Having said this, *Ashwathama* began putting his horses to the car, 30. *Brave Kritvarma* and *Kripacharya* said to him, " Why have you prepared your car and what will will you do? We must go along with you. Have no suspicion of us who are your partners in weal and woe."

मय् वै । पुत्र पाञ्चालराजस्य पाप पापेन कर्मणा ॥ ३५ ॥ कथञ्च निहत पाप पाञ्चाल्य पशुवन्मया । शस्त्रेण विजिताल्लोकाप्नुयादिति मे मति ॥ ३६ ॥ क्षिप्र सन्नद्धकवचौ सखड्गावात्तकार्मुकौ । मामास्थाय प्रतीक्षेतां रथवर्यौ परन्तपौ ॥ ३७ ॥ इत्युक्त्वा रथमास्थाय प्रायाद् भिमुख. परान् । तमन्वगात् कृपो राजन् कृत वर्माच सात्वत ॥ ३८ ॥ ते प्रयाता व्यरोचन्त परानभिमुखास्त्रय । हूयमाना यथा यज्ञे समिद्धा हव्यवाहना ॥ ३९ ॥ ययुश्च शिबिर तेषा सम्प्रसुप्तजन विभो । द्वारदेशन्तु सम्प्राप्य द्रौणिस्तस्थौ महारथ. ॥ ४० ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिपाण्डवशिबिरगमने पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

मैं इसीप्रकार इसपापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचाल के पुत्र धृष्टद्युम्नको पापकर्म्म से मारूंगा । ३५ । मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न किसीप्रकार से भी शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरामतहै । ३६ । कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ रखनेवाले तुम दोनों सवारहोकर मेरा मार्गदेखो । ३७ । हेराजा वह अश्वत्थामा यह कहकर रथपर सवारहोकर शत्रुओंके सम्मुखगये कृपाचार्य्य और यादवकृतवर्मा उसके पीछेचले । ३८ । शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनोंऐसे शोभायमानहुये जैसेकि यज्ञमें आवाहनकीहुईहुईशुद्धियुक्त अग्निहोतीहै । ३९ । हेसमर्थ फिरवह उनके उनडेरोंमें गये जिसके मनुष्य अच्छी रीतिसे सोरहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वार स्थानको पाकर नियतहुये ४० ॥

Remembering his father's death, Ashwathama, much enraged, disclosed to them the scheme that he had formed in his mind, saying, " Having slain millions of warriors with his sharp arrows, my father laid aside his weapons and was slain by Dhrishtadyumn, I shall therefore slay the sinful son of the king of Panchal, Dhrishtadyumn, with unfair means 35. Slain by me like a beast, he will no longer attain the regions open to those who die fighting. This is my opinion. Cased in armour and armed with swords and bows, you will wait for my return, destroyers of foes! " Having said this, Ashwathama mounted his car and proceeded to face the enemies Kripacharya and Kritvarma the Yadav followed him The three warriors going towards the enemies, looked glorious like fire They went to the camp of the sleeping warriors and Ashwathama stopped at the entrance " 40.

धृतराष्ट्र उवाच । द्वारदेशे ततो द्रौणिमवस्थितमवेक्ष्य तौ । अकुर्वतां भोजकृपौ किं सञ्जय वदस्व मे ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । कृतवर्माणमामन्त्र्य कृपञ्च स महारथः । द्रौणिर्मन्युपरीतात्मा शिबिरद्वारमासदत् ॥ २ ॥ तत्र भूतं महाकायं चन्द्रार्कसदृशद्युतिम् । सोऽपश्यत् द्वारमावृत्य तिष्ठन्तं लोमहर्षणम् ॥ ३ ॥ वसानञ्चर्म वैयाघ्र महारुधिरविस्रवम् । कृष्णाजिनोत्तरासङ्गं नागयज्ञोपवीतिनम् ॥ ४ ॥ बाहुभिः स्वायतैः पीनैर्नानाप्रहरणोद्यतैः । बद्धाङ्गदमहासर्पं ज्वालामालाकुलाननम् ॥ ५ ॥ दंष्ट्राकरालवदनं व्यादितास्यं भयानकम् । नयनानां सहस्रैश्च विचित्रैरभिभूषितम् ॥ ६ ॥ नैव तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं वेश एव च । सर्वथा तु तदालक्ष्य स्फुटेयुरपि पर्वताः ॥ ७ ॥ तस्यास्यान्नासिकाभ्याञ्च श्रवणाभ्याञ्च सर्वशः । तेभ्यश्चाक्षिसहस्रेभ्यः प्रादुरासन्महार्चिषः ॥ ८ ॥ तथा तेजोमरीचिभ्यः शंखचक्रगदाधराः । प्रादुरासन् हृषीकेशाः

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसकेपीछे उनदोनों कृतवर्मा और कृपाचार्य्य ने द्वार स्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या किया उसको मुझसे वर्णनकरो । १ । संजयबोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य को पूछकर क्रोध से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपरगया । २ । उसने वहां जाकर एक जीवको देखा जो कि बड़े,शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोम हर्षण करनेवाला । ३ । व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गिरानेवाले कृष्ण मृगचर्म्म का ओढनेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला । ४ । बहुतलम्बी स्थूल और नानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधने वाला ज्वाल समूहों से व्याप्त मुख । ५ । दंष्ट्राओं से भयानक महा भयकारी फैले हुयेहजारों विचित्र नयनोंसे शोभायमानथा । ६ । उसका शरीर और पोशाकवर्णन के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशामें पर्वतभी फटजायँ । ७ । उसके मुख नाक कान और हजारों नेत्रोंसे बड़ी २ ज्वाला निकलतीथीं । ८ । उन ज्वालाओं

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, " What did Kripacharya and Kritvarma do on seeing Ashwathama stand at the entrance? " Sanjaya said, " Having talked with them he went at the entrance of the camp and saw there a being glorious like the sun and the moon. He was dreadful to look at, with a tiger's hide, blood thirsty, clothed with the skin of a black antelope, serpents for sacred thread, with long and muscular arms, with a huge serpent tied at his arm attended by luminous bodies, with dreadful mouth and teeth and thousands of dreadful and wonderful eyes. His body and attire were dreadful beyond the power of speech. Sparks of fire came out from his mouth, nose, ears and thousands of his eyes and thousands of Janardans, adorned with conch discus and mace, were to be seen amid those sparks. Seeing dreadful being thus stationed, Ashwathama fearlessly hid him with

...शान्तोऽथ सहस्रशः ॥ ९ ॥ तदद्भुततमं दृष्ट्वा भूतं लोकभयङ्करम् । द्रौणिरव्यथितो दिव्यैरस्त्रवर्षैरवाकिरत् । द्रौणिमुक्ताञ्छरांस्तांस्तु तद्भूतं महदग्रसत् ॥ १० ॥ उदधेरिव वार्य्योघान् पावको वड़वामुखः । अग्रसत्तांस्तदा भूतं द्रौणिना प्रहिताञ्छरान् ॥ ११ ॥ अश्वत्थामा तु संप्रेक्ष्य शरौघांस्तान्निरर्थकान् । रथशक्तिं मुमोचास्मै दीप्तामग्निशिखामिव ॥ १२ ॥ सा तदाहत्य दीप्ताग्रा रथशक्तिरदीर्य्यत । युगान्ते सूर्य्यमाहत्य महोल्केव दिवश्च्युता ॥ १३ ॥ अथ हेमत्सरुं दिव्यं खड्गमाकाशवर्चसम् । कोषात् समुद्ववर्हाशु बिलाद्दीप्तमिवोरगम् ॥ १४ ॥ ततः खड्गवरं धीमान् भूताय प्राहिणोत्तदा । स तदासाद्य भूतं वै विलं नकुलवद्ययौ ॥ १५ ॥ ततः स कुपितो द्रौणिरिन्द्रकेतुनिभां गदाम् । ज्वलन्तीं प्राहिणोत्तस्मै भूतं तामपि चाग्रसत् ॥ १६ ॥ ततः सर्वायुधाभावे वीक्ष्यमाणस्ततस्ततः । अपश्यत् कृतमाकाशमनाकाशं जनार्दनैः ॥ १७ ॥ तदद्भुततमं

के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाधारी हजारों श्रीकृष्ण प्रकट थे । ९ । उसबड़े अपूर्व सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामाने उसको दिव्य अस्त्रों की वर्षासे ढकदिया उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़हुये बाणोंको निगला ।१०। जैसे कि वड़वामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहों को निगलताहै उसी प्रकार उस तेजरूपने अश्वत्थामाके चलायेहुये बाणोंको निगला । ११ । फिर अश्वत्थामा ने उन अपने बाणसमूहों को निष्फल देखकर ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित शक्तिको छोड़ा । १२ । वह प्रकाशमान रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फट गई जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्य्यको घायलकरके फटजाती है । १३ । इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य खड्ग को ऐसेशीघ्रतापूर्वक मियानसे निकाला जैसे कि बिलसे प्रकाशित सर्पकोनिकालतेहैं । १४ । इसके पीछे बुद्धिमान्ने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया वह उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसेकि नौला बिलमें घुसजाता है । १५ । इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्रध्वजाके समान उसज्वलित रूप गदाको ऊपर चलाया उस तेजरूपने उसको भी निगला । १६ । इसके पीछे

his celestial weapons, but he swallowed all his arrows 10. He received all the arrows within himself as the ocean fire soaks the waters of the ocean. Seeing his arrows fruitless, Ashwathama discharged at him a Javelin bright as fire. But the Javelin broke upon him like the meteor of pralaya after striking the sun. Then he drew out his gold-handled sword from the scabbard, like a serpent from its hole. He threw the sword at the wonderful being and it entered his body like a mungoose in a hole. 15. Then Ashwathama hurled at him his mace, but that too, disappeared. When all his weapons were thus exhausted, he looked all round and saw the whole sky full of Shri-Krishn. Destitute of arms, Ashwathama, seeing that miracle,

दृष्ट्वा द्रोणपुत्रो निरायुधः । अब्रवीदतिसन्तप्तः कृपवाक्यमनुस्मरन् ॥ १८ ॥ ब्रुवता मप्रियं पथ्यं सुहृदां न शृणोति यः । स शोचत्यापदं प्राप्य यथाहमतिवर्त्य तौ ॥ १९ ॥ शास्त्रदृष्टानविद्वान् य समतीत्य जिघांसति । स पथः प्रच्युतो धर्मात् कुपथे प्रतिहन्यते ॥ २० ॥ गोब्राह्मणनृपस्त्रीषु सख्युर्मातुर्गुरोस्तथा । हीनप्राणजडान्धेषु सुप्तभीतोत्थितेषु च ॥ २१ ॥ मत्तोन्मत्तप्रमत्तेषु न शस्त्राणि निपातयेत् । इत्येवं गुरुभिः पूर्वमुपदिष्टं नृणां सदा ॥ २२ ॥ सोऽहमुत्क्रम्य पन्थानं शास्त्रदृष्टं सनातनम् । अमार्गेणैवमारभ्य घोरामापदमागतः ॥ २३ ॥ तामापदं घोरतरां प्रवदन्ति मनीषिणः । यदुद्यम्य महत् कृत्यं भयादपि निवर्तते ॥ २४ ॥ अशक्यञ्चैव तत् कर्तुं कर्म शक्तिबलादिह । न हि दैवाद्गरीयो वै मानुषं कर्म कथ्यते ॥ २५ ॥ मानुष्यं कुर्वतः कर्म यदि दैवान्न सिध्यति । स पथः प्रच्युतो धर्माद्विपदं प्रतिपद्यते ॥ प्रतिघातं ह्यविज्ञानं प्रवदन्ति मनीषिणः । यदा रभ्य क्रियां काञ्चिद्भयादिह निवर्तते ॥ २७ ॥ तदिदं दुष्प्रणीतेन भयं मां समुपस्थि

सब शस्त्रोंके नाशवान होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामाने आकाशको श्रीकृष्णसे पूर्णदेखा । १७ । शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कारको देखकर अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य्य के वचन को स्मरण करते बोले । १८ । कि जो पुरुष अप्रिय और परिणाम में शुभदायक मित्रोंके वचनोंको नहीं सुनताहै वह आपत्तिको पाकर ऐसे शोचता है जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके विरुद्ध कर्म्म करके जो अज्ञानी शास्त्रों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै वह धर्म्म से च्युत होनेवाला है इसहेतुसे कुमार्गमें माराजाता है । २० । गौ ब्राह्मण राजा स्त्री मित्र माता गुरु निर्बल विक्षिप्त अन्धे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदमें उन्मत्त रोगादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे । २२ । इसप्रकार पूर्वमें बड़े २ लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये सनातन मार्गको उल्लघन करके कुमार्ग से कर्मका आरम्भ करके घोर आपत्तिको पाया ।२३। बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोरकहतेहैं जोबड़े कर्म्मको आरम्भकरके भयमें मुखको फेरताहै । २४ । यहां वह कर्म्म सामर्थ्य और बलमें करने के योग्य नहीं मनुष्य का कर्म्म दैवसे बड़ा नहीं कहाजाताहै । २५ । कर्म करनेवालेका जो

remembered the words of Kripacharya and said to himself, "He who does not give ear to the unpleasant but salutary advice of his friends, falls into misery and feels remorse like myself and is destroyed by falling into bad ways Let no one lay hand on the cow, brahmin, king, woman friend, mother, preceptor, feeble, mad, blind, sleep intoxicated sick and ghost-riden 22. Thus I have set at nought the precepts of old men and have fallen into difficulty by acting against the teachings of scriptures A calamity is termed the worst by wise men, where one beginning a great work has to recede from it Here the work I have to do is not to be accomplished by physical power, for human

सम् । न हि द्रोणसुतः संख्ये निवर्तेत कथञ्चन ॥ २८ ॥ इदञ्च सुमहद्भूतं दैवदण्डमिवोद्यतम् । न चैतदभिजानामि चिन्तयन्नपि सर्वथा ॥ २९ ॥ ध्रुवं येयमधर्मेण प्रवृत्ता कलुषामतिः । तस्याः फलमिदं घोरं प्रतिघाताय दृश्यते ॥ ३० ॥ तदिदं दैवविहितं मम संख्ये निवर्तनम् । नान्यत्र दैवादुद्यन्तुमिह शक्यं कथञ्चन ॥ ३१ ॥ सोऽहमद्य महादेवं प्रपद्ये शरणं प्रभुम् । दैवदण्डमिदं घोरं स हि मे नाशयिष्यति । ३२ ॥ कपर्दिनं देवदेवमुमापतिमनामयम् । कपालमालिनं रुद्रं भगनेत्रहरं हरम् ॥ ३३ ॥ स हि देवोऽत्यगाद्देवांस्तपसा विक्रमेण च । तस्माच्छरणमभ्येमि गिरिशं शूलपाणिनम् ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि महाभूतदर्शने द्रौणिचिन्तायां षष्ठोध्यायः ६ ॥

मनुष्य कर्म दैवसे सिद्ध नहीं होताहै वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्ति को प्राप्त होताहै । २६ । ज्ञानी पुरुष प्रतिज्ञानको अविज्ञान कहते हैं जो इसलोक में किसीकार्यको प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भय मेरे सन्मुखमें नियत हुआ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामेंभी मुख फेरनेवाला नहींहुआ । २८ । और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्धहै में सब प्रकारसे विचारता हुआभी इसको नहीं जानताहूं।२९।निश्चयकरके जोमेरी यह पाप बुद्धि अधर्ममें प्रवृत्तहै उसका यह महाभयकारी फल मरणकेलिये प्रकटहै ।३० । यह मेरा युद्ध में मुखका फेरना दैवका रचाहुआ है यहां किसी दशामें भी कोई बात प्राप्त करने के योग्य नहीं । ३१ । सो मैं असमर्थ और शरणकेयोग्य महादेवजी की शरणागत होताहूं वही मेरे इस घोर दैव दण्डका नाश करेगा । ३२ । जो कि कपर्दी, देवताओं केभी देवता, उमापति, उपाधि से रहित कपालों की माला रखनेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर । ३३ । उस देवताने तप और पराक्रम से देवताओं को उल्लंघन किया इसहेतुसे मैं उस गिरीश और शूल धारी की शरणागत होताहूं ॥ ३४ ॥

work cannot supersede a divine one 25 He whose work is not blessed by God, falls from the path of virtue into misery. It is a folly in the opinion of wise men I am now in the danger of giving up my enterprise. Dronacharya's son never turned face in any battle. This glorious form is standing before me an embodiment of divine wrath, and I cannot gauge it in spite of my efforts. Surely this is the fruit of my own evil intention. 30. This defeat is ordained by god for me, and I can devise no remedy for it. I shall now seek refuge of almighty Mahadev and he will remove this divine chastisement. He is the god of gods and Har, who surpassed all the gods in asceticism and prowess. I shall therefore seek refuge of Girish the bearer of trident. 34

सञ्जय उवाच । एवं स चिन्तयित्वा तु द्रोणपुत्रो विशाम्पते । अवतीर्य रथोपस्था देवेश प्रणतः स्थितः ॥ १ ॥ द्रौणिरुवाच । उग्रं स्थाणुं शिवं रुद्रं शर्वमीशानमीश्वरम् । गिरिशं वरदं देवं भवभावनमीश्वरम् । २ ॥ शितिकण्ठमजं शुक्रं दक्षक्रतुहरं हरम् । विश्वरूपं विरूपाक्षं बहुरूपमुमापतिम् ॥ ३ ॥ श्मशानवासिनं दृप्तं महागणपतिं विभुम् । खट्वांगधारिणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारिणम् ॥ ४ । स्तुतं स्तुत्यं स्तूयमानममोघं कृत्तिवाससम् । विलोहितं नीलकण्ठमसह्यं दुर्निवारणम् ॥ ६ ॥ शुक्रं ब्रह्मसृजं ब्रह्म ब्रह्मचारिणमेव च । व्रतवन्तं तपोनिष्ठमनन्तं तपतांगतिम् ॥ ७ । बहुरूपं गणाध्यक्षं त्र्यक्षं पारिषद प्रियम् । धनाध्यक्षं क्षितिमुखं गौरीहृदयवल्लभम् ॥ ८ । कुमारपितरं पिंगं गोवृषोत्तमवाहनम् । तनुवाससमत्युग्रमुमाभूषणतत्परम् ॥ ९ ॥ परं परेभ्यः परमं परं यस्मान्न विद्यते इष्वस्त्रोत्तमभर्तारं दिगन्तं देशरक्षिणम् ॥ १० ॥ हिरण्यकवचं देवं चन्द्रमौलि

अध्याय ७ ॥

संजय बोले हे राजा वह अश्वत्थामा इसप्रकार अच्छेप्रकार विचार करके रथ के बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रता पूर्वक देवेशके सम्मुख नियत हुआ । १ । अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिन कर्म्मों में इन शिवजीको पूजन करताहूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, शर्व, ईशान, ईश्वर, गिरीश, वरद, देवभवभावन, ईश्वर । २ । शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्ष क्रतुहर, हर विश्वरूप, विरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति । ३ । श्मशानवासी, दृप्त, महागणपति, विभु खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी । ४ । स्तुत स्तुत्य स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण । ५ । इन्द्र, ब्रह्मसृज, ब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति । ६ । बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, परिषद्प्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवल्लभ । ८ । कुमारपितर, पिंग, नन्दीवाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर । ९ । परसेपरे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहीं है उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण । १० ।

CHAPTER VII

Sanjaya said, "Having reflected well, Ashwathama came down from his car and stood humbly before the god of gods. He said, "With a pure and concentrated mind, with a work difficult to be done by the ignorant, I worship the great Sthanu, Shiv, Rudra, Sharv, Ishan Ishwar, Girish, Barad, Devbhav-bhavan, Ishwar, Shitikanth, Aj, Shukra, Dakshkrituhar, Har, Vishwarup Virupaksh, Umapati, Shmashanvasi, Dript, Mahaganpati, Vibhu, Khatwangdhari, Rudra, Jatil, *Brahmchari*, Stut, Stutya, Stooyaman, Amogh, *Krativasas*, Bilohit, Nilkanth, Asahya, *Durnivaran*, Indra, *Brahm*, Bratvant, Taponishth, Anant, Taptangit, Vahurup, Ganadhyaksh, Trinetra, Parishad-priya, Dharadhyaksh, *Kshitimukh*, Gauri-hridayavallabh, *Kumarpitar*, *Ping*, Nandivahan, Tanuvasas, Atyugra, Umabhushan-

विभूषणम् । प्रपद्ये शरणं देव परमेण समाधिना ॥ ११ ॥ इमामप्यापदं घोरां तरामाद्य सुदुस्तराम् । सर्वभूतोपहारेण यक्ष्येऽहं शुचिना शुचिम् ॥ १२ ॥ इतितस्य व्यवसितं ज्ञात्वा योगात् सुकर्मणः । पुरस्तात् काञ्चनी वेदी प्रादुरासीन्महात्मनः ॥ १३ ॥ तस्यां वेद्यां तदा राजन् चित्रभानुरजायत । सदिशो विदिशः खं च ज्वालाभिरभिपूरयन् ॥ १४ ॥ दीप्तास्यनयनाश्चात्र नैकपादशिरोभुजाः । रत्नचित्राङ्गदधरा समुद्यतकरास्तथा ॥ १५ ॥ द्विपशैलप्रतीकाशाः प्रादुरासन्महागणाः । श्ववराहोष्ट्ररूपाश्च हयगोमायुगोमुखाः ॥ १६ ॥ नानावादित्रहासैश्च क्ष्वेडितैः कृष्णार्चितैः । सर्वाद्युत्तस्ते विद्रवन्त्यश्वत्थामानम भ्यपद्युः ॥ १७ ॥ संस्तुवन्तो महादेवं भा कुर्वाणा सुवर्चसः । विवर्धयिषवो द्रौणेर्महिमानं महात्मनः । जिज्ञासमानास्तत्तेज. सौप्तिकं च दिदृक्षव ॥ १८ ॥ भीमपरिघाकारशूलपट्टिशपाणय. । घोररूपा समाजग्मुर्भूतसंघा समन्ततः ॥ १९ ॥

हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव चन्द्रमौलि विभूषण ऐसे देवताके उत्तम समाधि से शरणागत होताहूं । ११ । अब जो इसघोर कठिन आपत्तिसे उत्तीर्णहोजाऊं उस दशामें उन शिवजी का मैं सर्वभूत बलि से पूजन करूंगा । १२ । उस शुभकर्मी महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्वर्णमयी वेदी प्रकटहुई । १३ । हे राजा तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुए उसने दिशा विदिशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्णकिया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्र रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबन्दधारी ऊंचा हाथ करनेवाले । १५ । द्वीप और पर्वतकेस्वरूप बड़ेगण प्रकटहुये जोकि कुत्ता बाराह और ऊंटकी सूरत घोड़े बैल और शृगाल के समान मुख रखनेवाले । १६ । सब सृष्टिको भयभीत करते बड़े प्रकाशको उत्पन्नकरते महादेवजी की स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामाके सम्मुखगये । १७ । महात्मा अश्वत्थामाकी महिमा के बढ़ानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखनेके उत्कंठित । १८ । ऐसे भयानक और उग्र प्रभाववाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुंचे । १९ । जोकि अपने दर्शनसे तीनों लोकोंके

tatpar, above all and best f a'l, possessor of go d weapons, Digait, Deshrakshin, 10. Hiranyakavach, Srishti-rakshak, Dev, Chandramauli, I bow to you with all my heart. I shall worship Shiv with the offering of my whole body, to get rid of this trouble " With these thought in the mind of that virtuous man, a gold altar stood before him. Then god Agni, appearing on that altar, illumined the sky and the directions. There also appeared glorious faces and eyes, with many feet, heads, jewelled arms upraised, 15 Huge bodies like hills and isles, having the appearances of dogs, hogs, camels, horses, oxen and jackals, terrifying all the world, diffusing light and praising Mahadev. They all came before Ashwathama, to glorify him as well as to know his strength and desirous of seeing the battle at night.

मधुमंद पे हम क्रे कै कवस्याति दधान ह । तान् महाभा घपि दृष्ट्वा न , भयं चकार महाबल ॥ २० ॥ तत स्वयेन मन्त्रेण द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । उपहारं महामात्रमुपहारमुपाहरत् ॥ २१ ॥ तं रुद्रं रौद्रकर्माणं रौद्रैः कर्मभिरच्युत । अभिष्टुत्य महात्मानमित्युवाच कृताञ्जलिः ॥ २२ ॥ द्रौणिरुवाच ॥ इममात्मानमद्याहं जातमाङ्गिरसे कुले । स्वग्नौ जुहोमि भगवन् प्रतिगृह्णीष्व मां बलिम् ॥ २३ ॥ भवद्भक्त्या महादेव परमेण समाधिना । अस्यामापदि विश्वात्मन्नुपाकुर्मि तवाग्रतः ॥ २४ ॥ त्वयि सर्वाणि भूतानि सर्वभूतेषु चासि वै । गुणानां हि प्रधानानामैकत्वं त्वयि तिष्ठति ॥ २५ ॥ सर्वभूताश्रय विभो हविर्भूतमवस्थितम् । प्रतिगृहाण मां देव यद्यशक्याः परे मया ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वा द्रौणि रास्थाय तां वेदीं दीप्तपावकाम् । संत्यक्तात्मा समारुह्य कृष्णवर्त्मन्युपाविशत् ॥ २७ ॥

भयको उत्पन्नकरें उनको देखकर महाबली अश्वत्थामाजी ने भी पीड़ा नहीं की । २० । इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेटको अर्पण किया । २१ । हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उग्र रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह वचन बोले । २२ । हे भगवन् अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्म रूपी अग्निमें हवन करताहूं मुझ बलिरूप को आप अंगीकार करिये । २३ । हे विश्वात्मन महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परम समाधि से आपके आगे अर्पण करताहूं । २४ । सबजीव आप में हैं और निश्चय करके सबजीवों में आपही हैं और आप में प्रधान गुणों की एकताभी नियतहै । २५ । हे सब जीवोंके रक्षास्थान समर्थ देवता मुझ नियत हव्य रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं । २६ । अश्वत्थामाजी यह कहकर और शरीरकी प्रीतिको त्यागकरके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशितथी चढ़कर अग्निमें प्रवेश करगये । २७ । साक्षात् भगवान महादेवजी हँसतेहुये उस ऊंचे हाथ

They bore dreadful arms and weapons and gathered there from all sides. They could terrify the three worlds with their appearances but Ashwathama remained firm there. Then glorious Ashwathama in great rage, with incantations of hymns relating to Som, offered his own body. 21 Having praised Rudra of dreadful prowess, with clasped hands, he said, " I, born in the family of Angira, offer a sacrifice of my own body. Pray accept me as such. I offer myself, with full devotion, at this time of distress. All beings live in you and you are surely within all beings. You are the seat of all virtue 25. Refuge of all beings; accept me as a victim of sacrifice, if I cannot conquer my foes." Having said this, Ashwathama gave up all love for his own body and ascended the altar of burning fire Seeing him thus enter fire with upraised arms, Shiv said to him with a smile, "I

दूर्ध्वबाहुं निश्चेष्टं दृष्ट्वा द्रविणपस्थितम् । अब्रवीद्भगवान् साक्षान्महादेवो हसन्निव ॥ २८ ॥ सत्यशौचार्जवत्यागैस्तपसा नियमेन च । क्षान्त्या भक्त्या च धृत्या च बुद्ध्या च वचसा तथा ॥ २९ ॥ यथावदहमाराद्धः कृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा । तस्मादिष्टतमः कृष्णादन्यो मम न विद्यते ॥ ३० ॥ कुर्वता तस्य सम्मानं त्वाञ्च जिज्ञासता मया । पाञ्चालाः सहसा गुप्ता मायाश्च बहुशः कृताः ॥ ३१ ॥ कृतस्तस्यैव सम्मानः पाञ्चाला रक्षता मया । अभिभूतास्तु कालेन नैषामद्यास्ति जीवितम् ॥ ३२ ॥ एवमुक्त्वा महात्मानं भगवानात्मनस्तनुम् । आविवेश ददौ चास्मै विमलं खड्गमुत्तमम् ॥ ३३ ॥ अथाविष्टो भगवता भूयो जज्वाल तेजसा । वेगवांश्चाभवद्युद्धे देवसृष्टेन तेजसा ॥ ३४ ॥ तमदृश्यानि भूतानि रक्षांसि च समाद्रवन् । अभितः शत्रुशिबिरं यान्तं साक्षादिवेश्वरम् ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि शिबिरप्रवेशे सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

बन्धनरहित इन्य रूपको नियत देखकर बोले । २८ । मैं जिसप्रकार सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी की सत्यता पवित्रता सरलता त्याग तप नियम क्षान्ति भक्ति धैर्य बुद्धि और वचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा कोई प्रिय नहीं है । ३० । हे तात तुझको जाननेके अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पांचालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी माया प्रकटकरी । ३१ । पांचालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैने उन श्रीकृष्णजी का मानकिया परन्तु अब यह पांचालदेशी काल से पराजय हुये है इससे अब इन का जीवन नहीं हैं ।३२ । भगवानने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्म्मल और उत्तम खड्ग दिया ।३३। फिर भगवान्के प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दियेहुये तेजसे युद्धमें वेगवानहुये ३४ साक्षात् ईश्वरकेसमान शत्रुके डेरे में जानेवाले उन अश्वत्थामाजीके पीछे दृष्टिसे गुप्त जीव और राक्षस चारों ओरसे चले ॥ ३५ ॥

was worshipped with the truth, holiness, straightforwardness, resignation, tap, vows, devotion, patience and wisdom of Shri Krishn, who does things with the greatest ease, and surely I hold none dearer than him. Desirous of knowing these and wishing to keep the prestige of Shri Krishn, I protected the Panchals and produced many illusions. I had regard to the prestige of Shri Krishn in protecting the Panchals. But the Panchals are conquered by Time and their days are numbered." Having said this, Bhagwan entered his body and made him the present of a good sword. Then Ashwathama became glorious like fire and endued with divine energy was ready to fight. Going like Ishwar himself into the enemy's camp, Ashwathama was followed by invisible beings and rakshases " 35.

धृतराष्ट्र उवाच । तथा प्रयाते शिविरं द्रोणपुत्रे महारथे । कच्चित् भयार्त्तौ न व्यवर्त्तताम् ॥ १ ॥ कच्चिन्न वारितौ क्षुद्रै रक्षिभिर्नोपलक्षितौ । मत्वाऽसह्यमिति मन्वानौ न निवृत्तौ महारथौ ॥ २ ॥ कच्चित्प्रमथ्य शिविरं हत्वा दुर्योधनस्य पदवीं गतौ परमिकारणे ॥ ३ ॥ पाञ्चालैर्निहतौ वीरौ कच्चिन्न क्षितौ । कच्चित्ताभ्यां कृतं कर्म तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । प्रयाते शिविरे द्रोणपुत्रे महात्मनि । कृपश्च कृतवर्मा च शिविरद्वार्यतिष्ठताम् ॥ ५ अश्वत्थामातु तौ दृष्ट्वा यत्नवन्तौ महारथौ । प्रहृष्टः शनकै राजन्निदं ॥ ६ ॥ यत्तौ भवन्तौ पर्याप्तौ सर्वक्षत्रस्य नाशने । किं पुनर्योधशेषस्य प्रसुप्तस्य । यतः ॥ ७ ॥ अहं प्रवेक्ष्ये शिविरं चरिष्यामि च कालवत् । यथा न कश्चिदपि जीवन्मुच्येत मानवः । तथा भवद्भ्यां कार्यं स्यादिति मे निश्चिता मतिः ॥ ८ ॥ इत्युक्त

॥ अध्याय ८ ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ामान कृपाचार्य और कृतवर्मा तो लोटकर नहीं चलेआये । १ । कहीं नीच रक्षकों से नहीं रोकेगये और क्या उनलोगों ने उनको नहींदेखा दोनों महारथी रात्रिके को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरेको मथकर और युद्धमें सोमक पांड को मारकर दुर्योधन की उत्तम पदवी को प्राप्तकिया । ३ । क्या वह दोनों पांचाल देशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं ! अथवा कोई उनदोनों ने कर्म भी किया है संजय वह सब मुझसे कहो ।४। संज बोले कि डेरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के द्वारपर नियतरहे । ५ । हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उनदोनों महारथियों उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकरयह वचन बोले । ६ । उपाय क आप सब क्षत्रियों के नाश करने को समर्थ हैं मुख्यकर शेष बचे और सो शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं समर्थहोगे । ७ । मैं डेरेमें प्रवेश करूंगा कालकेसमान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोईमनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता जानेपावे वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा दृढ़ विचारहै । ८ ।

CHAPTER VIII

Dhritrashtra said, " Did Kripacharya and Kritvarma turn b out of fear, when Ashwathama had entered the camp? Were they aid of the night attack and so turned back? Did they obey Duryodl by destroying the Somaks and the Pandavas in their camp? We the two warriors slain by the Panchals? Did they perform any tl If so tell it to me, Sanjaya. " 4 Sanjaya said, " Kripacharya Kritvarma kept standing at the entrance, while Ashwathama enter the camp. Seeing them thus standing, Ashwathama was mu pleased and said, ' You can destroy all the warriors by your

प्राविशत् द्रौणि पार्थानां शिविरं महत् । अद्वारेणाऽभ्यवस्कन्द्य विहाय भयमात्मनः ॥९॥ स प्रविश्य महाबाहुरुद्देशज्ञश्च तस्य ह । धृष्टद्युम्नस्य निलयं शनकैरभ्युपागमत् ॥१०॥ ते तु कृत्वा महत् कर्म श्रान्ताश्च बलवद्रणे । प्रसुप्ताश्चैव विश्वस्ताः समेत्य परिचारिताः ॥ ११ ॥ अथ प्रविश्य तद्वेश्म धृष्टद्युम्नस्य भारत । पाञ्चाल्यं शयने द्रौणिरपश्यत् सुप्तमन्तिकात् ॥ १२ ॥ क्षौमावदाते महति स्पर्द्ध्यास्तरणसंवृते । माल्यप्रवरसंयुक्ते धूपैश्चूर्णैश्च वासिते ॥ १३ ॥ तं शयानं महात्मानं विस्रब्धमकुतोभयम् । प्राबोधयत् पादेन शयनस्थं महीपते ॥ १४ ॥ संबुध्य चरणस्पर्शमुत्थाय रणदुर्मदः । अभ्यजानदमेयात्मा द्रोणपुत्रं महारथम् ॥ १५ ॥ तमुत्पतन्तं शयनादश्वत्थामा महाबलः । केशेष्वालम्ब्य पाणिभ्यां निष्पिपेष महीतले ॥ १६ ॥ स बलात्तेन निष्पिष्टः साध्वसेन च भारत । निद्रया चैव पाञ्चाल्यो नाशकच्चेष्टितुं तदा ॥ १७ ॥ तमाक्रम्य पदा राजन्

जी शरीरके भयको त्यागकर अन्यद्वारमें घुसकर पाण्डवोंके बड़े डेरे में पहुँचे ।९। *उसके स्थानोंके जाननेवाले ने सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया । १० ।* वह और सम्मुख होकर युद्धमें चारोंओर दौड़नेवाले युद्धमें महाकठिन कर्मों को करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने उस धृष्ट द्युम्न के उस स्थान में प्रवेशकरके शयनपर सोतेहुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा । १२ । हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अलसी से तैयार बहुमूल्य विस्तरोंसे युक्त बड़ी उत्तम मालाओं से अलंकृतधूप चन्दन चूरेआदि से सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को चरणघात से जगाया । १४ । युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जागकर बड़े बुद्धिमानने महारथी अश्व त्थामा को पहचाना । १५ । बड़े पराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले धृष्टद्युम्न को हाथोंसे बालों के द्वारा पकड़ कर पृथ्वी पर रगड़ा । १६ । हेभरत वंशी तब बल से उस धृष्टद्युम्नका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न भय और निद्रासे चेष्टा करने को समर्थ नहीं हुआ । १७ । हे राजा पैरोंसे उसको कण्ठ और छातीपर

---

why sha'l you be not able to slay these remaining few who are sleeping. I am about to enter the camp and to roam there like Death and I charge you not to let any one pass a'ive out of this entrance." Ashwathama fearlessly entered the camp by another way, and well acquainted with all its parts, he easily found the tent of Dhrishtadyumn. 10. All the warriors were asleep after the toils of the day. Ashwathama entered the tent of Dhrishtadyumn and viewed him from a short distance. With a kick he awakened Dhrishtadyumn who was sleeping a sound and fearless sleep on a capacious bed, soft and precious, well-decked with garlands and sandal powder. Awakening at the blow of the kick, wise and valiant Dhrishtadyumn recognized Ashwathama. He jumped up from his bed and Ashwa-

कण्ठे चोरासि चोभयोः । नदन्तं विस्फुरन्तञ्च पशुमारममारयत् ॥ १८ ॥ तुदन्नखैस्तु स द्रौणिं नातिव्यक्तमुदाहरत् । आचार्य्यपुत्र शस्त्रेण जहि मां मा चिरं कृथाः । त्वत्कृते सुकृताल्लोकान् गच्छेयं द्विपदाम्बर ॥ १९ ॥ एवमुक्त्वा तु वचनं विरराम परन्तप । सुतः पाञ्चालराजस्य आक्रान्तो बलिना भृशम् ॥ २० ॥ तस्याव्यक्तान्तु तां वाचं संश्रुत्य द्रौणिरब्रवीत् । आचार्य्यघातिनां लोकान सन्ति कुलपांसन । तस्माच्छस्त्रेण निधनं न त्वमर्हसि दुर्मते ॥ २१ ॥ एवं ब्रुवाणस्तं वीरं सिंहो मत्तमिव द्विपम् । मर्मस्वभ्यवधीत् क्रुद्धः पादाष्ठीलैः सुदारुणैः ॥ २२ ॥ तस्य वीरस्य शब्देन मार्य्यमाणस्य वेश्मनि । भूतमेवाध्यवस्यन्तो न स्म प्रव्याहरन् भयात् ॥ २३ ॥ तन्तु तेनाभ्युपायेन गमयित्वा यमक्षयम् । अध्यतिष्ठत तेजस्वी रथं प्राप्य सुदर्शनम् ॥ २४ ॥ स तस्य भवनाद्राजन् निष्क्रम्य नादयन्दिशः । रथेन शिबिरं प्रायाज्जिघांसुर्द्विषतो बली ॥२५॥

दबाकर पुकारते और चेष्टाकरने को पशुकी भांति मारा । १८ । फिर नखों से पीड़मान करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे अश्वत्थामासे कहा हे आचार्य के पुत्र मुझे शस्त्रसे मारो विलम्ब मतकरो हे द्विपादों में श्रेष्ठ मैं आपके कारण से पवित्र लोकों को पाऊं । १९ । शत्रुओंका तपानेवाला बलवान् से कठिन दबायाहुआ राजा पाञ्चालका पुत्र इस प्रकार के वचन को कहकर मौनहो गया । २० । इस के पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरे से कहेहुये वचन को सुनकर बोले हे कुलकलंकी गुरुके मारनेवाले के लोकनहीं हैं इसहेतुसे तुम शस्त्रसे मरने के योग्य नहींहो हेदुर्बुद्धी।२१ जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसीप्रकार उस वीरसे इसप्रकार कहतेहुये क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने कठिन एंड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायल किया ।२२ उस मरनेवाले वीरके शब्दों से महलमें वह स्त्रियां भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहीं बोलीं । २३ । वह तेजस्वी उस उपायसे उस वीरको यमलोकमें पहुँचा कर और सुन्दर दर्शन रथको पाकर नियतहुआ । २४ । हे राजा वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरेसे निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते शत्रुओं के मारने के अभिलाषी रथकी सवारीके द्वारा डेरेको गये । २५ । इसके ...

thama caught him by the hair of his head and brought him down on the ground. Dashed to the ground Dhrishtadyumn was unable to move out of fear and sleep. He crushed the neck and breast of the struggling and crying prince with his feet and wanted him to kill like a beast. Scratching with his nails, Dhrishtadyumn said to him gently, "kill me with a weapon, son of acharya, and make no delay so that I may attain good regions by your grace best of men!" Harassed by the enemy, the valiant Panchal prince became silent. 20. Having heard the slowly uttered words of the prince, he said "There are no good regions for despicable preceptorcides and therefore you donot deserve to die with a weapon." Having said with a

अपक्रान्ते ततस्तस्मिन् द्रोणपुत्रे महारथे सहितैः रक्षिभिः सर्वैः प्रणेदुर्योषितस्तदा २६॥ राजानं निहतं दृष्ट्वा भृशं शोकपरायणाः । व्याक्रोशन् क्षत्रियाः सर्वे धृष्टद्युम्नस्य भारत ॥ २७ ॥ तासान्तु तेन शब्देन समीपे क्षत्रियर्षभाः । क्षिप्रञ्च समनह्यन्त किमेतदिति चाब्रुवन् ॥ २८ ॥ स्त्रियस्तु राजन् वित्रस्ता भारद्वाजं निरीक्ष्य ताः । अब्रुवन् दीनकण्ठेन क्षिप्रमाद्रवतेति वै ॥ २९ ॥ राक्षसो वा मनुष्यो वा नैनं जानीमहे वयम् । हत्वा पाञ्चालराजानं रथमारुह्य तिष्ठति । ३० । ततस्ते योधमुख्याश्च सहसा पर्यवारयन् स तानापततः सर्वान् रुद्रास्त्रेण व्यपोथयत् ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नञ्च हत्वा स तांश्चैवास्य पदानुगान् । अपश्यच्छयने सुप्तमुत्तमौजसमन्तिके ॥ ३२ ॥ तमप्याक्रम्य पादेन कण्ठे चोरसि तेजसा । तथैवं मारयामास विनर्दन्तमरिन्दमम् ॥ ३३ ॥ युधामन्युश्च संप्राप्तो

महारथी अश्वत्थामाके हटजानेपर सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हे भरतवंशी राजाको मराहुआ देखकर अत्यन्तदुःखी सब क्षत्री जोकि धृष्टद्युम्नके नौकरथे पुकारे । २७ । फिर उन्हीं के शब्दों से सम्मुखही उत्तम क्षत्रिय तैयारहुवे और बोले कि यह क्या बातहै । २८ । हे राजा वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर दुःखी कंठ से बोलीं कि शीघ्रजावो । २९ । यह राक्षसहोय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं वह राजा पांचाल को मारकर रथपर नियतहै । ३० । उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारोंओरसे घेरलिया उसने उन सब वड़ाई करनेवालों को रुद्र अस्त्र से मारा । ३१ । फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्नको मारकर समीपही शयनपर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा । ३२ । उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर उस पुकारनेवाले शत्रुविजयी को उसी प्रकार से मारा । ३३ । और युधामन्यु उसको

roar, enraged Ashwathama wounded his vital parts with his hard feet. The women of the household heard the cries of the prince, but kept quiet for fear of a goblin. Having slain the brave prince he approached his car and drove in it to slay the other men of the camp. 25. At the departure of Ashwathama the women and the attendants saw Dhrishtadyumna slain and cried out for grief. The warriors awoke at their cries and asked the reason of it. The terrified women who had seen Ashwathama, said in grief, "We donot know whether he was a rakshas or man, but surely he has slain the Panchal prince and got upon his car. Make haste to slay him." Then the warriors surrounded Ashwathama on all sides and he slew them all with the weapon of Rudra. 31. Having slain Dhrishtadyumna and his followers he saw Uttamaujas sleeping hard by and slew him in the sameway by his feet. Thinking that he was slain by a rakshas, Yudhamanyu came there and wounded Ashwathama on the breast with

मत्वा तं रक्षसा हन्म । गदामुद्यम्य वेगेन हृदि द्रौणिमताडयत् ॥ ३४ ॥ तमभिद्रुत्य जग्राह क्षितौ चैनमताडयत् । विस्फुरन्तञ्च पशुवत्तथैवैनममारयत् ॥ ३५ ॥ तथा स वीरो हत्वा तं ततोऽन्यान् समुपाद्रवत् । संसुप्तानेव राजेन्द्र तत्र तत्र महारथान् ॥३६॥ स्फुरतो वेपमानांश्च शमितेव पशून्मखे । ततो निस्त्रिंशमादाय जघानान्यान् पृथग्जनान् ॥३७॥ भागशो विचरन्मार्गानसियुद्धविशारदः । तथैव गुल्मे संप्रेक्ष्य शयानान्मध्यगौल्मिकान् । आतांन्न्यस्तायुधान् सर्वान् क्षणेनैव व्यपोथयत् ॥ ३८॥ योधानश्वान् द्विपांश्चैव प्राच्छिनत् स वरासिना । रुधिरोक्षितसर्वाङ्गः कालसृष्ट इवान्तकः ॥३९॥ विस्फुरद्भिश्च तैर्द्रौणिर्निस्त्रिंशस्योद्यमेन च । आक्षेपणेन चैवासेस्त्रिधा रक्तोक्षितोऽभवत् ॥ ४० ॥ तस्य लोहितसिक्तस्य दीप्तखड्गस्य युध्यतः अमानुष इवाकारो बभौ परमभीषणः ॥ ४१ ॥

राक्षस के हाथसे मृतक मानकर आया और वेगसे गदा को उठाकर अश्वत्थामा को हृदय पर घायल किया । ३४ । गदाके आघात से घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ और उस के सम्मुख जाकर उसको भी पशुके समान मारा । ३५ । वह वीर उसको उसप्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियों की ओरगया । ३६ । क्रोधयुक्त ने समीपही पांचाल देशी वीरोंको दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसेमारा जैसे कि यज्ञमेंमारने वाला पशुओंको मारताहै । ३७ । इसके पीछे भागक्रमसे मार्गोंको घूमते खड्ग युद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक् २ अन्य लोगों को मारा इस प्रकार गुल्म नाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्त्तमान लोगों को एक क्षण भरमें मारा । ३८ । रुधिर से लिप्त सब शरीर काल सृष्टि में अन्तक के समान अश्वत्थामा ने शूरवीर घोड़े और हाथियों को मारा वह अश्वत्थामा तीनप्रकार से रुधिर में लिप्त हुये उन चेष्टा करनेवालों से खड्ग चलानेवालों से और खड्ग के कम्पायमान होनेसे । ४० । उस रुधिर से रक्त वर्ण प्रकाशित खड्ग धारी युद्ध करनेवाले बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामा का रूप अमानुष दिखाई पड़ा । ४१ । हे कौरव जो जाग उठे वह भी शब्द से अचेतहुये और

his mace. The latter did not shake with the blow of the mace and slew his adversary like a beast 35. Having slain him in this manner he proceeded towards other warriors who were sleeping. He slew the sleeping Panchals like beasts at a sacrifice. Then he entered other divisions and slew the warriors with his sword. He extirpated the armless and sleeping warriors in an instant. With his body drenched in blood and looking dreadful like death himself, he slew horses and elephants also. Bleeding from head to foot with the blood of the slain, his own wounds and the droppings of his sword, he was dreadful to behold with his drawn sword and was superhuman in appearance. Those who awoke with the noise, became insensible at the dreadful sight. Thinking him to be a rakshas, the warriors

ये त्वजाग्रत कौरव्य तेपि शब्देन मोहिताः । निरीक्ष्यमाणा अन्योन्यं द्रौणिं दृष्ट्वा प्रविव्यथुः ॥ ४२ ॥ तद्रूपं तस्य ते दृष्ट्वा क्षत्रिया शत्रुकर्षिणः । राक्षसं मन्यमानास्तं नयनानि न्यमीलयन् ॥ ४३ ॥ स घोररूपो व्यचरत् कालवच्छिबिरे ततः । अपश्यद्द्रौपदीपुत्रानवशिष्टांश्च सोमकान् ॥४४॥ तेन शब्देन वित्रस्ता धनुर्हस्ता महारथाः । धृष्टद्युम्नं हतं श्रुत्वा द्रौपदेया विशाम्पते । अवाकिरञ्छरव्रातैर्भारद्वाजमभीतवत् ॥ ४६ ॥ ततस्तेन निनादेन संप्रबुद्धाः प्रभद्रकाः । शिलीमुखैः शिखण्डी च द्रोणपुत्रं समार्दयत् ॥ ४७ ॥ भारद्वाजः स तान् दृष्ट्वा शरवर्षाणि वर्षतः । ननाद बलवन्नादं जिघांसुस्तान्महारथान् ॥४८। ततः परमसंक्रुद्धः पितुर्वधमनुस्मरन् । अवरुह्य रथोपस्थात्त्वरमाणोभिदुद्रुवे ४९ सहस्रचन्द्रं विमलं गृहीत्वा चर्म संयुगे । खड्गञ्च विपुलं दिव्यं जातरूपपरिष्कृतम् । द्रौपदेयानभिद्रुत्य खड्गेन व्यधमद्बली । ५० ततः स नरशार्दूल प्रतिविन्ध्यं महाहवे।

एक दूसरे को देखकर पीड़ावान् हुये । ४२ । उस शत्रु विजयी के उस रूपको देखकर उस को राक्षस मानते उन क्षत्रियों ने अपने नेत्रों के बन्द कर लिया । ४३ । इसके पीछे डेरेमें कालके समान घूमते हुये उस घोररूपने शेष बचे हुये द्रौपदी के पुत्र और सोमकों को देखा । ४५ । हे राजा उस शब्दसे भयभीत धनुष हाथमें लिये द्रौपदीके पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मराहुआ सुनकर निर्भय के समान बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया । ४६ । इसके पीछे उस शब्दसे प्रभद्रक नाम क्षत्रिय जागउठे शिखण्डीने शिलीमुख बाणोंसे अश्वत्थामाको पीडावान किया । ४७ । वह अश्वत्थामा बाणोंकी वर्षा करनेवाले उनवीरों को देखकर उन महारथियों को मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरणको स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसे उतर कर शीघ्रही सन्मुखगया । ४९ और युद्धमें हजार चन्द्रमाओं के चिन्होंसे चित्रित निर्मल ढालको लेकर सुवर्ण से निर्मित दिव्यखड्गको पकड़कर द्रौपदी के पुत्रोंके सन्मुख आकर बलवान्ने सबको खड्गसे घायल किया । ५० । हे राजा इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़ेयुद्धमें मित

---

shut their eyes. Roaming in the camp, he saw the sons of Draupadi and the Somaks. Terrified at the outcry and hearing that Dhrishtadyumna was slain, the sons of Draupadi came out with their weapons and fearlessly covered Ashwathama with their arrows. 46. Thus the Prabhadraks awoke at the noise and Shikhandi wounded Ashwathama with his sharp arrows. Seeing those warriors shower their arrows and desirous of slaying them, he roared with all his might, and remembering the death of his father, he at once came down from his car and faced them. He took up his many-mooned shield and bright gold-handled sword and wounded all the sons of Draupadi. 50. Then that best of men wounded Prativindhya on the side and he fell down dead on the ground. Glorious Suta m

कुक्षिदेशेऽप्यवधीद्राजन् स हतो न्यपतद्भुवि ॥ ५१ ॥ आसेन विद्धा द्रौणिन्तु सुतसोमः प्रतापवान् । पुनश्चासिं समुद्यम्य द्रोणपुत्रमुपाद्रवत् ॥ ५२ ॥ सुतसोमस्य सासिं तं बाहुं छित्वा नरर्षभः । पुनश्चाहनत् पार्श्वे स भिन्नहृदयोऽपतत् ॥ ५३ ॥ नाकुलिस्तु शतानीको रथचक्रेण वीर्यवान् । दोर्भ्यां तु क्षिप्य वेगेन वक्षस्यमुमताडयत् ॥ ५४ ॥ अताडयच्छतानीकं मुक्तचक्रं द्विजस्तु सः । स विह्वलो ययौ भूमिं ततोऽस्यापाहरच्छिरः ॥ ५५ ॥ श्रुतकर्मा तु परिघं गृहीत्वा समताडयत् । अभिद्रुत्य ययौ द्रौणिं सव्ये स फलके भृशम् ॥ ५६ ॥ स तु तं श्रुतकर्माणमास्ये जघ्ने वरासिना । स हतो न्यपतद्भूमौ विमूढो विकृताननः ॥ ५७ ॥ तेन शब्देन वीरस्तु श्रुतकीर्तिर्महारथः । अश्वत्थामानमासाद्य शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ५८ ॥ तस्यापि शरवर्षाणि चर्मणा प्रतिवार्य सः । सकुण्डलं शिरः कायाद्भ्राजमानमपाहरत् ॥ ५९ ॥ ततो भीष्मनिहन्तारं सह सर्वैः प्रभद्रकैः । अहनत्सर्वतो

...को कुक्षि स्थानपर घायल किया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ा । ५१ । तत्पश्चात् सुतसोम खड्गसे अश्वत्थामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्थामा के सम्मुख गया ।५२। नरोत्तम अश्वत्थामा ने सुतसोम की भुजाको खड्ग समेत काट कर कुक्षिपर घायल किया वह भी टूटाहृदय होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५३ । फिर नकुलके पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथ चक्रको दोनों भुजाओं से घुमाकर वेगसे उसकी छातीपर घायलकिया । ५४ । फिर उस ब्राह्मणने चक्र छोड़ने वाले शतानीक का घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उसके शिर को काटा । ५५ । फिर श्रुतकर्मा परिघको लेकर और दौड़कर अश्वत्थामा के सम्मुख गया और ढालसे युक्तवाम कुक्षिपर कठिन घायलकिया । ५६ फिर उस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्माको मुखपर घायलकिया वह रूपान्तर और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५७ । फिर उसके शब्दसे महारथी श्रुतकीर्त्ति ने अश्वत्थामा को पाकर बाणोंकी वर्षासे ढकदिया । ५८ । उस अश्वत्थामाने उस की बाणवृष्टिको ढालपर रोककर कुण्डलधारी प्रकाशित शिरको शरीरसे जुदा

pierced Ashwathama with a prass and faced him with the drawn sword. But he cut down his sworded arm and wounded him on the rib, making him fall down with the wound. Then Nakul's son, glorious Shatanik hurled a car wheel with both hands and hit him on the breast, but the brahman slew Shatanik also. 55. Then Shrut karma faced him with a club and hit him hard on the left side. Ashwathama wounded him on the face and he fell down on earth disfigured and senseless. Shrutkarma then sent forth a shower of arrows on Ashwathama, but the latter took it on the shield and severed his adversary's glorious head, decked with ear-rings, from the body. Then with various weapons he wounded Shikhandi and the Prabhadrakas and pierced the former between the two eye brows with sharp arrows.

र नानाप्रहरणैर्वीरं शिखण्डिनमुपाद्रवत्। शिखण्डिनं समासाद्य सर्वतः शितैः शरैः भर्त्सयन्तं ... ॥ ६० ॥ स तु क्रोधसमाविष्टो द्रोणपुत्रो महाबलः। शिखण्डिनं समासाद्य द्विधा चिच्छेद सोऽसिना ॥ ६१ ॥ शिखण्डिनं ततो हत्वा क्रोधाविष्टः परन्तपः। प्रभद्रकगणान् सर्वानभिदुद्राव वेगवान्। यच्च शिष्टं विराटस्य बलं तच्च समाद्रवत् ॥ ६२ ॥ द्रुपदस्य च पुत्राणां पौत्राणां सुहृदामपि। चकार कदनं घोरं दृष्ट्वा दृष्ट्वा महाबलः ॥ ६३ ॥ अन्यानन्यांश्च पुरुषानभिसृत्याभिसृत्य च। न्यकृन्तदसिना द्रौणिरसिमार्गविशारदः ॥ ६४ ॥ कालीं रक्तास्यनयनां रक्तमाल्यानुलेपनाम्। रक्ताम्बरधरामेकां पाशहस्तां कुटुम्बिनीम् ॥ ६५ ॥ ददृशुः कालरात्रिं ते गायमानामवस्थिताम्। नराश्वकुञ्जरान् पाशैर्बद्ध्वा घोरैः प्रतस्थुषीम् ॥ ६६ ॥ हरन्तीं विविधान् प्रेतान् पाशबद्धान् विमूर्द्धजान्। तथैव च सदा राजन् न्यस्तशस्त्रान् महारथान् ॥ ६७ ॥ स्वप्ने सुप्तान्नयन्तीं तां रात्रिष्वन्यासु मारिष।

। ५९ । उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकार के शस्त्रों के द्वारा वीर शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायल किया उस शिखण्डी ने पूनरे शिलीमुखसे दोनों भ्रकुटियों के मध्यमें घायलकिया । ६० । फिर क्रोधसेपूर्ण उस बड़ेबलवान् अश्वत्थामा ने शिखण्डी को पाकर खड्गसे दोखण्ड करदिया । ६१। फिर क्रोधसे युक्त शत्रुओंका तपानेवाला उस बड़े वेगवान शिखण्डी का मारकर प्रभद्रकों के सब समूहों के सन्मुख गया और राजा विराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी दौड़ाई करनेवाला हुआ । ६२ । बड़े बलवान् ने देख देखकर द्रुपदके पुत्र पौत्र और मित्रों काभी घोर नाशकिया । ६३ । खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामाने अन्य लोगों कोभी सन्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा । ६४ । उनलोगों ने रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसे अलंकृत लाल पोशाकधारी पाशहाथमें लड़के आदिक रखनेवाली अकेलीकाली । ६५ । गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हे राजा मनुष्य घोड़े और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप । ६६ । बालों के पृथक् पाशों में बँधेहुये बहुतप्रकारके मृतकों के लेजानेवाली और इसी प्रकार अन्य रात्रियों में । ६७ । स्वप्नावस्था में सदैव पेतलाइ सोतेहुये महारथियों

60. Then in his rage, he cut Sikhandi into two with his sword. Having slain him, he faced the Prabhadrakas and attacked the remnant of the Panchal warriors. He selected the sons and grand sons of Drupad from among them and destroyed them with great force. Clever in sword-manship, he cut them down with his sword. They saw the black Death with red eyes, red garlands, adorned with sandal and red dress, noose in hand and accompanied by her offspring singing songs. The warriors had oft n seen her in their dreams, carrying the dead warriors and beasts in her noose and accompanied by Aswatthama. They had seen the beginning of the warfare on her accompanied by Ashwatthama in their dreams. With leonine roars

ऊरुस्तम्भ गृहीताश्च कश्मलाभिहतौजसः । विनदन्तो भृशं त्रस्ताः समासीदन् परस्परम् ॥ ७८ ॥ ततो रथं पुनर्द्रौणिरास्थितो भीमनिस्वनम् । धनुष्पाणिः शरैरन्यान् प्रैषयद्वै यमक्षयम् ॥ ७९ ॥ पुनरुत्पततश्चापि दूरादपि नरोत्तमान् । शूरान् संपततश्चान्यान् कालरात्र्यै न्यवेदयत् ॥ ८० ॥ तथैव स्यन्दनाग्रेण प्रमथन् स विधावति । शरवर्षैश्च विविधैरवर्षच्छात्रवांस्ततः ॥ ८१ ॥ पुनश्च सुविचित्रेण शतचन्द्रेण चर्मणा ॥ तेन चाकाशवर्णेन तदाचरत् सोऽसिना ॥ ८२ ॥ तथा स शिबिरं तेषां द्रौणिराहवदुर्मदः । व्यक्षोभयत राजेन्द्र महाह्रदमिव द्विपः ॥ ८३ ॥ उत्पेतुस्तेन शब्देन योधा राजन् विचेतसः । निद्रार्ताश्च भयार्ताश्च व्यधावन्त ततस्ततः ॥ ८४ ॥ विस्वरं चुक्रुशुश्चान्ये बह्वबद्धं तथावदन् । न च स्म प्रत्यपद्यन्त शस्त्राणि वसनानि च ॥ ८५ ॥ विमुक्तकेशाश्चाप्यन्ये नाभ्यजानन् परस्परम् । उत्पतन्तोऽपतञ्छ्रान्ताः केचित्तत्र भ्रमंस्तथा ॥ ८६ ॥

स पीड़ावान हुये ।७८। इस के पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामा ने भयकारी रथपर सवार हो कर बाणोंसे अन्य मनुष्यों को भी यमलोक में पहुंचाया । ७९ । फिर दूर से उछलतेहुए नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरोंकोभी कालरात्रि के आधीनकिया इसी प्रकार रथकी नोकसे मथता हुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकार की बाणवृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करने लगा । ८१ । फिर बड़ी विचित्र सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाशवर्ण खड्ग के द्वारा भ्रमण करनेलगा । ८२। हे राजेन्द्र उस युद्धमें दुर्मद अश्वत्थामाने उन्हों के डेरेको भी ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि हाथी बड़े ह्रदको करदेता है । ८३ । हेराजा इस शब्दसे अचेत शूरवीर उठे और निद्रा और भयसे पीड़ावान होकेर इधरउधर को दौड़े । ८४ । इसीप्रकार असभ्य वचन कहतेहुये अन्यलोग बड़े शब्दसे पुकारे और शस्त्र और वस्त्रोंको नहीं पाया । ८५ । बहुत से खुलेहुये बालवाले मनुष्योंने परस्पर नहीं पहचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य थककर गिरपड़े और कितनेही भ्रमण करनेलगे । ८६ । कितनेही लोगोंने विष्ठाकोछोड़ा

---

people hid themselves here and there. We too, were terrified and riveted to the spot where we stood Then Ashwathama slew other warriors with the arrows shot from his car. He slew those whom he saw coming near. 80. He ran his car among them, showering arrows and crushing them under wheels Then he roamed with his shield studded with suns and moons, carrying the bright sword in his hand He upset their camp as an elephant does a lake. The warriors awoke with the noise and ran away here and there in their sleep and fear Others uttered obscene words, but could not get their arms and armour in the hurry of the moment. 85. Others with dishevelled hair did not know one another. Some fell down with exhaustion, while others ran here and there. Some dropped urine Elephants

श्वशुर्गोघमुख्यास्ते प्रन्तं द्रौणिञ्च सर्वदा ॥ ६८ ॥ यतः प्रभृति संग्रामः कुरुपाण्डव सेनयोः। ततः प्रभृति तां कन्यामपश्यन् द्रौणिमेव च ॥ ६९ ॥ तांस्तु दैवहतान् पूर्व पश्चाद्द्रौणिर्न्यपातयत् । त्रासयन् सर्वभूतानि विनदन् भैरवान्रवान् ॥ ७० ॥ तदनु स्मृत्य ते वीरा दर्शनं पूर्वकालिकम् । इदं तदित्यमन्यन्त दैवेनोपनिपीडिताः ॥ ७१ ॥ ततस्तेन निनादेन प्रत्यबुध्यन्त धन्विनः । शिबिरे पाण्डवेयानां शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ७२ ॥ सोऽच्छिनत् कस्यचित् पादौ जघनं चैव कस्यचित् । कांश्चिद्भित्वा पार्श्वेषु कालसृष्ट इवान्तकः ॥ ७३ ॥ अत्युग्रप्रतिपिष्टैश्च नदद्भिश्च भृशातुरैः। गजाश्वमथितैश्चान्यैर्मही कीर्णाभवत् प्रभो ॥ ७४ ॥ क्रोशतां किमिदं कोऽयं किं शब्दः किन्नु किं कृतम् । एवं तेषां तदा द्रौणिरन्तकः समपद्यत ॥ ७५ ॥ अपेतशस्त्रसन्नाहान् संरब्धान् पाण्डुसृञ्जयान् । प्राहिणोन्मृत्युलोकाय द्रौणिः प्रहरतां वरः ॥७६॥ ततस्तच्छस्त्रवित्रस्ता उत्पतन्तो भयातुराः । निद्रान्धा नष्टसंज्ञाश्च तत्र तत्र निलिल्यिरे ॥ ७७ ॥

लेजानेवाली उस कालीको और उस मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूरवीरों ने सदैव देखा ॥ ६८ ॥ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ तबसे लेकर उस कन्याको औरअश्वत्थामा को स्वप्न में देखा । ६९ । युद्धमें सब जीवधारियों को डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामा ने प्रथम दैव से हतेहुये उन लोगोंको पीछे से गिराया । ७० । दैवसे पीड़ित उन वीरोंने उसपूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरणकरके माना कि यह वही बातहै । ७१ । पीछे पाण्डवोंके डेरेमें वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७२ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंको काटा किसी जंघन को और कितने ही को काँखपर छेदा । ७३ । हे प्रभु कठिन मर्दन कियेहुये शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ों से मथेहुये अन्य मनुष्यों से वह पृथ्वी आच्छादित होगई । ७४ । जो लोग कि इसप्रकार से पुकारते थे कि यह क्याहै कौनहै कैसाशब्द होरहाहै उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृंजीलोग जो कि शस्त्र और कवचों से रहित थे उनकोभी यमलोकमें भेजा । ७६ । इस के पीछे उस शस्त्र से भयभीत उछलते और भयसे पीड़ावान् निद्रासे अंधे अचेतहोकर वहलोग जहां तहां गुप्त होगये । ७७ । और ऊरुस्तम्भ मूर्छासे निर्बल भयभीत कठोर शब्द करते

Ashwathama slew the warriors whose days were numbered 70 The warriors, afflicted by Fate, remembered their dreams and realised them. Then hundreds and thousands of archers awoke in the Pandav camp with that noise, but Ashwathama, like an embodiment of Death, cut their feet, thighs and ribs The ground was covered with the shrieking mad elephants and corpses of men crushed by elephants' and horses Ashwathama slew the Srinjis and other allies of the Pandavas who were asking in wonder, "Who is it? What is this noise for?" Then afraid of the weapons and blind with sleep

अघ्नन् स्थानेव तत्रैव कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्त्वा द्वाराणि च द्वाःस्थास्तथा गुल्मानि गौल्मिकाः । प्राद्रवन्त यथाशक्ति कान्दिशीका विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रनष्टाश्च तेऽन्योन्यं नाजानन्त तथा विभो । क्रोशन्तस्तात पुत्रेति दैवोपहतचेतसः ॥ ९८ ॥ पलायतां दिशस्तेषां स्वानप्युत्सृज्य बान्धवान् । गोत्रनामभिरन्योन्यमाक्रन्दन्त ततो जनाः ॥ ९९ ॥ हाहाकारञ्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरते परे । तान् बुद्ध्वा रणमत्तोऽसौ द्रोणपुत्रो न्यपातयत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे वध्यमाना मुहुर्मुहुरचेतसः । शिबिरान्निष्पतन्ति स्म क्षत्रिया भयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च निष्पततस्त्रस्ताञ्छिबिराज्जीवितैषिणः । कृतवर्मा कृपश्चैव द्वारदेशे निजघ्नतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रयन्त्रकवचान्मुक्तकेशान् कृताञ्जलीन् । वेपमानान् क्षितौ भीतान्नैव कांश्चिदमुञ्चताम् ॥ १०३ ॥ नामुच्यत तयोः कश्चिन्निष्क्रान्तः शिबिराद्बहिः । कृपस्य च महाराज हार्दिक्यस्य च दुर्मतेः ॥ १०४ ॥ भूयश्चैव

अन्धकारसे घिरे और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा । ९६ । इसीप्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मवाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत होकर सामर्थ के अनुसार भागे । ९७। और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहँचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन लोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । ९९ । और कितने ही हाहाकार कर के पृथ्वीपर गिरपड़े इस अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका । १०० । और बहुत से क्षत्रिय वारंवार घायल और अचेत और भयसे पीड़वान् होकर डेरे बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान डेरे से निकलने वालों को कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा । १०२ । जिनके यन्त्र और कवच गिर पड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ । उनमेंसे किसीकोभी नहीं छोड़ा डेरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उनदोनोंके हाथसे बचकर नहीं गया हे महाराज अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts and ran away with all their might. They destroyed one another without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions and called out for fathers and sons in confusion. They announced their clans and names. Some fell down on earth with cries of dismay and Ashwathama checked them in their flight. 100. Many warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors, destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands, lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to scape from the camp for their lives, were able to scape from Kripacharya and Kritvarma. To please Ashwathama, they set fire to camp from

पुरीषमसृजन् केचित् केचिन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः । बन्धनानि च राजेन्द्र संछिद्य तुरग
द्विपाः ॥ ८७ ॥ समं पर्यपतंश्चान्ये कुर्वन्तो महदाकुलम् । तत्र केचिन्नरा भीता व्यल
यन्त महीतले । तथैव तान्निपतितानपिंषन् गजवाजिनः ॥ ८८ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमा
रक्षांसि पुरुषर्षभ । हृष्टानि व्यनदन्नुच्चैर्मुदा भरतसत्तम ॥८९॥ स शब्दः पूरितो राज
भूतसंघैर्मुदायुतैः । अपूरयद्दिशः सर्वा दिवञ्चातिमहास्वनः ॥ ९० । तेषामार्तस्वरं श्रुत्व
वित्रस्ता गजवाजिनः । मुक्ताः पर्यपतन्राजन् मृद्नन्तःशिविरे जनान् ॥ ९१ ॥
परिधावद्भिश्चरणोदीरितं रजः । अकरोच्छिबिरे तेषां रजन्यां द्विगुणं तमः ॥ ९२
तस्मिंस्तमसि सञ्जाते प्रमूढाः शिविरे जनाः । नाजानन् पितरः पुत्रान् भ्रातॄन् भ्रा
तथैव ॥ ९३ ॥ गजा गजानतिक्रम्य निर्मनुष्यान् हया हयान् । अताडयंस्तथाभञ्जंस्त
थामृद्नंश्च भारत ॥ ९४ ॥ ते भग्नाः प्रपतन्तिस्म निघ्नन्तश्च परस्परम् ।
न्यपातयन् पातयित्वा तदापिषन् ॥ ९५ ॥ विचेतसः सनिद्राश्च तमसा चावृतान

कितनोंही मूत्रका करदिया हे राजेन्द्र हाथीघोड़े बन्धनोंको तोड़कर । ८७ ।
ओरको दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवालेहुये वहांकितनेही
आदमी पृथ्वीपर सोगये उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोड़ों ने
किया । ८८ । हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उस नाशके वर्तमान होनेपर
लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे गर्जे । ८९ । हे राजा प्रसन्नचित्त जीवोंके
से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया उसबड़े शब्दने सबदिशा और
पूर्णकिया । ९० । उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और बन्धनोंसे
हाथीघोड़े डेरेमें मनुष्यों को खूंदते मर्दन करते चारोंओर को दौड़े । ९१ । वहांउन
चारोंओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूलने रात्रिकेसमय उन्होंके डेरोंमें दू
अन्धकारको उत्पन्न किया । ९२ । उस अन्धकार के उत्पन्न होनेपर मनुष्य
ओरसे अज्ञान हुये पिताओंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयों ने भाइयों को.
। ९३ । हाथियों ने हाथियोंको सवारों से रहित घोड़ोंने घोड़ोंकोदबाकर
और टूटे अंगकिया उसीप्रकार मर्दन करते परस्पर मारतेहुये बहुतसे घायल
पड़े इसीप्रकार अन्योंको भी गिराकर मर्दन किया । ९५ । अचेत निद्रासे

and horses broke their ropes and ran in all directions. Some
lay on earth out of fear and were crushed down by elephants
horses. During that destruction the rakshases roared di...
There was a hubbub all round and the noise spread through
directions: 90. At the sounds of their wailings, elephants and
broke their ropes and ran away crushing and trampling the men
their way. The dust raised by their feet made the night ...
dark People lost their senses in that darkness: fathers did not kn
their sons and brothers did not recognise brothers. ...
wounded elephants and the riderless horses wounded and
horses. 95. Insensible with sleep and darkness, they slew

अघ्नन् स्थानेषु तत्रैव कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्त्वा द्वाराणि च द्वास्थास्तथा गुल्मानि गौल्मिकाः । प्राद्रवन्त यथाशक्ति कान्दिशीका विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रनष्टा श्च तेऽन्योन्यं नाजानन्त तदा विभो । क्रोशन्तस्तात पुत्रेति दैवोपहतचेतसः ॥ ९८ ॥ पलायतां दिशस्तेषां तानप्युत्सृज्य बान्धवान् । गोत्रनामभिरन्योन्यमाक्रन्दन्त ततो जनाः ॥ ९९ ॥ हाहाकारञ्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरते परे । तान् बुद्ध्वा रणमत्तोऽसौ द्रोणपुत्रो व्यपोथयत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे वध्यमाना मुहुर्मुहुरचेतसः । शिबिरान्निष्पतन्ति स्म क्षत्रिया भयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च निष्पततस्त्रस्ताञ्छिबिराज्जीवितैषिणः । कृतवर्मा कृपश्चैव द्वारदेशे निजघ्नतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रयन्त्रकवचान्मुक्तकेशान् कृताञ्जलीन् । वेपमानान् क्षितौ भीतान्नैव कांश्चिदमुञ्चताम् ॥ १०३ ॥ नामुच्यत तयोः कश्चिन्निष्क्रान्तः शिबिराद्बहिः । कृपस्य च महाराज हार्दिक्यस्य च दुर्मतेः ॥ १०४ ॥ भूयश्चैव

अन्धकारसे घिरे और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा । ९६ । इसीप्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मवाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत होकर सामर्थ्य के अनुसार भागे । ९७। और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहँचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन लोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । ९९ । और कितने ही हाहाकार कर के पृथ्वीपर गिरपड़े इस अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका । १०० । और बहुत से क्षत्रिय बारंबार घायल और अचेत और भयसे पीड़वान् होकर डेरे बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान डेरे से निकलने वालों को कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा । १०२ । जिनके यन्त्र और कवच गिर पड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ । उनमेंसे किसीकोभी नहीं छोड़ा डेरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उनदोनोंके हाथसे बचकर नहीं गया हे महाराज अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts and ran away with all their might. They destroyed one another without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions and called out for fathers and sons in confusion. They announced their clans and names. Some fell down on earth with cries of dismay and Ashwathama checked them in their flight. 100. Many warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors, destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands, lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to scape from the camp for their lives, were able to scape from Kripacharya and Kritvarma To please Ashwathama, they set fire to camp from

[illegible] द्रोणपुत्रस्य [illegible] दददुः शिबिरस्य हुताशनम् ॥ १०५ ॥ ततः प्रकाशे शिबिरे खड्गेन पितृनन्दनः। अश्वत्थामा [illegible] ॥ १०६ ॥ [illegible] खड्गेन [illegible] ॥ १०७ ॥ कांश्चिद्योधान् स खड्गेन मध्ये संछिद्य वीर्यवान्। अपातयद्द्रोणपुत्रः संरब्धस्तिलकाण्डवत् ॥ १०८ ॥ विनदद्भिर्भृशायस्तैर्नराश्वद्विरदोत्तमैः। पतितैरभवत् कीर्णा मेदिनी भरतर्षभ ॥ १०९ ॥ मानुषाणां सहस्रेषु हतेषु पतितेषु च। उदतिष्ठन् कबन्धानि बहून्युत्थाय चापतन् ॥ ११० ॥ सायुधान् साङ्गदान् बाहून्विचकर्त्त शिरांसि च। हस्तिहस्तोपमानूरून् हस्तान् पादांश्च भारत ॥ १११ ॥ पृष्ठच्छिन्नान् शिरश्छिन्नान् पार्श्वच्छिन्नांस्तथा परान्। स महात्मा करोद्द्रौणिः कांश्चिच्चापि पराङ्मुखान् ॥ ११२ ॥ मध्यदेशे नरानन्यांश्चिच्छेद

कृपाचार्य और दुर्बुद्धी कृतवर्माने डेरोंके तीनोंओर अग्निलगादी । १०५ । फिर डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होनेपर पिताको प्रसन्न करनेवाला, अश्वत्थामा हस्तलाघवोंके समान खड्गको लेकर घूमनेलगा । १०६ । कितनेही आनेवाले और दौड़नेवाले वीरोंको खड्गकेद्वारा प्राणोंसे रहितकिया और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वत्थामा ने कितनेही शूरवीरों को खड्गके द्वारा मध्यसे काटकर क्रोध युक्तने तिलकाण्ड के समान गिराया । १०८ । हे भरतर्षभ अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियों से पृथ्वी आच्छादितहुई ।१०९। हजारों मनुष्यों के मरने और गिरने पर बहुत धड़ उठे और उठकर गिरपड़े । ११० । शस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओं समेत शिरको काटा और हाथीकी सूंडके समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा । १११। हे भारतवंशी टूटी पीठकुक्षि और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया उस महात्मा अश्वत्थामा ने कितने ही मनुष्यों को मुखफेरनेवाला किया । ११२ । किसीको कान से स्थानपर औरकिसी को कटिस्थानपर काटा किसी को कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर में प्रवेश किया । ११३ । इसप्रकार उस के घूमने और बहुत आदियों को मारते

all sides. 105 When the camp was thus illumined, Ashwathama the joy of his father roamed dexterously with his sword. He killed the coming and running warriors with his sword. He cut some in the middle and others into piecemeal. The ground was covered with men and beasts, wounded, crying and falling down. At the fall of thousands of men, headless bodies rose and fell down again. 110. He cut down the jewelled hands and heads as well as thighs like the trunks of elephants and hands and feet. He cut asunder the backs, sides and heads of others. Many warriors turned back from Ashwathama. He cut the ears and trunks of some and wounded others on the shoulders making their heads enter their bodies. While he was thus roaming and killing, the night became dreadful to behold. The

वाम्यांश्च कर्णनः। अस्वदेशो नि हत्य न्यान कार्येप्राविशयन्छरः॥११३ पद्य विचरस्तस्य निघ्नतः सुबहुस्वराव् । तमसा त्वमी घोरा बभौ दारुणदर्शना ॥ ११४॥ किञ्चित् प्राणाश्च पुरुषैर्हतैश्चाश्वैः सहस्रशः । बहुभ्यश्च ... ॥ ११५ ॥ यक्षरक्षः सम कीर्णे रथाश्वद्विपदारुणे । क्रुद्धेन द्रोणपुत्रेण संछिन्नाः प्रापतन् भुवि ॥ ११६ ॥ मातृनन्ये पितृनन्ये पुत्रानन्ये ... कृतं यन्नः ॥११७॥ यत्कृतं तत्प्रसुप्तानां रक्षोभिः क्रूरकर्मभिः असान्निध्याद्धि पार्थानामिदं न कदनं कृतम् ॥ ११८ ॥ न देवासुरगन्धर्वैर्नयक्षैर्न च राक्षसैः । शक्यो विजेतुं कौन्तेयो गोप्ता यस्य जनार्दनः ॥ ११९ ॥ ब्रह्मण्यः सत्यवाग्दान्तः सर्वभूतानुकम्पकः । न च सुप्तं प्रमत्तं वा न्यस्तशस्त्रं कृताञ्जलिम् । धावन्तं मुक्तकेशं वा हन्ति पार्थो धनञ्जयः ॥१२० ॥ तदिदं नः कृतं घोरं रक्षोभिः क्रूरकर्मभिः । इति लालप्यमानाः स्म शेरते बहवो जनाः ॥ १२१॥ स्तनतां च मनुष्याणामपरेषां च कूजताम् । ततो मुहूर्तात् ... शब्दस्तुमुलो

हुवे अन्धकार से वह रात्रि घोर रूप महाभयानक दर्शन देखनेमें आई । ११४ । कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ मृतक हजारों मनुष्य हाथी और घोड़ोंसे पृथ्वी भया नकरूप देखनेमें आई । ११५ । यक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियोंसे भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर क्रोधयुक्त अश्वत्थामाके हाथसे घायल होकर पृथ्वी पर गिरपड़े । ११६ । कोई भाइयों को कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारते थे और कितने ही बोले कि यह क्रोधयुक्त धृतराष्ट्रके पुत्रोंने भी वह कर्म कियाथा जो कि निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेवालों के साथ कियाहै पांडवों के वर्तमान न होने से यह हमारा नाशकिया । ११८ । वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्ष और राक्षस से भी विजय करनेके योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजीहैं । ११९ वह अर्जुन वेद ब्राह्मणों का रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियोंपर कृपाकरनेवाला है वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और भागनेवाले मनुष्योंको नहीं मारताहै । १२० । निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाशकिया इसप्रकार विलाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये । १२ ।

ground looked dreadful with the dying and dead men and beasts, 115 Full of yakshes, rakshases, cars, horses and elephants, cut down by Ashwathama the ground was dreadful to behold Some called out their brothers, fathers and sons, while others said, " The rakshases have done the same with the sleepers as the sons of Dhritrashtra did in daylight in the presence of the Pandavas. Having Shri Krishn for his protector, Arjun is invincible by asuras, gandharvas, yakshes and rakshases. Arjun is the protector of the Vedas and brahmans has control over his organs and is merciful to all beings. He does not slay the sleeping mad and weaponless, nor those who seek refuge with dishevelled hair and joined hands. 120. The cruel

महान् । १२२ ॥ शोणितव्यतिषिक्तायां वसुधायाञ्च भूमिप । तद्रजस्तुमुलं घोरं क्षणेनांतरधीयत ॥ १२३ । संवेष्टमानानुद्विग्नान्निरुत्साहान्सहस्रशः । न्यपातयन्नरान् क्रुद्धः पशून् पशुपतिर्यथा ॥ १२४ ॥ अन्योन्यं संपरिष्वज्य शयानान् द्रवतोऽपरान् । संलीनान् युध्यमानांश्च सर्वान् द्रौणिरपोथयत ॥ १२५ ॥ दह्यमानान् हुताशेन वध्यमानांश्च तेन ते । परस्परं तदा योधाननयद्यमसादनम् ॥ १२६ ॥ तस्या रजन्यास्त्वर्द्धेन पाण्डवानां महद्बलम् । गमयामास राजेन्द्र द्रौणिर्यमनिवेशनम् ॥ १२७ । निशाचराणां सत्वानां रात्रिः सा हर्षवर्द्धिनी । आसीन्नरगजाश्वानां रात्री क्षयकरी भृशम् ॥१२८ ॥ तत्रादृश्यन्त रक्षांसि पिशाचाश्च पृथग्विधाः । खादन्तो नरमांसानि पिबन्तः शोणितानि च ॥ १२९ ॥ कराला पिङ्गला रौद्राः शैलदन्ता रजस्वलाः । जटिला दीर्घसक्थाश्च पञ्चपादा महोदराः । १३० ॥ पश्चादङ्गुलयो रूक्षा विरूपा भैरवस्वनाः ।

इसकेपीछे एक मुहूर्त्तमेंही पुकारते और गर्जतेहुये अन्य मनुष्यों का वह बहुतबड़ा शब्द बन्दहोगया । १२२ । हे राजा रुधिरसे पृथ्वीके अच्छेप्रकार तरहोनेपर वह घोर और कठिनधूल एकक्षणमेंही दूरहोगई । १२३ । उसक्रोधयुक्तने चेष्टाकरनेवाले व्याकुल और उत्साहसे रहित हजारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसे कि पशुओं को रुद्रजी गिराते हैं । १२४ । उस अश्वत्थामाने पृथ्वीपर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागनेवालों को और छिपनेही युद्धकरनेवालों को अत्यन्त मारडाला । १२५ । तब अग्निसे जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन शूरवीरों ने परस्पर यमलोकमें पहुँचाया । १२६ । हेराजा अश्वत्थामाने उसरात्रि के अर्द्धभागमें पाण्डवों की बड़ी सेनाको यमलोक में पहुँचाया । १२७ । वह रात्रि राक्षसों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्नकरने वाली होकर महाकठिन नाशकारी हुई । १२८ । वहां पृथक् २ प्रकार के पिशाच राक्षस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिर को पीतेहुये दिखाई पड़े । १२९ । जोकि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूलसे लिप्त जटाधारी लम्बे शङ्ख पांच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले । १३० । पीछेकी ओर उँगलियां रखने

rakshases have destroyed us." Thus crying and lamenting, many warriors lay on earth. After some time, the noise of men and beasts subsided and the ground being well drenched with blood, the storm of dust had disappeared. Enraged Ashwathama had slain thousands of warriors as Rudra does beasts. He extirpated the men fallen on the ground as well as those who were running away or fighting from a hiding place. 125. Burning by fire and wounded by Ashwathaman, the brave warriors slew one another. Ashwathama destroyed the great Pandav army during that midnight which gave pleasure to rakshases and fear and destruction to men and beasts. Pishaches and rakshases were seen eating the flesh of men and drink-

घण्टाजालानवद्धाश्च नीलकण्ठा विभीषणाः ॥ १३१ ॥ सपुत्रदाराः सक्रूराः सुदुर्दृशाः । सुनिर्घृणाः । विविधानि च रूपाणि तत्राहृश्यन्त रक्षसाम् ॥ १३२॥ पीत्वा च शोणितं हृष्टाः प्रानृत्यन् गणशः परे । इदं परमिदं मेध्यमिदं स्वादिति चाब्रुवन् ॥ १३३ ॥ मेदो मज्जास्थिरक्तानां वसानाञ्च भृशं स्थिताः । परमांसानि खादन्तः क्रव्यादा मांसजीविनः ॥ १३४ ॥ वसाश्चैवापरे पीत्वा पर्यधावन् विकुक्षिकाः । नानावक्त्रास्तथा रौद्राः क्रव्यादाः पिशिताशिनः । १३५ ॥ अयुतानि च तत्रासन्प्रयुतान्यर्बुदानि च । रक्षसां घोररूपाणां महतां क्रूरकर्मणाम् ॥ १३६ ॥ मुदितानां वितृप्तानां तस्मिन्महति वैशसे । समेतानि बहून्यासन् भूतानि च जनाधिप ॥ १३७ ॥ प्रत्यूषकाले शिविरात् प्रतिगन्तुमियेष सः ॥ १३८॥ नृशोणितावसिक्तस्य द्रौणेरासीदसित्सरुः । पाणिना सह संश्लिष्ट एकीभूत इव प्रभो ॥ १३९॥ दुर्गमां पदवीं गत्वा विरराज जनक्षये । युगान्ते सर्वभूतानि

वाले क्रूर कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजाल से युक्त नीलकण्ठ भयउत्पन्न करनेवाले पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया से रहित थे वह राक्षसों के रूपभी अनेक प्रकारके देखनेमें आये । १३२ । कोई रुधिरको पान करके प्रसन्न चित्त होकर नृत्य करने लगे और कहते थे कि यह उत्तमहैयहपवित्रहै यह स्वादुहै ।१३३। मेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छीरीतिसे भक्षण करने वाले रुधिरसे अच्छे प्रकार तृप्तहुये।मांससे जीवनेवाले वह राक्षस अन्यलोगोंके मांस खानेसे तृप्तहुये।१३४।इसीप्रकार नानाप्रकारके मुखरखनेवाले कोई रुद्ररूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारोंओर को दौड़े । १३५ । वहां निर्दय कर्मी भयानकरूप बड़े राक्षसोंकी संख्या हजारों किरोड़ों और अर्बुदों थीं । १३६ । हे राजा उसबड़ेनाश प्रसन्न चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसोंकी यह संख्या थी और बहुतसे भूतगण भी इकट्ठेहुये । १३७ । उसने प्रातःकालके समय उसडेरे से निकलनाचाहा । १३८ । मनुष्यों के रुधिरों से लिप्त अश्वत्थामा का खड्ग हाथसे चिपटाहुआ एकरूप होगया हे प्रभु वह अश्वत्थामा दुःखसे मिलनेवाले मार्गमें जाकर मनुष्योंके नाशमें ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि प्रलयकाल में सबजीवों को

ing their blood. They had dreadful forms, yellow colour, huge teeth, dust stained hair, long conchs, five feet, large belly, toes turned backward, dreadful visage, with bells and net, blue throats, dreadful women, accompanied by women and sons, cruel, bad looking unmerciful and of various forms 132 Some felt joy at drinking blood and danced, saying, "It is good, holy and delicious." They ate flesh, fat and bones and were satisfied with drinking blood Some dreadful cannibals, with large bellies, fed on fat and ran hither and thither. 135. The cruel and dreadful rakshasas were millions in number, which was augmented by [illegible] blins. With his arm and sword of the same hue, Ashwathama wished to go out of the camp in the morning and

भस्म कृत्वेव पावकः ॥ १४० ॥ यथाप्रतिज्ञं तत्कर्म कृत्वा द्रौणायनिः प्रभो । दुर्गमां पदवीं गच्छन् पितुरासीद्गतज्वरः ॥ १४१ ॥ यथैव संसुप्तजने शिविरे प्राविशन्निशि तथैव हत्वा निःशब्दे निश्चक्राम नरर्षभ ॥ १४२ ॥ निष्क्रम्य शिबिरात्तस्मात्ताभ्यां सङ्गम्य वीर्यवान् । आचख्यौ कर्म तत् सर्वं हृष्टः संहर्षयन् विभो ॥ १४३ ॥ तावप्याचख्यतुस्तस्मै प्रियं प्रियकरौ तदा । पाञ्चालान् सृञ्जयांश्चैव विनिकृत्तान् सहस्रशः । प्रीत्या चोच्चैरुदक्रोशंस्तथैवास्फोटयंस्तलान् ॥ १४४ ॥ एवं विधा हि सा रात्रि सोमकानां जनक्षये । प्रसुप्तानां प्रमत्तानामासीत् सुभृशदारुणा ॥ १४५ ॥ असंशयं हि कालस्य पर्यायो दुरतिक्रमः । तादृशा निहता यत्र कृत्वास्माकं जनक्षयम् ॥ १४६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । प्रागेव सुमहत्कर्म द्रौणिरेतन्महारथः नाकरोदीदृशं कस्मान्मत्पुत्रविजयेधृतः ॥ १४७ ॥ अथ कस्माद्धते क्षुद्रे कर्मेदं कृतवानसौ । द्रोणपुत्रो महेष्वासस्तन्मे शंसितु महर्षि ॥ १४८ ॥ सञ्जय उवाच । तेषां नूनं भयात्रासौ कृतवान् कुरुनन्दन । असाम्नि

भस्मकरके अग्नि शोभायमानहोताहै । १४० । हे प्रभुवह अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के अनुसार उस कर्म्मको करके पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहितहुआ ।१४१। वह नरोत्तम जैसे कि रात्रिमें सोनेवाले लोगोंके समान डेरेमें पहुँचा उसीप्रकार मारकर डेरेके निश्शब्द होनेपर डेरेसे बाहरनिकला।१४२।उस डेरेसे निकल,उनदोनों से मिलकर प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उनसब कर्मको वर्णन किया हे समर्थ तबउन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचनको उससे वर्णन किया कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हजारोंपांचाल और सृञ्जियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चस्वरसे पुकारे और हाथकी तालियोंको बजाया । १४४ । सोते और अचेत सोमकों के नाशमें वहरात्रि इसप्रकारकी कठिन और भयकारी हुई । १४५ । निस्सन्देह समयकी लौट पौट दुःखसे उल्लंघनकरनेके योग्यहै जहां कि उस प्रकार के वीर हमारे मनुष्योंका नाश करके मारेगये । १४६ । धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी विजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्म को कैसे नहींकिया । १४७ । उसनीच दुर्य्योधनके मरनेपर उसमहात्मा अश्वत्थामा ने किसहेतुसे उस कर्मको किया वह सब मुझसे कहने को योग्यहो । १४८ । संजय

---

looked glorious like the fire of pralaya. 140. Having done the deed to avenge his father's death, he felt cheerful. He left the camp as noiseless as it was when he entered it at midnight. He met his two friends and cheered them by relating his exploits. They also told him the cherished news of their own victory and slaughter of thousands of Panchals and Srinjayas. They shouted for joy and clapped their hands. The sleeping Somaka had been slaughtered during that dreadful night. 145. Surely the changes of Time are hard to be passed over; for those who had slain our men were themselves slain." Dhritrashtra said, "Why did Ashwathama not do a deed like this though he was so intent on my son's victory? Why did he do it at the

ध्याद्धि पार्थानां केशवस्य च धीमतः । सात्यकेश्चापि कर्मेदं द्रोणपुत्रेण साधितम् ॥ १४९ ॥ को हि तेषां समक्षं तान् हन्यादपि मरुत्पतिः । एतदीदृशकं वृत्तं राजन् सुप्त जने विभो ॥ १५० ॥ ततो जनक्षयं कृत्वा पाण्डवानां महात्ययम् । दिष्ट्या दिष्ट्येति चान्योन्यं समेत्योचुर्महारथाः ॥ १५१ ॥ पर्यष्वजत तौ द्रौणिस्ताभ्यां संप्रतिनन्दितः । इदं हर्षात्तु सुमहदाददे वाक्यमुत्तमम् । १५२ ॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे द्रौपदेयाश्च सर्वशः । सोमका मत्स्यशेषाश्च सर्वे विनिहता मया ॥ १५३ ॥ इदानीं कृतकृत्याः स्म याम तत्रैव मा चिरम् । यदि जीवति नो राजा तस्मै संशामहे प्रियम् ॥ १५४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि पांचालादिवधेऽष्टमोऽध्याय ८॥



बोले हे कुरुनन्दन निस्संदेह उस अश्वत्थामाने उन पाण्डवों के भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्यकी के वर्तमान नहोनेपर अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया । १४९ । उन्हों के समक्षमें कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्ताथा हे राजा रात्रिके समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्त हुआ । १५० । फिर पाण्डवों के लोगोंका कठिन नाश करके वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुबारक मुबारकहोय । १५१ । इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनोंसे स्नेह पूर्वक मिला और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े वचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पांचो पुत्र मारेगये शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्य देशभी मेरे हाथसे मारेगये । १५३ । अबहम कृत्य कृत्य हैं वहांही चलें विलम्ब मतकरो जो हमारा राजा जीवताहै हम उनसे चलकर वर्णन करें । १५४ ।



fall of Duryodhan? Pray tell me all this." Sanjaya said, "Surely, he did not do it before for fear of the *Pandavas*. He was able to perform it in the absence of the Pandavas, Keshav and Satyaki. Not even Indra can cope with those personages. He did it when the warriors were asleep. 150. Having destroyed the Pandav warriors, the three heroes congratulated one another. Ashwathama embraced the two men joyfully and said, "The Panchals and the five sons of Draupdi are slain like the Somaks and Matsyas. We are now happy. Let us go and inform the king without delay, if he be yet alive."154.

सञ्जय उवाच । ते हत्वा सर्वपाञ्चालान् द्रौपदेयांश्च सर्वशः । आगच्छन् सहि तास्तत्र यत्र दुर्य्योधनो हतः ॥ १ ॥ गत्वा चैनमपश्यन्त किञ्चित्प्राणं जनाधिपम् । ततो रथेभ्य प्रस्कन्द्य परिवव्रुस्तवात्मजम् ॥ २ ॥ तं भग्नसक्थं राजेन्द्र कृच्छ्रप्राणम चेतनम् । वमन्तं रुधिरं वक्त्रादपश्यन् वसुधातले ॥ ३ ॥ वृतं समन्ताद्बहुभिः श्वापदै र्घोरदर्शनैः । शालावृकगणैश्चैव भक्षयिष्यद्भिरन्तिकात् ॥ ४ ॥ निवारयन्तं कृच्छ्रात्तान् श्वापदांश्च चिखादिषून् । विचेष्टमानं मह्यान्च सुभृशं गाढवेदनम् ॥ ५ ॥ तं शयानं तथा तथा दृष्ट्वा भूमौ स्वरुधिरोक्षितम् । हतशिष्टास्त्रयो वीराः शोकार्त्ताः पर्य्यवारयन् । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ६ ॥ तैस्त्रिभिः शोणितादिग्धैर्निःश्वसद्भि र्महारथैः । शुशुभे संवृतो राजा वेदी त्रिभिरिवाग्निभिः ॥ ७ ॥ ते तं शयानं संप्रेक्ष्य राजानमतथोचितम् । अविषह्येन दुःखेन ततस्ते रुरुदुस्त्रयः ॥ ८ ॥ ततस्तु रुधिरं हस्ते

अध्याय ९ ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों कोमार कर एकसाथही वहां गये जहां कि घायल दुर्योधन था । १ । और जाकर कुछ शेष प्राणवाले राजाको देखा इसके पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्ती किया । २ । हे राजेन्द्र उन्होंने उस टूटी जंघा और प्राणों से पीड़ावान् अचेत और मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा । ३ । भयानक देखनेवाले बहुतसे हिंसजीवोंसे युक्त और समीप से भक्षण करने के अभिलाषी शृगालादिकके समूहोंसे घिरहुये । ४ । खानेके अभिलाषी भेड़िया आदिकको दुःख से रोकनेवाले पृथ्वी पर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान । ५ । रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनेवाले राजदुर्योधनको देखकर मरनेसे शेषबचे शोकसे पीड़ावान् तीनोंवीरों ने चारोंसे उसको व्याप्तकिया अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा । ६ । रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियों से संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमान हुआ जैसेकि तीनों अग्नियोंसे वेदी शोभायमान होतीहै । ७ । इस के पीछे वहतीनों उसदशाके अयोग्य पृथ्वीपर पडेहुये राजाको देखकर असह्य दुःख समेत रोदन करनेलगे । ८ । फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उस राजाके मुखसे रुधिर

CHAPTER IX

Sanjaya said, "Having slain the five sons of Draupadi, the three warriors went to the place where Duryodhan was lying wounded. They saw him at the point of death and went to him from their cars. They found him lying on earth, with his thigh broken, insensible in the agonies of death and blood coming out from his mouth many a dreadful beast of prey, and jackal, wishing to devour his body, surrounded him. Seeing Duryodhan incapable of keeping wolves and other animals at a distance, the three warriors, Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma came round him. Accompanied by the three bloody

मूर्ध्नाभिमृज्य तस्य हि । रणे राजः शयानस्य कृपणं पर्य्यदेवयन् ॥ ९ ॥ कृप उवाच । न दैवस्यातिभारोऽस्ति यदयं रुधिरोक्षितः । एकादशचमूभर्त्ता शेते दुर्योधनोहतः ॥१० ॥ पश्य चामीकराभस्य चामीकरविभूषिताम् । गदां गदाप्रियस्येमां समीपे पतितां भुवि ॥ ११ ॥ इयमेनं गदा शूरं न जहाति रणे रणे । स्वर्गायापि व्रजन्तं हि न जहाति यश स्विनम् ।१२॥ पश्येमां सह वीरेण जाम्बूनदविभूषिताम् । शयानां शयने हर्म्ये भार्य्यां प्रीतिमतीमिव ॥ १३ । योयं मूर्द्धाभिषिक्तानामग्रे यातः परन्तप । स हतो ग्रसते पांशून् पश्य कालस्य पर्ययम् ॥ १४॥ येनाजौ निहता भूमावशेरत हताद्विषः । स भूमौ निहतः शेते कुरुराज परैरयम् ॥ १५ ॥ भयान्नमन्ति राजानो यस्य स्म शतसंघशः । स वीरशयने शेते क्रव्याद्भिः परिवारितः ॥ १६ ॥ उपासन्त द्विजाः पूर्वमर्थहेतोर्यमीश्वरम् । उपासते च तं ह्यद्य क्रव्यादामांसहेतवः ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । तं शयानं कुरुश्रेष्ठं ततो

को अपने हाथों से सफाकरके करुणापूर्वक विलाप किया । ९ कृपाचार्य बोले कि दैवका बड़ाभार नहीं हैं जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा दुर्योधन रुधिर से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै । १० । इस सुवर्णके समान प्रकाशमान सुवर्ण जटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्मुख पड़ीहुई देखो । ११ । यहगदा प्रत्येक युद्धमें इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाले यश मानको नहीं त्यागकरती । १२ । सुवर्ण से अलंकृत वीरकेसाथ सोनेवाली इस गदाको ऐसे देखो जैसे कि महलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्य्याको देखते हैं ।१३ । जो यह शत्रुका तपानेवाला मुर्द्धाभिषिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करताहै समयकी विपरीतता को देखो । १४ । जिसके हाथसे युद्धभूमिमें मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओं के हाथमें माराहुआ सोताहै । १५ । हजारों राजाओं के समूह जिसके भयसे झुकते थे वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है । १६ ब्राह्मणों ने धनकेनिमित्त जिस ईश्वरकी उपासनाकी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेकेलिये प्रशंसाकरते हैं । १७ । सञ्जयबोले कि हे भरतर्षभ उसकेपीछे

warriors, the king looked like an altar over which the three fires preside. 7. They wept to see the king lying in that deplorable condition. They wiped blood from his mouth with their hands and wept Kripacharya said, "We have not much to thank Fate, for Prince Duryodhan the lord of eleven akshauhines of army lies bleeding here on earth. 10 Here lies his golden mace which never left the dying prince. It is lying with him like an affectionate wife This leader of kings lies here on earth. Look at the changes of Time! Having slain his foes the Kaurav Prince lies here struck by the enemy. 15, He to whom thousands of the kings bowed, sleeps on earth surrounded by beasts of prey He who was praised by Brahmans for the sake of his wealth is now attended by flesh eating animals for the sake of his flesh." 17.

भरतसत्तम । सद्रत्थामा समालोक्य करुणं पर्यदेवयत् ॥ १८ । आहुस्त्वां राजशार्दूल मुख्यं सर्वधनुष्मताम् । धनाध्यक्षोपमं युद्धे शिष्यं सङ्कर्षणस्य च ॥ १९ ॥ कथं विवरमद्राक्षीद्भीमसेनस्तवानघ । बलिनं कृतिनं नित्यं स च पापात्मवान्नृप ॥ २० ॥ कालो नूनं महाराज लोकेऽस्मिन् बलवत्तरः । पश्यामो निहतं त्वाऽद्य भीमसेनेन संयुगे ॥ २१ ॥ कथं त्वां सर्वधर्मज्ञं क्षुद्रः पापो वृकोदरः । निकृत्या हतवान् मन्दो नूनं कालो दुरत्ययः । २२ ॥ धर्मयुद्धे ह्यधर्मेण समाहूयौजसा मृधे । गदया भीमसेनेन निर्भग्ने सक्थिनी तव । २३ ॥ अधर्मेण हतस्याजौ मृद्यमानं पदा शिरः । य उपेक्षितवान् क्षुद्रं धिक्तमस्तु युधिष्ठिरम् ॥ २४ ॥ युद्धेष्वपवदिष्यन्ति योधा नूनं वृकोदरम् । यावत् स्थास्यन्ति भूतानि निकृत्या ह्यसि पातितः ॥ २५ ननु रामोऽब्रवीद्राजंस्त्वां सदा यदुनन्दन । दुर्योधनसमो नास्ति गदया इति वीर्यवान् ॥२६॥ श्लाघते त्वां हि वार्ष्णेयो

अश्वत्थामाने उस कौरवों में श्रेष्ठ सोतेहुये दुर्योधन को देखकर ध्यासे करुणा विलाप किया । १८ । हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमको सब धनुषधारियों में प्रथम बलदेवजीका शिष्य और युद्धमें कुबेरकेसमान वर्णन कियाहै । १९ । हे पापोंसे रहित भीमसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्मकरनेवाले को मारा । २० । हे महाराज निश्चय करके इस लोकमें काल बड़ा पराक्रमी है कि हम तुमको युद्धमें भीमसेनके हाथ से मराहुआ देखते हैं । २१ । क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेनने किसप्रकार से तुझ सबधर्मों के ज्ञाताको छलसे मारा निश्चय काल दुःखसे उल्लंघनके योग्य है । २२ । धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर युद्धमें अधर्मसे साथ भीमसेनकीगदा और पराक्रम से तेरी दोनों जंघाटूटीं । २३ । जिसने युद्धभूमि में अधर्म से घायल शिरपात्र से मर्दन युक्तको देखकर ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिरको धिक्कारहै । २४ । निश्चयकरके शूर वीरलोग युद्धोंमें जबतक पृथ्वी वर्तमानहै तब तक भीमसेन की निन्दाकरेंगे क्योंकि तुम छलसे मारेगयेहो । २५ । हे राजा निश्चयकरके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजी ने सदैव तुझसे कहाकि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्योधनके समान कोई नहींहै ।२६ ।

Sanjaya continued, "Ashwathama felt pity on the Kaurav prince and wept for grief, saying, "You were the foremost of Baldeva's disciples and were a famous warrior like Kuver. How was Bhim able to discern a weakness in you ? How did he slay you ? Surely *Time* is very powerful in this world as we see you slain by Bhim. How did enraged, foolish and sinful Bhim slay you by deceit ? Surely Time is hard to be over-stepped. 22. Challenged to a fair fight, he unfairly broke your thighs. Fie on Yudhishthir, who saw you unjustly struck down and looked on the indignity when your head was being touched by foot. Surely brave men will always speak ill of *Bhim* for slaying you unjustly. 25, Baldev always spoke of you that you had no

राजन् सैव तु भारत। सुशिष्यो मम कौरव्यो गदायुद्ध इति प्रभो ॥ २७ ॥ या गति क्षत्रियस्याहुः प्रशस्तां परमर्षयः। हतस्याभिमुखस्याजौ प्राप्तस्त्वमसि तां गतिम् ॥ २८॥ दुर्योधन न शोचामि त्वामहं पुरुषर्षभ। हतपुत्रौ तु शोचामि गान्धारीं पितरं च ते ॥ २९ ॥ भिक्षुकौ विचरिष्येते शोचन्तौ पृथिवीमिमाम्। धिगस्तु कृष्णं वार्ष्णेयमर्जुनं चापि दुर्मतिम् ॥३०॥ धर्मज्ञमानिनौ यौ त्वां वध्यमानमुपेक्षताम्। पाण्डवाश्चापि ते सर्वे किं वक्ष्यन्ति नराधिप। कथं दुर्योधनोऽस्माभिर्हतः इत्यनपत्रपाः ॥ ३२ ॥ धन्यस्त्वमसि गान्धारे यस्त्वमायोधने हतः। प्रयातोऽभिमुखः शत्रून् धर्मेण पुरुषर्षभ ३३॥ हतपुत्रा हि गान्धारी निहतज्ञातिबान्धवा। प्रज्ञाचक्षुश्च दुर्धर्षः कां गतिं प्रतिपत्स्यते ॥ ३४ ॥ धिगस्तु कृतवर्माणं मां कृपं च महारथम्। ये वयं न गताः स्वर्गं त्वया प्रमुखतः पार्थिवम् । ३५ ॥ दातारं सर्वकामानां रक्षितारं प्रजाहितम्। यद्वयं नानुगच्छामस्त्वां

हे श्रेष्ठ भरतवंशी राजादुर्योधन वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हारी प्रशंसा करते हैं कि वह कौरव गदायुद्ध में मेरा शिष्यहै । २७। महर्षियों में युद्धभूमि में सम्मुख करनेवाले क्षत्रीकी जिसगतिको उत्तम कहा तुम उसीगतिको प्राप्तहो । २८ हे पुरुषोत्तम दुर्योधन मैं तुझको नहीं शोचताहूं तेरेपिताको और गान्धारीको शोचता हूं जिनके कि सबपुत्र मारेगये । २९ । इस पृथ्वीको शोचते वह भिक्षुकरूप होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे यादव श्रीकृष्णजी को और दुर्बुद्धी अर्जुनकोभी धिक्कारहोय । ३०। आपको धर्म्मज्ञ जानते जिनदोनों ने तेरे घायल होनेको ध्यान नहींकिया हे राजा यह लज्जारहित और सब पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथ से दुर्योधन किसप्रकार से मारागया । ३१ । हे पुरुषोत्तम दुर्योधन तुम धन्यवाद के योग्य जो तुम बहुधा धर्म से शत्रुओं के सम्मुख होकर युद्धभूमि में मारेगये । ३३ । जिसके जाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे । ३४ । कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिक्कारहोय जो हम तुम राजा को आगेकर के स्वर्गको नहीं गये । ३५ । जो हम तुझ सब अभीष्ट के देने

equal in mace fighting. He praised you in courts and was proud of having you for his disciple. You have died fighting and this sort of death is recommended by wise men for a kshatrya. I donot regret your death, Duryodhan, but I mourn for your father and Gandhari who have lost all their kingdom and will roam like beggars. Fie on Krishn and Arjun who call themselves virtuous and yet disregarded the injury done to you. How can the shameless Pandavas boast of slaying you; I I congratulate you, Duryodhan for your securing a warrior's end. 33. To what state will Gandhari and blind Dhritrashtra be reduced who have lost all their kinsmen! Fie on Kritvarma, on me and on Kripacharya, for we did not follow you to

चितस्मात्तरात्रमान् । ३६ । कृपस्य तव वीर्येण मम चैव पितुश्च ते । समृत्याना मे नाथ्याश्च रत्नवन्ति गृहाणि च ॥ ३७ । भव प्रसादादस्माभि सनिंत्र सह वान्धवैः । अ गच्ना क्रतवो मुख्या बहवो भूरिदक्षिणा ॥ ३८ ॥ कुतश्चापीदृश पाप प्रयास्यामहे वयम । यादृशेन पदेन त्व गत सर्वपार्थिवान् ॥ ३९ । वयमेव त्वयेत्यत्र गच्छ त्वं परमां गतिम । यं त्वां नानुगच्छामस्तेन पश्यामहे वयम॥४०॥ स्वर्गहीना हीनार्था स्मरन्त सुकृतस्य ते । किन्नाम तद्भवत् कर्म येन त्वां न व्रजाम वै ॥ ४१ ॥दुःखं नूनं कुरुश्रेष्ठ चरिष्याम महीमिमाम । हीनाना नस्त्वयाराजन् कुतः शान्ति कुत सुखम ॥ ४२ । गत्वैतस्तु महाराज समेत्य च महारथान् । यथाश्रेष्ठ यथाज्येष्ठं पूजयेर्वचनान् मम ॥४३॥ आचार्य पूजयित्वा च केतुं सर्वधनुष्मताम् । हतं मयाद्य शंसेथा धृष्टद्युम्न नराधिप ॥ ४४ । परिष्वजेथा राजान वाह्लिक सुमहारथम् । सैन्धवं सोमदत्त च

वाले रक्षक और संसारके प्रियकर्त्ता के पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्योंको धिक्कार है । ३६ । हे नरोत्तम नौकरों समेत कृपाचार्य के मेरे और मेरे पिताके रत्नजडित स्थान आपही के पराक्रमसे हुये हैं । ३७ । मित्र और वान्धवों समेत हम लोगों ने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञ प्राप्तकिये ३८ हम पापी कहीं से ऐसे मार्गपर कर्मकर्त्ता होंगे जिस मार्गसे कि तुम सब जीवों को आगेकरके गये । ३९ । हे राजा जोहमलोग तुझ परमगति पानेवाले के पीछे नहीं जाते हैं उस हेतुसे हम भस्म होते हैं । ४० । स्वर्ग और अभीष्टोंसे रहित हमलोग उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म को स्मरण करते जिसहेतुसे आपके पीछे नहीं जाते हैं वह हमारा कौन कर्म होगा । ४१ । हे कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्योधन निश्चय करके हम सब महादुखी होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे तुझसे पृथक होकर हमलोगों को कहांसे शान्ती और सुख प्राप्त होसक्ता है । ४२ । हे महाराज तुम जाकर और महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे वृद्धता और उत्तमताके विचारसे पूजन करना । ४३ । हे राजा सब धनुषधारियों के ध्वजारूप आचार्य जी को पूज कर अब मेरे हाथसे मरे हुये धृष्टद्युम्नको वर्णन करना । ४४ । और बड़े महारथी राजा

heaven. Fie on us who donot accompany you, our benefactor and protector! My father, Kripacharya and I owe our greatness to you We and our friends were able to perform rich sacrifices by your grace How can sinful men like us follow the path that you have trodden! We burn with grief because we donot follow you to heaven 40. Destitute of heaven and cherished desires, we are undone because we donot follow you. Duryodhan, best of Kauravas! surely we are reserved to lead a life of misery and can have no peace without you Pay my respect to the departed warriors when you meet them, king Inform Dronacharya the best of archers that I have slain Drishtadyumn Convey my greetings to Vahlik Jayadrath, Somadatta, *Bhuri-*

भूरिश्रवसमेव च ॥ ४५ ॥ तथा पूर्वंगतानन्याद स्वर्गे पार्थिवसत्तमान् । अस्मद्वाक्यात परिष्वज्य पृच्छेथास्त्वमनामयम् । ४६ । सञ्जय उवाच । इत्येवमुक्त्वा राजानं भग्न सक्थमचेतनम् । अश्वत्थामा समुद्दीक्ष्य पुनरेवेदमब्रवीत् ॥४७ ॥ दुर्योधन जीवसि यदि वाक्यं श्रोत्रसुखं शृणु । सप्त पाण्डवतः शेषा धार्तराष्ट्रास्त्रयो वयम ॥ ४८ ॥ ते चैव भ्रातरः पञ्च वासुदेवोथ सात्यकिः । अहञ्च कृतवर्मा च कृपः शारद्वतस्तथा ॥ ४९ ॥ द्रौपदेया हताः सर्वे धृष्टद्युम्नस्य चात्मजाः । पाञ्चाला निहताः सर्वे मत्स्यशेषश्च भारत । ५० ॥ कृते प्रतिकृतं पश्य हतपुत्रा हि पाण्डवाः । सौप्तिके शिविरं तेषां हतं सनरवाहनम् ॥ ५१ ॥ मया च पापकर्मासौ धृष्टद्युम्नो महीपते । प्रविश्य शिविरं रात्रौ पशुमारेण मारितः ॥ ५२ ॥ दुर्योधनस्तु तां वाचं निशम्य मनसः प्रियाम् । प्रतिलभ्य पुनश्चेत इदं वचनमब्रवीत् ॥५३॥न मेऽकरोत्तद्गाङ्गेयो न कर्णो न च ते पिता । यत्त्वया

बाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवासे मिलना । ४५ । इसी प्रकार स्वर्गमें प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओं को मेरे वचनसे मिलकर कुशल मङ्गल को पूछना । ४६ । संजय बोले कि अश्वत्थामाजी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इसप्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर वचन को बोले । ४७ । हे दुर्योधन तुम जीवतेहो कानोंके सुखदायी वचनोंको सुनो कि पाण्डवोंके सात और दुर्योधनके हमतीन शेषबचेहैं । ४८ । वह पांचोंभाई केशवजी और सात्यकि और इसप्रकार मैं कृतवर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्य्यजी शेषहैं । ४९ । हे भरत वंशी द्रौपदीके सब पुत्र धृष्टद्युम्नके सब पुत्र पांचाल और शेष बचेहुये सब मत्स्य देशी मारेगये । ५० । बदलेके कर्म को देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रि के युद्धमें मैंने उन्होंका डेरा सब मनुष्योंसमेत नाश करदिया । ५१ । हे राजा मैंने रात्रि में डेरेमें प्रवेश करके यह पापकर्त्ता धृष्टद्युम्न पशुके समान मारा । ५२ । दुर्योधन उस चित्तके प्रियवचनको सुनकर और सचेत होकर यहवचन बोला ५३

shrava and other warriors when you meet them in heaven."46 Sanjaya continued, "Having thus talked with the wounded king in this strain, Ashwathama again said, "Hear what is pleasing to the ear, O king, if you are yet alive: seven on the side of the Pandavas and three of us are the only men alive—the five brothers, Keshav and Satyaki on their side, and Kritvarma, Kripacharya and I on yours. All the sons of Draupdi, with Dhrishtadyumna and his sons, all the Panchals and the rest of the Matsyas are slain. 50. See the work of revenge. The Pandavas are childless; for I destroyed all their camp at night. I entered the camp at night and slew sinful Dhrishtadyumna like a beast." Having heard this cherished news and coming to consciousness, Duryodhan said, "Neither Bhisham nor Karan nor your father did for me the thing which you have done with the help of Kripacharya and Kritvarma. The dead ... general and Shikhandi I have

कृपमोजाश्यां सहितेनाघ ते कृतम् ॥ ५४ ॥ स च सेनापतिः शुद्धो हतः सार्द्धं
विहिना । तेन मन्ये मघवता सममात्मानमद्यवै ॥ ५५ ॥ स्वस्ति प्राप्नुत भद्रं व.
वः स्वगमः पुनः । इत्येवमुक्त्वा तूष्णींस कुरुराजोमहामनाः ॥ ५६ ॥ प्राणानुदसृजद्वीर
सुहृदां दु.खमुत्सृजन् । आक्रामत दिवं पुण्यां शरीरं क्षितिमाविशत् ॥ ५७ ॥ एवं
निधनं यातः पुत्रो दुर्य्योधनो नृप । अग्रे यात्वा रणे शूरः पश्चाद्विनिहतः परैः । ५८॥
संयेष ते परिष्वक्ता परिष्वज्य च तेनृपम्पुनः पुनः प्रेक्षमाणाःस्वकानरुरुहू रथान्॥५९
इत्येवं द्रोणपुत्रस्य निशम्य करुणां गिरम् । प्रत्यूषकाले शोकार्त्तः प्राद्रवत्
॥ ६० ॥ एवमेष क्षयो वृत्तः कुरुपाण्डवसेनयोः । घोरो विशसनो रौद्रो
नितेतव ॥ ६१ ॥ तव पुत्रे गते स्वर्गे शोकार्त्तस्य ममानघ । ऋषिदत्तं प्रनष्टं
दिव्यदर्श वै ॥ ६२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इति श्रुत्वा स नृपतिः पुत्रस्य निधनं
निःश्वस्य दीर्घमुष्णञ्च ततश्चिन्तापरोऽभवत् ॥६३॥इति दुर्य्योधनप्राणत्यागेनवमोऽध्यायः॥
कि ऐसाबड़ाकर्म न भीष्मजी ने न कर्णने और न आपके पिताने किया जो
कृपाचार्य्य और कृतवर्मासमेत तुमने किया । ५४ । बहनीच सेनापति
समेत मारागया उसहेतु से अबमैं आपको इन्द्रके समान मानताहूं । ५५ ।
को पाओ तुम्हारा भलाहोय अवस्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलापहोगा
सोइसी कौरवराज इसप्रकार कहकर मौनहुआ । ५६ । और मित्रोंकेदुःखको
करते उसवीर ने अपने प्राणोंका त्यागकर पवित्र स्वर्गको गया और
देह । ५७ । हेराजा इसप्रकार आपकेपुत्र दुर्य्योधनने मरणको पाया वहशूर
प्रथमजाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया । ५८ । उसीप्रकार उनसेमिलेहुये वह
लोग फिर मिलकर राजाको वारम्वार देखते अपनेअपने रथोंपर सवारहुये । ५९ ।
इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणारूप वचनोंको सुनकर शोकसेपीड़ित वहतीनों प्रात
कालके समय नगरकी ओर शीघ्रतासे चले । ६० । हेराजा आपके कुमन्त्र
इसप्रकार कौरव और पांडवोंका यहघोर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्त्तमान
हुआ । ६१ । हेनिष्पाप शोकसेपीड़ित आपके पुत्रकेस्वर्गजानेपर अबव्यासऋषिका
दियाहुआ वह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये । ६२ । वैशम्पायनबोले
कि तबवह राजाधृतराष्ट्र पुत्रकेमरणको सुनकरलम्बी और उष्ण श्वासाओंकोलेकर
महाचिंतायुक्तहुआ ६३ ॥

been slain and therefore I am as happy as Indra. May you be we shall meet again in heaven." Having said this the brave *Kaurav* prince resumed silence. 56. Causing grief to his friends, he left the world for heaven and left his body lying there. Thus your son died O'king The three warriors left him there and rode their cars, Having heard the pitiable talk of Ashwathama, they rode towards the city at day break. 60. All this great destruction was brought about by your own evil policy, king. At the death of your son, the divine eyes, given me by Vyas, and their power disappeared" Vaishampayan said that on hearing of his son's death, king Dhritrashtra heaved long and hot sighs and was plunged in the ocean of grief. 63.

॥ अथ ऐषिकपर्वारम्भः ॥

वैशम्पायन उवाच । तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां धृष्टद्युम्नस्य सारथिः । शशंस धर्मराजाय सौप्तिके कदनं कृतम् ॥ १ ॥ सूत उवाच । द्रौपदेया हता राजन् द्रुपदस्यात्मजैः सह । प्रमत्ता निशि विश्वस्ताः स्वपन्तः शिबिरे स्वके ॥ २ ॥ कृतवर्मणा नृशंसेन गौतमेन कृपेण च । अश्वत्थाम्ना च पापेन हतं वः शिबिरं निशि ॥ ३ ॥ एतैर्नरगजाश्वानां प्रासशक्तिपरश्वधैः । सहस्राणि निकृन्तद्भिर्निःशेषं ते बलं कृतम् ॥ ४ ॥ छिद्यमानस्य महतो वनस्येव परश्वधैः । शुश्रुवे स महान् शब्दो बलस्य तव भारत ॥ ५ ॥ अहमेकोऽवशिष्टस्तु तस्मात् सैन्यान्महीपते । मुक्तः कथञ्चिद्धर्मात्मन् व्यग्रस्य कृतवर्मणः ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वा वाक्यमशिवं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । पपात मह्यां दुर्धर्षः पुत्रशोकसमन्वितः ॥ ७ ॥ तं पतन्तमभिक्रम्य परिजग्राह सात्यकिः । भीमसेनोऽर्जुनश्चैव माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ८ ॥ लब्धचेतास्तु कौन्तेयः शोकविह्वलया गिरा । जित्वा शत्रून् जितः

अध्याय ॥ १० ॥

वैशम्पायनबोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथीने युद्धमें होनेवाले नाशको धर्मराजके सम्मुख वर्णनकिया । १ । सारथी बोला हे राजा रात्रि के समय अपने डेरे में सोनेवाले विश्वास युक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारेगये । २ । निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाशहुआ । ३ । प्रास शक्ति और फरसोंसे हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियों को मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई । ४ । हे भरतवंशी फरसोंसे कटतेहुये बड़ेवनकी समान आपकी सेना के बड़ेशब्द सुनेगये । ५ । हे बड़ेज्ञानी केवल मैंभी अकेला उस सेनामेंसे बचा हुं रे धर्मात्मा मैं उस दुष्ट कृतवर्मा से किसीप्रकार करके बचगया । ६ । कुन्तीका पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुखशोक के वचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ । सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल औरसहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़ लिया । ८ । फिर सचेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला

CHAPTER X

Vaishampayan said, " At the close of that night, Dhrishtadyumna's car driver brought the news of the great destruction to Yudhishthir He said, " Sleeping soundly in their tents last night, the sons of Drupad and Draupadi were all slain by cruel Kripacharya and Kritvarma, who destroyed your camp by night. The three warriors slew your men and beasts with their weapons, Your army was cut with battle axes like a large forest 5 I managed some how to scape from Kritvarma and am the only man alive out of that great force. " Yudhishthir the son of Kunti became insensible with grief on hearing that sad news, Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev saved the king from

पश्चात् पर्यदेवयद्राजसत्तम् ॥ ९ ॥ दुर्विदा गतिरर्थानामपि ये दिव्यचक्षुषः । जीयमाना जयन्त्यन्ये जयमाना वयं जिता ॥ १० ॥ हत्वा भ्रातॄन् वयस्यांश्च पितॄन् पुत्रान् सुहृद्गणान् । बन्धूनमात्यान् पौत्रांश्च जित्वा सर्वान् जिता वयम् ॥ ११ ॥ अनर्थो ह्यर्थसङ्काशस्तथानर्थोऽर्थदर्शनः । जयोऽयमजयाकारो जयस्तस्मात् पराजयः ॥१२॥ यज्जित्वा तप्यते पश्चादापन्न इव दुर्मतिः । कथं मन्येत विजयं ततो जिततरः परैः ॥ १३ ॥ येषामर्थाय पापं स्याद्विजयस्य सुहृद्वधैः । निर्जितैरप्रमत्तैर्हि विजिता जितकाशिनः ॥ १४ ॥ कर्णिनालीकदंष्ट्रस्य खड्गजिह्वस्य संयुगे । चापव्यात्तस्य रौद्रस्य ज्यातलस्वनिनादिनः ॥ १५ ॥ क्रुद्धस्य नरसिंहस्य संग्रामेष्वपलायिनः । ये व्यमुच्यन्त कर्णस्य प्रमादात्त इमे हताः ॥ १६ ॥ रथह्रदं शरवर्षोर्मिमन्तं रत्नाचितं वाहनवाजियुक्तम् । शक्त्यृष्टिमीनध्वजनागनक्रं शरासनावर्तमहेषुफेनम् ॥१७॥ संग्रामचन्द्रोदयवेगवेलं द्रोणार्णवं ज्यातलने

युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीड़ावान् के समान विलाप करनेलगा । ९ । अर्थो की गति दुःखसे जानने के योग्यहै जो दिव्यचक्षु रखनेवालेहैं उनको भी अन्यलोग पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हमलोग विजय किये गये ।१०। भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये । ११ । निश्चयकरके अनर्थ अर्थरूप है उसीप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलाने वाला है यहविजय पराजयरूपहै इसहेतु से विजयही पराजयहै । १२।जो दुर्बुद्धी विजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधे हुये के समान दुःखी होता है वह किस प्रकार विजय को माने उस हेतु से शत्रु के हाथमें अत्यन्त पराजितहै । १३ । मित्रोंके नाशसे विजयका पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर सावधान मनुष्योंकरके विजयसे शोभायमान आदमी विजय कियेगये । १४ । युद्धमें कर्णिनालीक नाम बाण के समान दाढ़ रखनेवाले खड्गके समान जिह्वा धनुषके समान चौड़ामुख रुद्ररूप महा ऊंचा और तल के समान शब्द वाले । १५ । क्रोधयुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्णके हाथसे जो बचे वहसब शूरवीर अचेततासे मारेगये । १६ । रथरूप ह्रद बाण वृष्टिरूप तरङ्ग वाले रत्नोंसे पूर्ण घोड़े और सवारियों से युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप मछली ध्वजा रूप सर्प और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े बाणरूपी फेन रखनेवाले । १७ । युद्धरूप

falling down He began to lament the great loss on coming to himself , "The ways of the world are difficult to understand : the conquerors are conquered by the conquered. 10 Having slain our kinsmen, friends and advisers, we are at last conquered by the enemy. Surely our success is failure and victory is turned into defeat. The foolish conqueror who mourns like a miserable man, is really not a conquerer but one conquered by the enemy. The wise conquered the conquerors who had sinned in slaying their friends. The warriors having hard arrows for fangs, swords for tongue, bows for wide mouths, sounds of

मिहोत्तम । ये तेऽर्द्दचन्द्रायघट्टशस्त्रैर्नंमिस्ते राजपुत्रा निहता प्रमादात् ॥ १८॥ नहि प्रमादात् परमोऽस्ति कश्चिद्वधो नराणामिह जीवलोके । प्रमत्तमर्था हि नरं समन्तात् त्यजन्त्यनर्थाश्च समाविशन्ति ॥१९॥ ध्वज समुच्छ्रितधूम्रकेतुं शराऽर्चिषं कोपमहासमीरम । महाधनुर्ज्यातलनेमिघोषं तनुत्रनानाविधशस्त्रहोमम् ॥२०॥ महाचमूकक्षवरामिपन्न महाहवे भीष्ममयाग्निदाहम्। ये मेहुरायुक्तशतीक्ष्णवेगं तेराजपुत्रा निहता प्रमादात् ॥२१। नहि प्रमत्तेन नरेण शक्यं विद्या तप श्रीर्विपुलं यशो वा । पश्यायमदेम निहत्य शत्रून् सर्वान्महेन्द्रं सुखमेधमानम ॥२२। इन्द्रोपमान् पार्थिवपुत्रपौत्रान् पश्याविशेषेण हतान् प्रमादात्। तीर्त्वा समुद्रं वणिज समृद्धाः सन्ना कुनद्यामिव हेलमानाः ॥ २३ ॥ अमर्षितैर्ये निहता शयाना नि सशयं ते पि दिवं प्रपन्ना । कृष्णान्तु सोचामि कथं नु साध्वी शोकार्णवे साद्य विनाशयतीति ॥ २४ ॥ भ्रातृंश्च पुत्रांश्च हतान्निशम्य

चन्द्रोदयतीव्रता रूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियोंके शब्दवाले द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको जिनराजकुमारों ने नानाप्रकारके शस्त्ररूपी नौकाओंके द्वारातरा वह प्रमाद से मारेगये । १८ । इस जीवलोक में मनुष्यों के मरणका कारण प्रमत्ततासे अधिक कोईनहीं है प्रमत्त मनुष्य को धनादिक चारोंओर से त्याग करते हैं और निर्धनता रूप अनर्थ प्रवेश होते हैं ।१९। उत्तमध्वजाकी लोकसूरत ऊँचाई रखनेवाली वायरूप ज्वालावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुष की ज्यातल और नेमी के शब्द से युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी सेना रूप दावानल से संयुक्त खड़े हुए शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली भीष्मरूप अग्निकी भस्मताको जिन राजकुमारोंने इस युद्धमें सहा वह सब अचेततासे मारेगये । २१ । प्रमत्त मनुष्यको विद्या तप धन और उत्तमकीर्ति नहीं प्राप्त होसक्ती है सावधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखसे वृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको देखो । २२ । इन्द्रके समान राजाओंके पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापारी समुद्र को तरकर छोटी नदी में डूबजाय ।२३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निसन्देह स्वर्गको गये

bowstrings and claps than before on, when virtue is born of from battle and who escaped death from Karna and have been certainly by want of watchfulness. Having cars for lakes showers of arrows for waves, horses for trees, javelins and swords for fish, banners for serpents, and crocodiles bows for eddies, arrows for hoods, battle field for moonshine, dexterity for banks and loud sounding with claps and bowstrings, the warriors who crossed the ocean of Drona with the boats of their weapons have been slain by want of wakefulness. Insensibility kills most of the people in this world. Wealth leaves an insensible man and penury overtakes him. Having tall standards, arrows like flames, dexterous like a storm of wind, noisy with the sounds of bowstrings armed with

पञ्चालराज पितरश्च वृद्धम् । ध्रुवं विसंज्ञा पतिता पृथिव्यां सा शेष्यते शोककृशाङ्गयष्टिः ॥ २५ ॥ तच्छोकजं दुःखमपारयन्ती कथं भविष्यत्युचिता सुखानाम् । पुत्रक्षयभ्रातृवधप्रणुन्ना प्रदह्यमानेव हुताशनेन ॥ २६ ॥ इत्येवमार्त्तः परिदेवयन् स राजा कुरूणां नकुलं बभाषे । गच्छानयैनामिह मन्दभाग्यां समातृपक्षामिति राजपुत्रीम् ॥ २७ ॥ माद्रीसुतस्तत् परिगृह्य वाक्यं धर्मेण धर्मप्रतिमस्य राज्ञः । ययौ रथेनालयमाशु देव्याः पाञ्चालराजस्य च यत्र दाराः ॥ २८ ॥ प्रस्थाप्य माद्रीसुतमाजमीढः शोकार्दितस्तैः सहितः सुहृद्भिः । रोरूयमाणः प्रययौ सुतानामायोधनं भूतगणानुकीर्णम् ॥ २९ ॥ स तत् प्रविश्याशिवमुग्ररूपं ददर्श पुत्रान् सुहृदः सखींश्च । भूमौ शयानान्रुधिरार्द्रगात्रान्

मैं द्रौपदी को शोचताहूं यह [illegible] पतिव्रता निर्भयहोकर किसप्रकार से शोकरूपी समुद्रमें डूबगई । २४ । भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पांचाल को मराहुआ सुनकर निश्चय करके व्यामोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशाङ्ग पतलीशरीर वह द्रौपदी शुष्क होरहीहै । २५ । सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयोंके मरनेसे व्याकुल अग्निसे जलतीहुईके समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पार होकर कैसी दशावाली होगी । २६ । इसप्रकार विलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपक्षियों समेत यहां लाओ । २७ । नकुल धर्मरूप राजाके वचनको धर्मसे अङ्गीकार करके उसकी सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान कोगया जहांपर राजा पांचाल कीभी स्त्रियां थीं । २८ । नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदनकरते युधिष्ठिर उन सुहृदोंसमेत पुत्रोंकी युद्ध भूमिको गया जोकि भूतगणोंसे युक्तथा । २९ । उसने उस कल्याण

a m and ai m ur and killing enemies as fire does a forest, the warriors who scaped death from Bhishm have been destroyed by sleep. 21 A senseless man cannot acquire knowledge, asceticism, wealth and fame. Look at Indra who destroyed all his foes by his carefulness. Indra like princes and warriors have been destroyed by want of vigilance like an avaricious merchant who crosses the ocean but sinks down in a small river T o sleeping warriors slain by angry men have surely gone to heaven; but I am anxious for Draupadi who has fallen into the ocean of grief. She will lose her senses on hearing of the death of her brothers and sons. Her body already lean with grief will become dry. 25. Unworthy of bearing sorrows, she will burn with the fire of grief on hearing of the death of her brothers and sons " Thus lamenting, Yudhishthir ordered Nakul to fetch hapless Draupadi and the women of her mother's household. Nakul rode a car and went to the place where Draupadi and the women of Panchal were. Having sent Nakul that way, Yudhishthir with tears in his eyes, went to visit the place

विभिन्नदेहान् प्रसुप्तानिवाभागान् ॥ ३० ॥ स तांस्तु दृष्ट्वा भृशमार्तरूपो युधिष्ठिरो धर्मभृतां वरिष्ठः । उच्चैः प्रचुक्रोश च कौरवाग्र्यः पपात चोर्व्यां सगणो विसंज्ञः ॥ ३१ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि युधिष्ठिरानुतापे दशमोऽध्यायः १० ॥



वैशम्पायन उवाच । स दृष्ट्वा निहतान् संख्ये पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा । महादुःखपरीतात्मा बभूव जनमेजय ॥ १ ॥ ततस्तस्य महान् शोकः प्रादुरासीन्महात्मनः । स्मरतः पुत्रपौत्राणां भ्रातॄणां स्वजनस्य च ॥ २ ॥ तमश्रुपरिपूर्णाक्षं वेपमानमचेतनम् । सुहृदो भृशसंविग्नाः सान्त्वयाञ्चक्रिरे तदा ॥ ३ ॥ ततस्तस्मिन् क्षणे काल्ये रथेनादित्यवर्चसा । नकुलः कृष्णया सार्धमुपायात् परमार्तया ॥ ४ ॥ उपप्लव्यं गता सा तु

कर और उसके युद्धभूमि में प्रवेशकरके पुत्र सुहृद और मित्रोंको पृथ्वीपर सोते रुधिरसे छिन्न अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा । ३० । वह धर्मधारियों में और कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर उनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् होकर उच्चस्वरसे पुकारा और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ३१ ॥



अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा जनमेजय वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्रपौत्र और मित्रों को देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ । १ । इसके पीछे बेटे पोते भाई और अपने मनुष्यों का स्मरण करतेहुये उस महात्मा को बड़ा शोक उत्पन्न हुआ । २ । तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजा को विश्वास कराया । ३ । उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ावान् द्रौपदी समेत सूर्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारीसे एकक्षणमें सम्मुख आया । ४ । तब

where his sons and kinsmen lay dead. He found them sleeping on earth with bodies and heads wounded and bleeding. Yudhishthir, the best of Kauravas and righteous men, gave a loud cry and fell down senseless with his companions." 31.



CHAPTER XI

Vaishampayan said to Janmejya, "Seeing the sons, grandsons and friends, slain in battle, Yudhishthir felt much grief. He remembered the departed sons, grandsons, cousins and other people and his mind was full of sorrow. His sorrowful friends consoled him. Nakul

श्रुत्वा सुमहद्विप्रियम् । सदा विनाशं पुत्राणां सर्वेषां व्यथिताऽभवत् ॥ ५ ॥ कम्पमानेव कदली वातेनाभिसमीरिता । कृष्णा राजानमासाद्य शोकार्त्ता न्यपतद्भुवि ॥ ६ ॥ बभूव वदनं तस्याः सहसा शोककर्षितम् । फुल्लपद्मपलाशाक्ष्यास्तमोध्वस्त इवांशुमान् ॥ ७ ॥ ततस्तां पतितां दृष्ट्वा संरम्भी सत्यविक्रमः । बाहुभ्यां परिजग्राह समुत्पत्य वृकोदरः ॥ ८ ॥ सा समाश्वासिता तेन भीमसेनेन भामिनी । रुदती पाण्डवं कृष्णा सहभ्रातरमब्रवीत् ॥ ९ ॥ दिष्ट्या राजन्नवाप्येमामखिलां भोक्ष्यसे महीम् । आत्मजान् क्षत्रधर्मेण श्रुत्वा शूरान्निपातितान् ॥ १० ॥ दिष्ट्या त्वं पार्थ कुशली मत्तमातङ्गगामिनम् । अवाप्य पृथिवीं कृत्स्नां सौभद्रं न स्मरिष्यसि ॥ ११ ॥ आत्मजान् क्षत्रधर्मेण श्रुत्वा शूरान्निपातितान् । उपप्लव्ये मया सार्द्धं दिष्ट्या त्वं न स्मरिष्यसि ॥ १२ ॥ प्रसुप्तानां वधं श्रुत्वा द्रौणिना पापकर्मणा । शोकस्तपति मां पार्थ हुताशन इवाश्रयम् ॥ १३ ॥

उपप्लवी स्थानपर वर्त्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अभिघनाशको सुनकर बड़ी पीड़ावानहुई । ५ । हवासे चलायमान केले के समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा को पाकर शोकसे शोकसे पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी । ६ । उस प्रफुल्लित पद्म पत्राक्ष के समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख अकस्मात् शोक से ऐसे पीड़ावान हुआ जैसे कि अँधेरे से ढकाहुआ सूर्य होताहै । ७ । इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य पराक्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया । ८ । भीमसेन से विश्वासित उस रानी तेजस्वनी द्रौपदीने भाइयों समेत युधिष्ठिर से यह वचन कहा । ९ । हे राजा तुम निश्चयकरके क्षत्रीधर्म से अपने पुत्रोंको यमराजके लिये देकर प्रारब्धसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगोगे । १० । हे राजा तुम प्रारब्धसे कुशलहो और सब पृथ्वीको पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण नहीं करोगे । ११ । तुम क्षत्रीधर्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्धसे मुझ समेत तुम उनको उपप्लवी स्थानपर स्मरण नहीं करोगे । १२ । हे राजा पापकर्मी अश्वत्थामाके हाथसे सोनेवालों के मारने से शोक मुझको ऐसे तपाताहै जैसे कि स्थानको अग्नि संतप्त करता है । १३ । अब जो युद्धमें तेरे हाथसे उस पापकर्मी

brought sorrowful Draupadi in the car. She was in great distress on hearing of the death of her sons 5. Shaking like a plantain tree moved by the wind, she fell down on earth and was insensible with grief. Her lotus like face became suddenly changed like the sun covered with darkness. Enraged Bhimsen at once ran and took up fallen Draupadi. Consoled by him, she said to Yudhishthir and his brothers, "Having caused your sons to be slain in battle, you are sure to rule the kingdom. 10 It is by good luck that you are safe. Will you not remember Abhimanyu, who used to walk like an elephant, when you will rule over the world? Will you not remember the fall of your brave sons at Upaplavya? Ashwathama's destruction of the sleepers burns me like fire. I shall sit on this very place and

तथा पापकृतो द्रौणिर्न चेद्वध स्त्वयामृधे । ह्रियते सानुबन्धस्य युधि विक्रम्य जीवितम् ॥ १४ ॥ इहैव प्रायमासिष्ये तन्निबोधत पाण्डवाः । न चेत् फलमवाप्नोति द्रौणिः पापस्य कर्मणः ॥ १५ ॥ एवमुक्त्वा ततः कृष्णा पाण्डवं प्रत्युपाविशत् । युधिष्ठिरं याज्ञसेनी धर्मराजं यशस्विनी ॥ १६ ॥ दृष्ट्वोपविष्टां राजर्षिः पाण्डवो महिषीं प्रियाम् प्रत्युवाच स धर्मात्मा द्रौपदीं चारुदर्शनाम् ॥ १७ ॥ धर्म्यं धर्मेण धर्मज्ञे प्राप्तास्ते निधनं शुभे । पुत्रास्ते भ्रातरश्चैव तान्न शोचितु मर्हसि ॥ १८ ॥ स कल्याणि वनं दुर्गं दूरं द्रौणिरितो गतः । तस्य त्वं पातनं संख्ये कथं ज्ञास्यसि शोभने ॥१९॥ द्रौपद्युवाच। द्रोणपुत्रस्य सहजो मणिः शिरसि मे श्रुतः । निहत्य संख्ये तं पापं पश्येयं मणिमाहृतम्। राजन् शिरसि तं कृत्वा जीवेयमिति मे मतिः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा पाण्डवं कृष्णा राजानं चारुदर्शना । भीमसेनमथाभ्येत्य परमं वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥ त्रातुमर्हसि मां भीम

अश्वत्थामा का उसके साथियों समेत जीवन हरण नहीं किया जाता है तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हेपाण्डव जो अश्वत्थामा इस दुष्कर्म्म के फलको नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरीबात को जानों । १५ । इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्म्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसन पर बैठगई । १६ । उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डवने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के निमित्त आसन पर बैठाहुआ देखकर यह उत्तर दिया । १७ । कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी यह तेरे पुत्र और भाई धर्मरूप मरणको प्राप्तहुये उनका शोचकरना तुमको योग्य नहीं है । १८ । हे कल्याणी यह अश्वत्थामा यहांसे दुर्गम्य दूर वनको गया हे शोभायमान तुम युद्ध में उस के मरने को कैसे जानोगी । १९ । द्रौपदी बोली कि मैने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला माणि अश्वत्थामा के शिर पर सुनाहै युद्धमें उस पापीको मारकर लायेहुये उस मणिको देखूंगी । २० । हे राजा उसको आपके शिर पर धारण करके जीऊंगी यह मेरा मतहै यह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजा से इसप्रकार कह कर । २१ । फिर भीमसेन के पास आकर उत्तम वचनको बोली हे समर्थ तुमहमी

do, if sinful Ashwatthama and his accomplices are not punished. 15. Having said this to Yudhishthir, Draupadi took her seat there. Seeing his beautiful and dearest queen ready to give up her life, he said, " Your sons and brothers have died a glorious death and you must not deplore their loss. Ashwathama has entered far away into an impregnable forest how will you know that he is dead " Draupadi said, " I hear there is a gem on Ashwathama's head, born with his body and I wish to see it as a proof of his death. I shall live to see it put on your head." Having said this to the king, she turned towards Bhim and asked his help in her emergency. saying, " You must slay ... metal-in I shall prove my words true, if Ashwathama is not punished.

क्षत्रधर्ममनुस्मरन् । जहि तं पापकर्माणं शम्बरं मघवानिव २२ ॥ न हि ते विक्रमे पुमानस्तीह कश्चन । श्रुतं तत् सर्वलोकेषु परमव्यसने यथा ॥ २३ ॥ द्वीपोऽभूस्त्वं हि पार्थानां नगरे वारणावते। हिडिम्बदर्शने चैव तथा त्वमभवो गतिः॥ कीचकेन भृशार्दिताम् ।मामप्युद्धृतवान्कृच्छ्रात्पौलोमीं मघवानिव॥२५॥यथैतान्यकृथाः पार्थ:महाकर्माणि वैपुरा । तथा द्रौणिममित्रघ्न विनिहत्य सुखीभव॥२६॥तस्या बहुविधं दुःखं निशम्य परिदेवितम् । न चामर्षत कौन्तेयो भीमसेनो महाबलः ॥ २७॥ स काञ्चनविचित्राङ्गमारुरोह महारथम् । आदाय रुचिरं चित्रं समार्गणगुणं धनुः ॥ २८ ॥ नकुलं सारथिं कृत्वा द्रोणपुत्रवधेधृतः । विस्फार्य सशरञ्चापं ॥ २९ ॥ ते. हयाः पुरुषव्याघ्र चोदिता वातरंहसः । वेगेन त्वरिता जग्मुर्हरयः शीघ्रगामिनः ॥३०॥ शिविरात् स्वाद्गृहीत्वा स रथस्य पदमच्युतः । द्रोणपुत्ररथस्याशु ययौ वेगेन वीर्यवान् ॥ ३१ ॥ ऐषीकपर्वणि द्रौणिवधार्थं भीमगमने एकादशोऽध्यायः

धर्मको स्मरण करतेहुये मेरी रक्षाकरने के योग्यहो । २२ । उस पापकर्मी को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बर को माराथा यहां कोई दूसरा पुरुष आपके समान नहीं है । २३ । सब लोकों में सुना गयाहै कि जिसप्रकार वारणावत भवनमें महाआपत्ति में तुम पाण्डवोंके रक्षक हुये । २४ । उसीप्रकार हिडम्ब राक्षस के देखने में तुम गतिहुये इसीप्रकार विराटनगर में कीचक के भयसे पीड़ावान् मुझ कोभी तुमने दुःखसे ऐसे छुड़ाया । २५ । जैसे कि पुलोमकीपुत्री इन्द्राणी को से छुड़ायाथा हे पाण्डव जैसेकि पूर्वसमयमें तुमने इनकर्मोंको कियाहै । २६ । उसी प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखीहो उसके विलाप कियेहुये बहुत प्रकारके दुःखको सुनकर । २७ । बड़े बलवान पाण्डव भीमसेन ने नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवारहुआ । २८ । पाण गुण संयुक्त सुन्दर जड़ाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथीकरके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त होनेवालेने । २९ । बाणसमेत धनुषको टंकारकरशीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया है पुरुषोत्तम वह सधेहुये वायुके समान वेगवान् । ३० । शीघ्रगामी हरिजातके घोड़े तीव्रतासे जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने से रथके चिह्नको लेकर तीव्रतासे अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्रचला ३१ ॥

the great sinner as Indra had done Saamvar. There is no man equal to you in prowess. I have heard how you protected all the Pandavas at Barnavat. You protected them from Hidimb. You relieved me from the fear of Kichak at Barnavat. 25. Slay *Ashwathama* as you slew others and make me happy like the queen of Indra." Bhim could not bear to hear her lamentations and rode his gold car. He armed himself with jewelled bow and arrows and having made Nakul the driver of his car, he proceeded to slay Ashwathama. The swift horses of Hari breed drew his car as fast as wind and Bhimsen followed the marks made by Ashwathama's car." 31.

वैशम्पायन उवाच। तस्मिन् प्रयाते दुर्धर्षे यदूनामृषभस्ततः। अब्रवीत् पुण्डरीकाक्षः कौन्तेयं युधिष्ठिरम् ॥ १ ॥ एष पाण्डव ते भ्राता पुत्रशोकपरायणः। जिघांसुर्द्रौणिमाजौ एक एवाभिधावति ॥ २ ॥ भीमः प्रियस्ते सर्वेभ्यो भ्रातृभ्यो भरतर्षभ। तं कृच्छ्रगतमद्य त्वं कस्मान्नाभ्युपपद्यसे ॥ ३ ॥ यत्तदादिष्ट पुत्राय द्रोणः परपुरञ्जयः। अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम दहेत पृथिवीमपि ॥ ४ ॥ तन्महात्मा महाभागः केतुः सर्वधनुष्मताम्। प्रत्यपादयदाचार्यः प्रीयमाणो धनञ्जयम् ॥ ५ ॥ तं पुत्रोऽप्येक एवैनमन्वयाचदमर्षणः। ततः प्रोवाच पुत्राय नातिहृष्टमना इव ॥ ६ ॥ विदितं चापलं ह्यासीदात्मजस्य महात्मनः। सर्वधर्मविदाचार्यः सोऽन्वशात् स्वसुतं ततः ॥ ७ ॥ परमापद्गतेनापि न स्म तात त्वया रणे। इदमस्त्रं प्रयोक्तव्यं मानुषेषु विशेषतः ॥ ८ ॥ इत्युक्तवान् गुरुः पुत्रं द्रोणः पश्चादथोक्तवान्। न त्वं जातु सतां मार्गे स्थातेति पुरुषर्षभ ॥ ९ ॥ स तदाज्ञाय दुष्टात्मा

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेनके प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले ।१। हे पांडव पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामा के मारनेका अभिलाषी अकेलाही दौड़ताहै।२। हे भरतर्षभ यह भीमसेन सबभाइयों से अधिक तुमको प्याराहै अबतुम उस आपत्ती में फँसेहुये को क्यों नहीं रक्षाकरतेहो ।३। जब शत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य ने ब्रह्मशर अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वीको भी भस्मकरसक्ता है ४ । सब धनुषधारियोंके ध्वजा रूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्यजी ने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इसअस्त्र को चाहा जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इसहेतु से उन्हों ने उस दुर्बुद्धी पुत्रकी चपलता जानकर सिखलातो दिया परन्तु सब धर्मज्ञ आचार्य जी ने उस पुत्र को शिक्षापूर्वक आज्ञादी ।७। कि हे पुत्र युद्ध में बड़ी आपत्ति में परभी तुझको भी यह अस्त्र छोड़ने के योग्यनहीं है और विशेषकर मनुष्यों ऊपर तो कभी नछोड़ना ।८। यह कहकर फिर पुत्रसे यह वचन कहा कितुम कभी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं होगे ।९। हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तब दुष्ट

CHAPTER XII

Vaishampayan said " At the departure of invincible Bhim, Shree Krishn the best of Yadavas said to Yudhishthir, " Full of grief for his son's death, your brother is going alone to slay Ashwathama. Why do you not protect Bhim who is dearer to you than all other brothers? Ashwathama has learnt from his father Dronacharya the use of Brahmshar weapon which is capable of destroying all the world. When the acharya taught that weapon to Arjun, Ashwathama the only son of the acharya, was much enraged, and wished to learn it. He was not pleased with this conduct of his son. He

पितुर्वचनमप्रियम् । निराशः सर्वकल्याणैः शोकात् पर्यचरन्महीम् ॥ १० ॥ ततस्तदा कुरुश्रेष्ठ यमस्य त्वयि भारत । अवसद्द्वारकामेत्य वृष्णिभिः परमार्चितः ॥ ११ ॥ स कदाचित् समुद्रान्ते वसन् द्वारवतीमनु । एक एकं समागम्य मामुवाच हसन्निव ॥ १२ ॥ यत्तदुग्रं तपः कृष्ण चरन् सत्यपराक्रमः । अगस्त्याद्भारताचार्यः प्रत्यपद्यत मे पिता ॥ १३ ॥ अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम देवगन्धर्वपूजितम् । तदद्य मयि, दाशार्ह यथा पितरि मे तथा ॥ १४ ॥ अस्मत्तस्तदुपादाय दिव्यमस्त्रं यदूत्तम । स चाप्यस्त्रं प्रयच्छ त्वं चक्रं रिपुहणं रणे ॥ १५ ॥ स राजन् प्रीयमाणेन मयाप्युक्तः कृताञ्जलिः । याचमानः प्रयत्नेन मत्तोऽस्त्रं भरतर्षभ ॥ १६ ॥ देवदानवगन्धर्वमनुष्यपतगोरगाः । न समा मम वीर्यस्य शततमेनापि पिण्डिताः ॥ १७ ॥ इदं धनुरियं शक्तिरिदं चक्रमियं गदा । यद्यदिच्छसि चेदस्त्रं मत्तस्तत्तद्ददानि ते ॥ १८ ॥ यच्छक्नोषि समुद्यन्तुं प्रयोक्तुमपि वा रणे तद्गृ

अन्तः करणवाला पिताके अप्रिय वचन को जानकर सब कल्याणों से निराश होकर शोकसे पृथ्वीपर घूमा । १० । द्वारका में आकर यादवों से परमपूजित होकर वहां वह एकसमय द्वारकाके सम्मुख समुद्रके पास निवास करताहुआ अकेला ही हँसकर मुझ से बोला । १२ । कि हे श्रीकृष्णजी बड़े तपको करते भरतवंशियों के आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उस ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्वों से पूजित है अगस्त्यजीसे पाया हे श्रीकृष्णजी अब वह वैसेही मेरे भी पासहै जैसे कि पिताके पासहै । १४ । हे यादवों में श्रेष्ठ तुम उस दिव्य अस्त्र को मुझसे लेकर मुझको भी वह चक्रअस्त्रको जो कि युद्धमें शत्रुओं का मारनेवाला है । १५ । हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर वह हाथ जोड़कर बड़े उपाय पूर्वक मुझ से अस्त्र मांगनेवाला हुआतब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहा कि देवता दानव, गंधर्व मनुष्य, पक्षी, सर्प यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सोलहवें भाग के समान नहीं हैं । १७ । यह धनुष है यह शक्ति है यह चक्र है यह गदा है इनमें से जिस अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देताहूं । १८ । जिसको तुमउठा

taught him the use of it, but warned him never to use it, specially against human beings, even at the time of great emergency. He also foretold at the same time that his son would never be firm on the path of the righteous. Ill-natured Ashwathama, finding that his father was not well-disposed towards him, roamed restlessly throughout the world. 10. He staid at Dwarka and was respected by the Yadavas. One day he met me alone near the sea shore in the vicinity of Dwarka and said to me with a smile "My glorious father learnt from *Agastya* the use of Brahmshar which is respected by gods and gandharvas, and I have shared the knowledge of it with my father. I shall teach you all about it, if you will give me your foe-destroying discus" 15. With joined palms he asked me to

हाण बिनाक्षेण मम्मे दातुमभीप्ससि ॥ १९॥ स सुनाभं सहस्रारं वज्रनाभमयस्मयम् । वव्रे चक्रं महाभागो मत्तः स्पर्द्धन्मया सह ॥ २० ॥ गृहाण चक्रमित्युक्तो मया तु तदनन्तरम् । जग्राहोत्पत्य सहसा चक्रं सव्येन पाणिना ॥ २१ ॥ नचैनमशकत् स्थानात् सञ्चालयितुमप्युत ॥ अथैनं दक्षिणेनापि गृहीतुमुपचक्रमे ॥ २२ ॥ सर्वयत्नेन तेनापि गृह्णन्नेवमिदं ततः । ततः सर्वबलेनापि यदैनं न शशाक ह ॥ २३ ॥ उद्धर्तुं वा चालयितुं द्रौणिः परमदुर्मनाः । कृत्वा यत्नं परिश्रान्तः संन्यवर्त्तत भारत ॥ २४ ॥ निवृत्तमनसं तस्मादभिप्रायाद्विचेतसम् । अहमामन्त्र्य सम्विग्नमश्वत्थामानमब्रुवम् ॥ २५॥ यः सदेवमनुष्येषु प्रमाणं परमं गतः । गाण्डीवधन्वा श्वेताश्वः कपिप्रवरकेतनः ॥ २६ ॥ यः साक्षाद्देवदेवेशं शितिकण्ठमुमापतिम् । द्वन्द्वयुद्धे पराजिष्णुस्तोषयामास शङ्करम् ॥२७॥ यस्मात् प्रियतरो नास्ति ममान्यः पुरुषो भुवि । नादेयं यस्य मे किञ्चिदपि

सक्ते हो और युद्ध में चलाभी सक्ते हो आप जिस अस्त्रको मुझ देना चाहते हो उसके विना दियेही इनमें से जो चाहो सो लो । १९ तब मुझ से ईर्षा करनेवाले इस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखने वाले वज्रनाभ लोहमयी चक्र को मुझ से मांगा । २० । तब मैंने भी उसी समय कह दिया कि चक्रको लो। तब उस ने उठकर अकस्मात् बायें हाथ से चक्र को पकड़ लिया । २१ । परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ फिर दक्षिण हाथ से भी उस को पकड़ना प्रारम्भ किया । २२ । इसके पीछे अनेक उपायोंसे भीउसको उठा न सका । २३ । फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सब पराक्रम करने से भी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ और वह उपायोंको करके थककर अलग होगया तब मैंने उस अभिलाप से चित्त उठानेवाले विमन और व्याकुल अश्वत्थामासे यह वचन कहा । २५ । कि जिस गांडीव धनुष श्वेत घोड़े और हनुमान्‌जीकी ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्यों के मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्वसमयमें साक्षात् प्रधान देवताओं के

give him my weapon. I was pleased with him and said, "Gods, gandharvas, men, birds and serpents, all put together, are not equal to even the sixteenth part of my prowess. Here are my bow, Shakti discus and mace. Select whichever of those you like and I shall give it to you. Take whichever of these you can bear and wield, without giving me anything in return." Bearing malice against me, he asked of me my discus with a good nave and a thousand spokes, entirely made of iron, which I call my vajra. 20. Of course I at once gave him permission to take it away. He held it by the his left hand, but could not move it from its place. Then he used his right hand also but for all his efforts could not lift it up. He was much troubled in his mind when he could not lift and move it. Being tired, he stood aloof Seeing that he was hopeless, heartless and

दारा सुशालया: ॥ २८ ॥ तेनापि सुहृदा ब्रह्मन् पार्थेनाक्लिष्टकर्मणा । नोक्तपूर्वमिदं वाक्यं यत्त्वं मामभिभाषसे ॥२९॥ ब्रह्मचर्यं महद्घोरं चीर्त्वा द्वादशवार्षिकम् । हिमवत्पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जितः ॥ ३० ॥ समानव्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत । सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ॥ ३१ ॥ तेनाप्येतत्परं दिव्यं चक्रमप्रतिमं मम । न प्रार्थितमभून्मूढ यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३२ ॥ रामेणातिबलेनैतन्नोक्तपूर्वं कदाचन । न गदेन न साम्बेन यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३३ ॥ द्वारकावासिभिश्चान्यैर्वृष्ण्यन्धकमहारथैः । नोक्तपूर्वमिदं जातु यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३४ ॥ भारताचार्यपुत्रस्त्वं मानितः सर्वयादवैः । चक्रेण रथिनां श्रेष्ठ कं नु तात युयुत्ससे ॥ ३५ ॥ एवमुक्तो मया द्रौणिर्मामिदं प्रत्युवाच ह । प्रयुज्य भवते पूजां योत्स्ये कृष्ण त्वयेत्युत ॥ ३६ ॥

ईश्वर शितिकण्ठ उमापति शंकरजी को द्वन्द्वनाम युद्ध में प्रसन्न किया जिससे अधिक इसपृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई मित्र नहींहै ।२८। स्त्री और पुत्रादिकभी उसको देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण उस सुगमकर्मी मेरेमित्र अर्जुन नेभी प्रथम मुझसे यह वचन नहीं कहा जो तुमने मुझसेकहाहै । २९ । मैंने हिमालयकी कुक्षिमें नियत होकर बारहवर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्यको करके तपकेद्वारा जिसको प्राप्तकिया ।३०। और जो सदैव व्रतकरनेवाली रुक्मिणी में उत्पन्नहुआ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न नाम मेरेपुत्र नेभी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहींकी हे अज्ञान जिसको तैंने मांगाहै । ३१ । उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं मांगाथा जो तैंने मांगा है वह गद और साम्ब ने भी नहीं मांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकावासी महारथियोंने भी पूर्व में इस को कभी नहीं मांगा । ३४ । तुम भरतवंशियों के आचार्य के पुत्रहो और सब यादवों से प्रशंसनीयहो हे रथियों में श्रेष्ठ तात तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे । ३५ । मेरे इस वचनको सुनकर अश्वत्थामा ने मुझको यह उत्तरदियाकि हे श्रीकृष्णजी मैं आपका पूजनकरके आपही के साथ लडूंगा । ३६ । मैंने देवता

distressed, I said to him. 25. The wielder of Gandiv bow and possessor of white horses and ape banner, Arjun, who is of well tried prowess among gods and men, he who pleased Shankar the husband of Uma and god of gods himself in a duel, than whom I hold none dearer in the world and whom I would give away my wife and son, even that easy-working Arjun never told me the thing that you have. He whom I got after a severe asceticism in a Himalayan cave, and who is born of ever vow observing Rukmini, even that glorious son of mine, Pradyumn never had any desire to possess this matchless discus which you were foolish enough to ask of me. 32 I was never requested to part with it by Baldev, Gada, Samv or any other warriors of Dwarka. You, the son of the acharya respected by

प्रार्थितं ते मया चक्रं देवदानवपूजितम् । अजेयं इत्याम्यहं विभो सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ३७ ॥ त्वत्तोऽहं दुर्लभं काममनवाप्यैव केशव । प्रतियास्यामि गोविन्द शिवेनाभिवदस्व माम् ॥ ३८ ॥ एतत् सुभीमं भीमानामृषभेण त्वया धृतम् । चक्रमप्रतिचक्रेण भुवि नान्योऽभिपद्यते ॥ ३९ ॥ एतावदुक्त्वा द्रौणिर्मां युग्यानश्वान् धनानि च । आदायोपययौ काले रत्नानि विविधानि च ॥ ४० ॥ स संरम्भी दुरात्मा च चपलः क्रूर एव च । वेद चास्त्रं ब्रह्मशिरस्तस्माद्रक्ष्यो वृकोदरः ॥ ४१ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे द्वादशोऽध्यायः । १२ ।



और दानवोंसे पूजित आपके चक्रकी याचनाकरीहै और हेसमर्थ मैं, आपसे सत्य २ कहताहूं कि मैं अजेयहूं ॥३७॥ हेकेशवजी आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको न पाकर चला जाऊंगा हे गोविंदजी आपमुझको कल्याण के साथ नमस्कारकरो ॥३८॥ मुझउत्तम और अनुपम चक्रवाले ने यह भयानक रूपोंका भी भयानक चक्रधारणकियाहै पृथ्वीपर दूसराइसको नहीं पासक्ताहै ॥३९ अश्वत्थामा इसप्रकार मुझसे कहकर और समयपर मुझसे घोड़ेधन और अनेकप्रकार के रत्नोंको लेकर हस्तिनापुरको चलागया ४० वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धी चालाक और निर्दयीहै और ब्रह्मशिरअस्त्रको जानताहै भीमसेन उससे रक्षाके योग्यहै ॥ ४१ ॥



all the Yadavas, whom would you use the weapon to fight with ? " 35. To this question of mine he made the following reply, " I would worship and fight with you, Krishn. It was there fore that I asked of you the weapon. I say truly that I am invincible I came to you on a bootless mission Bless me Govind, and bid me good bye. You possess a dreadful and matchless weapon such as none else in the world has, " Having said this to me, Ashwathama accepted from me a present of horses and wealth in precious at mes and went away to Hasthinapore. He is rash, ill-natured, reveng ful and cruel and knows the use of Brahmshar, and therefore Bhim is worthy of being protected from him. " 41.

वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा युधां श्रेष्ठः सर्वयादवनन्दन । सर्वायुधवरोपेतमारुरोह रथोत्तमम् ॥ १ ॥ युक्तं परमकाम्बोजैस्तुरगैर्हेममालिभिः । आदित्योदयवर्णस्य धुरं रथवरस्य तु ॥ २ ॥ दक्षिणामवहच्छैब्यः सुग्रीवः सव्यतोऽभवत् । पार्ष्णिवाहौ तु तस्यास्तां मेघपुष्पबलाहकौ ॥ ३ ॥ विश्वकर्मकृता दिव्या रत्नधातुविभूषिता । उच्छ्रितेव रथे माया ध्वजयष्टिरदृश्यत ॥ ४ ॥ वैनतेयः स्थितस्तस्यां प्रभामण्डलरश्मिवान् । तस्य सत्यवतः केतुर्भुजगारिरदृश्यत ॥ ५ ॥ अन्वारोहद्धृषीकेशः केतुः सर्वधनुष्मताम् । अर्जुनः सत्यकर्मा च कुरुराजो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ अशोभेतां महात्मानौ दाशार्हमभितः स्थितौ । रथस्थं शार्ङ्गधन्वानमश्विनाविव वासवम् ॥ ७ ॥ तावुपारोप्य दाशार्हः स्यन्दनं लोकपूजितम् । प्रतोदेन जवोपेतान् परमाश्वानचोदयत् ॥ ८ ॥ तेऽश्वाः सहसोत्पेतुर्गृहीत्वा स्यन्दनोत्तमम् । आस्थितं पाण्डवेयाभ्यां यदूनामृषभेण च ॥ ९ ॥ वहतां शार्ङ्ग

तेरहवाँ अध्याय १३ ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ और सब यादवोंके प्रसन्न करने वाले श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवारहुये जोकि उत्तम भले शस्त्रों से युक्त स्वर्णमयी मालधारी काम्बोजदेशी घोड़ोंसे जुड़ाहुआथा और जिसके उत्तमधुर उदयहुये सूर्य के स्वरूपथे ।२। शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिणचक्रको उठाया और सुग्रीव नाम घोड़ा बाईंओर हुआ और उस रथके पार्श्ववाहक मेघपुष्पबलाहक नामघोड़ेहुये ३ विश्वकर्म्मा के बनाईहुईरत्न और धातुसे अलंकृत दिव्यऔर उन्नत यष्टी रथकी ध्वजापर मायाके समान दिखाईपड़ी।४। प्रकाश मण्डलरूप किरण रखनेवाले गरुड़जी उस ध्वजामें नियतहुये उस सत्यवक्ताकी ध्वजागरुड़रूप दिखाईपड़ी ५ उसके पीछेसब धनुषधारियोंकी ध्वजा केशवजी सत्यकर्मीअर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिररथपर सवारहुए ।६। समीप वर्त्तमान दोनों महात्माओंने रथपर सवार शार्ङ्ग धनुषधारी श्रीकृष्णजीको ऐसे शोभायमान किया जैसे किदोनों अश्विनीकुमारोंने इन्द्रको शोभित कियाथा ।७। श्रीकृष्णजीने उन दोनोंको उस पूजित रथपर बैठाकर शीघ्रतासे संयुक्त उत्तम घोड़ोंको चाबुक से ताड़ित किया ।८। पाण्डव औरयादवों

CHAPTER XII

Vaishampayan said, ' Shri Krishn the best of warriors and joy of the Yadavas, having spoken as above, rode the good car furnished with arms and weapons, decked with gold chaplets and drawn by excellent horses of Camboj breed. It shone like the rising Sun. Shaivya, Sugrev, Meghpushp and Valahak were the four horses that drove the car The standard made by Vishwakarma himself, was composed of metals and precious stones, and the figure of garur adorned the banner 5. Such was the car in which sat Keshav, Yudhishthir and Arjun The two heroes sitting by the wielder of Sharang bow, looked like the Ashwinikumars with Indra in the middle. When the trio were seated in the car, Shri Krishn drove the horses fast as

चन्द्वानमदवानां शीघ्रगामिनाम्। प्रादुरासीन्महान् शब्दः पक्षिणां पततामिव । १० ॥ ते समाच्छेधरव्याघ्राः क्षणेन भरतर्षभं । भीमसेनं महेष्वासं समनुद्रुत्य वेगिता ॥११॥ क्रोधदीप्तन्तु कौन्तेयं द्विषदर्थे समुद्यतम् । नाशक्नुवन् वारयितुं समेत्यापि महारथाः ॥ १२ ॥ स तेषां प्रेक्षतामेव श्रीमतां दृढधन्विनाम् । ययौ भागीरथीकच्छं हरिभिर्भृशवेगित । यत्र स्म श्रूयते द्रौणिः पुत्रहन्ता महात्मनाम् ॥ १३ ॥ स ददर्श महात्मानमुदकान्ते यशस्विनम् । कृष्णद्वैपायनं व्यासमासीनमृषिभिः सह ॥ १४ ॥ तञ्चैव क्रूरकर्माणं घृताक्तं कुशचीरिणम् । रजसा ध्वस्तमासीनं ददर्श द्रौणिमन्तिके ॥ १५ ॥ तमभ्यधावत् कौन्तेयः प्रगृह्य सशरं धनुः । भीमसेनो महाबाहुस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥१६॥ स दृष्ट्वा भीमधन्वानं प्रगृहीतशरासनम् । भ्रातरौ पृष्ठतश्चास्य जनार्दनरथे स्थितौ ॥ १७ ॥ व्यथितात्माऽभवद्द्रौणिः प्राप्तञ्चेदममन्यत । स तद्दिव्यमदीनात्मा परमास्त्रमचिं

तब श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घोड़ेलेकर अकस्मात् उड़े। शीकृष्णजीको लेचलनेवाले शीघ्रगामीघोड़ोंके ऐसे बड़ेशब्दहुये जैसाकि उड़तेहुये पक्षियोंके शब्दहोतेहैं ।१०। हेभरतर्षभउन वेगवान् नरोत्तमोंनेबड़े धनुषधारीभीमसेन की ओर चलकर क्षणभरमेंही उसकोपाया ।११। वह महारथी मिलकरभी उसक्रोधमे प्रकाशितऔर शत्रुसे युद्धकरने को सन्नद्ध भीमसेनके रोकनेको समर्थनहींहुये ।१२। वह भीमसेन उन दृढ़धनुषधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्य न्तशीघ्रगामी घोड़ोंके द्वाराश्रीगंगाजी के तटपर गये जहांकि महात्माओंके पुत्रोंके मारनेवाले अश्वत्थामा सुनेगयेथे ।१३ उसभीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान् व्यासजी को ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा । १४ । और उस निर्दयकर्मी घृतसे मर्दित शरीर बड़े चीरधारी धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाको भी समीप बैठाहुआ देखा । १५ । वह कुन्तीकापुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सम्मुख दौड़ा और तिष्ठ२ वचन कहा । १६ । वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेनको देख कर और पीछे श्रीकृष्णजी के रथपर नियत दोनों भाइयोंको देखकर चित्त से

the wind The noise of the swift horses resembled that of a flight of of birds, 10 They soon overtook Bhim, but could not stop or keep him back from his purpose of fighting with the enemy. He continued moving on within sight of his glorious brothers and Shri Krishn till he reached near the bank of the Ganges where Ashwathama the slayer of the sons of the Pandavas was reported to be. Bhimsen saw Vyas and other rishis sorted near water, Ashwathama too, with his body rubbed over with ghee and dust, sat near them 15. Valiant Bhim the son of Kunti, taking up his bow and arrow, ran towards him, saying, "Stay, stay" Seeing Bhim armed with bow and arrow and followed by Shri Krishn and the two brothers, Ashwathama was much distressed and lost all hope for his life. The brave man remembered

तयत् १८ ॥ जग्राह च स चेषीकां द्रौणिः सव्येन पाणिना । स मस्त्रमुदैरयत् ॥ १९ ॥ सत्य मामस्ताञ्छुरान् दिव्यायुधधरान् स्थितान् । पति रुपाज्यसृजद्दारुणं वचः ॥ २०, ॥ इत्युक्त्वा राजशार्दूल द्रोणपुत्रः सर्वलोकप्रमोहार्थं तदस्त्रं प्रमुमोच ह ॥ २१॥ ततस्तस्यामिषीकायां पावकः प्रधक्ष्यन्निव लोकांस्त्रीन् कालान्तकयमोपमः ॥ २२ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि ब्रह्मशिरोस्त्रत्यागे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥



पीड़ितहुये और मृत्युको वर्त्तमानजाना उस महासाहसीने उस दिव्य महा अस्त्रको स्मरण किया । १८ । और बायेंहाथसे एक सींकको पकड़ा और आपत्ति को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा। १९। और दिव्य शस्त्रधारण वाले उन शूरों को न सहकर उस अश्वत्थामा ने क्रोधसे भयकारी वचन को कि यह अस्त्र में पाण्डवोंके नाश के निमित्त छोड़ताहूं । २० । हे राजेन्द्र अश्वत्थामा ने यह कहकर सब लोक के बड़े मोहके निमित्त उस अस्त्रको । २१ । इसके पीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनोंलोकों भस्मकरनेवाली अग्नि उत्पन्नहुई ॥ २२ ॥

the divine weapon. He took up a piece of broom and pronounced over it the aphorism. Unable to bear the sight of those warriors, he uttered dreadful words in his rage, saying, " I discharge this weapon for the destruction of the Pandavas." Having said, this glorious Ashwathama discharged the weapon to stupefy the world. Then deadly sparks bagan to come out of that broom." 22.



वैशम्पायन उवाच । इङ्गितेनैव दाशार्हस्तमभिप्रायमादितः । द्रौणेर्बुद्ध्वा महाबाहुर र्जुनमभ्यभाषत ॥ १ ॥ अर्जुनार्जुन यद्दिव्यमस्त्रं ते हृदि वर्तते । द्रोणोपदिष्टं तस्यायं कालः संप्रति पाण्डव ॥ २ ॥ भ्रातॄणामात्मनश्चैव परित्राणाय भारत । विसृजैतत्त्वमप्याजावस्त्रमस्त्रनिवारणम् ॥ ३ ॥ केशवेनैवमुक्तस्तु पाण्डवः परवीरहा । अवातरद्रथात्तूर्णं प्रगृह्य सशरं धनुः ॥ ४ ॥ पूर्वमाचार्यपुत्राय ततोऽनन्तरमात्मने । भ्रातृभ्यश्चैव सर्वेभ्यः स्वस्तीत्युक्त्वा परन्तपः ॥ ५ ॥ देवताभ्यो नमस्कृत्य गुरुभ्यश्चैव सर्वशः । उत्ससर्ज शिवं ध्यायन्नस्त्रमस्त्रेण शाम्यताम् ॥ ६ ॥ ततस्तदस्त्रं सहसा सृष्टं गाण्डीवधन्वना । प्रजज्वाल महार्चिष्मद्युगान्तानलसन्निभम् ॥ ७ ॥ तथैव द्रोणपुत्रस्य तदस्त्रं तिग्मतेजसः । प्रजज्वाल महाज्वालं तेजोमण्डलसंवृतम् ॥ ८ ॥ निर्घाता बहवश्चासन्पेतुरुल्का

अध्याय १४ ॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजी ने प्रथमही से उस अश्वत्थामा के मनके विचारको जानकर अर्जुन से कहा । १ । कि हे पाण्डव अर्जुन जो द्रोणाचार्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्तमानहै उसका यह समय प्राप्त हुआ है । २ । हे भरतवंशी तुमभी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने भाइयोंकी रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो । ३ । इसके पीछे शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला और केशवजीसे इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्ज्जुन धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा । ४ । वह शत्रुओं का तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कहकर । ५ । देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करते हुये अर्जुन ने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्तहोय । ६ । इसके पीछे अकस्मात् गांडीव धनुषधारी से छोड़ाहुआ और प्रलयकालकी अग्नि के समान प्रकाशित अस्त्र ज्वलितरूप हुआ । ७ । और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा काभी वह अस्त्र ज्वलित रूपहुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रखने वाला था । ८ । परस्पर वायुके संघट्टनों के बड़े शब्दहुये हजारों उल्कापातहुये

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, " Knowing already the evil intentions of Ashwathama, Sri Krishn said to Arjun, " This is the time to discharge the weapon given you by Dronacharya. Discharge it to check the weapon of your adversary in order to protect yourself and your brothers. " Thus urged by Keshav, Arjun the destroyer of foes came down at once from the car with his bow and arrow. 4 Saying, " Safety to the son of acharya and the Pandav brothers" he bowed down to his proceptor and mediatating on Shiv, he discharged his weapon, saying, " To mitigate the effect of the weapon." Discharged by the wielder of Gandiv, the weapon shone like fire. Ashwa-

संदृश्यते । महद्भयञ्च भूतानां सर्वेषां समजायत ॥ ९ ॥ सशब्दमभवद्व्योम ज्वाला मालाकुलं भृशम् । चचाल च मही कृत्स्ना सपर्वतवनद्रुमा ॥ १० ॥ ते त्वस्त्रतेजसी लोकांस्तापयन्तौ व्यवस्थिते । महर्षी सहितौ तत्र दर्शयामासतुस्तदा ॥ ११ ॥ नारदः सर्वभूतात्मा भरतानां पितामहः । उभौ शमयितुं वीरौ भारद्वाजधनञ्जयौ ॥ १२ ॥ तौ मुनी सर्वधर्मज्ञौ सर्वभूतहितैषिणौ । दीप्तयोरस्त्रयोर्मध्ये स्थितौ परमतेजसौ ॥ १३ ॥ तदन्तरमनाधृष्यावुपागम्य यशस्विनौ । आस्तामृषिवरौ तत्र ज्वलिताविव पावकौ ॥ १४ ॥ प्राणभृद्भिरनाधृष्यौ देवदानवसम्मतौ । अस्त्रतेजः शमयितुं लोकानां हितकाम्यया ॥ १५ ॥ ऋषी ऊचतुः । नानाशस्त्रविदः पूर्वे येऽप्यतीता महारथाः । नैतदस्त्रं मनुष्येषु तैः प्रयुक्तं कथञ्चन । किमिदं साहसं वीरौ कृतवन्तौ महात्ययम् ॥ १६ ॥

सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि अर्जुनास्त्रत्यागे चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

और सबजीवों को बड़ाभय उत्पन्नहुआ । ९ । शब्दायमान आकाश ज्वाला मालाओं से व्याकुलहुआ पर्वत वन और वृक्षों समेत पृथ्वी कम्पायमानहुई इसप्रकार वहदोनों अस्त्र लोकोंको तपातेहुयेनियतहुये तबवहां उनदोनों ने एकसाथ दर्शनकिया । ११ । सबजीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियों के पितामह व्यासजी यहदोनों महात्मा वीर अश्वत्थामा और अर्जुन के शान्त करने को उपस्थितहुये । १२ । सबधर्मोंके ज्ञाता और सबजीवों के हितकारी बड़े तेजस्वी वह दोनों मुनि प्रकाशित उनदोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये । १३ । उनसमय अजेय यशस्वी और अग्निके समान प्रकाशित दोनों ऋषि वहां आकर नियतहुये । १४ । वह जीवमात्रोंने अजेय देवता और दानवों के प्रतिष्ठित दोनों ऋषि लोकों की वृद्धि की इच्छासे अस्त्रों का तेजशान्त करतेहुये मध्यमें नियतहुये । १५ । और बोलेकि नानाप्रकार अस्त्रोंकेज्ञाता सब महारथी जो पूर्वसमयमेंभी उत्पन्नहुये उन्होंने भी इसअस्त्रको कभीकिसी मनुष्यपर नहीं छोड़ा हेवीरलोगो तुमने इसबड़े विनाशकारी साहसको क्योंकिया । १६ ॥

thama's weapon to, forced like a ... of fire. There was a severe storm of wind and meteors fell down with a crash, causing fear to life. The sky was covered with flames of fire and the Earth her trees shook. 10. Thus the two lights stood side by heating the world. The two great rishis Narad and Vyas came to appease the wrath of Ashwathama and Arjun. Knowing all and wishing good to the world, the two glorious rishis stood in midst of the two weapons, glorious and invincible, bright as fire. C ing the fury of both the weapons, invincible by all beings, the rishis respected by gods and gandharvas, stood there and said, " former warriors who knew the use of all sorts of weapons, never charged this weapon against human beings. Why have you ted this rashness brave men ? "16.

वैशम्पायन उवाच । दृष्ट्वैव नरशार्दूल तावग्निसमतेजसौ । संजहार शरं दिव्यं त्वरमाणो धनञ्जय ॥ १॥ उवाच भरतश्रेष्ठ तावृषी प्राञ्जलिस्तदा । प्रयुक्तमस्त्रमस्त्रेण शाम्यतामिति वै मया ॥ २ ॥ संहृते परमास्त्रेऽस्मिन् सर्वानस्मानशेषतः । पापकर्मा ध्रुवं द्रौणिः प्रधक्ष्यत्यस्त्रतेजसा ॥ यदत्र हितमस्माकं लोकानाञ्चैव सर्वथा । भवन्तौ देवसङ्काशौ तथा सम्मन्तुमर्हथ ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वा संजहारास्त्रं पुनरेव धनञ्जयः । संहारो दुष्करस्तस्य देवैरपि हि संयुगे ॥ ५ ॥ विसृष्टस्य रणे तस्य परमास्त्रस्य संग्रहे । अशक्तः पाण्डवादन्यः साक्षादपि शतक्रतुः ॥ ६ ॥ ब्रह्मतेजोद्भवं तद्धि विसृष्टमकृतात्मना । न शक्यमावर्तयितुं ब्रह्मचारिव्रतादृते ॥ ७ । अचीर्णब्रह्मचर्यो यः सृष्ट्वावर्तयेत् पुनः । तदस्त्रं सानुबन्धस्य मूर्धानं तस्य कृन्तति ॥ ८॥ ब्रह्मचारीव्रती चापि दुरावाप्तमवाप्य तत् ।

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्नि के समान प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्यबाण को संहार करलिया अर्थात् लौटा लिया । १ । हे भरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथजोड़कर उनऋषियों से बोलाकि मैंने यह समझकर अस्त्रको प्रकटकिया है कि यह अस्त्र इसअस्त्र से शान्तहोय । २ । इस उत्तम अस्त्रके लौट आनेपर निश्चयकरके पापकर्मी अश्वत्थामा इसतेज अस्त्रसे हम सबको भस्मकरेगा । ३ । यहांपरसदैव हमारा और लोकोंका जोहित है उसको देवतारूप आपलोग उसीप्रकार से अङ्गीकार करने के योग्यहो । ४ । अर्जुनने इस प्रकारसे फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओं सेभी उसका फिरलौटाना कठिन है । ५ । पांडव अर्जुनके सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी उस छोड़ेहुये परम अस्त्र के लौटानेको समर्थ नहीं है । ६ । ब्रह्मचारीका व्रतरखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्मतेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रिय से कभी लौटाने के योग्य नहीं है ।७। ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्रको छोड़कर फिर लौटाता है वह अस्त्र साथियों समेतउस छोड़नेवालेके मस्तकको काटताहै । ८ । ब्रह्मचारी व्रत करनेवाला

CHAPTER XV

Vaishampayan said, " Seeing the two rishis glorious like fire, Arjun recalled his divine arrows And with joined palms he said to them, " I discharged my weapon to appease the other Surely Ashwathama will burn us with his weapon, for I have recalled mine own. You will do what is good to us and to the world, divine sages " Thus Arjun recalled the weapon and did a deed which was difficult to be achieved by gods. 5 None except Arjun, not even Indra himself, could recall that weapon when once discharged None except a Brahmchari could do the glorious deed, for the weapon kills the man who recalls it, if he is not a Brahmchari. Arjun the Brahmchari recalled the weapon in spite of having so much to revenge for For Arjun was the

रमवाप्य तत् । परमव्यसनार्तोऽपि नार्जुनोऽस्त्रं व्यमुञ्चत ॥ ९ ॥ सत्यव्रतधरः शूरो ब्रह्मचारी च पाण्डवः । गुरुवर्ती च तेनास्त्रं संजहारार्जुनः पुनः ॥ १० ॥ द्रौणिरप्यथ संप्रेक्ष्य तावृषी पुरतः स्थितौ । न शशाक पुनर्घोरमस्त्रं संहर्तुमोजसा ॥ ११ ॥ अशक्तः प्रतिसंहारे परमास्त्रस्य संयुगे । द्रौणिर्दीनमना राजन् द्वैपायनमभाषत ॥ १२ ॥ उत्तमव्यसनार्तेन प्राणत्राणमभीप्सुना । मयैतदस्त्रमुत्सृष्टं भीमसेनभयान्मुने ॥ १३ ॥ अधर्मश्च कृतोऽनेन धार्तराष्ट्रं जिघांसता । मिथ्याचारेण भगवन् भीमसेनेन संयुगे ॥ १४ ॥ अतः सृष्टमिदं ब्रह्मन् मयास्त्रमकृतात्मना । तस्य भूयोऽद्य संहारे कर्तुं नाहमिहोत्सहे ॥ १५ ॥ विसृष्टं हि मया दिव्यमेतदस्त्रं दुरासदम् । अपाण्डवायेति मुने वह्नितेजोऽनुमन्त्र्य वै ॥ १६ ॥ तदिदं पाण्डवेयानामन्तकायाभिसंहितम् । अद्य पाण्डुसुतान् सर्वान् जीविताद् भ्रंशयिष्यति । १७ ॥ कृतं पापमिदं ब्रह्मन् रोषाविष्टेन चेतसा । वधमाशास्य पार्थानां

औरबड़े दुःखमे पीड़ावान् अर्जुन नेभी उस दुष्टआचारको पाकर उस अस्त्रको नहीं छोड़ा । ९ । पाण्डव अर्जुन सत्यव्रत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरु भक्त था इसहेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया । १० । इसके पीछे अश्वत्थामा भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलसे उसघोर अस्त्र के फिर लौटानको समर्थ नहीं हुआ । ११ । युद्धमें उसपरमअस्त्रके लौटानेमें असमर्थ बड़े दुःखीचित्त अश्वत्थामाने व्यासजीसे कहा । १२ । कि हेमुनि बड़ी आपत्तिसे पीड़ावान् और प्राणोंकी रक्षाका अभिलाषी होकर मैंने भीमसेनके भयसे उस अस्त्र को छोड़ा । १३ । हे भगवन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनने युद्धमें अधर्मकिया । १४ । मे ब्राह्मण इसहेतुसे मुझ अज्ञानी ने इस अस्त्रको छोड़ाहै अब फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करताहूं । १५ । हे मुनि मैंने पांडवों के नाशके अर्थ अग्नितेजको धारणकरके इसकठिनता से सहनेके योग्य अस्त्र को छोड़ा । १६ । यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बढ़ुताहै अब यह अस्त्र सब पांडवों को जीवनसे रहित करेगा । १७ । हेब्राह्मण क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया । १८ । व्यासजी बोले

observer of true vows, brave and devoted to his preceptor, and there fore he could recall the weapon. 10. For the sake of those rishis Ashwa-thama too, tried his best to recall his weapon, but was not successful in his attempt. Failing in his attempt, he said to Vyas with a distressed mind, " Being hard pressed and afraid of Bhim, I discharged the weapon to save my life. Bhim had sinned against Duryodhan and slain him unfairly. I therefore discharged the weapon, but am now unable to recall it 15. I discharged it to slay all the Pandavas in my anger. It is sufficient to slay the Pandavas and will surely deprive them of life. Surely I have committed this sin to slay the Pandavas " Vyas said, " Arjun discharged the Brahmahar by way of retaliation and not to slay you He discharged it to mitigate the effect

पार्थ सुव्रता रणे ॥ १८ ॥ व्यास उवाच । यदस्त्रं ब्रह्मशिरस्तात विद्वान् पार्थो धन
ञ्जयः । उत्सृष्टवान्न रोषेण न नाशाय तवाहवे ॥ १९ ॥ अस्त्रमस्त्रेण तु रणे तव संशम
यिष्यता । विसृष्टमर्जुनेनेदं पुनश्च प्रतिसंहृतम् ॥२०॥ ब्रह्मास्त्रमप्यवाप्यैतदुपदेशात् पितु
स्तव । क्षत्रधर्मान्महाबाहुर्नाकम्पत धनञ्जय ॥ २१ ॥ एवं धृतिमतः साधोः सर्वास्त्र
विदुषः सतः । सभ्रातृबन्धोः कस्मात्त्वं वधमस्य चिकीर्षसि ॥ २२ ॥ अस्त्रं ब्रह्मशिरो
यत्र परमास्त्रेण वध्यते । समाः द्वादश पर्जन्यस्तद्राष्ट्रं नाभिवर्षति ॥ २३ ॥ एतदर्थं
महाबाहुः शक्तिमानपि पाण्डवः । न विहन्त्यस्तदस्त्रन्तु प्रजाहितचिकीर्षया ॥ २४ ॥
पाण्डवास्त्वञ्च राष्ट्रञ्च सदा संरक्ष्यमेव हि । तस्मात् संहर दिव्यं त्वमस्त्रमेतन्महा
भुज ॥२५॥ अरोषस्तव चैवास्तु पार्थाः सन्तु निरामया । न ह्यधर्मेण राजर्षिः पाण्डवो
जेतुमिच्छति ॥ २६ ॥ मणिञ्चैव प्रयच्छैभ्यो यस्ते शिरसि तिष्ठति । एतमादाय ते
प्राणान् प्रति दास्यन्ति पाण्डवाः । २७ ॥ द्रौणिरुवाच । पाण्डवैर्यानि रत्नानि यच्चा

तात बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशिरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे
छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा । १९ । युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त
करनेके अभिलाषी अर्जुनने वहअस्त्र छोड़करभी फिर लौटालिया । २० । यह महा
बाहु अर्जुन तेरे पिताके उपदेशसे ब्रह्मअस्त्रको भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान
नहीं हुआ । २१ । इस प्रकार धैर्यवान् साधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस
अर्जुनका मारना भाई बंधुओं समेत किसलिये तुमकरना चाहते हो । २२ । जिस
देशमें ब्रह्मशिर अस्त्र परमअस्त्रके द्वारा दूरकियाजाताहै उस देशमें बारहवर्षतक इन्द्र
जलको नहीं बरसाताहै । २३ । महाबाहु समर्थ पांडव संसार के जीवमात्रों की
वृद्धिकी अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरनहीं करता ।२४।
पांडव देश और तुमभी सदैव रक्षा के योग्यहो हे महाबाहु इसहेतुसे तुम इस दिव्य
अस्त्रको लौटाओ तेराक्रोध दूरहोय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजऋषि
पांडव अधर्मसे विजयकरना नहीं चाहताहै । २६ । अबतुम उस मणिको देदो जो
तेरे शिरपर नियतहै पांडव उसको लेकर तुमको प्राणदान देंगे । २७ । अश्वत्थामा
बोले कि पाण्डवों ने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्यधन इसलोक में प्राप्त किया

of your weapon and has recalled it. 20 Having got the knowledge
of *Brahmshar* from your father, Arjun did not deviate from his duty.
Why do you desire to slay him and his brothers. Indra does not
bring forth rain for twelve years when one Brahmshar is destroyed
by another. Valiant Arjun does not use his weapon for that pur-
pose, though he has the power to do so. The *Pandavas*, the country
and you are worthy of protection and you must recall your weapon
Subdue your wrath and let the Pandavas live. They do not like to
gain victory by unfair means. Give the Pandavas your head jewel
and they will spare your life in return." Ashwathama said, "My

न्यत् कौरवैर्द्धनम । अवासियित तेभ्योयं मणिर्मम विशिष्यते ॥ २८ ॥ यमाबध्य भय नास्ति शस्त्रव्याधिक्षुधाश्रयम् । देवेभ्यो दानवेभ्यो वा नागेभ्यो वा कथञ्चन ॥ २९ ॥ न च रक्षोगणभय न तस्करभयन्तथा । एवं वीर्यो मणिरयं मया त्याज्य कथञ्चन ॥३०॥ यत्तु मे भगवानाह तन्मे कार्यमनन्तरम् । अयं मणिरयञ्चाहमीषिका तु पतिष्यति ॥ ३१ ॥ गर्भेषु पाण्डवेयानाममोघ चैतदुद्यतम् । न च शक्तोस्मि भगवन् संहर्तुं पुनरुद्यताम ॥ ३२॥ एतदस्त्रमतश्चैव गर्भेषु विसृजाम्यहम् । न च वाक्यं भगवतो न करिष्ये महामुने ॥ ३३ ॥ व्यास उवाच । एवं कुरु न चान्या तु बुद्धिः कार्या त्वयानघ । गर्भेषु पाण्डवेयानां विसृज्यैतदुपारम ॥ ३४॥ वैशम्पायन उवाच । ततः परममस्त्रन्तु द्रौणिरुद्यतमाहवे । द्वैपायनवचः श्रुत्वा गर्भेषु प्रमुमोच ह ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि ब्रह्मशिरोस्त्रस्य पाण्डवगर्भप्रवेशने पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

उन्होंसे यह मेरामणि पृथक् है । २८ । जिसको बांधकर किसी दशा मेंभीशस्त्ररोग और क्षुधासम्बन्धी कोई भयनहीं होताहै इस बांधनेवाले को देवता दानव और सर्पोंसेभी भयनहीं है । २९ । न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भयहै इस प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामेंभी मुझ से त्याग करने के योग्य नहीं है । ३० । और जो भगवान ने मुझको आज्ञा करीहै वह शीघ्रही मुझको कर्त्तव्यहै यह मणि है यह मैं हूं परन्तु यह सींक । ३१ । पांडवों के गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उद्यत अस्त्र सफल है हे भगवन् इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ता हूं । ३२ । मैं इसहेतु से इस अस्त्र को पांडवों के गर्भोंपर छोड़ता हूं हे महामुनि आपके वचनों को अवश्य करूंगा । ३३ । व्यासजी बोले हे निष्पाप इसी प्रकार करो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्तहो । ३४ । वैशम्पायन बोले इसके पीछे अश्वत्थामाजी के वचन व्यासजी के वचन को सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

j-wel forms no pa t of the wealth of the Kauravas and Pandavas." The possessor of it is never oppressed by weapons, sickness or hunger He is never in fear of gods, danavas and serpents. The possessor of it has no fear of rakshases or thieves and I donot wish to part with it under any condition- 30 I am however bound to do your bidding My jewel and myself are at your disposal But this piece of broom shall fall on the pregnant women of the Pandavas; for this weapon can not fail to do its work nor I have power to recall it I shall do your bidding, great rishis My weapon shall fall on pregnant women of the Pandavas," Then Vyas said, " Do it as you have said Let your weapon fall on the pregnant women and cease fighting " Vaishampayan said, " Thus ordered by Vyas, Ashwathama, let his weapon fall on pregnant women " 35

वैशम्पायन उवाच। तद् ज्ञाय हृषीकेशो विसृष्टं पापकर्मणा। हृष्यमाण इदं वाक्यं ... प्रत्यभाषत ॥ १ ॥ विराटस्य सुतां पूर्वं स्नुषां गाण्डीवधन्वनः। उपप्लव्यगतां ... ब्रवीद्वचः ॥ २ ॥ परिक्षीणेषु कुरुषु पुत्रस्तव भविष्यति। एतदस्य ... ब्राह्मणो वदति ॥ ३ ॥ परिक्षित्वं गर्भस्थस्य भविष्यति। तस्य तद्वचनं साधोः सत्यमेतद्भविष्यति। परिक्षिद्भविता ह्येषां पुनर्वंशकरः सुतः ॥ ४ ॥ एवं ब्रुवाणं गोविन्दं सात्वतां प्रवरं तदा। द्रौणिः परमसंरब्धः प्रत्युवाचेदमुत्तरम् ॥ ५ ॥ नैतदेवं यथात्थ त्वं पक्षपातेन केशव। वचनं पुण्डरीकाक्ष न च मद्वाक्यमन्यथा ॥ ६ ॥ पतिष्यति तदस्त्रं हि गर्भे, तस्या मयो... यं पुण्डरीकाक्ष ... ॥ भगवानुवाच। अमोघः ... नाम। विराटदुहितुः कृष्ण यं त्वं रक्षितुमिच्छसि ॥ ७ ॥ भगवानुवाच। अमोघः ... परमास्त्रस्य पातस्तस्य भविष्यति। स तु गर्भो मृतो जातो, दीर्घमायुरवाप्स्यति ॥ ८ ॥

अध्याय १६ ॥

वैशम्पायन बोले तब श्री कृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामा के छोड़े हुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्नहोकर अश्वत्थामा से यह वचनबोले १। कि पूर्व समयमें नियमवान ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रवधू उत्तराको जोकि उपप्लवी स्थानपर वर्त्तमानथी उससे यह कहा। २। कि कौरवों के नाशवान् होने पर तेरापुत्रहोगा इस गर्भस्थ बालकका इसीहेतुसे परीक्षितनाम होगा। ३। उस साधु का यहवचन सत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हीं के वंशका चलानेवाला होगा ४। तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इसप्रकार कहनेवाले गोविंदजीको यह उत्तर दिया।५। हेकमललोचन केशवजी यहइसप्रकार नहीं है जैसे कि तुमने पक्षपातीहोकर यहवचन कहाहै मेरा वचन मिथ्या नहींहै।६। हे श्रीकृष्णजी मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तराके गर्भपर गिरेगा जिसको कि तुम रक्षा किया चाहतेहो।७ श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्रका गिरना सफलहोगा और मराहुआ गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग तुझको नीचपुरुष पापी और बारम्बार पापकर्मवाला और बालकके जीवन कानाश

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Shri Krishn was pleased when he knew the fate of Ashwathama's weapon, and he said to him, 'Formerly, a vow observing Brahman said to Uttara the wife of Arjun's son, "Thy son will be born after the destruction of the Kauravas and will be named Parikshit." The words of the sage will yet be true for Parikshit will be the perpetuator of the line of the Pandavas." Ashwathama was much enraged at this remark and said "This can not be, lotus-eyed Keshav! Your words are biassed. It shall be as I have predicted: my weapon shall fall on the womb of Uttara whom you wish to protect." Shri Krishn said, 'It is true that the wea pon shall do its work, but the dead child will be brought back to

स्वान्तु कापुरुषं पापं विदुः सर्वे मनीषिणः । असकृत्पापकर्माणं तस्मात्त्वस्य पापस्य कर्मणः फलमाप्नुहि ॥ ९ ॥ त्रीणि वर्षसहस्राणि चरिष्यसि मिमाम् । अप्राप्नुवन् क्वचित् । काचित् सम्विदं जातु केनचित् ॥ १० ॥ हायस्त्वंदेशान् प्रविचरिष्यसि । भविश्री न हि ते क्षुद्र जनमध्येषु संस्थितिः ॥ पूयशोणितगन्धी च दुर्गकान्तारसंश्रयः । विचरिष्यसि पापात्मन् ॥ ११ ॥ वयः प्राप्य परिक्षित्तु वेदव्रतमवाप्य च । कृपाच्छारद्वताच्छूरः प्स्यते ॥ १३ ॥ विदित्वा परमास्त्राणि क्षत्रधर्मव्रतेस्थितः । षष्टिं वर्षाणि धर्मात्मा पालयिष्यति॥१४॥इतश्चोर्ध्वं महाबाहुः कुरुराजो भविष्यति।परिक्षिन्नाम दुर्मते॥१५॥ अहं तं जीवयिष्यामि दग्धं शस्त्राग्नितेजसा। पश्यमे तपजोवीर्यं नराधम ॥ १६ ॥ व्यास उवाच । यस्मादनादृत्य कृतं त्वयास्मान् कर्म दारुणम् पाहय सतश्चैव यस्मात्ते वृत्तमीदृशम् ॥ १७ ॥ तस्माद्यद्देवकीपुत्र उक्तवानुत्तमं वचः

करनेवाला जानेंगे इस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर दिव्य वर्षतक इस पृथ्वीपर घूमोगे तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और किसीके साथ परस्पर वार्त्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे हे नीच निवास मनुष्यों में नहीं होगा । ११ । पीप और रुधिरकी गन्धि से युक्त महावनों में निवास करेगा हे पापात्मा सब बीमारियों से संयुक्त होकर । १२ । शूरपरीक्षित अवस्था और वेदव्रतको पाकर कृपाचार्य से सब अस्त्रों पावेगा । १३ । फिर परमअस्त्रों को पाकर क्षत्रिय व्रतमें नियत साठवर्षतक पृथ्वीकी रक्षा करेगा । १४ । इसके पीछे वह महाबाहु हे दुर्बुद्धी तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा ।१५। मै उस शस्त्रकी अग्नि से हुये को अपने तेज से जिलाऊंगा हे नीच मेरे सत्य और तपके बलको देखो जी बोले जो तुमने हमको अनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तु सत्पुरुष ब्राह्मणका ऐसा चलनहुआ इनदोनो कारणों से श्रीकृष्णजी ने जो

life and will live long. All the rishis will call you sinful and slaye of infants, and as a punishment of your wickedness you will roam fo three thousand divine years. You will be shunned by all men an will pass your days in desolate places out of the reach of man, 11 Your wound will give forth a bad smell and you will be beset wit all sorts of diseases. Valiant Parikshit will live long and will lear the use of weapons from Kripacharya. He will rule the earth fo sixty years as king of the Kauravas and you will see him. 15. I shall resuscitate the burnt child by my glory and you shall see the power of my truth and asceticism." 16. Vyas said, "Because you did this dreadful deed in spite of us, and bore a conduct like that, you will be reduced to the condition fore told

कैवमस्मे तत्रापि क्षत्रधर्मस्त्वयाश्रितः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामोवाच । सहैव भवता
ब्रह्मन् स्थास्यामि पुरुषेष्विह । सत्यवागस्तु भगवानयञ्च पुरुषोत्तमः ॥ १९ ॥ वैश
म्पायन उवाच । प्रदायाथ मणिं द्रौणिः पाण्डवानां महात्मनाम् । जगाम विमनास्तेषां
सर्वेषां पश्यतां वनम् ॥ २० ॥ पाण्डवाश्चापि गोविन्दं पुरस्कृत्य हतद्विषः ॥ कृष्णं द्वैपा
यनञ्चैव नारदञ्च महामुनिम् ॥ २१ ॥ द्रोणपुत्रस्य सहजं मणिमादाय सत्वराः ।
द्रौपदीमभ्यधावन्त प्रायोपेतां मनस्विनीम् ॥ २२ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्ते पुरुष
व्याघ्राः सदश्वैरनिलोपमैः । अभ्ययुः सहदाशार्हाः शिबिरं पुनरेव हि ॥ २३ ॥ अवतीर्य
रथेभ्यस्तु त्वरमाणा महारथाः । ददृशुर्द्रौपदीं कृष्णामार्तामार्ततराः स्वयम् ॥ २४ ॥
तामुपेत्य निरानन्दां दुःखशोकसमन्विताम् । परिवार्य्य व्यतिष्ठन्त पाण्डवाः सहके
शवाः ॥ २५ ॥ ततो राज्ञाभ्यनुज्ञातो भीमसेनो महाबलः । प्रददौ तं मणिं दिव्यं वचन
मिदमब्रवीत् ॥ २६ ॥ अयं भद्रे तव मणिः पुत्रहन्ता जितः स ते । उत्तिष्ठ शोकमुत्

वचन कहाहै निस्सन्देह वहीदशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्ममें नियतहो ।१८।
अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण मैं इसलोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह
भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्ताहैं । १९ । वैशम्पायनबोले कि फिर उदासमन होकर
अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को मणि देकर उन सबके देखते हुये वनको गये
२० । और जिनकेशत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविंदजी और व्यासजी महामुनि
नारदजीको आगे करके । २१ । और अश्वत्थामा के शरीरके साथ उत्पन्न होने
वाली मणिको, शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागनेके निमित्त नियम
करनेवाली द्रौपदीकी ओर दौड़े । २२ । वैशम्पायन बोलेकि इसके अनन्तर वह
पांडव श्रीकृष्णजी समेत वायुके समान शीघ्र उत्तम घोडोंके द्वारा फिर
डेरेको गये । २३ । आप पीड़ावान् और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने रथों
से उतरकर प्रसन्न मनवाली द्रौपदीको पीड़ावान् देखा । २४ । वह पाण्डव केशव
जी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोकसे युक्त द्रौपदी के पास जाकर उस को
घेरकर बैठगये । २५ । इसके पीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस
मणिको दिया और मणिदेकर यह वचन कहा । २६ । हे कल्याणी भीयह
तेरी मणिहै और वह तेरेपुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड़

by Thrishn. You have become a kshatrya. " Ashwathama said,
"I would stay in the world with you but Shr Krshn is truthful."
Vaishampayan said that with a dejected mind, Ashwathama gave the
Pandavas his jewel and went away to the forest in the presence of all.
20 The Pandavas being rid of their enemies, ran towards Draupadi,
led by Govind, Vyas and Narad, and with the jewel got from Ashwa-
thama. They rode their swift cars and went to their camp. They
found Draupadi in great distress and sat round her. 25. Then by
the permission of the king, brave Bhim presented the jewel to Draupa-

स्मृत्य क्षत्रधर्ममनुस्मर ॥ २७ ॥ प्रयाणे वासुदेवस्य शमार्थमसितेक्षणे ।
त्वया भीरु यान्यानि मधुघातिनि ॥ २८ ॥ नैव मे पतय सन्ति न पुत्रा भ्रातरो न
नैव त्वमिति गोविन्द शममिच्छति राजनि ॥ २९ ॥ उक्तवत्यसि तीव्राणि
पुरुषोत्तमम् । क्षत्रधर्मानुरूपाणि तानि संस्मर्तुमर्हसि ॥ ३० ॥ हतो
राज्यस्य परिपन्थिक । दुःशासनस्य रुधिरं पीतं विस्फुरतो मया ॥ ३१ ॥ वैरस्य
मानृण्यं न स्म वाच्या विवक्षताम् । जित्वा मुक्तो द्रोणपुत्रो ब्राह्मण्याद्गौरवेण च ॥ ३२ ॥
यशोऽस्य पातितं देवि शरीरन्त्ववशेषितम् वियोजितश्च मणिना
॥ ३३ ॥ द्रौपद्युवाच । केवलानृण्यमाप्तास्मि गुरुपुत्रो गुरुर्मम । शिरस्येतं मणिं
प्रतिबध्नातु भारत ॥ ३४ ॥ तं गृहीत्वा ततो राजा शिरस्येवाकरोत्तदा ।
मित्येव द्रौपद्या वचनादपि ॥ ३५ ॥ ततो दिव्यं मणिवरं शिरसा धारयन् प्रभुः

करउठो और क्षत्रियधर्मको स्मरणकर । २७ । हे श्यामलोचन सन्धिकेअर्थ
देवकीके यात्राकरनेपर तुमनेजो यहवचन उनश्रीकृष्णजीसे कहेथे कि हे
राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरेपति पुत्र भाई और तुम चारोंमें से
नहींहो । २९ । तुमने क्षत्रियधर्म्मके योग्य वीरताके वचन पुरुषोत्तमसे कहेथे
स्मरण करनेको योग्यहो । ३० । राज्यका शत्रुपापी दुर्योधन मारागया मैंने
कटेहुये दुश्शासनका रुधिर पिया । ३१ । शत्रुताकी अनृणताको पाया
लापकरनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्यनहींहैं अश्वत्थामा पराजितहोकर
ब्राह्मणत्वकी इज्जतसे छोड़ागया । ३२ । हेदेवी उसको वह पतितहुआ शरीरशेषह
उसकोमणिसे जुदाकिया और उसके सबशस्त्रभी पृथ्वीपर गिरपड़े । ३३ । द्रौपदी
बोली हेनिर्दोषमैंने अनृणताको पायागुरुका पुत्रमेरागुरुहै भरतवंशी राजायुधिष्ठिर
इस मणि को शिरपर बांधे । ३४ । तबराजा युधिष्ठिरने यह समझकर कि गुरुपुत्र
की धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदीका वचनहै ऐसाजानकर उसमणिको

dr, saying, "This is your jewel, good woman The slayer of your sons has been conquered Give up your sorrow and rise up, remembering the kshatriya duty. When Vasudev was going to the mission of peace, you said to him, "Don't make peace with them as long as you and my husbands, sons and brothers are alive" You spoke then like a kshatrya woman and must remember it. 30 Our enemy Duryodhan has been slain and I have drunk Dushasan's blood. We have made an end of the enemy and are not to blame Ashwathama has been defeated and is no longer a brahman. He has been excommunicated, The jewel has been taken away from his person and his weapons have fallen." Draupadi said, "I have had my revenge. The guru's son is my guru Tie this jewel on your head, king." Yudhishthir, knowing that it was a thing used by his preceptor's son and

शुशुभे स महा राजा सचन्द्र इव पर्वतः ॥ ३६ ॥ उत्तस्थौ पुत्रशोकार्त्ता ततः कृष्णा
मनस्विनी । कृष्णञ्चापि महाबाहुं पर्यपृच्छद्धर्मराट् ॥ ३७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि द्रौपदी सान्त्वने षोडशोऽध्यायः १६ ॥



वैशम्पायन उवाच । हतेषु सर्वसैन्येषु सौप्तिके तै रथैस्त्रिभि । शोचन् युधिष्ठिरो
राजा दाशार्हमिदमब्रवीत् ॥ १ ॥ कथं नु कृष्ण पापेन क्षुद्रेणाक्लिष्टकर्मणा । द्रौणिना
निहताः सर्वे मम पुत्राः महारथाः ॥ २ ॥ तथा कृतास्त्रा विक्रान्ता सहस्रशतयोधिन ।
द्रुपदस्यात्मजाश्चैव द्रोणपुत्रेण पातिताः ॥ ३ ॥ यस्य द्रोणो महेष्वासो न प्रादादाहवे
मुखम् । निजघ्ने रथिनां श्रेष्ठं धृष्टद्युम्नं कथं नु सः ॥ ४ ॥ किं नु तेन कृतं कर्म तथायुक्तं

लेकरशिरपर धारणकिया । ३५ । इसकेपीछे दिव्यमणिको धारण करताहुआ महा
राजा युधिष्ठिर चन्द्रमासेयुक्त पर्वतकेसमान शोभायमानहुआ । ३६ । फिर पुत्रों के
शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठखड़ीहुई और महाराज धर्मराजनेभी श्रीकृष्ण
जीसे पूछा ३७ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

वैशंपायनबोले कि जो रात्रिके युद्धमें उनतीनों रथियों के हाथसे सबसेना के
लोगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा
। १ । कि हे श्रीकृष्णजी इसपापी नीच और निष्फल कर्म्मवाले अश्वत्थामा के
हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये । २ । उसीप्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी
लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथसे गिराये गये । ३ । बड़े
धनुषधारी द्रोणाचार्य्य ने जिसके युद्धमें मुख नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ
धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा । ४ । हे नरोत्तम उसने इसप्रकारका कौनसा योग्य

that Draupadi requested him to wear it, put the jewel on his head. Having worn it on his head, Yudhishthir looked glorious like a hill over which the moon shines. Full of sorrow for her sons' grief, Draupadi stood up and Yudhishthir thus addressed Shri Krishn." 37.

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, " At the slaughter of all the warriors by the three heroes, Prince Yudhishthir, in great grief, said to Shri Krishn, " How were all my brave sons slain by despicable Ashwathama the sinful wretch who did that useless deed? Similarly, the sons of Dru-

नरर्षभ। यदेकः समरे सर्वानवधीद्गुरोः सुतः ॥ ५ ॥ भगवानुवाच। नूनं स देवदेवानामीश्वरेश्वरमव्ययम्। जगाम शरणं द्रौणिरेकस्तेनावधीद्बहून् ॥ ६ ॥ प्रसन्नो हि महादेवो दद्यादमरतामपि। वीर्यं च गिरिशो दद्याद्येनेन्द्रमपि शातयेत् ॥ ७ ॥ वेदाहं हि महादेवं तत्त्वेन भरतर्षभ। यानि चास्य पुराणानि कर्माणि विविधानि च ॥ ८ ॥ आदिरेष हि भूतानां मध्यमन्तश्च भारत। विचेष्टते जगच्चेदं सर्वमस्यैव कर्मणा ॥ ९ ॥ एवं सिसृक्षुर्भूतानि ददर्श प्रथमं विभुः। पितामहो यमुवाचैनं भूतानि सृज मा चिरम् ॥ १० ॥ हरिकेशस्तथेत्युक्त्वा भूतानां दोषदर्शिवान्। दीर्घकालं तपस्तेपे मग्नोऽम्भसि महातपाः ॥ ११ ॥ सुमहान्तं ततः कालं प्रतीक्ष्यैनं पितामहः। स्रष्टारं सर्वभूतानां ससर्ज मनसापरम् ॥ १२ ॥ सोऽब्रवीत् पितरं दृष्ट्वा गिरिशं सुप्तमम्भसि। यदि मे नाग्रजो

कर्म किया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकोंको युद्धमें मारा।५ श्रीभगवान् बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के शरण में गया जोकि बड़े देवताओंके ईश्वरों काभी ईश्वरहै उस हेतुसे अकेलेने बहुतों को मारा। ६। महादेवजी प्रसन्नहोकर देवभागको भी देसक्ते हैं और उसपराक्रमकोभी वह गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रकोभी नाशकरे। ७। हे भरतर्षभ मैं महादेवजी को मूलसमेत जानताहूं और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म हैं उनको भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूं। ८। हे भरतवंशी यह शिव सब जीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्तहै और सब संसार इसी के प्रताप से चेष्टा करता है। ९। इस प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करनेके अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वरने सबके आदि तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहाकि जीवोंकी उत्पत्ति में विलम्ब न करो १० तब बड़े तपस्वीजीवोंके दोष जाननेवाले शिवजीने अङ्गीकार करके जलमें डूबकर बहुतकालतक तपकिया इसकेपीछे ईश्वरने बहुतकालपर्यन्त उनकी प्रतीक्षाकरके सब जीवोंकेस्वामी रजोगुणीरूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया। ११। वह जलमें

pad who could slay hundreds of thousands, were destroyed by him How could he slay Dhrishtadyumn whom even Drona could not oppose! By what deed he had power over my sons and others." Shree Bhagwan (Krishn) said, "Surely, Ashwathama sought the protection of immortal Shiv the lord of gods, and was therefore able to slay so many. Mahadev, when pleased, can give godhood. He can give a prowess capable of destroying Indra. I know Mahadev and his deeds done in the days of yore. He is the beginning, the middle and the end of all creation. All the world lives by his glory. Desirous of creating the world the almighty Ishwar asked Rudra to create all beings without delay. 10. Shiv took the work on himself and remained long merged in water to perform asceticism. Ishwar waited long for him and then created Prajapati from his thought

स्थम्भस्ततः स्रक्ष्याम्यहं प्रजाः ॥ १३ ॥ तमब्रवीत् पितानास्ति त्वदन्यः पुरुषोऽग्रजः । स्रष्टापुरेष जले मग्नो विस्रब्धः कुरु वैकृतम् ॥ १४ ॥ स भूतान्यसृजत् सप्त दक्षादींश्च प्रजापतीन् । यैरिमं व्यकरोत् सर्वं भूतग्रामं चतुर्विधम् ॥ १५ ता: सृज्यमानाः क्षुधिताः प्रजाः सर्वाः प्रजापतिम् । बिभक्षयिषवो राजन् सहसा प्राद्रवंस्तदा ॥ १६ ॥ स भक्ष्यमाणस्त्राणार्थी पितामहमुपाद्रवत् । आभ्यो मां भगवांस्त्रातु वृत्तिरासां विधीयताम् ॥ १७ ॥ ततस्ताभ्यो ददावन्नमोषधीः स्थावराणि च । जङ्गमानि च भूतानि दुर्बलानि बलीयसाम् ॥ १८ ॥ विहितान्नाः प्रजास्तास्तु जग्मुः सृष्टा यथागतम् । ततो ववृधिरे राजन् प्रीतिमत्यः स्वयोनिषु ॥ १९ ॥ भूतग्रामे विवृद्धे तु तुष्टे लोकगुरावपि । उदतिष्ठज्जलाज्ज्येष्ठः प्रजाश्चेमा ददर्श सः ॥ २० ॥ बहुरूपाः प्रजाः सृष्टा विवृद्धाश्च स्वतेजसा ।

डूबेहुये शिवजीको देखकर अपने पितासे बोलाकि मैं तुमसे प्रथम उत्पन्न होने वाला दूसरा नहीं हूं इसहेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं । १३ । ब्रह्माजीने कहा तेरे सिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जलमें डूबेहुये हैं विश्वास करनेवालीसृष्टिको उत्पन्नकरो।१४।उसने दक्षादिसात प्रजापतियोंको उत्पन्न किया और सबजीवोंकोभी उत्पन्नकिया जिनकेद्वारा इसचारप्रकारकी खानवाले जीव समूहोंको उत्पन्न किया । १५ । हे राजा तबवह सबसृष्टि उत्पन्नहोतेही क्षुधासे महाआर्त्त होकर प्रजापति के भक्षण करनेकी इच्छासे दौड़े । १६ । वह प्रजापति उनलोगोंसे अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पासगया और कहा कि हे भगवन् मेरी रक्षाके लिये उनकी जीविका विचारकरो । १७ । इसकेपीछे पितामहनेउनकी जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावरजीवदिये और बलवान लोगोंके अर्थ चेष्टाकरनेवाले और निर्बल जीवदिये ।१८।वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न विचार कियागयाथा अपने स्थानों को गई हे राजा इसकेपीछे अपने उत्पत्ति स्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धियुक्त हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्नहोनेपर वह महापुरुष जलसेउठे और उन सृष्टियों को देखा । २० । बहुत रूपवाली सृष्टिके लोग उत्पन्न

Seeing Shiv merged in water, he said to his father, "Because I am the first-created being, I shall bring forth all creatures." Brahma said, "Really there is no other being born before you, for Shiv is merged in water; you may bring forth all creatures. So he brought forth the seven Prajapatis, Daksh and others, who brought forth creatures of four sorts. 15, All the creatures, as they were born, became oppressed with hunger and ran towards the Prajapati to eat him up He sought protection of *Brahma* and asked him to provide them food. Then the grandfather created food, medicines and other plants as well as weaker creatures for the use of the stronger Having got food, they went to their own places The Prajapatis loving their parents, multiplied in

भसा । स्वक्रोधःभगवान्सो लिङ्गं स्वकायात्प्रविक्षपत ॥ २१ ॥ तत प्रविद्धं तथा भूमौ तथैव प्रत्यतिष्ठत । तमुवाचाव्ययो ब्रह्मा वचोभिः शमयन्निव ॥ २२ ॥ किं कृतं सलिले सर्व चिरकालस्थितेन ते । किमर्थश्चेदमुत्पाद्य लिंगं भूमो प्रवेशितम् ॥ २३ ॥ सोऽब्रवीत् जातसंरम्भस्तथा लोकगुरुर्गुरुम् । प्रजाः सृष्टाः परेणेमाः किं करिष्याम्यनेन वै ॥ २४ ॥ तपसाधिगतं चान्नं प्रजार्थं मे पितामह । ओषध्य परिवर्तेरन् यथैव सततं प्रजा: ॥ २५ ॥ एवमुक्त्वा स सक्रोधो जगाम विमना भवः । गिरेर्मुञ्जवतः पादं तपस्तप्तुं महातपाः ॥ २६ ॥

इतिश्री सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिर संवादे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥



होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्तथे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुक्त हुये और अपने लिंगको भीकाटकर पृथ्वीपर इसनिमित्त गिराया । २१ । वह जैसेहूआ उसीप्रकार पृथ्वीपर नियतहुआ वचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी बोले । २२ । हे रुद्रजीबहुत काल पर्यन्त अपने जलमें निवास करके क्याकिया और किसनिमित्त इसलिंगको उखाड़कर पृथ्वी में नियत कियाहै । २३ । वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु से बोले कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इसलिंगसे क्याकरूंगा । २४ । हे पितामह मेरे तपने प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्तहुआ और औषधी सदैव अपने रूपान्तरको करतीरहैंगी जिससे कि सृष्टि सदैव होतीरहे । २५ । वह विमन और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इसप्रकारसे कहकर मुंजवत पहाड़के समीप तपकरनेको गये २६ ।

large numbers. When the creatures were thus increasing and Brahma was pleased in his mind, Shiv came out of water and saw the creation 20 He saw the world full of creatures and being much enraged cut asunder his male organ and dropped it on the earth. It stood up erect as soon as it was cut down. Then wishing to appease his wrath Brahma said, " What have you done by staying so long under water and why have you cut and erected this organ of yours ? " Then Shiv gave him the following reply in anger, " The world has been created (in spite of me). What shall I do with this thing ? The food has been created by my own asceticism and medicinal herbs will contiue to change forms and give nourishment to the world " Having said this, the great asctic, dejected in mind, went to perform asceticism near Munjwat hill. " 26

भगवानुवाच । ततो देवयुगेतीते देवा वै समकल्पयन् । यज्ञं वेदप्रमाणेन विधिव
दुमप्सवः ॥ १ ॥ कल्पयामासुरथ ते साधनानि हवींषि च । भागार्हा देवताश्चैव
यं द्रव्यमेव च ॥ २ ॥ ता वै रुद्रमजानन्त्यो याथातथ्येन देवताः । नाकल्पयन्त
स्य स्थाणोर्भागं नराधिप ॥ ३ ॥ सोऽकल्प्यमाने भागे तु कृत्तिवासा मखेऽमरैः ।
साधनमन्विच्छन् धनुरादौ ससर्ज ह ॥ ४ ॥ लोकयज्ञः क्रियायज्ञो गृह्ययज्ञ
सनः पञ्चभूतमयो यज्ञो नृयज्ञश्चैव पञ्चमः ॥५॥ लोकयज्ञैर्नृयज्ञैश्च कपर्दी विदधे धनुः ।
सृष्टमभूत्तस्य धनुः किष्कुप्रमाणतः ॥ ६ ॥ वषट्कारो भवज्ज्यातु धनुषस्तस्य भारत यज्ञा
नि च चत्वारि तस्य संनहनेऽभवन् ॥ ७ ॥ ततः क्रुद्धो महादेवस्तदुपादाय कार्मु
क । आजगामाथ तत्रैव यत्र देवाः समीजिरे ॥ ८ ॥ तमात्तकार्मुकं दृष्ट्वा ब्रह्मचा
णमव्ययम् । विव्यथे पृथिवी देवी पर्वताश्च चकम्पिरे ॥९॥ न ववौ पवनश्चैव नाग्नि

अध्याय १८ ॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपर विधिके पूजनकरनेके अभिलाषी
देवताओं ने वेदके प्रमाणसे यज्ञको विचार किया । १ । फिर उन्हों ने सब साधनों
को घनेशों को भागके योग्य देवताओं को और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पना किया
। २ । हे राजा मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी
के भागको विचार नहीं किया ।३। यज्ञमें देवताओंसे भागका विचार न करने पर
यज्ञके नाशको चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया । ४ । लोक
यज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ, पञ्चभूत नरयज्ञ, इन चारप्रकार के यज्ञों में यहसब जगत्
नियत है । ५ । रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका
उत्पन्न कियाहुआ धनुष मापमें पांच हाथहुआ । ६ । हे भरतवंशी उसधनुष की
प्रत्यंचा वषट्कार प्रत्येक वासनारूपहुआ यज्ञोंके चारों अंग उसकी दृढ़तारूपहुये।७।
उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उसधनुषको लेकर वहां गये जहांपर कि देवता
लोग यज्ञ कररहेथे । ८ । उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर
पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्वत कम्पायमान हुये । ९ । वायु नहीं चली और

CHAPTER XVIII

Shree Bhagwan said, ' At the end of Satyug the gods intended to perform a sacrifice according to the Vedic rites in honour of Brahma. They collected all materials and set apart gods' portions. Not knowing Rudra well, they dedicated nothing to him. At this, Rudra created the bow to destroy the sacrifice of gods. The world exists by four sorts of Sacrifices known as Lok-yagya, Krya-yagya, Griha-yagya and Panchbhut nar-yagya. 5. Rudra prepared the bow from lok and nar yagyas. It was five cubits in length. Its string was made of Vashatkar and was exceedingly strong. Armed with that bow Rudra went to the place of sacrifice. The earth and mountains shook at the sight of that immortal Brahmchari armed

र्स्नेज्वाल चेधितः । व्यभ्रमच्चापि संविग्न दिवि नक्षत्रमण्डलम् ॥१०॥ न बभौ भास्कर श्चापि सोमः श्रीमुक्तमण्डल । तिमिरे नाकुलं सर्वमाकाशञ्चाभवद्वृतम् ॥११॥ अभि भूतास्ततो देवा विषयान्न प्रजज्ञिरे । न प्रत्यभाच्च यज्ञः स देवतास्त्रेसिरे तदा ॥१२॥ ततः स यज्ञं विव्याध रौद्रेण हृदि पत्रिणा । अपक्रान्तस्ततो यज्ञो मृगो भूत्वा सपा वकः ॥ १३ ॥ स तु तेनैव रूपेण दिवं प्राप्य व्यराजत । अन्वीयमानो रुद्रेण युधि ष्ठिर नभस्तले ॥ १४ ॥ अपक्रान्ते ततो यज्ञे . संज्ञा न प्रत्यभात् सुरान् । नष्टसंज्ञेषु देवेषु न प्राज्ञायत किञ्चन । १५। त्र्यम्बकः सवितुर्बाहू भगस्य नयने तथा । पूष्णश्च दशनान् क्रुद्धो धनुष्कोट्या व्यशातय ॥ १६ ॥ प्राद्रवन्त ततो देवा यज्ञाङ्गानि च सर्वशः । केचित्तत्रैव घूर्णन्तो गतासव इवाभवन् ॥ १७॥ स तु विद्राव्य तत्सर्वं शितिकण्ठो हसन्निव । अवष्टभ्य धनुष्कोटिं रोध विबुधांस्ततः ॥ १८ ॥ ततो वागमरैरुक्ता

वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्गमें व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करने लगे । १० । सूर्य और शोभायमान चन्द्रमण्डल भी प्रकाशमान नहीं हुये सब आकाश अन्धकार से व्याप्त हुआ । ११ । इसके पीछे व्याकुल देवताओंने विषयोंको नहीं जानी तब वह यज्ञ गुप्तहुआ औरदेवता भयभीत हुये । १२ । इसके पीछे उन्हों ने यज्ञको रुद्रवाणसे हृदयपर घायलकिया इसके पीछे वहयज्ञ मृगरूप होकरअग्निसमेत भागगया । १३ । हेयुधिष्ठिर फिरवह शरीरपने स्वर्गको पाकर आकाशमें शोभाय मान हुआ फिर क्रमसे रुद्रजीसे पीछा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे स्वर्गसे पतित हुआ १४ इसके पीछेयज्ञके भागनेपर देवताओंका ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओंके अचेत होनेपर कुछनहीं जानागया। १५ त्र्यम्बक परमेश्वरने सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की भुजाओंको और भगके नेत्रोंको पूषाके दाँतोंको पूर्वोक्त धनुषकी कोटि से गिराया ।१६ । इसके पीछेदेवता और यज्ञोंके सब अङ्गभागे और कितनेही वहां घूमतेहुयेनिर्जीवके समान हुये । १७। उन रुद्रजी ने उस सब यज्ञको भङ्गोंसमेत भगाकर हँसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी प्रीतिसे पृथक्किया । १८ । इसके

with bow. The wind did not blow, fire ceased to burn and stars began to turn round restlessly. 10. The sun and the moon lost their splendour and the sky became dark. The gods did not know what to do in their terror-striken state and the sacrifice vanished. Rudra pierced the sacrifice with his arrow and it fled away with A[illegible] in the likeness of a deer. It stood in the sky in that shape, chased by Rudra it fell down again at the lapse of its merits. The gods l[illegible] their senses and did not know what to do. Parmeshwar cut the arms of Savita, the eyes of Bhag and the teeth of Poosha with the [illegible] of his bow. 16 The gods scampered in terror, while some b[illegible] motionless like inanimate things. Shiv with a smile checked the [illegible] and removed his bow string. Separated from the string the bow

१९॥ ततो

स्वां तस्य धनुर्ज्यामच्छिनत् । अथ तत् सहसा राजन् छिन्नज्यं धनुरुत्पतत् ॥ २० ॥ ततः विधनुषं देवा देवश्रेष्ठमुपागमन् । शरणं सह यज्ञेन प्रसादञ्चाकरोत्प्रभुः ॥ २० ॥ ततः प्रसन्नो भगवान् स्थाप्य कोपं जलाशये । स जलं पावको भूत्वा शोषयत्यनिशं प्रभो ॥ २१ ॥ भगस्य नयने चैव बाहू च सवितुस्तथा । प्रादात् पूष्णश्च दशनान् पुनर्यज्ञांश्च पाण्डव ॥ २२ ॥ ततः सुस्थमिदं सर्वं बभूव पुनरेव हि । सर्वाणि च हवींष्यस्य देवा भागमकल्पयन् ॥ २३ ॥ तस्मिन् क्रुद्धेऽभवत् सर्वमस्वस्थं भुवनं प्रभो ॥ प्रसन्ने च पुनः स्वस्थं प्रसन्नोऽस्य च वीर्यवान् ॥ २४ ॥ ततस्ते निहताः सर्वे तव पुत्रा महारथाः । अन्ये च बहवः शूराः पाञ्चालाः सपदानुगाः ॥ २५ ॥ न तन्मनसि कर्त्तव्यं न च तद्द्रौणिना कृतम् । महादेवप्रसादः स कुरु कार्य्यमनन्तरम् ॥ २६ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि, कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

पीछे देवताओंकी कहीहुई आणीने उनकेधनुषकी प्रत्यञ्चाको जुदाकिया हेराजा फिर प्रत्यञ्चासे जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमानहुआ । १९ । इसके पीछे यज्ञसमेत सब देवता उस देवताओं में श्रेष्ठ और धनुषसे रहित ईश्वरकीशरण में गये और प्रभुने कृपाकरी । २० । इसकेपीछे भगवानक्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र अज्ञानचित्तमें नियतकरके प्रसन्नहुये हेसमर्थ वहक्रोध आपस्वात् अग्निहोकर जलको पान करताहै । २१ । हे पाण्डव फिर भग देवताके नेत्रों को और सविताकी ... को पूषा के दांतोंको और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्विकयज्ञ जारीहुआ ।२२।उसके पीछे वह सब जगत् फिर स्वस्थचित्त हुआ और देवताओंने सब हव्यों को उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण किये गये । २३ । हे ... युधिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुलहुआ और प्रसन्न होनेपर फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये । २४ । उस कारण से आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न के पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य ... वीर मारेगये । २५ । यह चित्तमें नहींधारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामाने नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीनहै शोक न करना चाहिये महादेवजी की प्रसन्नतासे निस्सन्देह शीघ्रतापूर्वक करनेके योग्य कर्मोंको करो । २६ ॥

suddenly jumped a little Then all the gods with the sacrifice sought refuge of Shiv and he was merciful. 20. Then he placed his anger in the ocean of ignorant minds. It eats the mind as fire does water. Then he restored the limbs of gods and the sacrifice began. Then the world became satisfied and the gods set apart his share. The world was agitated with his anger and was restored to equilibrium at his pleasure. Shiv was pleased with Aswathama and therefore he would slay Dhrishtadyumn and your sons. It was not the work of Ashwathama but that of Shiv and therefore you should not be sorry." 26.





महाभारत

॥ अथ जलप्रादानिकपर्व ॥



नारायण नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयत् ॥
जनमेजय उवाच हते दुर्य्योधने चैव हते सैन्ये च सर्वशः । धृतराष्ट्रो महाराज श्रुत्वा किमकरोन्मुने ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामना । कृपप्रभृतयश्चैव किमकुर्वत ते त्रय ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्न श्रुत कर्म शापादन्योन्यकारितात् । वृत्तान्तमुत्तर ब्रूहि यदभाषत सञ्जय ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते पुत्रशते दीन छिन्न

अथ स्त्रीपर्व।

अध्याय ॥ १ ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नर को और सरस्वती देवीको नमस्कार कर के फिर जयनाम इतिहास को वर्णन करता हूं जनमेजय बोले कि हे मुनि दुर्योधन के मरने और सब सेनाके नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया । २ । आपके कहने से अश्वत्थामा का कर्म सुना परस्पर शाप देनेमे पीछेका जो वृत्तान्त संजय ने कहाहै उसको आप मुझसे वर्णन कीजिये । ३ । वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्ष समान

STRIPARV

CHAPTER I

Having bowed down to Narayan, Nar the best of male beings and goddess Saraswati, let us undertake the history of the great victory. Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the death of Duryodhan and the destruction of all the army ? What did Yudhishthir and the three warriors, Kripacharya and others do ? I have heard of the deed of Ashwathama, what was the state of things after he was cursed? " Vaishampayan said " At the death of his hundred sons,

शाखमिव द्रुमम् । पुत्रशोकाभिसन्तप्तं धृतराष्ट्रं महीपतिम् । ध्यानमूकत्वमापन्नं चिन्तया समभिप्लुतम् ॥ ४ ॥ अभिगम्य महाप्राज्ञः संजयो वाक्यमब्रवीत् । किं शोचसि महाराज नास्ति शोके सहायता ॥ ५ ॥ अक्षौहिण्यो हताश्चाष्टौ दश चैव विशाम्पते । निर्जनेयं वसुमती शून्या संप्रति केवला ॥ ६ ॥ नानादिग्भ्यः समागम्य नानादेश्या नराधिपाः । सहितास्तव पुत्रेण सर्वे वै निधनं गताः ॥ ७ ॥ पितृणां पुत्रपौत्राणां ज्ञातीनां सुहृदां तथा । गुरूणां चानुपूर्व्येण प्रेतकार्याणि कारय ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जनः । पपात भुवि दुर्धर्षो वाताहत इव द्रुम ॥ ९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जनः । दुःखी नूनं भविष्यामि विचरन् पृथिवीमिमाम् ॥ १० ॥ किन्नु बन्धुविहीनस्य जीवितेन ममाद्य वै । लूनपक्षस्य इव मे जराजीर्णस्य पक्षिणः ॥ ११ ॥ हृतराज्यो हतबन्धुर्हतचक्षुश्च वै तथा । न भ्राजिष्ये

दुखी और पुत्रशोक से पीड़ावान ध्यान मौनता युक्त चिन्तामें डूबेहुये पृथ्वी के स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पास जाकर संजयने यह वचन कहा हे महाराज क्या शोचते हो शोकमें सहायता नहीं होसक्ती है । ५ । हे राजा अठारह अक्षौहिणी सेना मारीगई अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर मित्रों से विहीन है । ६ । क्योंकि नानादेशके राजाओं ने बहुत दिशाओं से आकर सबने आपके पुत्र के साथ नाशको पाया । ७ । अब आप अपने पुत्र पौत्र ज्ञाति सुहृद और सब कौरवोंके क्रिया कर्मको कराइये ८ वैशम्पायनबोले कि पुत्र पौत्रादिकों के मरने से पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र इस शोक कारी वचन को सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि वायुसे ताड़ित वृक्ष गिरपड़ताहै । ९ । धृतराष्ट्रबोलेकि जिसके पुत्र मंत्री और सब सुहृज्जनमारेगये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण पृथ्वीपर विचरूंगा १० अबकटे पक्षवाले पक्षी के समान वृद्ध दशासे दुर्बल बांधवोंसे रहित के जीवन से क्या प्रयोजनहै हे महाभाग राज्य सुहृज्जन और नेत्रों से रहित मैं ऐसा शोभित नहींहूंगा जैसेकि बिना किरण वाला सूर्य्य अशोभित

Dhritrashtra, full of grief, like a tree destitute of all branches, was sitting in deep meditation and silence Sanjaya came to him and said, " What are you thinking about, Emperor ? Grief can be of no help. 5. Eighteen akshauhinis have been destroyed and the earth has become destitute of warriors, princes and friends. Princes of different lands came here and were destroyed with your son. You have now to perform the funeral rites of your sons, grandsons and other Kauravas. " Dhritrashtra fell down on the earth like a tree up-rooted by wind and said, " I shall now roam on the earth destitute of sons, friends and advisers. 10. What is the use of living like a featherless bird in my old age ? Destitute of kingdom, friends and eyes, I shall look inglorious like the sun without his rays. I did not act upon the advice

हाप्राप्त क्षीणरश्मिरिवांशुमान् ॥ १ । न कृतं सुहृदां वाक्यं जामदग्न्यस्य जल्पतः । नारदस्य च देवर्षेः कृष्णद्वैपायनस्य च ॥१३॥ सभामध्ये च कृष्णेन यत् श्रेयोभिहितं मम। अलं वैरेण ते राजन् पुत्र संगृह्यतामिति । तच्च वाक्यमकृत्वाहं भृशं तप्यामि दुर्मतिः ॥१४॥ न हि श्रोतास्मि भीष्मस्य धर्मयुक्तं प्रभाषितम् । दुर्योधनस्य च तथा वृषभस्येव नर्दतः ॥ १५ ॥ दुःशासनवधं श्रुत्वा कर्णस्य च विपर्ययम् । द्रोण सूर्य्य पराभवं हृदयं मे विदीर्यते ॥ १६ ॥ न स्मर स्यात्मनः किञ्चित् पुरा सञ्जय दुष्कृतम् । यस्येदं फलमद्येह मया मूढेन भुज्यते ॥ १७ ॥ नूनं ह्यपकृतं किञ्चिन्मया पूर्वेषु जन्मसु । येन मां दुःखभागेषु धाता कर्मसु युक्तवान् ॥ १८ ॥ परिणामश्च वयसः सर्वबन्धुक्षयश्च मे । सुहृन्मित्रविनाशश्च दैवयोगादुपागतः । कोऽन्योऽस्ति दुःखिततरो मत्तोऽन्यो हि पुमान् भुवि ॥ १९॥ तन्मामद्यैव पश्यन्तु पाण्डवाः संशितव्रतम् । विवृतं ब्रह्मलोकस्य दीर्घमध्वानमास्थितम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्य लालप्यमानस्य बहुशोकं

होताहै १२ परशुरामजी देवऋषिनारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकोंके कहे हुवे वचनोंको नहींकिया । १३ । सभाके मध्यमें भी कृष्णजीने मेरेकल्याणका कर ने वाला यह वचन कहाथा कि हेराजा शत्रुताकोत्यागो। और अपने पुत्रको बन्धन में करो उनके वचनोंको भी न करके में दुर्बुद्धी अब कठिन दुःखको पाताहूं और धर्म्मसे संयुक्त भीष्मजी के भी वचनको मुझअभागे ने नहीसुना राजाओंमें दुर्यो धनका नाश दुःशासन का मरण कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्यरूप सूर्य्य के ग्रहणको उनकर मेरा हृदय फटता है । १६ । हेसंजय पूर्वसमयके कियेहुये अपनेकुछ पापों को नहींजानताहूं जिसके फलको अब मैं दुर्भागी भोग रहाहूं । १७ । निश्चय कर के मैंने पूर्व कर्म्मों में बड़े पाप किये हैं जिसके कारण से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्म्मों में प्रवृत्त किया । १८ । मेरी अवस्थाका अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश और सुहृद बंधुओं का मरना दैवयोगसे है दूसरी रीतिसे नहीं है इस लोकमें मुझसे अधिक दुखी दूसरा कौन पुरुष है । १९ । हे नेमव्रत यह सब पाण्डव लोग मुझको उस ब्रह्मलोक के मिलने और बड़े मार्गमें नियतहुये को देखेंगे । २० । वैशम्पायन बोले सञ्जयने उस

of Parashuram, Narad and Vyas, my well wishers. Krishn told me to give up enmity and to casts my son in prison, but I did not act up on his advice and have fallen into this trouble. I did not give ear even to the advice of Bhishm. My heart breaks to hear of the death of Duryodhan, Dushasan, Karan and D n. 16 I donot know for what sins of my previous life I am being punished. Surely I have committed grievous sins for which I have fallen into this misery. The great destruction of kinsmen and friends in my old age could not be caused but by Fate Who can be more full of misery than me ? The Pandavas will now see me preparing for the next world." 20 Vai-

विलम्बतः । शोकार्त्तं नरेन्द्रस्य सञ्जयो वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥ शोकं राजन् व्यपनुद श्रुतास्ते वेदनिश्चयाः । शास्त्रागमाश्च विविधा वृद्धेभ्यो नृपसत्तम । सृञ्जये पुत्रशोकार्त्ते यदूचुर्मुनयः पुरा ॥ २२ ॥ यथा यौवनजं दर्पमास्थिते ते सुते नृप । न त्वया सुहृदां वाक्यं श्रुतमर्थहितं तदा ॥ स्वार्थश्च न कृतः कश्चिल्लुब्धेन फलगृद्धिना ॥ २३ ॥ असिनैवैकधारेण स्वबुद्ध्या तु विचेष्टितम् । प्रायशोऽवृत्तसम्पन्नाः सततं पर्य्युपासिताः ॥ २४ ॥ यस्य दुःशासनो मन्त्री राधेयश्च दुरात्मवान् । शकुनिश्चैव दुष्टात्मा चित्रसेनश्च दुर्मतिः । शल्यश्च येन वै सर्वं शल्यभूतं कृतं जगत् ॥ २५ ॥ कुरुवृद्धस्य भीष्मस्य गान्धार्य्या विदुरस्य च । द्रोणस्य च महाराज कृपस्य च शारद्वत ॥ २६ ॥ कृष्णस्य च महाबाहो नारदस्य च धीमतः । ऋषीणाञ्च तथान्येषां व्यासस्य मिततेजसः । न कृतं तेन वचनं तव पुत्रेण भारत ॥ २७ ॥ अल्पबुद्धिरहंकारी

विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजाधृतराष्ट्र के शोकका दूर करनेवाला वचन कहा कि । २१ । हेराजा शोकका दूरकरो तुमने बहुतसे धर्मके निश्चय सुनेहैं हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमने वृद्धों से भी अनेक प्रकारके शास्त्र सुने हैं कि पूर्वसमयमें पुत्रके शोकसे राजासृञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनियोंने जो कहा । २२ । और जिसप्रकार तरुणता के अहंकारमें आपके पुत्रदुर्योधन के नियत होनेपर ऋषियोंने जोकहा उसको भी सुना । २३ । जोतुमने वार्त्तालाप करनेवाले अपने शुभचिन्तकोंके वचनोंको नहीं अंगीकार किया लोभी और हतबुद्धी होकर तुमनेकोई अपना प्रयोजन नहींकिया । २३। आपने केवल एकधाररखनेवाली तलवार के समान अपनी ही बुद्धिसे सब कर्मकिये और बहुधा दुराचारी लोगोंको सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २४ दुश्शासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ा दुष्टात्मा शकुनी दुर्मति चित्रसेनऔर शल्य जिसके मन्त्रीहैं जिस शल्यने सब जगत्को भालरूप किया । २५ । हे महाबाहु महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र आपके उस पुत्रने कौरवोंके वृद्धभीष्म पितामह, गान्धारी, विदुर, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् नारदजी और बड़ेतेजस्वी व्यासजी आदिअन्य २ ऋषियोंका भीवचन नहींकिया जोकि निर्बुद्धी अहंकारी सदैव युद्धको करता निर्दयी अजेयपराक्रमी

shampayan said, that Sanjaya consoled the monarch in the following words:—" Cease your grief, king. You have heard many religious precepts from old men as well as that which the munis said to Srinjaya who was oppressed with grief for his son. You also heard the talk of the sages about your son Duryodhan's pride. You did not attend to the advice of your well wishers and have therefore thrown yourself into misery. Like an edged sword you were self-willed and kept company with wicked men like Dushasan, Karan, Shakuni, Chitrasen and Shalya the thorn of the world. Your son gave no ear to the advice of old *Bhishm*, Gandhari, Drona, *Kripa*, Sbri *Krishn*, wise Narad, glorious Vyas and other sages. He was unwise, proud, war-

र्व युद्धमिति ब्रुवन्। क्रूरो दुर्मर्षणो नित्यमसन्तुष्टश्च वीर्य्यवान् ॥२८॥ श्रुतवानसि यावी सत्यवांश्चैव नित्यदा। न मुह्यन्तीदृशा सन्तो भवादृशाः ॥ २९ ॥ न धर्मं सत्‌ न कश्चिन्नित्यं युद्धमिति ब्रुवन्। घातिता: क्षत्रियाः सर्वे शत्रूणां वर्द्धितं यशः। ३०॥ मध्यस्थो हि त्वमप्यासीर्नेक्षमं किञ्चिदुक्तवान्। दुर्य्योधन त्वया मारस्तुलया न समं तः ॥ ३१ ॥ आदावेव मनुष्येण वर्त्तितव्यं यथाक्षमम्। यथा नातीतमर्थं वै पश्चात्ता न युज्यते ॥ ३२ ॥ पुत्रगृद्धया त्वया राजन् प्रियं तस्य चिकीर्षितम्। पश्चात्तापमिमं ता तो न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३३ ॥ मधु यः केवलं दृष्ट्वा प्रपातं नानुपश्यति। स भ्रष्टो मधुलोभेन शोचत्येवं यथा भवान् ॥ ३४ ॥ अर्थान्न शोचन् प्राप्नोति न शोचन् विन्दते फलम्। न शोचन् श्रियमाप्नोति न शोचन् विन्दते परम् ॥ ३५ ॥ स्वयमुत्पाद्य ग्निस्थमग्नि वस्त्रेण परिवेष्टयन्। दह्यमानो मनस्तापं भजते न स पण्डितः ॥३६॥ स्वयमेव

और सदैव अशान्ततासे असंतुष्टथा। २८। तुम सदैव शास्त्र और शास्त्रके स्मरण करनेवालेबुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ताहो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान सन्तलोग मोहको नहींपातेहैं। २९। सदैवयुद्धको कहनेवालेने कोई उत्तम और शुभकर्म्म नहीं किया सब क्षत्रियोंका नाशकिया और शत्रुओंका यशबढ़ाया ।३०। तुमभी सबके मध्यस्थहुये परन्तु कोई उचितबात नहींकही हेअजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला कोसमान नहीं रक्खा। ३१। प्रारम्भमेंही मनुष्यको उचितकर्म्म करना इसनिमित्त योग्यहै जिससे किभूतकालका प्रयोजन पश्चातापसे युक्त नहोय। ३२। हेराजा तुमने पुत्रकी प्रीति से पुत्रका हित और प्रिय करना चाहताथा फिर पीछेसे इस दुःखकोपाया तुम शोचने के योग्य नहीं हो।३३। जोपुरुष केवल शहदको देखकर अपने गिरनेको नहीं देखता है वह शहदके लोभसे गिराहुआ ऐसे शोचता है जैसे किआप शोचतेहैं। ३४। शोचताहुआ पुरुष न मनोरथको पाताहै न फलको पाता है न कल्याणकोपाताहै और न ब्रह्मको पाताहै। ३५। जोपुरुष अपनेआप अग्निको उत्पन्न करके वस्त्रसे ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करताहै वह पण्डित नहींहै। ३६ पुत्रकेसाथ तुम्हारे वचनरूपवायुसे प्रेरित लोभरूपी घृतसेसींचा

loving, invincible, brave and unsatisfied. You are learned, wise and truthful. People like you need not be fatuous He loved fighting and never did any good, He caused the destruction of warriors and increased the fame of enemies. 30 You presided the councils, but never said what was proper. Your words were always biassed on account of fondness One should always do what is proper from the outset in order to avoid the pangs of remorse You have fallen into misery because you were so fond of your son and are therefore not worth pitying An avaricious man, who climbs up a tree for the sake of honey and falls down from a great height, feels remorse like you Such a one reaps no econ[illegible] or religious benefit. 35 He is

ससुतेनायं वाक्यवायुसमीरितः । लोभाज्येन च संसिक्तो ज्वलितः पार्थपावकः ॥ तस्मिन् समिद्धे पतिताः शलभा इव ते सुताः । तान् वै शराग्निनिर्दग्धान्न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३८ ॥ यच्चाश्रुपातात् कलिलं वदनं वहसे नृप । अशास्त्रदृष्टमेतद्धि न प्रशंसन्ति पण्डिताः ॥ ३९ ॥ विस्फुलिङ्गा इव ह्येतान् दहन्ति किल मानवान् । जहीमं बुद्ध्या वै धारयात्मानमात्मना ॥ ४० ॥ एवमाश्वासितस्तेन सञ्जयेन विदुरो भूय एवाह बुद्धिपूर्वं परन्तप ॥ ४१ ॥

इति श्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वासने प्रथमोऽध्यायः ॥

हुआ यह पाण्डवरूप अग्निरूप प्रज्वलित हुआहै । ३७ । उस प्रज्वलित अग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियोंके समान गिरें तुम बाणोंकी अग्निसे जलकर उनपुत्रोंके शोचकरनेको योग्य नहींहो । ३८ । हेप्रभु जोतुम अश्रुपातोंसे मुखको धारणकरतेहो यहशास्त्रके विपरीतहै पण्डितलोग इसकीप्रशंसा नहींकरते । निश्चयकरके यह आँसू अग्निके स्फुलिङ्गों के समान मनुष्योंको भस्मकरतेहैं यहांतुम बुद्धिसे शोकको त्यागकरके अपने चित्तको स्वाधीन करो । ४० । वैशम्पायन बोले किउस महात्मा संजय से इसप्रकार विश्वास दियागया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त विदुरजी यह वचन बोले ॥ ४१ ॥

---

not a wise man who himself makes fire and is burnt by it as he hides it with his cloth. The wind of your affectionate words to your son fed by the ghee of your avarice, caused the inflamation of the fire of Pandavas. Your sons fell down in its rising flames like moths and were burnt. You need not feel any sorrow for them. Your washing the face with tears is irreligious and unpraiseworthy. Surely these tears burn people like flames of fire. Curb your grief by your wisdom and control yourself." Vaishampayan said, "Thus consoled by Sanjaya, the king was thus addressed by Vidur in the following words:—



वैशम्पायन उवाच । ततोऽमृतसमैर्वाक्यैर्ह्लादयन् पुरुषर्षभम् ।' ... विदुरः ... उवाच । उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे धारयात्मा ... लोकेश्वर परा गति ॥ २ ॥ सर्वे ... निधनाः ... मरणान्तञ्च जीवितम् ॥ ३ ॥ ... किं न योत्स्यन्ति हि ते क्षत्रियाः क्षत्रियर्षभ ॥ ४ ॥ ... काले प्राप्ते महाराज न कश्चिदतिवर्तते ... भावमध्यानि भारत । अभावनिधनान्येव तत्र का परिदे... । ... न शोचन् म्रियते नरः । एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थं ... सर्वाणि ... न कालस्य प्रियः ...

अध्याय ॥ २ ॥

वैशम्पायन बोले अमृतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रको प्रसन्नकरते विदुरजी ... । १ । विदुरजीबोले हेराजा उठो क्यों सोतेहो बुद्धिसे ... जीवोंका यही निश्चयहै ।२। किसव सृष्टिसमूह ... ऐश्वर्य अन्तमें पतनहोनेवालेहैं मिलने ... और जीवनभी अन्तमें मरणरखनेवालाहै । ३ । हे भरत ... यमराज ... और भयभीतोंको आकर्षण करताहै तो हे क्षत्रियोंमेंश्रेष्ठ ... क्षत्रिय ... नहींयुद्धकरतेहैं । ४ । युद्धको न करता मरताहै और लड़ता ... जीवता रहताहै हे महाराज कालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहीं करता । ५ । हे भरतवंशी सबजीव ... आरम्भमें ही अभावरूप है मध्य में भावरूपहै और मरनेपर अभावरूप है ऐसे स्थानपर कौन विलाप है । ६ । शोचताहुआ मनुष्य नहीं मरता है इस मृतक के पीछे नहीं जाता है शोचताहुआ ... हेकौरवोंमें श्रेष्ठ यहकाल नाना प्रकार लोकमें किस निमित्त शोच करतेहो । ७ । ... कारके सबजीवोंको आकर्षण करताहै कालका कोई प्याराहै न शत्रुहै । ८ । हे

CHAPTER II

Vaishampayan said, "Consoling Dhritrashtra with his nectarlike words, Vidur said, "Rise up, king why do you sleep? Control yourself, for this is the goal of all beings. Every created being dies and every rise has a fall. Those who meet have to suffer separation, and life ends in death. Why should kshatryas shun war when death overtakes the bold and the coward? A nonfighting man dies, while fighting man lives, who can escape death. 5. When all the beings donot exist in the beginning and end, and only exist in the middle, why then should one weep for them? Why do you lament when you know that one who laments does not follow the dead. Death over-

कश्चिद्द्वेष्यः कुरुसत्तम ॥ ८ ॥ यथा वायुस्तृणाग्राणि संवर्त्तयति सर्वशः।
कालवशं यान्ति भूतानि भरतर्षभ ॥ ९ ॥ एकसार्थप्रयातानां सर्वेषां तत्र
यस्य कालः प्रयात्यग्रे तत्र का परिदेवना॥ १० ॥ न चाप्येतान् हतान् युद्धे राजन्
तुमर्हसि। प्रमाणं यदि शास्त्राणि गतास्ते परमां गतिम् ॥११॥ सर्वे
सर्वे च चरितव्रताः। सर्वे चाभिमुखाः क्षीणास्तत्र का परिदेवना॥ १२ ॥
पतिताः पुनश्चादर्शनं गताः। न ते तव न तेषां त्वं तत्र का परिदेवना॥ १३॥
लभते स्वर्गं हत्वा च लभते यशः। उभयं नो बहुगुणं नास्ति निष्फलता रणे
कामदुघाल्लोकानिन्द्रः सङ्कल्पयिष्यति। इन्द्रस्यातिथयो ह्येते भवन्ति
न यज्ञैर्दक्षिणावद्भिर्न तपोभिर्न विद्यया। स्वर्गं यान्ति तथा मर्त्या यथा शूरा
॥ १६ ॥ शरीराग्निषु शूराणां जुहुवुस्ते शराहुतीः। हूयमानाञ्छरांश्चैव

भरतर्षभ जैसेकि वायु सबतृणकी नोकोंको उलटपलटकरता है उसी
कालके आधीन होतेहैं। ९। एकसाथ आनेवाले और वहां जानेवाले
मध्यमें जिसके आगे कालजाताहै उसमें कौन विलाप करताहै। १०। हेराजा
मेंमृतकहुये इनवीरोंके शोचकरनेकोभी योग्यनहींहो इसमें शास्त्रका प्रमाणहै।
परमगतिकोपाया सब वेदपढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकारसे व्रतकरनेवाले
सम्मुखहोकर विनाशवानहुये इसमें किसबातका विलाप करनाहै। १२। दृष्टिमें
आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्नहुये और फिर उसी दृष्टिमें न आनेवालेको पाया यह
आपकेहैं न आप उनकेहैं तब कैसा विलापहै। १३। मृतकभी स्वर्गको पाताहै
मरकरभी जिसको पाताहै हमलोगोंको वहदोनो बहुतगुणवालेहैं युद्धमें
नहीं है।१४। इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्तकरनेवाले लोकोंको विचार
गे हेपुरुषोत्तम यह सब शूरवीर लोग इन्द्रके अतिथीहोतेहै। १५। मनुष्य
वालेयज्ञ तप और विद्या से उस प्रकार स्वर्गको नहीं पातेहैं जैसे कियुद्ध में
उन शूरवीर तेजस्वियों नें पायाहै जिन्होंने शरीररूपी अग्नियोंमें बाणरूप

takes all. He has no friends or enemies. All beings are upset
death like the blades of grass by the wind. Why do you gr
all men have to die? 10. You need not lament those who died
war, for according to our religious books they have gone to
Those who read the Vedas and observe vows have to die; what
therefore to lament for? They came from eternity and were
in *Brahm*. They and you did not belong to one another; why do
you weep then? Both those who die or are slain in war are alike
us; there is nothing disadvantageous is fighting. Indra will decide
the fate of the warriors, they are to be his guests. 15. Not eve
those who perform sacrifices with donations, get such regions as
obtained by those who die fighting. A kshatrya has no easier way

...वः ॥ १७ ॥ एवं राजंस्त्वयाचक्षे स्वर्गपन्थानमुत्तमम् । न युद्धादधिकं किंचित् क्षत्रिय ...वेह विद्यते ॥ १८ । क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः । आशिषं परमां प्राप्ता ...शोच्याः सर्व एव हि ॥१९॥ आत्मानमात्मनाश्वास्य माशुचः पुरुषर्षभ । नाद्य लोका ...मृतस्त्वं कार्यमुत्स्रष्टुमर्हसि ॥ २० ॥ माता पितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च । संसा...भूतानि कस्य ते कस्य वा वयम् ॥ २१ ॥ शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि ...। दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ २२ ॥ न कालस्य प्रियः कश्चिन्न ...ष्यः कुरुसत्तम । न मध्यस्थः क्वचित् कालः सर्वं कालः प्रकर्षति ॥ २३ ॥ कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः । कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥ २४ ॥ अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसञ्चयः । आरोग्यं प्रियसंवासो गृध्येदेषु न ...पण्डितः॥२५॥न जानपदिकं दुःखमेकः शोचितुमर्हसि । अप्यभावेन युज्येत तच्चास्य

...ोंको होमा और परस्पर होमेहुये वाणोंको सहा । १७ । हेराजा इसप्रकार ...से स्वर्गके उत्तम मार्गको तुमसे कहताहूं इसलोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्धसे अधि...क नहीं वर्त्तमानहै । १८ । युद्धमें शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फलको पाया सबही शोचके अयोग्य हैं । १९ । हेपुरुषोत्तम तुम ज्ञानसे अपनेको विश्वासदेकर शोचमतकरो शोकसे विजय कियेहुये तुम करनेके योग्यकर्मके छोड़ने को योग्य नहींहो । २० । हजारों माता पिता और सैकड़ोंपुत्र स्त्री संसारमें माप्तकिये वह किसके और हम किसके । २१ । प्रति दिन शोकके हजारों स्थान और आनन्द के सैकड़ोंस्थान अज्ञान में प्रवेश करतेहैं ।२२। हेकौरवोत्तम कालका कोई प्याराहै न शत्रुहै वह काल किसी स्थानपरभी मध्यस्थ नहीं है काल सबको खैंचताहै । २३ । काल जीवमात्रों को पकाताहै और कालही सृष्टिको मारताहै कालही सोनेवालोंके मध्य में जागताहै और कालही दुःखसे उल्लंघनके योग्य है । २४ । तरुणाईरूप वृद्धता धनसमूह और नीरोगतापूर्वक निवास यहसब विनाश वानहैं पण्डित इनमें मइत्त नहीं होताहै । २५ । अकेले तुम सब दुनियाभरे के दुःख

heaven than dying in battle All the warriors slain have got good regions and are not worth lamenting for. Donot give yourself up to grief, but do what is necessary. We make thousands of fathers, mothers, sons and wives in this world and then sever our connection from them. A foolish man is beset with thousands of pleasures and pains every day. Death observes neither friendship nor enmity, but overtakes all. Time makes all beings ripe and then kills them. He is awake when all beings are asleep and is difficult to be overcome. Youth, age, wealth and health are all perishable; a wise man does not set his mind on any one of them. You need not feel sorrow for all the world, for one who dies never comes back to us. We should not feel sorry for those who have died bravely; it is better not to

न निवर्त्तते ॥ २६ ॥ अशोचन् प्रतिकुर्वीत यदि पश्येत् पराक्रमम् । भैषज्यमेतद्दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत् ॥ २७ ॥ चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि प्रवर्द्धते । अनिष्टसंप्रयोगाच्च विप्रयोगात् प्रियस्य च ॥ २८ ॥ मनुष्या मानसैर्दुःखैर्युज्यन्ते येऽल्पबुद्धयः । नार्थो न धर्मो न सुखं यदेतदनुशोचसि ॥२९॥ न च नापैति कार्य्यार्थात्त्रिवर्गाच्चैव हीयते । अन्यामन्यां धनावस्थां प्राप्य वैशेषिका नराः ॥३०॥ असन्तुष्टाः प्रमुह्यन्ति सन्तोषं यान्ति पण्डिताः । प्रज्ञया मानसं दुःखं हन्याच्छारीरमौषधैः । एतज्ज्ञानस्य सामर्थ्यं न बालैः समतामियात्॥३१॥शयानञ्चानुशेते हि तिष्ठन्तं चानुतिष्ठति।अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृतं नरम् ।३२॥यस्यां यस्यामवस्थायां यत्करोति शुभाशुभम्।तस्यां तस्यामवस्थायां तत्फलं समुपाश्नुते ॥३३॥ येन येन शरीरेण यद्यत् कर्म करोति यः । तेन तेन शरीरेण तत्तत् फलमुपाश्नुते ॥ ३४ ॥ आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः । आत्मैव ह्यात्मनः

के शोचनेके योग्य नहीं होजो अभाव से मिलताहै उसका वह फिर लौटकर नहीं आताहै । २६ । जोपराक्रम से नाशको पावे उसको शोचताहुआ मनुष्य उसकी चिकित्साको नहीं करता है दुःखका यह इलाजहै जो उसको न विचार करे ।२७। चिन्ता कियाहुआ दूर नहीं होताहै और फिर फिर अधिक बढ़ताहै अप्रियके मिलने और प्रियके वियोगसे । २८ । वह आदमी बड़े २ चित्त के दुःखसे संयुक्तहोतेहैं जोकि निर्बुद्धी हैं यह न अर्थहै नधर्महै न सुखहै जोतुम शोच करतेहो । २९ । यह करनेके योग्य प्रयोजनसे जुदाहोता है और धर्मअर्थ काम इनतीनों कर्मोंसे च्युतहोता है मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर । ३० । इस में असंतुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित सन्तोषको पातेहैं चित्तके दुःखको ज्ञानसे और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूरकरना चाहिये यही ज्ञानकी सामर्थ्य है और किसीप्रकार की कोई सामर्थ्य नहींहै ३१।पूर्वजन्ममें कियाहुआ कर्म सोतेहुये मनुष्य केसाथसोताहै और बैठनेवालेके पासनियत बैठाहोताहै और दौड़तेहुयेकेपीछेदौड़ता हैं।३२। जिस जिस दशामें जिस शुभाशुभ कर्मको करता है उसी उसी दशा में उस फलको पाताहै । ३३ । जो जीव जिस शरीर से जिस २ कर्म्मको करताहै उसी शरीर से उस उस कर्म्मके फलको भोगताहै । ३४ । आत्मामें आत्माही उसका बन्धु

think of them. Grief does not abate by brooding over it; it increases if we think of our dear ones. The fool is beset with many sorrows; your sorrow is useless and irreligious. It deters us in our duties and deprives us of all ends. A dissatisfied man is avaricious, while a learned man is satisfied. We should remove mental griefs with wisdom and maladies with medicine 31. An act done in a former life sleeps, sits and runs with the doer. We reap the fruit of our deeds in the same conditions as when we did them. We suffer the punishments of our deeds in bodies like those in which we did them.

आत्मा कृतस्यापहृतस्य च ॥ ३५ । शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा । कृतं भवति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित् ॥३६॥ न हि ज्ञानविरुद्धेषु बहुपापेषु कर्मसु । मूलघातिषु सज्जन्ते बुद्धिमन्तो भवद्विधाः ॥ ३७ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वासने द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । सुभाषितैर्महाप्राज्ञ शोकोऽयं विगतो मम । भूय एव तु वाक्यानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ । अनिष्टानां च संसर्गादिष्टानां च विवर्जनात् । कथं हि मानसैर्दुःखैः प्रमुच्यन्तेऽत्र पण्डिताः ॥२॥ विदुर उवाच । यतो यतो मनो दुःखात् सुखाद्वा विप्रमुच्यते । ततस्ततो नियम्यैतच्छान्तिं विन्देत वै बुधः ॥ ३ ॥ अशाश्वतमिदं सर्वं

है और आत्माही आत्माका शत्रुहै आत्माही आत्माके शुभ अशुभ कर्मोका साक्षी है । ३५ । शुभकर्मसे सुखको और अशुभकर्म्म से दुःखको सर्वत्र पाताहै किसी स्थान में भी बिनाकिये हुये को नहीं भोगताहै । ३६ । आपकी समान बुद्धिमान् मनुष्य नकर्मोंमें प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञानके विपरीत बहुत पापरखनेवाले और मोक्षके नाशकरनेवाले हैं ३७ ॥

अध्याय ३ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे बड़े ज्ञानी तुम्हारे इन उत्तम वचनों से मेराशोक निवृत्तहुआ रन्तु हेनिष्पाप मैं मूलसमेत इनवचनों को फिर सुना चाहताहूं । १ । पंडितलोगसे अनिष्टके योग और प्यारोंके वियोगसे उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखों से कैसे छूटतेहैं । २ । विदुरजी बोले कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसेभी निवृत्त होताहै बुद्धिमान मनुष्य उसीउपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ती को पावे । ३ । हेनरोत्तम यह सब जो दृष्टिमें आताहै विनाशवानहै यह संसार केलेके समानहै इसका सार पदार्थ वर्त्तमान नहींहै । ४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और

The soul is its own friend, enemy and witness. 35. It gets happiness as a result of good deeds and sorrow for wicked ones. One cannot suffer without doing. Wise men like you donot engage in doing foolish, sinful and wicked deeds that debar the doer from heaven." 37.

CHAPTER III

Dhritrashtra said, "My grief is gone away by your good words, wise man. I wish to hear your words once more in detail. How can wise men get rid of the unpleasant feeling arising out of the meeting of enemies and separation of friends?" Vidur said, "A wise man should alienate his mind from the things which cause pleasure or pain. The world we see round us is mortal; it has no kernel like

चिरायमाने नरर्षभ । कदलीसन्निभो लोकः सारोह्यस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा प्राज्ञाश्च मूढाश्च धनवन्तोथ निर्धना । सर्वे पितृवनं प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः। निर्मांसैरस्थि भूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ॥६॥ किं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजना । येन प्रत्यव गच्छेयुः कुलरूपविशेषणम । कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धधियो नराः ॥७॥ गृहा णीव हि मर्त्यानामाहुर्देहानि पण्डिताः । कालेन विनियुज्यन्ते सत्त्वमेकन्तु-शाश्वतम् यथाजीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्वा तु पूरुषः । अन्यद्रोचयते वस्त्रमेवं देहाः शरीरिणाम ॥ ९ ॥ वैचित्रवीर्य्य साध्यं हि दुःखं वा यदि वा सुखम । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वकृ तेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखञ्च भारत । ततो वहति तं भार मवशः स्ववशोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च मृण्मयं भाण्ड चक्रारूढं विपद्यते ।, किंश्चित् प्रक्रियमाणं वा कृतमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निर्द्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं उस स्मशानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाड़ी और बन्धनोंमे अधिकविस वस्तुको देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावैं वहछल करनेवालेमनुष्य किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पण्डितोंने शरीर धारियोंके देहको ग्रहों के समान कहाहै वहकालसे मिलतेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविना शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गी कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं ।९। हेधृतराष्ट्रसब मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं ।१०। हे भरतवंशी सब सुख और दुःख अपने कर्म्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जैसेमट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ ।१२। श्रवेपर रक्खाहुआ वा श्रवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र शुष्क वा पकताहुआ ।१३। श्रवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआभी टूटजाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं ।१४। गर्भमें नियत जन्म, लेनेवाला

plantain. When the wise and fool, wealthy and poor find rest in death, we find *nothing left of them except a heap of* bones. Family greatness and beauty are of no avail after death; why should people desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bodies of men are like constellations which come together at times and then disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which we cast off when old and and put on new ones. Our pleasures and pains are the results of our actions. 10. Man is not indepent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in the course of preparation, after preparation and at all other *stages.* They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use

ई चाप्यथ वा शुष्कं पच्यमानमथापि वा ॥ १३॥ अथ तार्य्यमाणमपाकादुद्धृतस्यापि त । अथवा परिभुज्यन्तस्तेऽपि देहाः शरीरिणाम् ॥ १४॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ दिवसान्तरः । अर्द्धमासगतो वापि मासमात्रगतोपिवा ॥ १५ ॥ संवत्सरगतो वापि संवत्सर द्व वा । यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्राक्कर्म स्तु भूतानि भवन्ति न भवन्ति च । एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुतप्यसे ॥१७॥ यथातु लेराजन् क्रीडार्थमनुसन्तरन् । उन्मज्जेच्च निमज्जेच्च किञ्चित् सत्वं नराधिप ॥१८॥ । संसारगहने उन्मज्जननिमज्जने । कर्म भोगेन बध्यन्ते क्लिश्यन्ते येऽल्पबुद्धयः १९ ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सत्वे संसारान्तगवेषिणः । समागमज्ञा भूतानां ते यान्ति रमां गतिम् ॥ २० ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३



॥ थोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास ।१५। एकवर्ष वा दोवर्षकी अवस्था रख वाला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको पाताहै ।१६। सबजीव अपनेपिछले जन्मोंके कर्मोंसे उत्पन्न होतेहैं और नाशको पातेहैं इसरीति के स्वाभाविक धर्मरख नेवाले लोकमें किसहेतुसे दुःखी होतेहैं ।१७। हेराजा जैसेकिकोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमताहुआ डूबता और उछलताहै।१८। उसी प्रकार महर्षीलोग अपने बड़े ज्ञानकेद्वारा उसप्रकार के दुर्गम संसार से पारहुये जोकिडूबना उछलना इनदो गुणोंका रखनेवालाहै ।१९। जोजीवोंकी उत्पत्तिके जाननेवाले संसार के अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानी नियतहैं वह परम गतिको पातेहैं ॥ २० ॥



So our bodies die in wombs, after birth, at the age of a fortnight, a month, a year, two years, in youth, middle, or old age. 16. People die and are born again as a result of their own deeds; why should we be sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross the ocean of the world like an animal which floats or sinks down in water at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning and end of the world, reach the sublime goal." 20



विगतमात्ने नरर्षभ । कदलीसन्निभो लोकः सारोह्यस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा मूढाश्च धनवन्तश्च निर्धना । सर्वे पितृवनं प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः ॥ ... स्वयिष्ठैर्गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ॥५॥ कं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजनाः । येन गच्छेयु. कुलरूपविशेषणम् । कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धुंधियो नराः ॥७॥ गृहा इव हि मर्त्यानामाहुर्देहानि पण्डिताः । कालेन विनियुज्यन्ते सत्त्वमेकन्तु ... । यथाजीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्वा तु पूरुषः । अन्यद्रोचयते वस्त्रमेवं देहाः। ॥ ९ ॥ वैचित्र्यवीर्य साध्यं हि दुःखं वा यदि वा सुखम । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वकृतेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखञ्चभारत । ततो वहति तं भार मवशः स्ववशोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च मृन्मयं भाण्डं चक्रारूढं विपद्यते । किञ्चित् प्रक्रियमाणं वा कृतमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निर्द्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित होतेहैं उस स्मानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाड़ी और बन्धनोंमें अधिककिस वस्तुको देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें वहछल करनेवालेमनुष्य किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पण्डितोंने शरीर धारियोंके देहको ग्रहों के समान कहाहै वहकालसे मिलतेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविनाशीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गीकार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं ।९। हेधृतराष्ट्रसब मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं ।१०। हे भरतवंशी। सुख और दुःख अपने कर्म्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जैसेमट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ ।१२। अवेपर रक्खाहुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्रव शुष्क वा पकताहुआ ।१३। अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआभी टूटजाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं ।१४। गर्भमें नियत जन्म, लेनेवाला

plantain. When the wise and fool, wealthy and poor had rest in death, we find nothing left of them except a heap of bones. Family greatness and beauty are of no avail after death; why should people desire to gain their object by deceit Wise men say that the bodies of men are like constellations which come together at times and then disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which we cast off when old and and put on new ones Our pleasures and pains are the results of our actions. 10. Man is not indepent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down the course of preparation, after preparation and at all other They break down after being burnt in a kiln, in transit or

॥च्यव वा शुष्कं पच्यमानमथापि वा ॥ १३॥ अवतार्यमाणमापाकादुद्धृतञ्चापि । अथवा परिभुज्यन्तस्तेन देहाः शरीरिणाम् ॥ १४॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ ... । अर्द्धमासगतो वापि मासमात्रगतोऽपि वा ॥ १५ ॥ संवत्सरगतो वापि ... एव वा । यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्राक्कर्मभूतानि भवन्तिन भवन्ति च। एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुतप्यसे ॥१७॥ यथातु ... क्रीडार्थमनुसन्तरन् । उन्मज्जेच्च निमज्जेच किञ्चित् सत्त्वं नराधिप॥१८॥ ...संसारगहने उन्मज्जननिमज्जने । कर्म भोगेन पच्यन्ते क्लिश्यन्ते येऽल्पबुद्धयः ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सत्वे संसारान्तगवेषिणः । समागमज्ञा भूतानां ते यान्ति गतिम् ॥ २० ॥

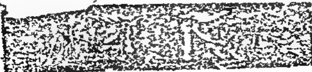
ति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३



थोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास ।१५। एकवर्ष वा दोवर्षकी अवस्था तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको पाताहै ।१६। सबजीव अपनेपिछले कर्मोंसे उत्पन्न होतेहैं और नाशको पातेहैं इसरीति के स्वाभाविक धर्मरख लोकमें किसहेतुसे दुःखी होतेहैं ।१७। हेराजा जैसेकिकोई जीव क्रीड़ाके जलमें डूबताहुआ डूबता और उछलताहै।१८। उसी प्रकार महर्षीलोग अपने ज्ञानकेद्वारा उसप्रकार के दुर्गम संसार से पारहुये जोकिडूबना उछलना इनदो ... रखनेवालाहै ।१९। जोजीवोंकी उत्पत्तिके जाननेवाले संसार के अन्तके ... सब ज्ञानी नियतहैं वह परम गतिको पातेहैं ॥ २० ॥



our bodies die in wombs, after birth, at the age of a fortnight, a month, a year, two years, in youth, middle, or old age. 16. People and are born again as a result of their own deeds; why should we sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross ocean of the world like an animal which floats or sinks down, in at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning end of the world, reach the sublime goal." 20.



विगतयमात्मे नरर्षभ । कदलीसन्निभो लोकः साराह्यस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा मूढाश्च धनवन्तोथ निर्धना । सर्वे पितृवनं प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः । ... ध्वयिष्ठिगाश्रे स्नायुनिबन्धने ॥ ६ ॥ किं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजनाः । येन गच्छयुः कुलरूपविशेषणम् । कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धधियो नराः ॥७॥ जीव हि मर्त्यानामाहुर्देहानि पण्डिताः । कालेन विनियुज्यन्ते सत्त्वमेकन्तु ... । यथाजीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्वातु पूरुषः । अन्यद्रोचयते वस्त्रमेवं देहाः ... ॥ ९ ॥ वैचित्रवीर्य साध्यं हि दुःखं वा यदि वा सुखम् । प्राप्नुवन्तीह भूतानि स्वकृतेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गं सुखं दुःखञ्च भारत । ततो वहति तं भारमवशः स्ववशोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च मृण्मयं भाण्डं चक्रारूढं विपद्यते । किञ्चित् प्रक्रियमाणं वा कृतमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निर्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाडी और बन्धनोंसे अधिकक्रिस वस्तुको देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें यहछल करनेवालेमनुष्य किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पण्डितोंने शरीर धारियोंक देहको अर्थो समान कहाहै बहकालसे मिलतेहैं अर्थात् माताकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविना शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर है ।९। हेधृतराष्ट्रसुत मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं ।१०। हे भरतवंशी सु सुख और दुःख अपने कर्म्म से प्राप्त होतेहै उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाताहै । ११ और जैसे मट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ ।१२। अवेपर रक्खाहुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र शुष्क वा पकताहुआ ।१३। अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआ भी टूटजाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं ।१४। गर्भमें नियत जन्म, लेनेवाल

plantain When the wise and fool, wealthy and poor had rest death, we find nothing left of them except a heap of bones For greatness and beauty are of no avail after death, why should pe desire to gain their object by deceit Wise men say that the bo of men are like constellations which come together at times and th disappear, the soul alone is immortal Bodies are like clothes whic we cast off when old and and put on new ones Our pleasures and pains are the results of our actions 10. Man is not indepent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in the course of preparation after preparation and at all other stages They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use

।रिरक्षन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिता ॥ ९ ॥ अयं न बुध्यते तावं यमलोकमथागतम्।
मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ वाग्घीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं
पुन यथावमनात्मानं वध्यमानमुपेक्षते ॥ ११ ॥ अहो विनिकृतो लोको लोभेन च
. । लोभक्रोधमयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते दुष्कु
विकुत्सयन् । धनदर्पेण दृप्तश्च दरिद्रान् परिकुत्सयन् ।। १३ ॥ मूर्खानिति परा
समवेक्षते । शिक्षां क्षिपति चान्येषां नात्मानं शास्तुमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा
मत्ताश्च धनवन्तोथ निर्धनाः ।.कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मानिनोथाप्यमानिनः
॥ सर्वे पितृवनं प्राप्ता स्वपन्ति विगतज्वराः । निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायु
॥ १६ ॥ कं तदा ते प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जनाः । येन प्रत्ययगच्छेयु कुलरूप
॥ १७ ॥ यदा सर्वसमं त्यक्त्वा. स्वपन्ति धरणीतले । कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति

.म कर्मो को करताहै और उनका त्यागनेवाला नहीं होताहै इसी प्रकार
।दय ईश्वरकेध्यानमें मग्नहै वह अपने को तबतक चारोंओरसे रक्षा करतेहैं
यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानताहै यमदूतों से आकर्षित
मृत्युको पाता है । १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के
मुखमें कियाहुआ होताहै फिरभी विषयोंमें आसक्तहोकर अपनेको पतनहुआ
.११।आश्चर्यहै कियहसंसार नीच लोभके आधीनतामें वर्त्तमानक्रोध
और धनकेमदसे अचेतहोकर आत्माको नहीं जानताहै । १२ । दुष्ट कुलवालोंकी
।। अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता
गर्वमें अहंकारीहै । १३ । दूसरों को मूर्ख कहता है और अपनेको अच्छीरीति
देखताह दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहींचाह
। १४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी कुलीन अकुलीन अहंकारी
निरहंकारीभी सब पितृवन (यमलोक) में वर्त्तमान विगत ज्वर होकर सोतेहैं
वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुत से अस्थिवाले अंग और नाडीबन्ध
अधिक कुछ नहीं देखतेहैं औरजो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पातेहैं
।जब वह सबभी शरीरत्याग कियेहुए पृथ्वीपर सोतेहैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

. Then he is in danger of evil desires and other calamities.
with so many difficulties, he is not satisfied with anything and
good and evil deeds. But those who meditate on God, protect
-lves from all sides as long as they are not summoned by death.
One fallen low on account of evil desires, does not see his fall.
a wonder that people forget themselves on account of avarice
-de, anger and other passions. They give themselves praise and
others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth.
call others fools and donot look towards themselves, they preach-
and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and
humble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

धृतराष्ट्र उवाच। कथं संसारगहनं विज्ञेयं वदतांवर। एतदिच्छामि आख्याहि पृच्छतः॥ १॥ विदुर उवाच। जन्मप्रभृति भूतानां पूर्वमेवेह कललं वसते किञ्चिदन्तरम्। ततः स पञ्चमेतीते मासे वा ॥ २॥ ततः सर्वांगसंपूर्णो गर्भो वै स तु जायते। अमेध्यमध्ये वसति वने ॥३॥ ततस्तु वायुवेगेन ऊर्ध्वपादो ह्यधः शिराः। योनिद्वारमुपागम्य बहून् समृच्छति॥ ४। योनिसंपीडनाच्चैव पूर्वकर्मभिरन्वितः। तस्मान्मुक्तः स स्यात् पश्यत्युपद्रवान्। गृहास्तमुपगच्छन्ति सारमेया इवामिषम्॥ ६॥ ततः काले व्याधयश्चापि तं तथा। उपसर्पन्ति जीवन्तं बध्यमानं स्वकर्मभिः॥ ७॥ मिन्द्रियैः पाशैः सङ्गस्वादुभिरावृतम्। व्यसनान्यपि वर्तन्ते विविधानि बाध्यमानश्च तैर्भूयो नैव तृप्तिमुपैति सः। तदा नावैति चैवायं प्रकुर्वन्

अध्याय ॥ ४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हेवक्ताओं में श्रेष्ठ किस रीति से यह संसाररूपी वन के योग्यहै मैं इसको सुना चाहता हूं आप मुझसे वर्णन कीजिये। १। बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देतीहैं इसलोक में कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करनेवाले गर्भमें जीवात्मा निवास करता परन्तु कुछ अन्तर है। २। इसके पीछे पांचवांमास व्यतीत होनेपर उस में प्रादुर्भाव विचार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होतीहै पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाताहै मांस रुधिरसेलिप्त अपवित्र निवासकरता है। ३। फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचेपैर नीचे योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाताहै। ५ योनीकी पीड़ा और से युक्त उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखताहै। ६। और उसके पास एसे आतेहैं जैसे कि मांसकेपास कुत्ते आते हैं। ६। हेशत्रुसंतापी पीछे उसीसमय रोगभी उसकेपास आतेहैं इसीसे जीवताहुआ होताहै। ७। हेराजा इन्द्रियोंके पास बन्धनों में बँधेहुये संग और संयुक्त उसजीव धारीके पास नानाप्रकारके व्यसन अर्थात् आपत्तियां मानहोतीहैं। ८। फिर उन सबसेपीड़ित होकर वह जीवतृप्तिको पाताहै

CHAPTER IV

Dhritrashtra said, "How can we know the wilderness of the Pray tell me all about it." Vidur said, "From the beginning we cern the work of living beings. They live for sometime in the and are then surrounded by impurities of flesh and blood. They there with their heads downwards and their form feet up and are miserable plight till they come out of the womb. Coming out of difficulty, they have to encounter others in the world. Evils on him as dogs do a piece of flesh. Diseases come to him during

परिरक्षन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिता ॥ ९ ॥ अयं न बुध्यते तावद् यमलोकमथागतम्। विकृष्यंश्च मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ वाग्धीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं मुख व्याहरनात्मानं वध्यमानमुपेक्षते ॥ ११ ॥ अहो विनिकृतो लोको लोभेन च लोभक्रोधभयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते दुष्कु विकुत्सयन्। धनदर्पेण दृप्तश्च दरिद्रान् परिकुत्सयन् ॥ १३ ॥ मूर्खानिति परा समवेक्षत। दोषान् क्षिपति चान्येषां नात्मानं शास्तुमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा मूर्खाश्च धनवन्तोथ निर्धनाः। कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मानिनोथाप्यमानिनः सर्वे पितृवनं प्राप्ता स्वपन्ति विगतज्वराः। निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायु ॥ १६ ॥ कं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जनाः। येन प्रत्ययगच्छेयु कुलरूप ॥ १७ ॥ यदा सर्वे समं न्यस्ताः स्वपन्ति धरणीतले। कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति

कर्मों को करताहै और उनका त्यागनेवाला नहीं होताहै इसी प्रकार जब ईश्वरकेध्यानमें प्रवृत्तहै वह अपने को तबतक चारोंओरसे रक्षा करतेहैं यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानताहै यमदूतों से आकर्षित मृत्युको पाता है। १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के मुखमें छिपाहुआ होताहै फिरभी विषयोंमें आसक्तहोकर अपनेको पतनहुआ ध्यानकरताहै।११।आश्चर्यहै किवहसंसार नीच लोभके आधीनतामें वर्त्तमानक्रोध और धनकेमदसे अचेतहोकर आत्माको नहीं जानताहै। १२। दुष्ट कुलवालोंकी अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता गर्वमें अहंकारीहै। १३। दूसरों को मूर्ख कहता है और अपनेको अच्छीरीति देखताहै दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहींचाहै। १४। जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी कुलीन अकुलीन अहंकारी निरहंकारीभी सब पितृवन (यमलोक) में वर्त्तमान विगत ज्वर होकर सोतेहैं वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुत से अस्थिवाले अंग और नाडीबन्ध अधिक कुछ नहीं देखतेहैं औरजो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पातेहैं। जब वह सबभी शरीरत्याग कियेहुये पृथ्वीपर सोतेहैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

ime. Then he is in danger of evil desires and other calamities. with so many difficulties, he is not satisfied with anything and good and evil deeds. But those who meditate on God, protect selves from all sides as long as they are not summoned by death. One fallen low on account of evil desires, does not see his fall. a wonder that people forget themselves on account of avarice anger and other passions. They give themselves praise and others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth. call others fools and donot look towards themselves; they preach and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and ble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

प्रलब्धमिह दुर्बुधाः॥१८प्रत्यक्षञ्च परोक्षञ्च योनिशम्य श्रुतिं त्विमाम्। अध्रुवे स्मिन् यो धर्ममनुपालयन् । जन्मप्रभृति वर्त्तेत प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥ १९ ॥ सर्वं विदित्वा वै यस्तत्त्वमनुवर्त्तते । स प्रमोक्ष्यते सर्वान् पन्थानो मनुजाधिप ॥ २०

धृतराष्ट्र उवाच । यदिदं धर्मगहनं बुद्ध्या समनुगम्यते । एतद्विस्तरशः सर्वं बु

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकोपनयने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

मार्गं प्रशंस मे ॥ १ ॥ विदुर उवाच । अत्र ते वर्त्तयिष्यामि नमस्कृत्वा स्वयम्भुवे। संसारगहनं यदृति परमर्षयः ॥ २ ॥ कश्चिन्महति संसारे वर्त्तमानो द्विजः किल। वनं दुर्गमनुप्राप्तो महत्क्रव्यादसंकुलम् ॥ ३ ॥ [illegible]

लोक में किस हेतु से परस्पर छलकिया करतहे । १८ । पश्चात् [illegible] मुनी जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवलोकमें धर्मकापालन करताहुआ जन्मसे लेकर म[illegible] कर्म करताहै वह परमगतिको पाता है जोकोइसप्रकार सबकोजानकर [illegible] करता है । २० ।

अध्याय ५ ॥

धृतराष्ट्रबोले किजो यह दुष्प्राप्य धर्मबुद्धिकेद्वारा अच्छेप्रकारसे प्राप्त होताहै इसहेतुसे अब बुद्धिमार्गको ब्योरे समेत मुझसे कहो । १ । विदुरजी बोले किइस स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थनमस्कार करके [illegible] तुमसे कहताहूं जोकि महर्षि लोग इस संसाररूपी वन वनको तरते हैं २ । निश्चयकरके इस बड़े संसार में कोई द्विज मांसभक्षी जीवों से पूर्ण उस दुर्गम्य वनमें पहुँचाजो किबड़े शब्दवाले भयानक रूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी और रीछोंकेसमूहोंसे चारोंओरको व्याप्त



heap of bones. Why should foolish men practise deceit with their fellow creatures when they see that so many men endowed with wealth and beauty lie dead on earth. We see and hear that he who leads a virtuous life in this mortal world, gains the highest goal. He who knows all this is a worshipper of Brahm." 20.

CHAPTER V

Dhritrashtra said, "Because this difficult dharm can be known by wisdom alone, pray tell me the way to wisdom." Vidur said, "Having bowed down to *Brahma*, I shall tell you how great sages cross the vast forest of the world – A man entered a forest full of te

समन्तात् संपरिक्षिप्तं यत् स्म दृष्ट्वा त्रसेद्यम. ॥ ४॥ तदस्य दृष्ट्वा हृदयमुद्वेगमग त् परम। अभ्युच्छ्रयश्च रोम्णां वै विक्रियाश्च परन्तप ॥ ५ ॥ स तद्वनं व्यनुसरन् संप्र धावन्नितस्ततः । वीक्षमाणो दिशः सर्वा शरणं क्व भवेदिति ॥ ६॥ स तेषां छिद्रमन्वि च्छन् प्रद्रुतो भयपीडितः । न च निर्याति वै दूरं न च तैर्विप्रयुज्यते ॥ ७ ॥ अथापश्य द्वनं घोरं समन्ताद्वागुरावृतम । बाहुभ्यां संपरिक्षिप्तं स्त्रिया परमघोरया । ८ ॥ पञ्च शीर्षधरैर्नागैः शैलैरिव समुन्नतैः । नभस्पृशैर्महावृक्षैः परिक्षिप्तं, महावनम् ॥ ९ ॥ वन मध्ये च तत्राभूदुदपानः समावृतः । वल्लीभिस्तृणछन्नाभिर्दृढाभिरभिसंवृतः ॥ १० ॥ पपात स द्विजस्तत्र निगूढे सलिलाशये । विलग्नश्चाभवत्तस्मिन् लतासन्तानसंकुले ॥ ११ ॥ पनसस्य यथा जातं वृन्तबद्धं महाफलम । स तथा लम्बते तत्र ह्यूर्ध्वपादो ह्यधः शिराः ॥ १२ ॥ अथ तत्रापि चान्योस्य भूयो जात उपद्रव । कूपमध्ये महानागम

मृत्युकाभी भयका रीथा ।४। उसको देखकर इसका हृदय महाव्याकुल हुआ कम्प और रोमांचोंसे शरीर व्याप्त हुआ । ५ । वह उस वन में अच्छेप्रकार घूमताहुआ इधर उधर को दौड़ा और सब दिशाओं को देखताथा कि मेरा शरणस्थान कहाँ होगा । ६ । इसप्रकार वह भयसे पीड़ावान् छिद्रों को देखता भागा वह नतो दूर जाता था न उनसे बचता था इसके पीछे उसनेचारों ओरको पाश युक्त घोर वनको देखा वह पाश बड़ीघोररूप स्त्रीकीभुजाओं से पकड़ा हुआथा ८ । और वहवन पांच शिर रखनेवाले पर्वतों के समान ऊंचे सर्पोंसे और आकाशको स्पर्श करनेवाले बड़ेवृक्षों से चारों ओरको संयुक्तथा । ९ । उस वनके मध्य में एक कूप अन्धकार से पूर्ण तृणसे ढकी हुई दृढ़वल्लियोंमें संयुक्तथा वह द्विज उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा और लताओंके फैलावमें पूर्ण उस कूपमें छिपगया । ११ । जैसे किकटहल वंशमें उत्पन्न होनेवाला बड़ा फल शाखा में लगाहुआ होताहै उसी प्रकार वह द्विज ऊंचेपैर नीचे शिरवाला होकर उसीमें लटका। १२ । फिर उसी प्रकारसे उसका दूसरा उपद्रव

---

beasts of prey, where lions, tigers, elephants and bears were present in large numbers sufficient to terrify even death His heart was much troubled at the sight of them and the hair of his body stood on end 5 He ran in all directions to seek a place of refuge in the forest. He ran on much terrified looking for holes. He did not go far out of the place, for he saw a dreadful net spread all round and held by a dreadful woman. The place was full of five headed serpents huge as mountains and tall trees touching the sky. There was a dark well in the middle of the forest covered with grass and creepers. 10. He fell down in that well and was hid under creepers like a fruit among the branches of a tree He lay suspended there head downwards He met another calamity there, for at the bottom of it there was a power

पश्यत महाबलम् । कूपवीनाहवेलायामपश्यतमहागजम् ॥ १३ ॥ षड्वक्त्रं कृष्णशुक्लं च द्विषट्कपदचारिणम् । क्रमेण परिसर्पन्तं वल्लीवृक्षसमावृतम् ॥१४॥ तस्य चापि प्रशाखासु वृक्षशाखावलम्बिनः । नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहाः । आसते मधु संवृत्य पूर्वमेव निकेतजाः ॥ १५ ॥ भूयो भूयः समीहन्ते मधूनि भरतर्षभ । स्वादनीयानि भूतानां यैर्बालो विप्रकृष्यते ॥ १६ ॥ तेषां मधूनां बहुधा धाराः प्रस्रवतांतदा । आलम्बमानः स पुमान् धारां पिबति सर्वदा॥१७॥ न चास्य तृष्णा विरता पिबमानस्य सङ्कटे । अभीप्सति तदा नित्यमतृप्तः स पुनः पुनः । १८ ॥ न चास्य जीविते राजन् निर्वेदः समजायत । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशाः प्रतिष्ठिताः । कृष्णाः श्वेताश्च तं वृक्षं कुट्टयन्ति च मूषिकाः । १९ ॥ व्यालैश्च वनदुर्गान्तेस्त्रिया च परमोग्रया ।

भी उत्पन्नहुआ कि कूपके मध्यमें बड़े बलवान सर्पको देखा और मुखबंधनकूप किनारेपर ऐसेबड़े हाथीको देखा।१३ जोकि छःमुखवाला और बारह चरणवाला श्वेत श्यामवर्ण क्रमसेचलनेवाला सैकड़ोंवृक्षऔर बल्लियोंसे ढकाहुआथा ।१४। इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले प्रथमही घरबनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहदको इकट्ठा करके निवास करतेहैं । १५ । हेभरतर्षभ वह भौंरे वारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्टरसों की इच्छाकरतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण कियेजातेहैं । १६ ।-उन रसोंकी बड़ी धारा सदैव गिरतीहैं तब लटकताहुआवह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै ।१७ संकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्णनहींहुई वह अतृप्तहोकर सदैव वारम्बार उसको चाहताहै । १८ । हेराजा जीवन में उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्नहुई उसीमें मनुष्य के जीवनकी आशा नियतहै श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे (रात्रि दिन) उस वृक्षरूपी आयुर्दाको काटतेहैं । दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री (वृद्धावस्था) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूर्ण-

ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six mouths, twelve feet, black and white colour and covered with trees and creepers 14. Then he saw hanging on a large bow a hive of humming bees which gathered in large numbers and multiplied, making honey. 15. They sit on tasteful things such as please children. A stream of sweet matter dropped from the hive and the man suspended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied. He is not tired of life and is yet hopeful. White and black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of his life. There are numerous serpents in the forest, with the dreadful woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant at the mouth. 20. There is a great fear of the fall of the tree on

हादच मागेन चेनाहं कुञ्जरेण च । २० ॥ वृक्षप्रतातात्च्च भयं मूषिकेभ्यश्च पञ्च
ाम् । मधुलोभान्मधुकरैः षष्ठमाहुर्महद्भयम् ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसार
ागरे । न चैव जीवितांशायां निर्वेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥

धृतराष्ट्र उवाच । अहो खलु महद्दुःखं कृच्छ्रवासश्च तस्य ह । कथं तस्य रतिस्तत्र
तुष्टिर्वा वदतांवर ॥ १ ॥ स देशः क्व नु यत्रासौ वसते धर्मसङ्कटे । कथं वा स विमु
च्येत नरस्तस्मान्महाभयात् ॥ २ ॥ एतन्मे सर्वमाचक्ष्व साधु चेष्टामहे तदा । कृपामे
महती जाता तस्याभ्युद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुर उवाच । उपमानमिदं राजन् मोक्षवि
द्भिरुदाहृतम् । सुकृतं विन्दते येन परलोकेषु मानवः ॥४॥ उच्यते यत्तु कान्तारं महास

षर्थ) और वृक्षके गिरने से भयहै और चूहोंसे पांचवां भयहै और शहदके लोभसे
छठवां कहाहै । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्त्तमान
होताहै और जीवनकी आशामें वैराग्यको नहीं पाताहै ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ादुःखहै और उसकी स्थिति
भी दुःख रूपहै हेवक्ताओंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किसप्रकार से है १
वहदेश कहांहै जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और यह मनुष्य उस
बड़े भयसे कैसे छूटेगा । २ । यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छाहै तब हमकाम
में लावेंगे निश्चय उससे छुटाने के लिये मेरे ऊपर बड़ीकृपा उत्पन्न हुई है । ३ ।
विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत वर्णन कियाहै जिस
से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है ।४ । जो वह महावन कहाजाता

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey. Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his mind from the hope of life." 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "I am much amazed to hear that man, although he is beset with so many troubles does not like to sever his connection from the world. Pray explain this. Where is the place the soul lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

पश्यत महाबलम् । कूपवीनाहवेलायामपश्यतमहागजम् ॥ १३ ॥ षड्वक्त्रं कृष्णशुक्लं द्विषट्कपदचारिणम् । क्रमेण परिसर्पन्तं वल्लीवृक्षसमावृतम् ॥१४॥ तस्य शाखाप्रशाखासु वृक्षशाखावलम्बितः । नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहाः । आसते मधु संवृत्य पूर्वमेव निकेतजाः ॥ १५ ॥ भूयो भूयः समीहन्ते मधूनि भरतर्षभ । स्वादनीयानि भूतानां यैर्बालो विप्रकृष्यते ॥ १६ ॥ तेषां मधूनां बहुधा धाराः प्रस्रवतां तदा । आलम्बमानः स पुमान् धारां पिबति सर्वदा ॥१७॥ न चास्य तृष्णा विरता पिबमानस्य सङ्कटे । अभीप्सति तदा नित्यमतृप्तः स पुनः पुनः ॥ १८ ॥ न चास्य जीविते राजन् निर्वेदः समजायत । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशा प्रतिष्ठिताः । कृष्णाः श्वेताश्च तं वृक्षं कुट्टयन्ति च मूषिकाः ॥ १९ ॥ व्यालैश्च वनदुर्गान्ते स्त्रिया च परमोग्रया ।

भी उत्पन्नहुआ किकूपके मध्यमें बड़े बलवान् सर्पको देखा और मुखके किनारेपर ऐसेबड़े हाथीको देखा॥१३॥ जोकिछःमुखवाला और बारह चरणवाला श्वेतश्यामवर्ण क्रमसेचलनेवाला सैकड़ोंवृक्षोंऔर बेलियोंसे ढकाहुआथा ॥१४॥ इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले और प्रथमही घरबनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहदको इकट्ठा करके निवास करतेहैं । १५ । हेभरतर्षभ वह भौंरे वारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्ट रसों की इच्छाकरतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण कियेजातेहैं । १६ । उन रसोंकी बड़ी धारा सदैव गिरतीहैं तब लटकताहुआवह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै ।१७। संकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्णनहींहुई वह अतृप्तहोकर सदैव वारम्बार उनको चाहताहै । १८ । हेराजा जीवन में उसकी अप्रीति नहीं , उत्पन्नहुई उसीमें मनुष्य के जीवनकी आशा नियतहै श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे (रात्रि दिन)उस वृक्षरूपी आयुर्दाको काटतेहैं । दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री (वृद्धावस्था) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूर्ण-

ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six mouths, twelve feet, black and white colour and covered with trees and creepers 14. Then he saw hanging on a large bow a hive of humming bees which gathered in large numbers and multiplied, making honey. 15. They sit on tasteful things such as please children. A stream of sweet matter dropped from the hive and the man suspended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied. He is not tired of life and is yet hopeful. White and black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of his life, There are numerous serpents in the forest, with the dreadful woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant at the mouth, 20. There is a great fear of the fall of the tree on

ाच्छ नागेन वेनाहि कुञ्जरेण च ॥ २० ॥ वृक्षप्रतानाश्च अयं मूषिकेभ्यश्च पञ्च
म् । मधुलोभान्मधुकरैः षष्ठमाहुर्महद्भयम ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसार
ागरे । न चैव जीविताशायां निर्वेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

ति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५॥

धृतराष्ट्र उवाच । अहो खलु महद् दुःखं कृच्छ्रवासश्च तस्य ह । कथं तस्य रतिस्तत्र
[illegible] ॥ १ ॥ स देशः क्व नु यत्रासौ वसते धर्मसङ्कटे । कथं वा स विमु
[illegible] ॥ २ ॥ एतन्मे सर्वमाचक्ष्व साधु चेष्टामहे तदा । कृपा मे
[illegible] तस्यास्युद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुर उवाच । उपमानमिदं राजन् मोक्षवि
[illegible] । सुगतिं विन्दते येन परलोकेषु मानवः ॥४॥ उच्यते यत्तु कान्तारं महास

वर्ष) और इसके गिरने से भयहै और चूहोंसे पांचवां भयहै और शहदके लोभसे
छठवेंको कहाहै । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्त्तमान
होताहै और जीवनकी आशामें वैराग्यको नहीं पाताहै ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ाआश्चर्य है कि निश्चय बड़ादुःखहै और उसकी स्थिति
भी दुःख रूपहै हेवक्ताओंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किसप्रकार से है १
वहदेश कहांहै जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और यह मनुष्य उस
बड़े भयसे कैसे छूटेगा । २ । यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छाहै तब हमकाम
में लावेंगे निश्चय इसके छुटाने के लिये मेरे ऊपर बड़ीकृपा उत्पन्न हुई है । ३ ।
विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत वर्णन कियाहै जिस
से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है ।४ । जो यह महावन कहाजाता

---

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey. Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his mind from the hope of life " 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, " I am much amazed to hear that man, although he is beset with so many troubles does not like to sever his connection from the world. Pray explain this. Where is the place the soul lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

सार एष सः। वनं दुर्गं हि यदेतत् संसारगहनं हि तत्॥५॥ ये च ते कथिता व्याला व्याधयस्ते प्रकीर्तिताः। या सा नारी बृहत्काया अधितिष्ठति तत्र वै॥६॥ तामाहुस्तु जरां प्राज्ञा वर्णरूपविनाशिनीम्। यस्तत्र कूपो नृपते स तु देहः शरीरिणाम्॥७॥ यस्तत्र वसतेऽधस्तान्महाहि काल एव सः। अन्तकः सर्वभूतानां देहिनां सर्वहार्यसौ॥८॥ कूपमध्ये तु या जाता वल्ली यत्र स मानवः। प्रताने लम्बते लग्नो जीविताशा शरीरिणाम्॥९॥ स यस्तु कूपवीनाहे तं वृक्षं परिसर्पति। षड्वक्त्रः कुञ्जरो राजन् स तु संवत्सरः स्मृतः॥१०॥ षण्मुखान्यृतवो मासाः पादा द्वादश कीर्तिताः। ये तु वृक्षं निकृन्तन्ति मूषिकाः पन्नगास्तथा॥११॥ रात्र्यहानि तु तान्याहुर्भूतानां परिचिन्तकाः। ये मधुकरास्तत्र कामास्ते परिकीर्तिताः॥१२॥ यास्तु ता बहुशो धाराः स्रवन्ति मधु

है वही महा संसारहै और जो यह दुर्गमवन है वही संसारवन है। ५। जो सर्प तुमसे वहीरोग हैं वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है। ६। उसको ज्ञानियोंने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है हे राजा वहांजो कूपहै वह शरीरधारियोंका शरीरहै। ७। और जो बड़ासर्प उस कूपके भीतर निवास करताहै वहीकाल है यह सब भूतोंका नाशकरनेवाला और जीवात्माओंका हरने वालाहै। ८। और कूपकेमध्य में जोवल्ली उत्पन्नहुई वह मनुष्य उसके विस्तार में लटकताहै वही शरीरधारियोंके जीवनकी आशा है। ९। और कूपके मुखपर जोछः मुखवाला हाथी वृक्षकी शाखाओं के चारोंओर चेष्टा करताहै वहीपूर्ण वर्षहै। १०। उस के छः मुखऋतु और बारह चरण महीने कहेहैं उसी प्रकार जो चूहे वृक्षको काटतेहैं। ११। उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहैं उसमें जो यह भौंरे हैं वह नाना इच्छा कहीहैं। १२। और जोवह शहदकी बहुतसी धारा

---

good to hear and beneficial." Vidur said, "This precept is given by those who wish to gain salvation and a good state in the next world. The forest mentioned above is the world. 5. The serpents are diseases, the large-sized woman is the old age which removes beauty of person; the well is the body and the large serpent at the bottom is Death which destroyes all. The creeper in the middle of the well, supporting the man, is the hope of life. The six-headed elephant moving round the tree is the year. 10. Its six mouths are the seasons; the twelve feet are the months; the mice which eat away the roots of the tree are days and nights and the black bees are the worldly desires The stream of honey is the sap of desires in

म् । सांनुकामरसान् विद्यात्तत्र तज्जन्ति मानवाः ॥ १३ ॥ एवं संसारचक्रस्य परि
। विदुर्बुधाः । येन संसारचक्रस्य पाशांश्छिन्दन्ति वै बुधाः ॥१४॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । अहोऽभिहितमाख्यानं भवता तत्त्वदर्शिना । भूय एव तु मे हर्षः
श्रुत्वा वागमृतं तव ॥१॥ विदुर उवाच । शृणु भूय प्रवक्ष्यामि मार्गस्यैतस्य विस्तरम् ।
श्रुत्वा विप्रमुच्यन्ते संसारेभ्यो विचक्षणाः ॥२॥ यथा तु पुरुषो राजन् दीर्घमध्वान
मास्थितः । क्वचित् क्वचिच्छ्रमाच्छ्रान्तः कुरुते वासमेव च ॥३॥ एवं संसारपर्याये
गर्भवासेषु भारत । कुर्वन्ति दुर्बुधा वासं मुच्यन्ते तत्र पण्डिताः ॥४॥ तस्मादध्वानमेवै

फिरतीहै उनको काम रसजानो जिसमें मनुष्य डूबतेहैं।१३।जिन्होंने इसप्रकार संसार
चक्रकी गतिकोजानाहै निश्चय करके वहमनुष्य संसार चक्रके पाशको काटते हैं १४।

अध्याय ७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मातत्त्वदर्शी आपने मोक्ष देनेवाली कथा कही उसको
आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहता हूं । १ । विदुरजी बोले सुनो मैं
फिर उस मार्गके क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटतेहैं ।२।
हे राजा जैसे कि बड़े मार्गमें नियत मनुष्य, जहां तहां थककर निवास करता है
। ३ । हे भरतवंशी इसीप्रकार अज्ञानी मनुष्य संसारमें सृष्टिरूप गर्भ में वारम्वार
निवास को करताहै । ४ । और ज्ञानीलोग शीघ्र जातेहैं इस हेतुसे शास्त्रज्ञ लोगों



which men are drowned Those who know the course of the wheel of the world, cut away the bonds " 14



CHAPTER VII

Dhritrashtra said, " You have pointed out the way to salvation I wish to hear of it. " Vidur said, Pray explain it once more the account of the way leading to salvation. A " Hear once more the account of the way leading to salvation. A foolish man stays in various births like one staying at different stages when tired in a journey One endowed with gyan crosses this dense forest of the world sooner. Wise men have no desire to ...

तमाहुः शास्त्रविदो जनाः । तत्तत् संसारगहनं वनमाहुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥ सोऽयं समावर्त्तो तत्त्वानां भरतर्षभ । चराणां स्थावराणाञ्च न गृध्येत्तत्र पण्डित ॥ ६ शारीरा मानसाश्चैव मर्त्यानां ये तु व्याधयः । प्रत्यक्षाश्च परोक्षाश्च ते कथिताबुधैः ॥ ७ ॥ क्लिश्यमानाश्च तैर्नित्यं वार्यमाणाश्च भारत । महाव्यालैर्नोद्विजन्त्यल्पबुद्धयः ॥ ८ ॥ यथापि तैर्विमुच्येत व्याधिभिः पुरुषोनृप । पोत्येव तं पश्चाज्जरा रूपविनाशिनी ॥ ९ ॥ शब्दरूपरसस्पर्शैर्गन्धैश्च विविधैरपि मज्जमानं महापङ्के निरालम्बे समन्ततः ॥ १० ॥ संवत्सरर्त्तवो मासाः ... क्षयः क्रमेणास्योपयुञ्जन्ति रूपमायुस्तथैव च ॥ ११ ॥ एते कालस्य निधयो जानन्ति दुर्बुधाः । धात्राभिलिखितान्याहु सर्वं भूतानि कर्मणा ॥ १२ ॥ रथः भूतानां सत्त्वमाहुस्तु सारथिम । इन्द्रियाणि हयानाहुः कर्म बुद्धिश्च रश्मयः ॥ १३

ने इसको मार्ग कहाहै और जिन ज्ञानियों ने जिस संसारको घनबन कहाहै पुरुषोत्तम-यह हर स्थावर और जङ्गमजीवोंका चलायमान चक्र है पण्डित इच्छा नहीं करताहै । ६ । शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध वाले जो रोगहैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकट रूप सर्प कहते हैं । ७ । हे भरतवंशी निर्बुद्धी मनुष्य उन्होंने दुःखपानेवाले और घायल होकरभी अपने रूपी सर्पोंसे व्याकुलताको नहींपाते हैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगोंसेभी छूटता है तब उस पुरुषको रूपकी विनाश करनेवाली जराअवस्था दबालेती है । ९ । जोकि शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नानाप्रकार की गन्धियोंसे भी निराधार बड़ी कीचमें चारोंओरसे डूबाहुआ है पूर्ण वर्ष छःऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्वक उसके रूप और अवस्थाको क्षीण करतेहैं ।११। यह कालकी निधि है दुर्बुद्धी लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म से ईश्वरका लिखाहुआ कहा है । १२ । शरीरधारियोंका देहरथहै चिन्ता सारथी है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्म्मबुद्धी उस रथकी बागडोर है । १३ । जो पुरुष उन कनेवाले घोड़ोंके पीछे दौड़ताहै वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमता है ।१४।

the wheel which moves the living and lifeless creatures. The diseases which attack living beings have been called serpents by the wise. The fool, though attacked by them is not distressed in his mind, and when he is freed from such diseases, old age overtakes him. He is stuck in a deep mire, and days, nights, fortnights, seasons and years decrease the period of his life. 10. Foolish men donot know the treasure of time. It is said that God gives beings the reward of their deeds. The body of beings is a car; anxiety is its driver; organs of senses are its horses and wisdom is its trace. He who runs after the horses, turns round with the wheel. He who curbs them with wis-

र्था हयानां यो वेगं धावतामनुधावति । स तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते
॥ १४ ॥ यस्तान् संयमते बुद्ध्या संयतो न निवर्त्तते । स तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत्
परिवर्तितः ॥ १५ ॥ ये तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते ।
भ्रममाणा न मुह्यन्ति संसारे न भ्रमन्ति ते । संसारे भ्रमतां राजन् दुःख
मेतद्धि जायते ॥ १६ ॥ तस्मादस्य निवृत्त्यर्थं यत्नमेव चरेद्बुधः । उपेक्षा नात्र कर्त्तव्या
शतशाखः प्रवर्त्तते ॥ १७ ॥ यतेन्द्रियो नरो राजन् क्रोधलोभनिराकृतः । सन्तुष्टः
सत्यवादी यः स शान्तिमधिगच्छति ॥ १८ ॥ याम्यमाहू रथं ह्येनं मुह्यन्ते येन दुर्बुधाः
बहुलंमुलमेवैतत्तु स भवति भारत ॥ १९ ॥ साधुः परमदुःखानां दुःखिनैमौषधमाचरेत्
ज्ञानौषधमवाप्येह दूरपारं महौषधम् । २० ॥ न विक्रमो न चाप्यर्थो न मित्रं न सुहृ-
ज्जनः तथोन्मोचयते दुःखाद्यथात्मा स्थिरसंयमः ॥ २१ ॥ तस्मान्मैत्रं समास्थाय शील

को जितेन्द्रिय उनको बुद्धिसे आधीन करताहै वहचक्रके समान घूमनेवाले इससंसार
चक्रमें लौटकर नहीं आताहै ।१५। वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको
नहीं पाते हैं वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होताहै । १६ ।
इस हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटनेका उपायकरे इसमें कभीभूल
और देर नकरनी चाहिये नहींतो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाताहै ।१७।
हे राजा जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसेरहित सन्तोषी और सत्यवक्ताहै वहशांती
को पाताहै । १८ । हे भरतवंशी यहभी कहाहै कि पश्चात्ताप करनेसे दुखहोताहै
ज्ञानी बड़े दुखोंकी औषधी ज्ञानको ही समझे । १९ । इसलोकमें जितेन्द्रिय मनुष्य
बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधीको पाकर दुःखरूपी बड़ेरोगको उससे काटे
।२०। घोर दुःखसे वैसे नतो पराक्रम छुड़ाताहै नधन मित्रऔर सुहृद्गण छुड़ातेहैं
जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाताहै । २१ । हे भरतवंशी इसकारण से सबजीवोंकी
प्रीतिमें नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन,त्याग और सावधानीको
मानकर यह तीनोंब्रह्मके घोड़ेहैं । २२ । हेराजा जोपुरुष मृत्यु के भयको त्यागकरके

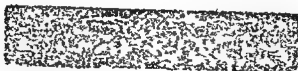
dom, does not come back. 15. He turns with the wheel, but does not lose senses with it. A wise man should try to release himself from the world without idleness and mistake or there shall be raised from it a tree having hundreds of branches. He who has control over senses, who is free from avarice, and who is satisfied and truthful, gets peace of mind. Remorse gives pain and gyan is the medicine of all pains. One having control over organs, having got the great medicine of giyan, should cut away all disease with it. 20. Neither prowess, nor wealth or friends give relief from trouble as does the control over senses. Let one therefore love all the world with control of senses, resignation and carefulness which are the horses of Brahm. He who gives up all fear

मापद्य भारत । दमस्त्यागोऽप्रमादश्च ते त्रयो ब्रह्मणो हयाः ॥ २२ ॥ ... युक्तः स्थितो यो मानसे रथे । त्यक्त्वा मृत्युभयं राजन् ब्रह्मलोकं स गच्छति ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो यो ददाति महीपते । स गच्छति परं स्थानं विष्णोः ॥ २४ ॥ न तत् क्रतुसहस्रेण नोपवासैश्च नित्यशः । अभयस्य हि दानेन यत् फल प्राप्नुयात् नरः ॥ २५ ॥ नह्यात्मनः प्रियतरं किञ्चित् भूतेषु निश्चितम् । अनिष्टं मरणं नाम भारत । तस्मात् सर्वेषु भूतेषु दया कार्य्या विपश्चिता ॥ २६ ॥ नानायुक्ता बुद्धिजालेन संवृताः । असूक्ष्मदृष्टयो मन्दा भ्राम्यन्ते तत्र तत्र ह । सूक्ष्मदृष्टयो धीरा व्रजन्ति ब्रह्मसात्मताम् ॥ २७ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने सप्तमोध्यायः ॥

शीतल किरणोंसे युक्त चित्तरूपी रथपर नियतहै वह ब्रह्मलोकको पाताहै । और जो पुरुष सबजीवों को निर्भयता देताहै वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस स्थानको पाताहै जोकिमायाकी उपाधियों से रहित है । २४ । मनुष्यजो देनेसे फलपाताहै वहहजारोंयज्ञ और सदैव व्रतोंके भीकरने से नहीं पासक्ताहै जीवोंमें आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहींहै हेभरतवंशी सबजीवोंका अप्रिय मरणनामहै इसहेतुसे ज्ञानीको सबजीवोंपर दयाकरना चाहिये । २६ । नानाप्रकारके युक्त अज्ञान के जालसे ढकेहुये अल्पदृष्टी निर्बुद्धी मनुष्य जहांतहां घूमतेहैं २७ सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातनब्रह्मको पातेहैं ॥ २७ ।

of death and stands on the car of mind with cold rays gets the reg of Brahm. He who relieves others from fear, goes to the region of the Omnipresent who is free from all blemishes. A merit which a man gets is not obtainable by thousands of sacrifices and vows. 25 Nothing is dearer than self, and nothing is more averse than death, therefore one should be merciful to all. Foolish men, in the Meshes of ignorance roam here and there, while gyanis obtain the region of Brahm " 27



वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वाक्यं निशम्य कुरुसत्तमः।पुत्रशोकाभिसंतप्तः पपात भुवि मूर्छितः ॥ १ ॥ तं तथापतितं भूमौ निःसंज्ञं प्रेक्ष्य बान्धवाः । कृष्णद्वैपायनश्चैव क्षत्ता च विदुरस्तथा । सञ्जयः सुहृदश्चान्ये द्वाःस्था ये चास्य सम्मताः ॥ २ ॥ जलेन सुखशीतेन तालवृन्तैश्च भारत । पस्पर्शुश्च करैर्गात्रं वीज्यमानाश्च यत्नतः । अन्वासत तु चिरं कालं धृतराष्ट्रं तथागतम् ॥ ४ ॥ अथ दीर्घस्य कालस्य लब्धसंज्ञो महीपतिः । विललाप चिरं कालं पुत्राधिभिरभिप्लुतः ॥ ५ ॥ धिगस्तु खलु मानुष्यं मानुष्ये च परिग्रहम् । यतो मूलानि दुःखानि सम्भवन्ति मुहुर्मुहुः ॥ ६ ॥ पुत्रनाशेऽर्थनाशे च ज्ञातिसम्बन्धिनामथ । प्राप्यते सुमहद्दुःखं विषाग्निप्रतिमं विभो ॥ ७ ॥ येन दह्यन्ति गात्राणि येन प्रज्ञा विनश्यति । येनाभिभूतः पुरुषो मरणं बहु मन्यते ॥ ८ ॥ तदिदं व्यसनं प्राप्तं मया भाग्यविपर्ययात् । तस्यान्तं न विगच्छामि ऋते प्राणविप

अध्याय । ९ ।

वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र विदुरजी के इसवचनको सुनकर पुत्रशोक में दुःखी और मूर्छावान होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । १ । सब बान्धव व्यासजी विदुरजी सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जो २ उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़ेहुये अचेत उस धृतराष्ट्र को देखकर सुखदाई शीतल जलसे छिड़का और पंखोंसे हवाकरी और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीर को स्पर्श किया इसके पीछे उसदशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वासकराय । ४ । फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाले वह पुत्रशोक से युक्त राजा धृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ । ५ । निश्चय करके मनुष्योंमें जन्म को और नरलोकों में परिग्रहको धिक्कारहै जिसमे कि दुःखकामूल बारम्बार उत्पन्न होताहै । ६ । हे समर्थ पुत्र धन ज्ञानवाले और नातेदारों का भी नाश होताहै ।७। जिससे सबअङ्ग भस्महोकर बुद्धिकाभी नाशहोताहै और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानताहै । ८ । सोयह दुःख प्रारब्धके विपरीततासे मैंने पायाहै प्राण त्यागके सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहींपाताहूं । ९ । मैं उसी प्रकारकरूंगा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उसधृतराष्ट्र ने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा

CHAPTER VIII

Vaishampayan said, "Having heard the words of Vidur, Dhritrashtra fell down on earth senseless for the grief of his sons. All the kinsmen with Vyas, Vidur, Sanjaya and other friends sprinkled cold water over him and fanned him. They tried their best to bring him to consciousness and touched his body with their hands, consoling him all the while. Then coming to consciousness, he lamented long the death of his sons. 5 "Fie on me and on my manhood," cried he, "for all this is a source of trouble. The destruction of sons, wealth and kinsmen is like poison or fire. Limbs of the body burn with

दैवात् । ९ ॥ तत्रैवाहं करिष्यामि मये । क्षिप्रमसम ॥ इत्युक्त्वा तु महात्मानं पितरं प्रज्ञाचित्तमम ॥ १० ॥ धृतराष्ट्रोऽभवन्मूढः शोकश्च परमं गतः । अभूच्च तूष्णीं राजासौ ध्यायमानो महीपते ॥ ११ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृष्णद्वैपायनः प्रभुः । पुत्रशोकाभिसन्तप्तं पुत्रं वचनमब्रवीत् ॥ १२ ॥ व्यास उवाच । धृतराष्ट्र महाबाहो यत्त्वां वक्ष्यामि तच्छृणु । श्रुतवानसि मेधावी धर्मार्थकुशलः प्रभो ॥ १३ ॥ न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिद्वेदितव्यं परन्तप । अनित्यतांहि मर्त्यानां विजानासि न संशयः ॥ १४ ॥ अध्रुवे जीवलोके च स्थाने वाशाश्वते सति । जीविते मरणान्ते च कस्माच्छोचसि भारत ॥ १५ ॥ प्रत्यक्षं तव राजेन्द्र वैरस्यास्य समुद्भवः । पुत्रं ते कारणं कृत्वा काल योगेन कारितः ॥ १६ ॥ अवश्यं भवितव्ये च कुरूणां वैशसे नृप । कस्मात् शोचसि तान् शूरान् गतान् परमिकां गतिम ॥ १७ ॥ जानता च महाबाहो विदुरेण महात्मना।

पितासे यह कहकर अचेतताको पाकेबड़े शोकको पाया अर्थात् वह राजा वहां ध्यानकरताहुआ मौनहोगया । ११ । प्रभु व्यासजी उसके उसवचनको सुनकर पुत्रशोकसे दुखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले । १२ । हेमहाबाहु धृतराष्ट्र जोमैंकहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी औरधर्म अर्थमें भी कुशलहो । १३ । हे शत्रुओंके तपानेवाले तुझसे कोई बात अज्ञात नहीं है हे बड़े ज्ञानी तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतवंशी इस विनाशवान् जीवलोकमें विनाशवान निवास स्थान के होनेपर जीवन और मृत्युमें किस निमित्त शोचते हो । १५ । हे राजेन्द्र इस शत्रुता की प्रत्यक्षता आपके दृष्टिगोचर है कालयोगसे आपके पुत्रका कारण बनाकर सबमारेगये ।१६। हेराजा कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उत्तमगति पानेवाले वीरों को किस हेतुसे शोचतेहो । १७ । हेमहाबाहु राजाधृतराष्ट्र मैंने और बुद्धिमान विदुरने भी सबप्रकार से सन्धिमें उपाय किया । १८ । बहुतकालतक उद्योग करनेवाले किसी जीवसेभी देवका रचाहुआ मार्ग मेरेमतमे बन्दकरने के योग्यनहीं है । १९ । मैंने अपने नेत्रों के सम्मुखमें देवताओंका जोकार्य सुना मैं उसको उसी प्रकारसे कहताहूं जिससे कि तेरी स्थिर बुद्धिहोय । २० । थकावट से रहित मैं एकसमय बड़ी शीघ्र

grief and wisdom is destroyed, causing one to desire for death. I have got through all this trouble by the vicissitude of Time and see no relief except in death. I shall die, Vyas." 10 Having said this to Vyas, Dhritrashtra again fainted and became silent. Vyas was much affected with his sorrow and said, "Hear me, Dhritrashtra, for your are learned and wise and have experience of the world. Nothing is hidden from you, destroyer of foes. You know the mortal nature of beings. Why do you grieve at death? 15. You knew of the enmity. All men were slain on account of your son. But the destruction of

प्रति संबंयमेन शमं प्रति जनेश्वर ॥ १८ ॥ न च दैवकृतो मार्गः शक्यो मूतेन केन चित् । घटताचि चिरं कालं नियन्तुमिति मे मतिः ॥ १९ ॥ दैवतानां हि यत् कार्यं मया प्रत्यक्षतः श्रुतम् । तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि कथं स्थैर्यं भवेत्तव ॥ २० ॥ पुराहं त्वरितो यातः सभामैन्द्रीं जितक्लमः । अपश्यं तत्र च तदा समवेतान् दिवौकस ॥ २१ नारदप्रमुखश्चापि सर्वे देवर्षयोनघ । तत्र चापि मया दृष्टा पृथिवी पृथिवीपते ॥ २२ ॥ कार्यार्थमुपसम्प्राप्ता देवतानां समीपतः. उपगम्य तदा धात्री देवान् इ समागतान् ॥२३॥ यत् कार्यं मम युष्माभिर्ब्रह्मणः सदने तदा प्रतिज्ञातं महाभागास्तच्छीघ्रं संविधीयताम् ॥ २४ तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा विष्णुर्लोकनमस्कृतः । उवाच वाक्यं प्रहसन् पृथिवीं देवसंसदि ॥२५ धृतराष्ट्रस्य पुत्राणां यस्तु ज्येष्ठः शतस्य वै । दुर्योधन इति ख्यातः स ते कार्यं करिष्यति ॥२६॥ तञ्च प्राप्य महीपालं कृतकृत्या भविष्यसि । तस्यार्थे पृथि

वोमें इन्द्रकी सभा में गया और सब इकट्ठेहुये देवताओंको देखा । २१ । हेराजा वहांपर मैंने नारदादिक सब देवऋषियों को और पृथ्वीकोभी देखा । २२ । यह सब मिलकर अपनेकार्यके निमित्त इन्द्रादिक देवताओंके सम्मुख वर्त्तमानहुये तब पृथ्वी ने समीपजाकर उन इकट्ठे देवताओंसे कहा । २३ । कि हेमहाभाग देवताओ आप लोगोंने ब्रह्मलोकमें जिस मेरेकार्य्य करनेकी प्रतिज्ञाकी है उसको शीघ्र करो । २४ । लोकपूजित विष्णुजी देवसभामें उसके उनवचनको सुनकर हँसतेहुये उस पृथ्वीसेयह वचन बोले । २५ । धृतराष्ट्र के सौ बेटोंमें बड़ा बेटादुर्योधन नामसे प्रसिद्ध है वहतेरा कार्य्य करेगा । २६ । उस राजाको पाकर अभीष्ट प्राप्तकरेगी उसके पीछेकुरुक्षेत्रमें इकट्ठेहोनेवाले और शस्त्रोंसे प्रहार करनेवाले राजालोग परस्पर मरेंगे हे देवी इसके पीछेयुद्ध में तेरे भारकानाशहोगा । २८ । हे शोभायमान शीघ्र अपनेस्थानको जाओ और सृष्टिको धारण करो । २९ । हेराजाओंमें

the *Kauravas* was unavoidable, why do you grieve for those who have got good regions ? I as well as Vidur tried our best to make peace. The decrees of Fate cannot be annulled by any human effort. For your satisfaction I tell you what I myself saw in the assembly of gods. 20. Once I went to the court of Indra without being tired There I saw Narad and other rishis as well as our Earth. All the gods were assembled there for their respective businesses. She then approached the gods and thus addressed them, " Make haste, O gods, to fulfil the promise you made regarding me in the region of Brahm. Vishnu, respected by the world, said to her with a smile, " Duryodhan the eldest son of Dhritrashtra will do thy work. 26 You will gain your object through him : the assembled kings will fight at Kurukshetra and shall relieve you of your burden. Go to your place and keep on supporting the world. " Your son Duryodhan was born

धीपालाः कुरुक्षेत्रे समागताः ॥२७॥ अन्योन्यं घातयिष्यन्ति दृष्टैःशस्त्रैः महारणे। ततस्ते विदितं देवि भारस्यशुचि नाशनम् ॥ २८ ॥ गच्छ शीघ्रं स्वकं स्थानं लोकं धारय शोभने ॥२९॥ यएष ते सुतो राजन् लोकसंहारकारणात्। कलेरंशः समुत्पन्नो गान्धार्या जठरे नृप ॥ ३०॥ अमर्षी चपलश्चापि क्रोधनो दुष्प्रसादनः। दैवयोगात् समुत्पन्ना भ्रातरश्चास्य तादृशाः ॥ ३१॥ शकुनिर्मातुलश्चैव कर्णश्च परमः सखा। समुत्पन्ना विनाशार्थं पृथिव्यां सहिता नृपाः ॥ ३२ ॥ यादृशो जायते राजा तादृशोऽस्य जनो भवेत्। अधर्मो धर्मतांयाति स्वामी चेद्धार्मिको भवेत् ॥ ३३ ॥ स्वामिनो गुणदोषाभ्यां भृत्याः स्युर्नात्र संशयः। दुष्टं राजानमासाद्य गतास्ते तनयानृप ॥ ३४ ॥ एतमर्थं महाबाहो नारदो वेद तत्त्ववित्। आत्मापराधात् पुत्रास्ते विनष्टाः पृथिवीपते। मा तान् शोचस्व राजेन्द्र न हि शोकेऽस्ति कारणम् ॥ ३५ ॥ न हि ते पाण्डवाः स्वल्पम् अपराध्यन्ति भारत। पुत्रास्तवदुरात्मानो यैरियं घातिता मही॥ ३६ ॥ नारदेन च भद्रं ते

श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसारके नाशके कारण से वह तेरापुत्र कलियुग अंश गान्धारी में उत्पन्न हुआथा। ३०। जोकि अशान्त चंचल क्रोधका अभ्यासी और दुखसे पराजय होनेवालाथा दैवयोगसे उसकेभाईभी उसी प्रकारके उत्पन्न हुये। ३१। और मामा शकुनी और बड़ामित्रकर्ण और बहुतसे राजालोग संसारके नाशके निमित्त उत्पन्नहुये। ३२ जैसा राजा उत्पन्न होताहै उसीप्रकार के उसकेआदमी भी उत्पन्नहोतेहैं जोस्वामी धर्मका अभ्यासी होताहैउस दशामें अधर्म भी धर्मताको पाताहै। ३३। स्वामियोंके गुण दोषों से निस्सन्देह उसीप्रकार के नौकर चाकर होंगे हेराजा तेरे पुत्र दुष्टराजाको पाकर इस संसार से गये हे महाबाहु नारदजी इसप्रयोजनको मुख्यता समेत जानतेहैं हेभरतवंशी तेरे पुत्र अपने अपराधसे नष्टहुए उनका शोचमतकर। ३५। पाण्डव थोड़ाभी अपराध नहींकरते जिन्होंकेहाथसेयह सब संसार मारागया। ३६। तेरा भलाहोय प्रथमही राजसूययज्ञमें नारदजीने युधिष्ठिरकी सभामें वर्णन कियाथा। ३७। कि हे कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर कुछकाल पीछे कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे सो तेरे करने के योग्य

of *Kali* and Gandhari to destroy the world 30. He was dissatisfied, rash and invincible. His brothers too, were of his mind. His uncle Shakuni, his friend Karan and other princes too were born to destroy the world. The Subjects are like him, while, they speedily take to his bad habits. Thy sons departed from the world for the fault of thy son who was their king Narad knows this well. Thy sons were destroyed by their faults Be not grieved for them, 35 *The* Pandavas have committed no fault in destroying the world Narad had foretold it at the Rajsuya sacrifice of Yudhishthir that the *Kauravas* and

पाण्डवा-
मेव न संशयः । युधिष्ठिरस्य समितौ राजसूये निवेदितम् ॥ ३७ ॥ पाण्डवा-
रिवाद्यैव समासाद्य परस्परम । न भविष्यन्ति कौन्तेय यत्ते कार्यं तदाचर ॥ ३८ ॥
रदस्य वचः श्रुत्वा तदाशोचन्त पाण्डवाः । एवं ते सर्वमाख्यातं देवगुह्यं सनातनम्
३९ ॥ कथं ते शोकनाशः स्यात् प्राणांश्च धृथाः प्रभो । स्नेहश्च पाण्डुपुत्रेषु सादा
वृकेन विधिम ॥ ४० ॥ एष चार्थो महाबाहो पूर्वमेव मया श्रुतः । कथितो धर्मराजस्य
राजसूये क्रतूत्तमे ॥ ४१ ॥ घटितं धर्मपुत्रेण मया गुह्ये निवेदिते । अविग्रहे कौरवाणां
दैवन्तु बलवत्तरम ॥ ४२ ॥ अनतिक्रमणीयो हि विधी राजन् कथञ्चन । कृतान्तस्य
भूतेन स्थावरेण चरेण च ॥ ४३ ॥ भवान् धर्म्मपरो यत्र बुद्धिश्रेष्ठश्च भारत । मुह्यते
प्राणिनां ज्ञात्वा गतिञ्चागतिमेव च ॥ ४४ ॥ त्वान्तु शोकेन सन्तप्तं मुह्यमानं मुहुर्मुहुः ।
ज्ञात्वा युधिष्ठिरो राजा प्राणानपि परित्यजेत् ॥ ४५ ॥ कृपालुर्नित्यशो धीरस्तिर्यग्योनि
गतेष्वपि । स कथं त्वयि राजेन्द्र कृपां वै न करिष्यति ॥ ४६ ॥ मम चैव नियोगेन विधे
पर्य्यवर्तनात् । पाण्डवानाञ्च कारुण्यात् प्राणान्धारय भारत ॥ ४७ ॥ एवं ते वर्त्तता

करना चाहिये करो उसको कर । ३८ । तब पांडवोंने नारदजी के वचनको सुनकर सोचे क्रियायह है उसको कर । ३८ । तब पांडवोंने नारदजी के वचनको सुनकर शोचि कियाथा ॥ ३९ । अबतू अपने प्राणों
देवताओंकी गुप्त और सनातन बातें मैंने तुझसे कहीं । ३९ । अबतू अपने प्राणों
पर दया और पाण्डवोंपर प्रीतिकर जिससे दैवके कर्मको जानकर तेरा शोक
दूरहोय । ४० । हेमहाबाहु यहबात मैंने प्रथमही सुनीथी जो किधर्मराजके उत्तम
राजसूयज्ञ में कही गईथी । ४१ । मुझसे गुप्त बातके कहनेपर धर्म्मके पुत्रनेकौरवों के
युद्ध नहोने में उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबलहै । ४२ । हेराजा कालकी रची
हुई जो सनातन विधिहै वह इसलोकमें किसी जीवधारी से उल्लंघन करने के योग्य
नहीं है । ४३ । हेभरतवंशी धर्म्मात्मा आप प्राणियों की गति और अगतियोंको
भी जानकर इनमें अचेत होतेहो धर्म्मात्मा । ४४ । राजा युधिष्ठिर तुमको शोक
से दुखी और बारबार अचेत होनेवाला जानकर अपने प्राणोंको भीत्याग करसक्ता
है । ४५ । वह धैर्यवान सदैव पशु पक्षियोंपरभी दयाका करनेवालाहै हेराजेन्द्र वह
तुमपर कैसेकृपानहीं करेगा । ४६ । हे भरतवंशी मेरी आज्ञासे दैवके उल्लंघन न
होने से और पाण्डवोंकी दयासे प्राणों को धारण करो । ४७ । इसप्रकार लोक में

the Pandavas would be destroyed by the hand of each other, and the Pandavas were sorry for it I have told you that secret of gods Now feel mercy on your own life and love the Pandavas so that your grief may abate by the knowledge that it was the work of God 40 I was already aware of the words told at the Rajsuya sacrifice of Yudhishthir. Knowing this secret from me, Yudhishthir tried to make peace, but the working of Fate is powerful. It can not be annulled by any one. You lose your senses, though you know the course of living beings. Knowing you in such distress of mind, Yudhishthir may lose his life 45. He is merciful to beasts and

नस्य लोके कीर्त्तिर्भविष्यति । धर्मार्थः सुमहांस्तात तप्तं स्यात्त्व तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥ पुत्रशोकं समुत्पन्न हुताशं ज्वलितं यथा । प्रज्ञाम्भसा महाराज निर्वापय ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततेजसः । समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत ॥ ५० ॥ महता शोकजालेन प्रणुन्नोऽस्मि द्विजोत्तम । नात्मानमवबुध्यामि मुह्यमानो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ इदन्तु वचनं श्रुत्वा तव दैवनियोगजम । धारयिष्याम्यहं प्राणान् घटिष्ये न तु शोचितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा तु व्यासः सत्यवतीसुतः । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रैवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्व्वणि जलप्रादानिकपर्व्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदनेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



तुम वर्त्तमान रहनेवाले ही कीर्त्तिहोगी और हेतात बड़ा धर्म्म और बहुतकालतक तपाहुआ तप प्राप्तहोगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप अग्निके समान उत्पन्न होने वाले पुत्रशोकको ज्ञानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले किधृतराष्ट्र उन बड़ेतेजस्वी व्यासजी के इस वचनको सुनकर एक मुहूर्त्त अच्छे प्रकार ध्यानकरके कहा ।५०। किहे द्विजोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन दकाहुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आताहूं । ५१ । दैवकी आज्ञासे उत्पन्न होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा और शोच करनेमें प्रवृत्त नहीं हूंगा । ५२ । हेराजेन्द्र सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्र के इसवचनको सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्द्धान होगये । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you ? Having regard to my words, the power of Fate and pity towards the *Pandavas*, you should sustain your life. You will thus be famous in the world and will attain great merit. You should quench the fire of your grief by the water of wisdom. " Vaishampayan said that having heard the words of glorious Vyas, Dhritrashtra thought for some time and said. 50 " I am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but I shall live to obey you and shall not plunge in grief. " Having heard these words, Vyas disappeared then and there. " 53



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रो महीपतिः । किमचेष्टत विप्रर्षे तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामनाः । कृपप्रभृतयश्चैव किमकुर्वत ते त्रयः ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्नः श्रुतं कर्म शापश्चान्योन्यकारितः । वृत्तान्तमुत्तरं ब्रूहि यदभाषत सञ्जयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते दुर्योधनेचैव हते सैन्ये च सर्वशः । सञ्जयो विगतप्रज्ञो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । आगम्य नानादेशेभ्यो नानाजनपदेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव सुतैः सह ॥ ५ ॥ पुत्राणामथ पौत्राणां पितृणाञ्च महीपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्य्याणि कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं घोरं सञ्जयस्य महीपतिः । गतासुरिव निश्चेष्टो न्यपतत् पृथिवीतले ॥ ७ ॥ तं शयानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिम् । विदुरः सर्वधर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् ॥८॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे मा शुचो भरतर्षभ ।

अध्याय ९ ॥

जनमे जय बोले हे ब्रह्मऋषि भगवान व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने क्या किया वह मुझसे कहनेको योग्यहो । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया । अश्वत्थामा का कर्मसुना और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको सञ्जयने कहाहै । ३ । वैशम्पायन बोले कि दुर्योधन के और सब सेनाके मरनेपर अचेत सञ्जय धृतराष्ट्र केपास आये ।४ । हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ।५ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक जो रणभूमि में मरहैं उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ६ । वैशम्पायन बोले कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उसघोर वचनको सुनकर निर्जीवके समाननिश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इस वचनको बोले । ८ । हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उठोशोच

CHAPTER IX

Janmejaya said. " What did Dhritrashtra do at the departure of Vyas? Pray tell me all that he as well as brave Yudhishthir and the three warriors, Kripacharya and others did. I have heard the exploits of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened next as you heard it from Sanjaya." Vaishampayan said, " At the destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra and said, " All the princes who had come here from various countries have gone to the region of Yam; perfrom the obsequies of your sons, grandsons and elders who died in the war." Vaishampapan says that on hearing the heart rending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down on the earth like and inanimate thing. 7· Vidur the virtuous came to him and said, " Rise up Dhritrashtra and be not grieved. This is the

एषा वै सर्वसत्वानां लोकेश्वर परा गतिः ॥९॥ क्षत्रियास्ते महात्मानः शूरा ... भना । आशिषं परमां प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥ १० ॥ आत्मनात्मानमाश्वास्य मा शुचः पुरुषर्षभ । नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं कार्य्यमुत्स्रष्टुमर्हसि ॥ ११ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकाप्रनोदने नवमोऽध्यायः ॥ ९

वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा तु भरतर्षभ । युज्यतां यानमि त्युक्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत ॥ १॥ क्षिप्रमानय गान्धारीं सर्वाश्च भरतस्त्रियः । वधूं कुन्तीमुपादाय याश्चान्यास्तत्र योषितः ॥ २ ॥ एवमुक्त्वा स धर्मात्मा विदुरं धर्मवित्तमम् । शोकविप्रहतज्ञानो यानमेवान्वपद्यत ॥ ३ ॥ गान्धारी पुत्रशोकार्त्ता भर्त्तुर्वचनचोदिता । सह कुन्त्या यतो राजा सह स्त्रीभिरुपाद्रवत् ॥ ४ ॥ ताः समासाद्य राजानं

मतकरो सब जीवधारियों की यही परमगतिहै । ९ । उन महात्मा शूर और युद्धकी शोभा देनेवाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं हैं १० हे पुरुषोत्तम बुद्धि से चित्तको विश्वास देकर शोच मतकरो अब शोकमें डूबेहुये तुम करने के योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागनेके योग्य नहींहो । ११ ।

अध्याय १० ॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर सवारी तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोला । १ । बधू कुन्ती आदि अन्य सबस्त्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशियों की स्त्रियों को शीघ्र लाओ । २ । वह धर्मात्मा शोकमें हतचित्त बुद्धिमान धृतराष्ट्र बड़े धर्म्मवान् विदुरजी से इस प्रकार कहकर सवारीपर सवार हुये । ३ । पति के वचनसे चलायमान शोकसे पीड़ित गान्धरी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गयीं जहां राजाधृतराष्ट्र । ४ । अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्त्तालाप करकेचलीं

end of all the living beings. The great warriors, who have gone to heaven, are not worth sorrow. Curb yourself with wisdom and be not grieved. Donot leave the obs q uies undone on account of your grief." 11



CHAPTER X

Vaishampiyan said that on hearing the words of Vidur, Dhritarashtra ordered his men to make carriages ready and to bring Kunti and other women with Gandhari and the women of the family.

शोकसमन्विताः । आयगच्छन्योऽन्वमीयुः स्म भृशमुच्चुक्रुशुस्तत: ॥५॥ ताः समादृश्य शोकसमन्विताः । आयगच्छन्योऽन्वमीयुः स्म भृशमुच्चुक्रुशुस्तत: ॥५॥ ताः समादृश्य
शोकसमन्विताः । आयगच्छन्योऽन्वमीयुः ...

और बड़े उच्चस्वर से पुकारीं । ५। उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी ने आंसुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से विश्वास कराया और पालकियों में बैठाकर बाहरचले । ६ । इसके पीछे कौरवों के सब स्थानों मे बड़ाशब्द उत्पन्न हुआ और सब नगर लड़कों से वृद्धोंतक शोकसे पीड़ावानहुआ । ७ । पूर्व समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगई थीं वह सब विधवा स्त्री अन्यर मनुष्यों से भी देखीगई । ८ । शिरके बालोंको फैलाकर और सुन्दर भूषणों को उतार कर एक वस्त्र रखनेवाली स्त्रियां अनाथ के समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्व्वतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ों की गुफाओं मे ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों । १० । हे राजा तब उन स्त्रियों के बड़े समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियों के बच्चे मैदान में निकलते हैं । ११ । भुजाओं को पकड़ कर पिता भाई और पुत्रों को पुकारती हुई प्रलयकालीन संसार के नाशकी दिखानेवाली हुई । १२ । विलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंने करने के योग्य कर्मको

After this he mounted his car. Summoned by Dhritrashtra, Gandhari, Kunti and other women came there. The sorrowful women went on talking and crying. 5. More full of grief than those women and with tears in his eyes, he consoled them and made them ride on palanquins. There were great lamentations in the houses of the Kauravas and the city people, young and old, showed signs of grief. The women, who were not visible even to gods, came out in the presence of all men in their widows' weeds. They went on with dishelleved hair, destitute of ornaments, with only one cloth on the body, like those having no guardians. They came out of their white houses like a herd of female deer whose stag is slain. 10 They went on crying like foals. Calling out the names of fathers, brothers and sons, they made a great noise. Crying out and running hither

स्तनदतः । शोकेनाऽयाहतज्ञानाः कर्त्तव्यं न प्रजज्ञिरे ॥१३॥ ये दृष्टं जग्मुः पुरा भाः स्म सखीनामपि योषितः । पश्चाद्धात्र्या निर्लज्जा श्वश्रूणां पुरतोऽभवन् ॥ १४ ॥ परस्परं सुसूक्ष्मेषु शोकेष्वाश्वासयंस्तदा । ताः शोकविह्वला राजन्नवैक्षन्त परस्परम् ॥ १५ ॥ ताभिः परिवृतो राजा रुदतीभिः सहस्रशः । निर्ययौ नगराद्दीनस्तूर्णमायोधनं प्रति ॥१६॥ शिल्पिनो वणिजो वैश्याः सर्वे कर्मोपजीविनः । ते पार्थिवं पुरस्कृत्य निर्ययुर्नगराद्बहिः ॥ १७ ॥ तासां विक्रोशमानानामार्त्तानां कुरुसंक्षये । प्रादुरासीन्महान् शब्दो व्यथयन् भुवनान्युत ॥ १८ ॥ युगान्तकाले संप्राप्ते भूतानां दह्यतामिव । अभावः स्यादयं प्राप्त इति भूतानि मेनिरे ॥ १९ ॥ भृशमुद्विग्नमनसस्ते पौरा कुरुसंक्षये । प्राक्रोशन्त महाराज स्वनुरक्तास्तदा भृशम् । २० ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि सञ्जकिधृतराष्ट्रस्य पुरान्निर्याणे दशमोऽध्यायः॥१०॥

—※—

नहीं जाना । १३ । पूर्वसमय में जिन स्त्रियोंने सखियों की भी लज्जाको पाया था वह एक वस्त्र रखनेवाली बिना पर्देवाली स्त्रियां सासों के आगे वर्त्ती । १४ । हेराजा जिन्होंने बहुत थोड़े शोकों में परस्पर विश्वास कराया तब उन शोकसे व्याकुल स्त्रियोंने परस्परदेखा । १५ । उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिराहुआ महा दुखी धृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमेंगया । १६ । शिल्पी व्यापारी वैश्य और सब कर्मों से निर्वाह करनेवाले वह सब राजाको आगे करके नगरसे बाहर निकले । १७ । कौरवोंके नाशमें उन पीड़ावान् शोरकुकरनेवालों के बड़ेशब्द सब भवनोंको पीड़ावान करते प्रकटहुये । १८ । जैसे कि प्रलयकाल वर्तमान होनेपर भस्महोनेवाले जीवोंका नाशहोताहै उसीप्रकार इस नाशका भीहोना जीवोंने माना । १९ । हेमहाराज इस कौरवों के नाशहोनेपर अत्यन्त व्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरवासी कठिनतासे पुकारे ॥ २० ॥

and thither, they did not know what to do. "Those women who were abashed even before their playmates, now went on unveiled before their mother-in-law. They who were companions in their grief now looked at one another. 15. Surrounded by thousands of weeping women, Dhritrashtra went out in open air. Artisans, merchants, traders and others followed their king. Lamenting the destruction of the Kauravas, their noise was heard far and wide. They thought that the great destruction of the warriors had been like that of pralaya. The citizens lamented the great destruction of the Kauravas and cried with a great noise." 20.

वैशम्पायन उवाच। क्रोशमात्रं ततो गत्वा ददृशुस्ते महारथान्। शारद्वतं कृपं ... कृतवर्माण मेव च ॥१॥ ते तु दृष्ट्वैव राजानं प्रज्ञाचक्षुषमीश्वरम्। अश्रुकण्ठा ... निःश्वस्य वाक्यमिदमब्रुवन् ॥ २ ॥ सुतस्तव महाराज कृत्वा कर्म सुदुष्करम्। गत ... नुचरो राजञ्छक्रलोकं महीपतिः ॥ ३ ॥ दुर्योधनबलान्मुक्ता वयमेव त्रयो रथाः। ... परिक्षीणं सैन्यं ते भरतर्षभ ॥ ४ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं कृपः शारद्वतस्ततः। ... गान्धारीं पुत्रशोकार्तामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ५ ॥ अभीता युध्यमानास्ते घ्नन्तः शत्रुगणान् बहून्। वीरकर्माणि कुर्वाणाः पुत्रास्ते निधनं गताः ॥ ६ ॥ ध्रुवं संप्राप्य लोकांस्ते ... निर्मलान् शस्त्रनिर्जितान्। भास्वरं देहमास्थाय विचरन्त्यमरा इव ॥ ७ ॥ न हि कश्चि ... शूराणां युध्यमानः पराङ्मुखः। शस्त्रेण निधनं प्राप्तो न च कश्चित् कृताञ्जलिः ॥ ८ ॥ एतां हि क्षत्रियस्याहुः पुराणाः परमां गतिम्। शस्त्रेण निधनं संख्ये तत्र शोचि

अध्याय ॥ ११ ॥

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोश जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा महारथियोंकोदेखा। १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्णकण्ठ से रोदन करतेहुए ज्ञान नेत्र रखनेवाले अपनेस्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर यहवचन बोले । २ । हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्र बड़े कठिन कर्मको करके साथियों समेत इन्द्रलोकको गया । ३ । हेभरतर्षभ दुर्योधनकी सेनामें से हम तीन रथीबचेहैं शेषसब आपकीसेना नाशहोगई । ४ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य राजासे यह कहकर पुत्र शोकसे पीड़ावान् गान्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करने वाले शत्रुओं के बहुत समूहोंको मारनेवाले वीर लोगों के कर्मों को करके तेरेपुत्रोंने मरणकोपाया। ६।निश्च य करकेवहशस्त्रोंसे विजयकियेहुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीरमें निय तहोकर देवताओंके समान विहारकरतेहैं ७उनशूरोंमें कोईशूर वीर मुखफेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रों से मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसीने भी नाश को नहींपाया । ८ । प्राचीन वृद्धों ने

CHAPTER XI

Vaishampayan said, " After going away a mile, Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma met one another. With their voice choked with tears, they saw the blind king and said to him with sighs " Your son, O king, has gone to the region of Indra along with his companions. Out of that large army we three are only alive, the rest are destroyed." Then Kripacharya said to sorrowful Gandhari, "Thy sons died after doing brave deeds and slaying many foes. 6. Surely they have got pure regions and roam there in luminous bodies like gods. - None of them turned back from fight. They all died by weapons and none supplicated for life Such kind of death has been called the best by the wise and therefore you should not be grieved

तुमर्हसि ॥ ९ ॥ न चापि शत्रवस्तेषां वर्धन्ते राजसत्तम । शृणु यत्कृतमस्माभिः अश्वत्थामपुरोगमैः ॥ १० ॥ अधर्मेण हतं श्रुत्वा भीमसेनेन ते सुतम् । सुप्तं शिबिरमाविश्य पाण्डूनां कदनं कृतम् ॥ ११ ॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे धृष्टद्युम्नपुरोगमाः । द्रुपदस्यात्मजाश्चैव द्रौपदेयाश्च पातिताः ॥ १२ ॥ तथा विशसनं कृत्वा पुत्रशत्रुगणस्य ते प्राद्रवाम रणे स्थातुं न हि शक्यामहे वयम् ॥ १३ ॥ ते हि शूरा महेष्वासाः क्षिप्रमेष्यन्ति पाण्डवाः । अमर्षवशमापन्ना वैरं प्रतिजिहीर्षवः ॥ १४ ॥ राजंस्त्वमनुजानीहि धैर्यमातिष्ठ चोत्तमम् । निष्ठान्तं पश्य चापि त्वं क्षात्रं धर्मं च केवलम् ॥ १५ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । कृपश्च कृतवर्मा च द्रोणपुत्रश्च भारत ॥ १६ ॥ अवेक्षमाणा राजानं धृतराष्ट्रं मनीषिणम् । गङ्गामनु महात्मानस्तूर्णमश्वानचोदयन् ॥ १७ ॥

ने इसप्रकार युद्धमें शस्त्रों से क्षत्रिय के मरणको परमगति कहा है इस हेतुसे वह सोचकरके योग्य नहीं हैं ९ । हे राजा उन्होंके शत्रु पाण्डवभी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगों ने जो किया उसको सुनो । १० । अधर्मके साथ भीमसेनके हाथ से तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगों ने सोतेहुये लोगों से युक्त डेरेको पाकर पाण्डवीय शूरवीरोंका नाश किया । ११ । सब पांचाल जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजाद्रुपद के और द्रौपदी के सब पुत्रोंको भी मारा । १२ । इसरीति से हम युद्ध में तेरेपुत्र के शत्रुसमूहों का नाश करके भागे हैं इस हेतुसे हम तभी यहां नियत होने को समर्थ नहीं हैं । १३ । वह शूरवीर पांडव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुताका बदला लेने के अभिलाषी हमारी खोज में शीघ्रता से आते हैं । १४ । हे राजा तुम आज्ञादो और बड़े धैर्य में नियत हो प्रारब्ध के अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रिय धर्मको भी विचारो । १५ । हे भरतवंशी कृपाचार्य्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा इन तीनों ने इस प्रकार राजा से कहकर और प्रदक्षिणा करके । १६ ।

---

for them. Their enemies the Pandavas too, are not increasing. Hear what we did to them. 10. Hearing that your son was unjustly slain by Bhim, we destroyed the camp of the sleepers. All the Panchals headed by Dhrishtadyumn, all the sons of Drupad and Draupadi were slain by us. Having slain the enemies of your son, we have fled from before them and therefore can stay here with you no longer. The Pandavas seek revenge and are coming after us. Let us go, king. Be comforted, thinking of death and the holy duties of kshatryas " 16 Having said this, the three warriors went round the king and then moved their horses towards the Ganges, looking again and again at the king. 17. Going far away from that

स्य तु तेराजन् सर्वे,पव महारथाः । आमन्त्र्यान्योन्यमुद्विग्नास्त्रिधा ते प्रययुस्तदा ॥ जगाम हास्तिनपुरं कृपः शारद्वतस्तदा । स्वमेव राष्ट्रं हार्दिक्यो द्रौणिर्व्यासा श्रमं ॥ १९ ॥ एवं ते प्रययुर्वीरा वीक्षमाणाः परस्परम् । भयार्त्ताः पाण्डुपुत्राणामा. सुरवा महात्मनाम् ॥ २० ॥ समेत्य वीरा राजानं तदात्वनुदिते रवौ । विप्रजग्मुर्महा यथेच्छमरिन्दमाः ॥ २१ ॥ समासाद्य वै द्रौणिं पाण्डुपुत्रा महारथा । । जयन्त रणे राजन् विक्रम्य तदनन्तरम् ॥ २२ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि एका दशोध्यायः ॥ ११ ॥

हमाने राजाधृतराष्ट्र को देखते अपने घोड़ों को गंगाजी की ओर चलायमान या । १७ । हे राजा वह वह महारथी दूर जाकर परस्पर विदाहोकर व्याकुल चित्त तीनों तीन ओरको चलदिये । १८ । उनमें से शारद्वत कृपाचार्य हस्तिना रको और कृतवर्मा अपने देशको और अश्वत्थामाव्यासजी के आश्रम को गये १९ । इसरीतिसे वह वीर उन महात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ावान् स्पर देखते हुये चलदिये । २० । वह शत्रु विजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे पहिले इच्छानुसार चलदिये । २१ । हे राजा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य से अश्व थामा के जुदेहोनेपर उनमहारथी पांडवों ने द्रोणाचार्य के पुत्रको पाकर और पराक्रम करके युद्धमें विजय किया २२ ॥

place, the three warriors took leave of one another, Kripacharya going towards Hasthinapur, Kritvarma to his own country and Ashwathama to the hermitage of Vyas. Thus they went away in different directions for fear of the Pandavas whom they had so offended. They went on their ways before day break. On the separation of *Kripacharya* and *Kritvarma* from Ashwathama, the Pandavas met the son of Drona and conquered him. "



वैशम्पायन उवाच । एतेषु तेषु सैन्येषु धर्मराजो युधिष्ठिरः । शुश्रुवे पितरं निर्यान्तं नागसाह्वयात् ॥ १ ॥ सोऽभ्ययात् पुत्रशोकार्त्तः पुत्रशोकपरिप्लुतम् । शोचमानं महाराज भ्रातृभिः सहितस्तदा ॥ २ ॥ अन्वीयमानो वीरेण दाशार्हेण महात्मना । युयुधानेन च तथा तथा चैव युयुत्सुना ॥ ३ ॥ तमन्वयात् सुदुःखार्त्ता द्रौपदी शोककर्शिता । सह पाञ्चालयोषिद्भिर्यास्तत्रासन् समागताः ॥ ४ ॥ स गङ्गामनुवृन्दानि भरतसत्तम । कुररीणामिवार्त्तानां क्रोशन्तीनां ददर्श च ॥ ५ ॥ ताभिः परिवृतो क्रोशन्तीभिः सहस्रशः । ऊर्ध्वबाहुभिरार्त्ताभी रुदतीभिः प्रियाप्रियैः ॥ ६ ॥ क्व नु धर्मज्ञता राज्ञः क्व नु सत्यानृशंसता । यदावधीत् पितॄन् भ्रातॄन् गुरून्पुत्रान् ... घातयित्वा कथं द्रोणं भीष्मं ... पि पितामहम् । मनस्तेऽभून्महाबाहो हत्वा चापि ... ॥ ८ ॥ किं नु राज्येन ते कार्यं पितॄन् भ्रातॄन् पश्यतः । अभिमन्युश्च

अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने पुरसे निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना ।१ हे महाराज सब पुत्रशोकसे वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले धृतराष्ट्र ओरचला । २ । महात्मावीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इनतीनों समेत चला ।३। और बड़े दुःखनेपीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पांचालदेशकी स्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उनके पीछे चली । ४ । हे भरतर्षभ उसने गंगाजीके समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ितहोकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा । ५ । उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इनप्रिय अप्रिय वचनों समेत रोनेवाली हजारों स्त्रियों से वह राजाधृतराष्ट्र घिराहुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओं के पुत्रोंको मरवाया । ७ । हे महाबाहु द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेराचित्त कैसाहुआ । ८ । हे भरतवंशी पिता भाई और द्रौपदी के पुत्र और अजेय अभि·

CHAPTER XII

Vaishampayan said, " At the destruction of the armies Yudhishthir heard that old Dhritrashtra had come out, and himself distressed with grief, he went towards him, with Shree Krishn, Satyaki and Ynyutsu. *Merged* in excessive grief, Draupadi followed the Panchal women. She saw the group of women crying like a foal near the Ganges. Dhritrashtra was surrounded with the women who were thus lamenting — "Yudhishthir has slain fathers, brothers, freinds and preceptor's sons; where is his justice gone? 7. *How* does he feel after getting Drona, Bhishm and Jayadrath killed. How will he rule when fathers, brothers, and the sons of Draupadi and Abhimanyu are no more? " Yudhishthir entered the bevy of those lamenting

पित्र्यांश्च भारत ॥ ९ ॥ अतीत्य ता महाबाहुः क्रोशन्तीः कुररीरिव । ववन्दे पितरं ज्येष्ठं धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ १० ॥ ततोऽभिवाद्य पितरं धर्मेणामित्रकर्षणाः न्यवेदयन्त नामानि पाण्डवास्तेऽपि सर्वशः ॥ ११ ॥ तदात्मजान्तकरणं पिता पुत्रवधार्दितः । अप्रीयमाणः शोकार्तः पाण्डवं परिषस्वजे ॥ १२ ॥ धर्मराजं परिष्वज्य सान्त्वयित्वा च भारत । दुष्टात्मा भीममन्विच्छन् दिधक्षुरिव पावकः ॥१३॥ स कोपपावकस्तस्य शोकवायुसमीरितः । भीमसेनमयं दावं दिधक्षुरिव दृश्यते॥१४॥ तस्य संकल्पमाज्ञाय भीमं प्रत्यशुभं हरिः । भीममाक्षिप्य पाणिभ्यां प्रददौ भीममायसम् ॥ १५ ॥ प्रागेव तु महाबुद्धिर्बुद्ध्वा तस्येङ्गितं हरिः । संविधानं महाप्राज्ञस्तत्र चक्रे जनार्दनः ॥ १६ ॥ तं तु गृहीत्वैव पाणिभ्यां भीमसेनमयस्मयम् । बभञ्ज बलवान् राजा मन्यमानो वृकोदरम् ॥ १७ ॥ नागायुतबलप्राणः स राजा भीममायसम् । भङ्क्त्वा विमथितोरस्कः सुस्राव रुधिरं

मन्युको न देखनेवाले तुमको राज्य से कौनप्रयोजन है । ९ । हे महाबाहु धर्मराज युधिष्ठिर ने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवालीउन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजीको दण्डवतकरी । १० । इसके पीछे शत्रुओं के विजयकरने वाले ने नमस्कार करके अपने नामको कहा और उनसब पांडवोंने भी अपना२ नाम वर्णन किया । ११ । पिता और पुत्रोंके मरनेसे पीड़ावान् और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उसयुधिष्ठिर से स्नेह पूर्वक मिला । १२ । हे भरत वंशी धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्निके समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा । १३ । शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी । १४ । हे राजा हरिने भीमसेनके विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्ति मँगालीथी । १५ । बड़े बुद्धिमान श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकीचेष्टासे प्रकटहोनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेनको हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथ में देदिया । १६ । उस लोहे के भीमसेन को हाथोंसे पकड़ कर उसको भीमसेन मान कर बलवान् राजा ने तोड़डाला । १७ । साठ हजार हाथी के बल समान उस बलवान् राजाने लोहे के भीमसेन को तोड़

ladies and prostrated himself before Dhritrashtra. 10. He announced his own name and so did the other Pandavas. Grieved for the death of his sons unhappy Dhritrashtra received Yudhishthir the destroyer of his sons affectionately. After embracing him, the enraged prince desired to embrace Bhim Fanned by the wind of grief, the fire of his rage seemed to consume the forest of Bhim's body Being aware of his evil intentions, wise and easy-working *Krishn* had already sent for an iron statue. 15. Knowing what was going to happen, wise Shri *Krishn* held Bhim back with his hands and gave the iron Bhim into the arms of Dhritrashtra. Thinking the statue to be

मुखात् ॥ १८॥ ततः पपात मेदिन्यां तथैव रुधिरोक्षितः । प्रपुष्पिताग्रशिखरः इव द्रुमः ॥ १९ ॥ प्रत्यगृह्लाच तं विद्वान् सूतो गावल्गणिस्तदा । शमयन् सान्त्वयन्निव ॥ २० ॥ स तु कोपं समुत्सृज्य गतमन्युर्महात्मना । हा हा तिचुक्रोश नृपः शोकसमन्वितः ॥ २१ ॥ तं विदित्वा गतक्रोधं भीमसेनवधार्दितम् । वासुदेवो वरः पुंसामिदं वचनमब्रवीत् ॥ २२॥ मा शुचो धृतराष्ट्र त्वं नैष भीमस्त्वया हतः । आयसीप्रतिमा ह्येषा त्वया राजन्निपातिता ॥ २३॥ त्वां क्रोधवशमापन्नं विदित्वा भरतर्षभ । मयापकृष्टः कौन्तेयो मृत्योर्दंष्ट्रान्तरं गतः ॥ २४ ॥ न हि ते राजशार्दूल बले तुल्योऽस्ति कश्चन । कः सहेत महाबाहो बाह्वोर्निग्रहणं नरः ॥ २५ ॥ प्राप्य जीवन् कश्चिन्न मुच्यते । एवं बाह्वन्तरं प्राप्य तव जीवेन्न कश्चन ॥ २६॥ पुत्रेण या तेसौ प्रतिमा कारितायसी ॥भीमस्य सेयं कौरव्य तवैवोपहृता मया ॥ २७

कर घायल छातीने मुख से रुधिको गिराया । १८ । इस के पीछे इसी रुधिरसे भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि प्रफुल्लितनोक शाखा पारिजातनाम वृक्ष गिरता है । १९ । तब बुद्धिमान संजय ने उसको और शांतपूर्वक विश्वास कराताहुआ उससे बोला कि इस प्रकार मतकरो । २० । फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहितहोकर शोकसे युक्त राजा भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा । २१ । उसको भीमसेनके मारनेसे पीड़ावान और क्रोधसे रहित जानकर पुरुषोत्तम वासुदेवजी इस वचनको बोले । २२ । हे समर्थ धृतराष्ट्र शोचमत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्त्तिगिराई है । २३ । हे भरतर्षभ तुमको क्रोधके वशीभूत देखकर की दाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा । २४ । हे राजाओं में श्रेष्ठ कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हेमहाबाहु कौन मनुष्य तेरी भुजाओं के पकड़ने को सह सक्ताहै । २५ । जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटताहै इसीप्रकार तेरी भुजाओं के मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है । २६ । हे कौरव जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेन की जो यह लोहेकी मूर्त्ति बनवाई वही मूर्त्ति मैंने तेरे पास वर्त्तमान करी । २७ । हे राजेन्द्र पुत्रशोक से दुःखी तेरा चित्तधर्म से

Bhim, the powerful king broke it into pieces, though in doing so he cut his breast and dropped blood from the mouth. He fell down on earth bleeding like a blooming tree Wise Sanjaya held him, saying gently. " You should not do so. " 20. The brave king, when his anger was gone, was filled with remorse for slaying *Bhim*. Seeing that he was no longer in an angry mood but felt grief for *Bhim*, Vasudev said, " Be not grieved, Dhritrashtra. You have not slain Bhim and only broken an iron statue Seeing you in angry mood, I dragged Bhim out of the jaws of death. You are unequalled in strenght; none could come out safe from the grasp of your arms. - 25.

शोकाभिसन्तापाद्धर्मादपहृतं मन.। तदा राजेन्द्र तेन त्वं भमिसेनं जिघांससि २८॥ न त्वेतत्ते क्षमं राजन् हन्यास्त्वं यद्वृकोदरम् । न हि पुत्रा महाराज जीवियुस्ते [illegible] ॥ २९ ॥ तस्माद्यत् कृतमस्माभिर्मन्यमानैः शमं प्रति। अनुमन्यस्व तत् सर्वं मा च शोके मनः कृथाः ॥ ३०॥

इति श्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि आयसभीमभंगे द्वादशोऽध्यायः १२



वैशम्पायन उवाच। तत एनमुपातिष्ठन् शौचार्थं परिचारिकाः। कृतशौचं पुनश्चैनं प्रोवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥ राजन्नधीता वेदास्ते शास्त्राणि विविधानि च । श्रुतानि च पुराणानि राजधर्माश्च केवलाः ॥ २ ॥ एवं विद्वान् महाप्राज्ञः समर्थः सन् बलाबले । आत्मापराधात् कस्मात्त्वं कुरुषे कोपमीदृशम् ॥ ३ ॥ उक्तवान् तदैवाहं भीष्मद्रोणौ

पृथक् हुआथा उस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे ।२८। हे राजा यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दापूर्ण होजानके कारण से किसी दशा में भी जीवते नहीं रहसक्ते थे ।२९। इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म्म किया उस सबको ध्यान करो शोकमें चित्तमें मतकरो ३० ॥

अध्याय १३ ॥

वैशंपायन बोले कि इस के अनन्तर नौकरलोग स्नान कराने के निमित्त इस के पास आकर वर्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानमे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजा तुम ने वेद और नाना प्रकार के शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना। २ इस प्रकार पंडित और बड़े ज्ञानी बलाबल में समर्थ

None can scape with life from your deadly clutches. I made use of the iron statue of Bhim made by Duryodhan. Grieved for your son you had deviated from the path of right and wished to slay Bhim This was not worthy of you, for your son had his days numbered and could live no longer. Think of our exertions, which we did in bringing about peace, and grieve no more. = 30.



CHAPTER XIII

Vaishampayan said, "Then servants came to Dhritrashtra to help him in bathing, and when he had done bathing, *Shri Krishn* thus addressed him, " You hav learnt religious books and learnt the duties of kings.

च भारत। विदुरः सञ्जयश्चैव त्वन्तु राजन् तत् शृणु ॥ ४ ॥ स वार्य्यमाणो नास्मा कमकार्षीर्वचनं तदा। पाण्डवानधिकं जानन् बले शौर्य्ये च कौरव ॥ ५ ॥ राजा हि यः स्थिरप्रज्ञः स्वयं दोषानवेक्षते। देशकालविभागञ्च परं श्रेयः स विन्दति ॥ ६ ॥ उच्यमानस्तु यः श्रेयो गृह्णीते न हिताहिते। आपदः समनुप्राप्य स शोचत्यनये स्थितः ॥ ७ ॥ ततोऽन्यवृत्तमात्मानं समवेक्षस्व भारत। राजंस्त्वं ह्यविधेयात्मा दुर्योधनवशे स्थितः ॥ ८ ॥ आत्मापराधादापन्नस्तत् किं भीमं जिघांससि। तस्मात् संयच्छ कोपं त्वं स्वमनुस्मृत्य दुष्कृतम् ॥ ९ ॥ यस्तु तां स्पर्द्धया क्षुद्रः पाञ्चालीमानयत् सभाम्। स हतो भीमसेनेन वैरं प्रतिजिहीर्षता ॥ १० ॥ आत्मनोऽतिक्रमं पश्य पुत्रस्य च दुरात्मनः। यदनागसि पाण्डूनां परित्यागः परन्तप ॥ ११ ॥ वैशम्पायन उवाच। एवमुक्तः स कृष्णेन सर्वं सत्यं जनाधिप। उवाच देवकीपुत्रं धृतराष्ट्रो महीपतिः ॥ १२ ॥ एवमेतन्महाबाहो यथा वदसि माधव। पुत्रस्नेहस्तु धर्मात्मन् धैर्यान्मां

होकर तुम अपने अपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशी तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्यने और संजयने, भी तुमसे कहाथा परन्तु हेराजा तुमने उस वचनको नहीं किया ।४। हे कौरव उससमय पांडवोंको बल और वीरतामें अधिक जानते और वारम्बार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचनको नहीं किया ।५। जो नियत बुद्धि राजा आप दोषों समेत देशकालके विभाग,को विचारता है वह परम कल्याण को पाता है ।६। हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याण वचनको अंगीकार नहीं करता है वह अनीतिमें नियत आपत्तिको पाकर सोचता है। ७ । हे राजा इस हेतुसे विपरीत चलनेवाले अपने को देखो वृद्धोंके वचनों से विपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधन की आधीनता में नियत हुये ।८। और अपनेही अपराधसे आपत्ति में फँसे हो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुसे तुम अपने क्रोधको दूरकरो और अपने दुष्ट कर्मोंको स्मरण करो। ९। जिस नीच ने ईर्षा से उस द्रौपदी को सभा में बुलाया वह शत्रुता का बदला लेने के अभिलाषी भीमसेन के हाथ से मारागया। १० अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अमर्यादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पांडवों को त्याग किया। ११ । वैशंपायन बोले हेजनमेजय श्रीकृष्णजी के इसप्रकार के सत्य वचनों सुनकर उस राजा धृतराष्ट्र ने देवकी नन्दनसे कहा । १२ । कि हे महाबाहु माधवजी जो आप कहते हैं

Being so learned and powerful, you should not have indulged in anger You did not act upon the advice given you by Bhishm, Drona, Sanjaya and myself. You knew the great strength of the Pandavas and yet you were obdurate. 5. Happy is the king who acts according to the requisition of time and place, but he who does not mind the advice of his faithful friends, falls into trouble. You acted wrongly in as much as you disregarded the counsel of old men and were controlled by Duryodhan. You brought misery on yourself. Why do you wish to

नबालयत् ॥ १३ ॥ दिष्ट्या तु पुरुषव्याघ्रो बलवान् सत्यविक्रमः । त्वद्गुप्तो नागमत्
च्च भीमोबाह्वन्तरं मम ॥ १४ ॥ इदानीन्त्वहमेकाग्रो गतमन्युर्गतज्वरः मध्यमं
पाण्डवं वीरं स्प्रष्टुमिच्छामि माधव ॥ १५ ॥ हतेषु पार्थिवेन्द्रेषु पुत्रेषु निहतेषु वै । पाण्डु
पुत्रेषु वै शर्म प्रीतिश्चाप्यवतिष्ठते । १६ ॥ ततः स भीमं च धनञ्जयञ्च माद्र्याश्च पुत्रौ
वीरौ । पस्पर्श गात्रैः प्ररुदन् सुगात्रानाश्वास्य कल्याणमुवाच चैनान् ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रक्रोधविमोचने त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥



यह सब यथार्थ है परन्तु बड़ा बलवान् पुत्रकी प्रीति ने मुझको धैर्यसे पृथक् कर
दिया ॥ १३ ॥ हे श्रीकृष्णजी भाग्यकी बात है कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य
पराक्रमी भीमसेन मेरी भुजाके मध्यको नहीं आया । १४ । हे माधवजी अब
मैं क्रोध से रहित विगतज्वर मैं मझले वीर पाण्डवको देखा चाहता हूं महा
राजाओं के और पुत्रों के मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पांडवों में नियत होते हैं
। १६ । इसके पीछे बहुत रोतेहुये उस राजा ने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन
अर्जुन और पुरुषों में बड़े वीर नकुल और सहदेव को भी अंगों से स्पर्श किया
और उन्होंको विश्वास देकर कल्याण के वचन कहे १७ ॥

only revenged the wrong done to Draupadi in the court by that des-
picable son of yours. 10. Look at your transgressions and those of
your son in ousting the Pandavas" Vaishampayan says that on hear-
ing the words of Shri Krishna, Dhritrashtra thus addressed him," You
are right, Madhav, but it was the paternal love which took away my
constancy. It was by good luck that you guarded Bhim and saved
him from coming within the grasp of my arms. I am now quite free
from anger and wish to see him At the fall of the kings and sons my
love is concentrated in the Pandavas." Then with tears in his eyes,
the king touched the bodies of Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev.
He spoke to them kindly and blessed them " 17

slay Bhim! Remove your anger and recall your wicked deeds. Bhim

वैशम्पायन उवाच । धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञातास्ततस्ते कुरुपुङ्गवाः । अभ्ययुर्भ्रातरः सर्वे गान्धारीं सहकेशवाः ॥ १ ॥ ततो ज्ञात्वा हतामित्रं धर्मराजं युधिष्ठिरम् । गान्धारी पुत्रशोकार्ता शप्तुमैच्छदनिन्दिता ॥ २ तस्याः पापमभिप्रायं विदित्वा पाण्डवान् प्रति । ऋषिः सत्यवतीपुत्रः प्रागेव समबुध्यत ॥ ३ ॥ स गङ्गायामुपस्पृश्य पुण्यगन्धि पयः शुचि । तं देशमुपसंपेदे परमर्षिर्मनोजवः ॥ ४ ॥ दिव्येन चक्षुषा पश्यन् मनसानुद्धतेन च । सर्वप्राणभृतां भावं स तत्र समबुध्यत ॥ ५ । स्नुषामुवाच काले कल्पवादी महातपाः । शापकालमवाक्षिप्य शमकालमुदीरयन् ॥ ६ । न कोपः पाण्डवे कार्यो गान्धारि शममाप्नुहि । वचो निगृह्यतामेतत् शृणु चेदं वचो मम । ७ । उक्तास्यष्टादशाहानि पुत्रेण जयमिच्छता । शिवमाशास्व मे मातर्युध्यमानस्य शत्रुभिः

अध्याय । १४ ।

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्र से आज्ञा लेकर वह कौरव पांचव भाई केशवजी समेत गान्धारी के पासगये ।१। इनके पीछे पुत्रों के शोकसे पीड़ामान निर्दोष गान्धारी ने उन मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शाप देना चाहा । २। व्यासऋषि प्रथमही पांडवों के विषयमें उसके पाप रूप चित्तके विचारको जानकर सावधानहुये ।३। और चित्त के समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षी श्रीगंगाजी के पवित्र और सुगन्धित जलमें स्नान आचमनकरके उस स्थानपर आ पहुंचे और दिव्य नेत्रयुक्त अपने चित्तसे देखते उस ऋषि ने वहां सब जीवों के चित्तके वृत्तान्तको जाना । ५ । शापके समयको निरादर करके कालकी शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी ऋषि पुत्रवधू से बोले । ६ । कि हे गान्धारी पांडव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने शाप वचनको रोककर इस मेरे वचनको सुनो । ७ । अठारह दिनतक विजयके अभिलाषी पुत्रने कहाहै कि हे माता शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले को शुभ आशीर्वाद

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, " Then by Dhritrashtra's permission the Pandav brothers. with *Keshav*, went to Gandhari. Distressed with grief for her sons, she intended to curse Yudhishthir. *Knowing* of her evil intention towards the **Pandevas**, Vyas made haste, after bathing in and sipping the water of the Ganges, he came there. With his divine eye he saw through the minds of those who were present there. 5. Speaking ill of curses and recommending peace of mind, he said to Gandhari, " Donot let your anger fall on the Pandav. Donot curse him, but hear me; during the eighteen days of war, your son desirous of victory asked you to bless him, but on all occasions you said that victory should fall on the side of dharm. I can never think that your words to him

उक्तवत्यसि गान्धारि यतो
सा तथा याच्यमाना त्वं काले काले जयैषिणा। स्मरामि गायमाना
स्ततोजय ॥ ९ ॥ व्यतीतो गान्धारि वाक्यं ते वितथामहम । जितं पाण्डु
सुता प्रणिहिता ह्यासि । १० । विग्रहे तुमुले राज्य गत्वा परमसंशयम् । जितं पाण्डु
तैर्युद्धे नूनं धर्मस्ततोऽधिक ॥ ११ ॥ क्षमाशीला पुरा भूत्वा साद्य न क्षमसे कथम् ।
धर्मज्ञे धर्मे यतो धर्मस्ततो जय ॥ १२ ॥ स्वञ्च धर्मं परिस्मृत्य वाचं चोक्तां मन
स्विनि । कोपं संयच्छ गान्धारि मैवम्भू सत्यवादिनि ॥ १३ गान्धार्युवाच । भगव
नाभ्यसूयामि नैतानिच्छामि नश्यत । पुत्रशोकेन तु बलान्मनो विह्वलतीव मे ॥ १४ ।
यथैव कुन्त्या कौन्तेया रक्षितव्यास्तथा मया । तथैव धृतराष्ट्रेण रक्षितव्या यथा मया
॥ १५ ॥ दुर्योधनापराधेन शकुने सौबलस्य च । कर्ण दुःशासनाभ्याञ्च वृत्तोऽयं
कुरुसंक्षय ॥ १६ ॥ नापराध्यति बीभत्सुर्न च पार्थो वृकोदर । नकुल सहदेवो वा

हो । ८ । हे गान्धारी तुम विजयाभिलाषी से समय २ पर प्रार्थनाकरी हुई
तुमने कहाहै कि जिधर धर्म है उधरही विजय है । ९ । हे गान्धारी मैं पूर्व समय
में तुम दुर्योधन के शुभ आशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को
मिथ्या स्मरण नहीं करताहूं तुम इस प्रकारकी समाधि धारण करनेवाली हो । १० ।
इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पांडवों ने युद्धमें निस्सन्देह
विजयको पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है । ११ । पूर्वसमय में ऐसी
क्षमावान होकर अब किस हेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जाननेवाली अधर्म
को त्यागो जिधर धर्म है उधरही विजय है । १२ । हे मनस्विनी सत्यवक्ता गान्धारी
अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके क्रोधकोरोको और इस दशा
वाली मतहो । १३ । गान्धारीने कहा हे भगवन मैं गुणमें दोपनहीं लगातीहूं और
उनका नाशभी होना नहीं चाहतीहूं । १४ । परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अत्यन्त
व्याकुल होताहै । जिसप्रकार पांडव कुन्तीसे रक्षा के योग्यहैं उसीप्रकार मुझ
से भी हैं और जैसे मुझसे रक्षा के योग्य हैं उसीप्रकार धृतराष्ट्र से हैं । १५ । दुर्योधन
शकुनी कर्ण और दुश्शासन के अपराधसे यह कौरवों का नाश हुआ । १६ । इस

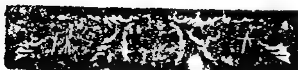
10. The Pandavas were victorious, no doubt, according to thy predictions and dharm must be on their side. Being ever merciful, why do you withhold your pardon ? Give up injustice. Victory has fallen on the side of justice. Remembering your own words, you should not behave thus, truthful Gandhari," she said, "I donot find fault, where there is none, and donot want their destruction. My mind however is distressed with grief for my sons. They deserve as much protection from me as from Kunti. The Pandavas equally deserve protection from *Dhritrashtra* 15 The great destruction of the Kauravas was brought about by Duryodhan, Shakuni, Karan and Dushasan. The Pandavas have done no wrong. The Kauravas
were wrong

दैव जातु युधिष्ठिरः ॥१७॥ युध्यमाना हि कौरव्याः कृतमानापरस्परम् । निहताः सहितान्यैश्च नास्त्यप्रियं मम ॥ १८ ॥ किन्तु कर्माकरोद्भीमो वासुदेवस्य पश्यतः । दुर्योधनं समाहूय गदायुद्धे महामनाः ॥ १९ ॥ शिक्षयाऽभ्यधिकं ज्ञात्वा चरन्तं बहुधा रणे । अधो नाभ्या प्रहृतवान् तन्मे कोपमवर्धयत् ॥ २० ॥ कथं नु धर्मं धर्मज्ञैः समुद्दिष्टं महात्मभिः । त्यजेयुराहवे शूराः प्राणहेतोः कथञ्चन ॥ २१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि गान्धारीसान्त्वनायां
चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

में अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है ।१७। यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव एकसाथ अन्य २ लोगोंके हाथ से मारेगये यह मेरा अप्रिय नहीं है । १८ परन्तु वासुदेवजी के देखते हुये भीमसेन ने कैसा कर्मकिया कि बड़े साहसी ने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेक रीतिसे घूमनेवाले को । २० । नाभिकेनीचे घायल किया इस बातको सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया । २१ । वह शूरवीर युद्धमें प्राणों के अर्थ किसी दशामें भी धर्मको नहीं त्यागता है जोकि धर्मज्ञ महात्मालोगों से उपदेश किया गया है ॥ २२ ॥

fell down fighting in the pride of their power. But why did Bhim do such a deed in the presence of Vasudev ? He challenged Duryodhan to fight with the mace and then struck him below the navel. This was the cause of my anger. A well-advised warrior never sets aside justice under any circumstances, " 21.



वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या भीमसेनोऽथ भीतवत् । गान्धारीं प्रत्यु
वाचेदं वचः सानुनयं तदा ॥ १ ॥ अधर्मो यदि वा धर्मस्त्रासात्तत्र मया कृतः । आत्मानं
त्रातुकामेन तन्मे त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ २ ॥ न हि धर्मेण पुत्रस्ते पातितोऽसौ महाबलः । न
शक्यः केनचिद्धन्तुमतो विषममाचरम् ॥ ३ ॥ अधर्मेण जितः पूर्वं तेन चापि युधिष्ठिरः ।
निकृताश्च सदैव स्म ततो विषममाचरम् ॥ ४ ॥ सैन्यस्यैको वशिष्टोऽयं गदायुद्धेन वीर्य्य
वान् । मां हत्वा न हरेद्राज्यमिति च तत् कृतं मया ॥ ५ ॥ राजपुत्रीं च पाञ्चालीमेक
वस्त्रां रजस्वलाम् । भवत्या विदितं सर्वमुक्तवान् यत् सुतस्तव ॥ ६ ॥ दुर्योधनमसं
गृह्य न शक्या भूः ससागराः । केवला भोक्तुमस्माभिरतश्चैतत्कृतं मया ॥ ७ ॥ तच्चाप्य
प्रियमस्माकं पुत्रस्ते समुपाचरत् । द्रौपद्या यत् सभामध्ये सव्यमूरुमदर्शयत् ॥ ८ ॥
तत्रैव वध्यः सोऽस्माकं दुराचारोऽम्ब ते सुतः । धर्मराजाज्ञया चैव स्थिताः स्म समये तदा

अध्याय १५ ।

वैशम्पायन बोले कि तब भीमसेन उसके उस वचनको सुनकर भयभीतके समान नम्रता के साथ गांधारी से यह वचन बोला । १ । हे माता धर्महोय वा अधर्महोय अपने शरीरकी रक्षाके अभिलाषी मैंने भय से वहां ऐसाकिया आपउस मेरे अपराध को क्षमाकरने के योग्यहो । २ । वह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्म युद्ध केद्वारा किसी के साथ लड़ने के योग्य नहींथा इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया । ३ । पूर्व समयमें उस दुर्योधन ने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिर को विजय किया और हम सदैव ठगेगये इस कारण से मैंने विपरीत कर्मकिया । ४ । सेना के मध्यमें अकेला शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदा युद्धसे मुझको मारकर राज्यको नलेले इस हेतुसे मैंने यह कर्मकिया । ५ । आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एकावस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो वचन कहाथा इसने दुर्योधनको बिनामारे हुवे सागरों समेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगने के योग्य नहींथी इन बातोंको विचार कर मैंने यह कर्मकिया । ७ । उसीप्रकार आपके पुत्र ने हमारे अप्रियको भी किया जो सभाके मध्यमें द्रौपदीको वामजांघा दिखलाई । ८ । तबहीं वह

CHAPTER XV

Vaishampayan said, that on hearing the words of Gandhari, Bhim humbly spoke to her, saying, "Whether it be justice or injustice, I did it in self-defence, and I ask your pardon, mother. Your powerful son could not be overcome in a just fight and therefore I did an unjust deed. Formerly Duryodhan conquered Yudhishthir unjustly and we were cheated again and again: this was the reason of my acting against rule. I did it lest he might slay me and take our kingdom, in spite of the destruction of all his army 5. You know well how Duryodhan dragged Draupadi and we did not think it worth our while to enjoy the kingdom without slaying him. He had dis-

हन्ता नृशंसोऽहं तव देवि युधिष्ठिरः । शापार्हः पृथिवीनाशे हेतुभूतः शपस्व माम् ॥ न हि मे जीवितेनार्थो न राज्येन धनेन वा । तादृशान् सुहृदो हत्वा मूढस्यास्य सुहृद्द्रुहः ॥ २७ ॥ तमेवं वादिनं भीतं सन्निकर्षगतं तदा । नोवाच किञ्चिद्गान्धारी निःश्वासपरमा भृशम् ॥ २८ ॥ तस्यावनतदेहस्य पादयोर्निपतिष्यतः । युधिष्ठिरस्य नृपतेर्धर्मज्ञा दीर्घदर्शिनी ॥ २९ ॥ अंगुल्यग्राणि ददृशे देवी पट्टान्तरेण सा । ततः स कुनखीभूतो दर्शनीयनखो नृपः ॥ ३० ॥ तं दृष्ट्वा चार्जुनोऽगच्छद्वासुदेवस्य पृष्ठतः । एवं संचेष्टमानांस्तानितश्चेतश्च भारत । गान्धारी विगतक्रोधा सान्त्वयामास मातृवत् ॥ ३१ ॥ तया ते समनुज्ञाता मातरं वीरमातरम् । अभ्यगच्छन्त सहिताः पृथां पृथुलवक्षसः ॥ ३२ ॥ चिरस्य दृष्ट्वा सा पुत्रान् पुत्राधिभिरभिप्लुता । बाष्पमाहारयद्देवी वस्त्रेणावृत्य वै मुखम् ॥ ३३ ॥ ततो बाष्पं समुत्सृज्य सह पुत्रैस्तदा पृथा । अपश्यदेतान् शस्त्रौ

नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हूं मुझको शाप दे । २६ । उस प्रकार के सुहृज्जनों को मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदों से शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्यसे कौन प्रयोजन है तब कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उस इस प्रकार बोलने वाले भयभीत समीप पहुंचनेवाले से कुछ नहीं बोली । २८ । उस दूरदर्शी देवीने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर की हाथ की उँगलियों की नोक को पट्टान्तर के भीतर से देखा उस से दर्शन के योग्य नख वाला वह राजा युधिष्ठिर कुनखी होगया । ३० । अर्जुन उनको देखकर वासुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतवंशी इस प्रकार इधर उधर से चेष्टा करनेवाले उन पांडवों को क्रोधसेरहित गान्धारी ने माता के समान विश्वास कराया । ३१ । उसहीसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े वक्षस्थलवाले पांडव एक साथही उस वीरों को उत्पन्न करनेवाली कुन्तीमाता के पास गये । ३२ । पुत्रों के विषयमें चिरसे खेदयुक्त उस देवी ने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको देखकर वस्त्र से मुखको ढककर अश्रुपात किये । ३३ । इसकेपीछे कुन्तीने पुत्रोंसमेत

a trembling body went to her and said in a sweet voice, " Here I am, Yudhishthir the destroyer of your sons and the root of the destruction of the world Curse me, for I deserve it. 26. Having destroyed friends, why should I live to rule the kingdom ?" Heaving deep sighs, Gandhari gave no reply to Yudhishthir who had approached her in great fear She looked from behind her veil at the finger nails of Yudhishthir, who was kneeling at her feet, and the beautiful nails were destroyed. 30 At this Arjun crept behind Shree *Krishn*, Gandhari curbed her anger and consoled the terrified *Pandavas* like a mother, They took leave of her and went to *Kunti*. Seeing her sons after a long time, distressed *Kunti* covered her face under cloth and wept With eyes full of tears, she saw them covered with scars of

विक्षतान् ॥ ३४ ॥ सा तानेकैकशः पुत्रान् संस्पृशन्ती पुनः पुनः । अन्वशोचत तु आर्ता द्रौपदींच हतात्मजाम् । रुदन्तीमथ पाञ्चालीं ददर्श पतितां भुवि ॥ ३५ ॥ द्रौपद्युवाच । आर्ये पौत्राः क्व ते सर्वे सौभद्रसहिता गताः । न त्वां तेऽद्याभिगच्छन्ति चिरं दृष्ट्वा तपस्विनीम् । किन्नु राज्येन वै कार्यं विहीनाया सुतैर्मम ॥ ३६ ॥ तां समाश्वासयामास पृथा पृथुललोचनाम् । उत्थाप्य याज्ञसेनीं तु रुदतीं शोककर्शिताम् ॥ ३७ ॥ तयैव सहिता चापि पुत्रैरनुगता नृप । अभ्यगच्छत गान्धारीमार्त्तामार्त्ततरा स्वयम् ॥३८॥ तामुवाचाथ गान्धारी सह वध्वा यशस्विनीम् । मैवं पुत्रीति शुचार्ता पश्य मामपि दुःखिताम् ॥ ३९ ॥ मन्ये लोकविनाशोऽयं कालपर्यायचोदितः । अवश्यभावी संप्राप्तः स्वभावाल्लोमहर्षण ॥ ४० ॥ इदं तत् समनुप्राप्तं विदुरस्य वचो महत् । असिद्धानुनये कृष्णे यदुवाच महामतिः ॥४१॥ तस्मिन्नपरिहार्येऽर्थे व्यतीते च विशेषतः । मा

अश्रुपातों को करके उनको शस्त्रपीड़ा से बहुतप्रकार करके घायल देखा । ३४ । उन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्शकरते दुःखसे पीड़ावान उस कुन्तीने मृतक पुत्र वाली द्रौपदी को शोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीको देखा । ३५ । द्रौपदी बोली हे आर्ये तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहांगये अब वह बहुत काल से तुझ तपस्विनीको देखकर तेरे पास नहीं आते हैं मुझ पुत्रों से रहित को राज्य से कौनसा प्रयोजन है । ३६ । द्रौपदी के इस वचन को सुनकर बड़े नेत्र वाली कुन्ती ने उसको विश्वास कराया अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथलेकर बड़ी पीड़ावान् कुन्ती गान्धारी के पास गई । ३८ । वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी तब बहू समेत आनेवाली कुन्ती से बोली हे बेटी इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुःखीको भी देख मैं मानतीहूं कि यह संसारका नाशसमयकी विपरीततासे प्रकटहुआ है । ४० । और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभाव से वर्त्तमान हुई यह विदुरजी का वह बड़ा वचन सम्मुखआया । ४१ । जिसको कि उस बड़े बुद्धिमानने श्रीकृष्णकी शिक्षा से निष्फल होनेपर कहाथा इस अपरिहार्य्यार्थमें

wounds She touched them one by one and was grieved for Draupadi whom she saw lying on earth. 35. Draupadi said, "Where are Abhimanyu and other grandsons of yours? They have come to see you. What shall I do with the kingdom without my sons? "Having heard the words of Draupadi, large-eyed *Kunti* consoled her. She took her sons and Draupadi to Gandhari. Vaishampayan says that Gandhari thus spoke to *Kunti* and her daughter-in-law —" You should not do so daughter. Look at me I think this great destruction was brought about by the vicissitude of time. 40. All this was sure to happen as Vidur had foretold when he saw Shri *Krishna's* counsel go for nothing Donot be sorry for that which was inevit-

...भाजिरं सुवीराणामद्भुतं लोमहर्षणम् ॥ ४ ॥ अस्थिकेशपरिस्तीर्णं शोणितौघपरिप्लु...म् । शरीरैर्बहुसाहस्रैर्विनिकीर्णं समन्ततः ॥ ५ ॥ गजाश्वरथयोधानामावृतं रुधिर...ळैः । शरीरैरशिरस्कैश्च त्वदेहैश्च शिरोगणैः ॥ ६ ॥ गजाश्वनरनारीणां निस्वनैरभि...वृतम् । शृगालबककाकोलकङ्ककाकनिषेवितम् ॥ ७ ॥ रक्षसां पुरुषादानां मोदनं कुर...ाकुलम् । अशिवाभिः शिवाभिश्च नादितं गृध्रसेवितम् ॥ ८ ॥ ततो व्यासाभ्यनुज्ञातो धृतराष्ट्रो महीपतिः । पाण्डुपुत्राश्च ते सर्वे युधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ ९ ॥ वासुदेवं पुरस्कृत्य हतबन्धुञ्च पार्थिवम । कुरुस्त्रियः समासाद्य जग्मुरायोधनं प्रति ॥ १० ॥ समासाद्य कुरुक्षेत्रं ताः स्त्रियो निहतेश्वराः । अपश्यन्त हतांस्तत्र भ्रातॄन् पुत्रान् पितॄन् पतीन् ॥ ११ ॥ क्रव्यादैर्भक्ष्यमाणान् वै गोमायुबलवायसैः । भूतैः पिशाचै रक्षोभिर्विविधैश्च निशाचरैः ॥ १२ ॥ रुद्राक्रीडनिभं दृष्ट्वा तदा विशसनं स्त्रियः । महार्हेभ्योऽथ यानेभ्यो

...समूहसे पूर्ण रोमहर्षण करनेवालाथी देखा॥४॥अर्थात अस्थिकेश चर्बियोंसे युक्त रुधिर हजारों शरीरों से चारोंओर को आच्छादित । ५ । हाथी घोड़े रथ और सवारों के रुधिर समूह से युक्त शरीरों से पृथक् शिरोंके समूहोंसे पूर्ण । ६ । हाथी घोड़ेमनुष्य और स्त्रियोंके शब्दों से व्याप्त मृगाल, बक, काकोल, कंक और कागों से सेवित । ७ । मनुष्य के खानेवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियों से सेवित शृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवितथी । ८ । इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पाया हुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्ती युधिष्ठिरथा । ९ । वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथ लेकर युद्धभूमि में गये ।१०।वहां विधवा स्त्रियों ने कुरुक्षेत्रको पाकर उन मृतक भाई पुत्रपिता और सुहृदोंको देखा । ११ । जोकि कच्चे मांस खानेवाले शृगाल, काग भूत, पिशाच, राक्षस और नानाप्रकार के निशाचरों से खायेहुये थे । १२ । रुद्रजी के क्रीड़ास्थान के समान

...lying far from that place. She saw in her mind's eye the fatal field of battle covered with bones, hair, fat, blood and thousands of corpses, with elephants, horses, cars and the blood of horsemen whose head were cut asunder. Full of the cries of elephants, horses, men and women, abounding in jackals, crows and vultures, pleasing to the maneating rakshases, resounding with the sounds of the birds of prey and jackals. Then by the order of Vyas, king Dhritrashtra and the Paudavas led by Yudhishthir, with Vasudev and the women went to the field of battle. 10. The widowed women saw there the slain brothers, sons, fathers and friends eaten by jackals, crows, rakshases and night-royers. Seeing the place like the pleasure ground of Rudra, the crying women came down from their cars. The women of the family of Bha...

विक्रोशन्त्यो निपेतिरे ॥ १३ ॥ अदृष्टपूर्वं पश्यन्त्यो दुःखार्त्ता भरतस्त्रियः ।
स्खलन्त्यः स्यतंश्चापराभुवि ॥ १४ ॥ श्रान्तानां चाप्यनाथानां नासीत्
चेतना ॥ पाञ्चालकुरुयोषाणां कृपणं तदभून्महत् ॥ १५ ॥ दुःखोपहतचित्ताभिः
स्त्रीभिरनुनादितम् । दृष्ट्वायोधनमत्युग्रं धर्मज्ञा सुबलात्मजा ॥ १६ ॥ ततः सा
कृष्णमामन्त्र्य पुरुषोत्तमम् । कुरूणां वैशसं दृष्ट्वा दुःखाद्वचनमब्रवीत् ॥ १७
पश्यैताः पुण्डरीकाक्ष स्नुषा मे निहतेश्वराः । प्रकीर्णकेश्यः क्रोशन्तीः कुरर्यो
माधव ॥ १८ ॥ अमूस्त्वभिसमागम्य स्मरन्त्यो भरतर्षभान् । पृथगेवाभ्यधावन्त
भ्रातॄन् पितॄन् पतीन् ॥ १९ ॥ वीरसूभिर्महाबाहो हतपुत्राभिरावृतम् । क्वचिच्च
पत्नीभिर्हतवीराभिरावृतम् ॥ २० ॥ शोभितं पुरुषव्याघ्रैर्भीष्मकर्णाभिमन्युभिः ।
द्रुपदाद्यैश्च ज्वलद्भिरिव पावकैः ॥ २१ ॥ काञ्चनैः कवचैर्दिव्यैर्मणिभिश्च महात्मनाम्

निवास स्थानको देखकर पुकारती हुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं । भरतवंशियों की स्त्रियां दुःख से पीड़ामान पूर्व में कभी न देखे हुये देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरनेवालीहुई । १४ । और कौरवोंकी उन अनाथ और थकीहुई स्त्रियों को कुछ चेतनहीं रहा यह दुःख हुआ । १५ । यह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियों से चारोंओरको शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्धभूमिको देखकर । १६ । फिर पुरुषोत्तम श्री कृष्णजी को सम्मुख में करके इस वचन को बोली १७ । हे कमललोचन जी इन विधवा शिरके बालों को फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी पुत्रवधुओं को देखो । १८ । यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलती पतियों के गुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़नेवाली हैं । १९ । हे महाराज यह रणभूमि वीरोंके उत्पन्न करने वाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्त है कहीं उनवीरों की स्त्रियों से संयुक्त है जिनके कि वीर भर्त्ता मारेगये । २० । कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म अभिमन्यु द्रोणाचार्य, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है । २१ । महात्माओं के स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजूबन्द केयूर और मालाओं से अलंकृत । २२ ।

---

much distressed at the unwonted scene of destruction fell down on the corpses or bare earth. The helpless women of the Panchals and Kauravas lost their senses with the excess of grief. 15. Virtuous Gandhari seeing the ground made dreadful by the presence of the crying women thus addressed Shri Krishn:– "Look at my widowed daughters-in-law crying loud with dishevelled hair. They are lamenting for their sons, brothers, fathers, kinsmen and husbands. The field of battle is full of women whose sons and husbands are dead. Here and there are lying glorious *Karan*, Bhishm, *Abhimanyu*, Drona, Drupad and Shalya. The golden armours, ornaments, diadems and

ईलकेयूरैः स्त्रग्भिश्च समलंकृतम् ॥ २२ ॥ वीरबाहु विसृष्टाभिः शक्तिभिः परिघै सङ्गैश्च विमलैस्तीक्ष्णैः सशरैश्च शरासनैः ॥२३ ॥ क्रव्यादसंघैः सहितैस्तिष्ठन्ति भिः क्वचित् । क्वचित्क्रीडमानैश्च शयानैरपरैः क्वचित् ॥ २४ ॥ एतदेवंविधं संपश्याशोधनं विभो । पश्यमाना हि दह्यामि शोकेनाहं जनार्दन ॥ २५ ॥ पाञ्चा कुरूणाञ्च विनाशे मधुसूदन । पञ्चानामिव भूतानामहं वधमचिन्तयम् ॥ २६ ॥ सुपर्णाश्च गृध्राश्च विकर्षन्त्यसृगुक्षितान् । निगृह्य कवचेषूग्रा भक्षयन्ति सहस्रशः ७ ॥ जयद्रथस्य कर्णस्य तथैव द्रोणभीष्मयोः । अभिमन्योर्विनाशञ्च कश्चिन्तयि र्हति ॥ २८ ॥ शयनान्युचिताः सर्वे मृदूनि विमलानि च । विपन्नास्तेऽद्य वसुधां विवृ मधिशेरते ॥२९॥ इति दुःखतरं किं नु केशव प्रतिभाति मे । नूनमाचरितं पापं मया पूर्वेषु जन्मसु ॥ ३० ॥ या पश्यामि हतान् पुत्रान् पौत्रान् भ्रातृंश्च केशव । एवमार्त्ता विलपती ददर्श निहतं सुतम् ॥३१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि स्त्रीण [illegible] अध्यायः १६ ॥

[illegible]रोंकी भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिघ और नानाप्रकार के [illegible]क्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित हैं । २१ । प्रसन्नचित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहीं क्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसों से संयुक्त है । २४ । हे समर्थ वीर श्रीकृष्णजी इसप्रकार की रणभूमि को देखने से इसको देखकर शोकसे भस्महुई जाती हूं । २५ । हे मधुसूदनजी मैंने पाञ्चाल और कौरवों के नाशमें पांचो तत्वोंके भी नाशको ध्यान कियाहै । २६ । रुधिरसे भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खैंचते हैं और हजारों गिद्ध चरणोंसे पकड़कर उनको भक्षण करते हैं । २७ । कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म और अभिमन्यु से नाशकी चिन्ताकरने के योग्यहै । २८ । जो सब पूर्वसमय में कोमल शयनों पर सोते थे अब वह मृतकहोकर इसविस्तृत भूमि पर सोते हैं । २९ । इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देताहै निश्चय करके विदित होता है कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा । ३० । हे माधवजी जो मैं पुत्र भाई और पिता ओंको मृतक देखतीहूं इसप्रकार पीड़ावान् विलाप करनेवालीने मृतकपुत्रकोदेखा ३१

mell with the spears, clubs, garlands of the warriors are lying pell swords, arrows and bows. 23 Those who lived, played and slept together are now surrounded by birds of prey. I am burning with grief at the sight of this battle field. 25 I see the destruction of the five elements with that of the Kauravas and Panchals. Vultures and garurs are dragging the blood stained bodies and eating their flesh Who could think of the slaughter of Jayadrath Karan, Drona, Bhishm and Abhimanyu? Those who slept on soft beds are now lying dead on bare earth What trouble can be greater to me than this? Surely I committed a sin in my former birth that I see sons, brothers and fathers lying dead here." Thus lamenting she saw the dead body of her son 31.

वैशम्पायन उवाच । ततो दुर्य्योधनं दृष्ट्वा गान्धारी शोकमूर्छिता । सहसा न्यपतद्भूमौ छिन्नेव कदली वने ॥१॥ सा तु लब्ध्वा पुनः संज्ञां विक्रुश्य च पुनः पुनः । दुर्य्योधनमभिप्रेक्ष्य शयानं रुधिरोक्षितम् ॥ २ ॥ परिष्वज्य च गान्धारी कृपणं पर्य्यदेवयत् । हा हा पुत्रेति शोकार्त्ता विललापाकुलेन्द्रिया ॥ ३ ॥ वारिणा नेत्रजेनोरः शोकतापिता । समीपस्थं हृषीकेशमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ उपस्थितेऽस्मिन् ज्ञातीनां सक्षये विभो । मामयमाह वार्ष्णेय प्राञ्जलिर्नृपसत्तमः । अस्मिन् ... अयमम्बा ब्रवीतु मे ॥ ५॥ इत्युक्ते जानती सर्वमहं स्वव्यसनागमम् । अब्रुवं ... यतो धर्मस्ततो जय ॥६॥ इत्येवमब्रुवं नैनं पूर्वं शोचाम्यहं सुतम् । ... शोचामि कृपणं हतबान्धवम् ॥ ७ ॥ अमर्षणं युधां श्रेष्ठं कृतास्त्रं युद्धदुर्मदम् । वीरशयने पश्य माधव मे सुतम् ॥ ८ ॥ यऽयं मूर्द्धाभिषिक्तानामग्रे याति

अध्याय १७ ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ावान गांधारी दुर्योधनकोमरा हुआ अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्षहोता है । फिर उसने सचेतताको पाकर पुकारकर और विलाप करके उस पृथ्वीपर रुधिरसे लिप्त दुर्योधनको देखकर । २ । हृदयसे लगाया और दुःखका किया शोकसे पीड़ावान् महाव्याकुल चित्त हायपुत्र हायपुत्र इसरीतिसे विलाप करती । ३ । अपनी छातीको नेत्रोंके जलसे सींचती महादुःखी उस समीप वर्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा । ४ । कि हे समर्थ इस युद्धके और जातवालों के नाशके वर्तमान होनेपर इस हाथ जोड़नेवाले महाराज दुर्योधनने मुझसे यह कहा कि हे माता जातवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो । ५ । हे पुरुषोत्तम उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःख के आगमन को जानतीहुई बोली कि जिधर धर्म्म है उधरही विजय है । ६ । हे प्रभु मैंने पूर्व समय में इस प्रकार कहाथा मैं इसको नहीं शोचती हूं मैं धृतराष्ट्रका शोच करती हूं जो दीन और बांधव रहित है । ७ । हे माधवजी इस अशान्त और अस्त्रज्ञ युद्ध दुर्मद और इन वीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको वीरों के शयनपर सोता देखो । ८ । जो यह शत्रुसंतापी

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, "Seeing the corpse of Duryodhan, Gandhari fell down on earth with grief like a plantain tree cut down in a forest. When she regained conciousness, she wept bitterly and embraced the blood stained corpse of Duryodhan, lying in great grief and saying "Alas son!" Washing her breast with tears of grief, she said to Krishna, 'At the commencement of the great war, Duryodhan asked my blessing with joined hands to gain victory over his kinsmen. 5. I knew the great grief which was in store for me and replied that

...ेयं पांसुषु शेतेऽद्य पश्य कालस्य पर्ययम् ॥ ९ ॥ ध्रुवं दुर्योधनो वीरो गतिं न सुल... गत । तथा ह्यभिमुखः शेते शयने वीरसेविते ॥ १० ॥ यम् शेते महाबाहुर्बलवान् ... सत्यविक्रम । सिंहेनेव द्विपः संख्ये भीमसेनेन पातितः ॥ ११ ॥ विदुरं ह्यवमत्यैष पित... रस्वैष मन्दभाक् । बालो वृद्धावमानेन मन्दो मृत्युवशं गतः ॥ १२ ॥ इदं कृच्छ्रतरं पश्य ...त्रस्यापि वधं न्मम । यदिमाः पर्युपासन्ते हतान् शूरान् रणे स्त्रिय ॥ १३ ॥ कथं नु ...तथा नेदं हृदयं मम दीर्यते । पश्यन्त्या निहतं पुत्रं पुत्रेण सहितं रणे ॥ १४ ॥ ...यदि श्रुतयस्सन्ति यदि वा श्रुतयस्तदा । ध्रुवं लोकानवाप्तोऽयं नृपो बाहु... बलार्जितान् ॥ १५ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धार्या दुर्योधनदर्शने सप्तदशोऽध्याय ॥ १७ ॥

महाराजाओं के भी अग्रवर्ती होकर चलताथा अब वह इस पृथ्वीकी रजमें सोता है समयकी विपरीतताको देखो ।९। निश्चय करके वीर दुर्योधनने दुष्प्राप्यगतिको पाया इस प्रकार सन्मुख वीरों से सेवित शयनपर सोता है । १० । युद्धमें भीमसेनके हाथमे गिरायाहुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे कि सिंहके हाथने मारा हुआ हाथी सोताहै । ११ । यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धी विदुरजी समेत पिताकोभी अपमानकरके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्युके आधीनहुआ ।१२। पुत्रके मरनेमेभी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि चारोंओर से मृतकशूरोंके पास नियत हैं । १३ । युद्धमें पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको देखनेवाली का यह हृदय कैसे सौटुकडे नहीं होताहै । १४ । जो शास्त्र और श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने भुजबलों से प्राप्त लोकों को पाया । १५ ।

victory should fall on the side of Dharm I said this before and therefore I donot grieve for him. I grieve for Dhritrashtra who is helpless and has lost all his kinsmen. This dissatisfied prince, brave in war and best of warriors, my son lies here in the field of battle. This great destroyer of foes, who used to lead kings, now sleeps on dust. Look at the change of time Surely brave Duryodhan has secured regions unattainable by others, and now lies here before me on the bed of warriors 10 Slain by Bhim, this great warrior of true prowess sleeps like an elephant slain by a lion This unfortunate and unwise fool disregarded the advice of Vidur and his father, and met his death for disobeying his elders A grief greater than that of my son's death overwhelms me, when I see the women round the bodies of the dead warriors. Why does my heart not break into a hundred pieces at the sight of my son and grandson lying dead together? Surely this prince has got good regions with the strength of his arms, if our religious books and the Vedas are right " 15.

गान्धार्युवाच । पश्य माधव पुत्रान्मे शतसंख्याञ्जितक्लमान् । गदया भीमसेनेन भूयिष्ठं निहतान्रणे ॥ १ ॥ इदं दुःखतरं मेऽद्य यदिमा मुक्तमूर्धजाः । हतपुत्रा रणे बालाः परिधावन्ति मे स्नुषाः । २ । प्रासादतलचारिण्यश्चरणैर्भूषणान्वितैः । आपन्ना यत्स्पृशन्तीमा रुधिरार्द्रां वसुन्धराम् ॥ ३ ॥ गृध्रानुत्सारयन्त्यश्च तथा गोमायुवायसान् । शोकेनार्त्ता विघूर्णन्त्यो मत्ता इव चरन्त्युत ॥ ४ ॥ दृष्ट्वा मे पार्थिवस्त्रातैर्लक्ष्मणमातरम् । राजपुत्रीं महाबाहो मनो न ह्युपशाम्यति ॥ ५ ॥ अन्याश्चापहृतं कायाद्वाहुकुण्डलमुन्नसं । रास्य बन्धोः शिरः कृष्ण गृहीत्वा पश्य तिष्ठतीम् ॥ ६ ॥ पूर्वजातिकृतं पापं मन्ये नाल्पमिवानघ । एताभिरनवद्याभिर्मया चैवाल्पमेधया । ७ ॥ फुल्लपद्मप्रकाशानि पुण्डरीकाक्ष योषिताम् । अनवद्यानि वक्त्राणि तापयत्येव रश्मिवान् ॥ ८॥ एष दुःशासनः शेते शूरेणामित्रघातिना । पीतशोणितसर्वाङ्गो भीमेन युधि पातितः ॥ ९ ॥ गदया भीमसेनेन पश्य माधव मे सुतम् । द्यूतक्लेशाननुस्मृत्य द्रौपद्या

अध्याय १८ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी युद्धमें शत्रुमनसे रहित मेरे सौ पुत्रों को भीमसे की गदाने कठिन घायल हुये देखो । १ । अब यह मेरा बड़ा दुःख है जो मुझे केश मुक्त पुत्रवाली मेरी पुत्रवधू बाला युद्ध भूमिमें मेरे चारों ओर दौड़ती हैं । २ । भूषणों से अलंकृत चरणों से महलोंमें फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्तिमें फँसकर इस रुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठहुये गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ातीहैं और दुःखसे पीड़ावान् मतवालों के समान घूमती हैं । ४ । हे महाबाहु इन राजपुत्री लक्ष्मण की माताको देखकरमेरा चित्त शान्तीको नहीं पाताहै । ५ । हे श्रीकृष्णजी शरीर सेजुदे सुन्दर कुण्डलऔर वेणी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियोंको देखा । ६ । हे निष्पाप इन निर्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्ममें किया हुआपाप थोड़ा नहीं है । ७ । कमललोचन स्त्रियोंके मुख जोकि फूले कमल के समान और निर्दोष हैं उनको दुःख रूप सूर्य संतप्त कररहा है । ८ । शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेनके हाथ से युद्धमें गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग

CHPTER XVIII

Gandhari continued, " Look at my hundred sons destroyed by Bhim's mace O Madhav, My youthful daughters in-law running on the field of battle with dishevelled hair enhance my grief. They who used to tread the palace ground with their ornamented feet, touch the bloody soil of the field of battle, and unable to keep away the jackals and crows, they are running a mad race. My mind is deprived of peace at the sight of Lakshman's mother. 5. Other women are holding up the jewelled heads of their kinsmen. These innocent women and I have committed no small sin in our former life. The lotus like

ादिसेन च ॥ १० ॥ उक्तावनेन पाञ्चाली सभायां द्यूतनिर्जिता । प्रियं चिकीर्षता ासु कर्णस्य च जनार्दन ॥ ११ ॥ सहैव सहदेवेन नकुलेनार्जुनेन च । दासभार्य्यासि ास्वाऽशु क्षिप्रं प्रविश नो गृहम् ॥ १२ ॥ ततोऽहमब्रवं कृष्ण तदा दुर्योधनं नृपम् । मृत्युपाशपरिक्षिप्तं शकुनिं पुत्र वर्जय ॥ १३ ॥ एष दुःशासनः शेते विक्षिप्य विपुलौ भुजौ । निहतो भीमसेनेन सिंहेनेव महागजः ॥ १४ ॥ अत्यर्थमकरोद्रौद्रं भीमसेनोऽत्य ार्षेण । दुःशासनस्य यत् क्रुद्धोऽपिबच्छोणितमाहवे ॥ १५ ॥

इति श्रीविलापपर्वणि गान्धारी विलापे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

यह दुःशासन सोयाहै । ९ हे माधवजी द्यूतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदी की प्रेरणापूर्वक भीमसेन की गदा से मृतक हुये मेरे पुत्रको देखा । १० । हे जनार्दनजी कर्णका और भाई दुर्योधन क प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुःशासन ने सभाके मध्य में द्यूत में पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे ११ । कि हे द्रौपदी तू सह देव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश करो । १२ । हे श्रीकृष्णजी इस समय मैंने राजा दुर्योधन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसी में बँधे हुये शकुनिको निषेध करो । १३ । जैसे कि बड़ाहाथी सिंहसे माराजाताहै उसी प्रकार भीमसेनके हाथसे मृतक यह दुःशासन भुजाओं को फैलाकर सोताहै ।१४। अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म किया जो क्रोधयुक्तने युद्धमें दुःशासन के रुधिर को पान किया १५ ।

---

faces and eyes of these innocent women are being burnt by the sun of grief. Slain by Bhim the destroyer of foes and bleeding in all the parts of his body, Dushasan lies here. He was killed by the mace of Bhim who remembered the wrongs done to Draupadi at the occasion of gambling. Desirous of pleasing Karan and Duryodhan he said to Draupadi who was won in gambling. You as well as Sahadev, Nakul and Arjun are made slaves Make haste to go in to our house. 12. I then warned Duryodhan to keep back Shakuni who was tied in death's string. Dushasan lies here with outstretched arms like a huge elephant slain by a lion. Bhim did a very cruel deed in his anger as he drank Dushasan's blood in the field of battle ' 15

गान्धार्युवाच । एष माधव पुत्रो मे विकर्णः प्राज्ञसम्मतः । भूमौ विनिहतः शेते भीमेन शतधा कृतः ॥ १ ॥ गजमध्ये हतः शेते विकर्णो मधुसूदन । नीलमेघ परिक्षिप्त शरदीव निशाकरः ॥ २ ॥ अस्य चापग्रहे पाणिः.... गृध्रानेतांस्तपस्विनी । वारयत्य निशं बाला न च शक्नोति माधव ॥ ३ ॥ युवा वृन्दारकः शूरो विकर्णः पुरुषर्षभ । सुखोषितः सुखार्हश्च शेते पांसुषु माधव ॥ ४ ॥ कर्णिनालीकनाराचैर्भिन्नमर्माणमाहवे । अद्यापि न जहात्येनं लक्ष्मीर्भरतसत्तमम् ॥ ५ ॥ एष संग्रामशूरेण प्रतिज्ञां पालयिष्यता । दुर्मुखोऽभिमुखः शेते हतोऽरिगणहा रणे ॥ ६ ॥ तस्यैतद्वदनं कृष्ण श्वापदैरर्धभक्षितम् । विभात्यभ्यधिकं तात सप्तम्यामिव चन्द्रमाः ॥ स कथं दुर्मुखोऽमित्रैर्हतो विबुधलोकजित् ॥ ७ ॥ चित्रसेनं हतं भूमौ शयानं मधुसूदन । धार्तराष्ट्रमिमं पश्य प्रतिमानं धनुष्मताम् ॥ ८ ॥ तं चित्रमाल्याभरणं युवत्यः शोककर्शिताः । क्रव्यादसंघैः सहिता रुदत्यः पर्युपासते ॥ ९ ॥ युवा वृन्दारको नित्यं प्रवर

अध्याय १९ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी यह ज्ञानियोंका अङ्गीकृत भीमसेनके हाथसे सैकड़ों खण्डकिया हुआ मेरापुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वी पर सोताहै ॥ १ ॥ हे मधुसूदनजी वह विकर्ण मरेहुये हाथियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले बादलों से घिरा हुआ शरदऋतुका चन्द्रमा होताहै । २ हेमाधवजी उसकी तपस्विनी बाला भार्या मांसके अभिलाषी गिद्ध और कागोंको हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती है । ३ । हेपुरुषोत्तम माधवजी तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्वक निवास करने वाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोताहै । ४ । युद्धमें कर्णी नालीक औरनाराच नाम बाणोंसे टूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस विकर्णको अबभी शोभानहीं छोड़तीहै । ५ । युद्धमें शत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला वह दुर्मुख प्रतिज्ञा भूमिमें वीरप्रतिज्ञा पूरीकरने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मृतक होकरसोताहै । ६ । हे स्वामी युद्धके मुखपर जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोईनहीं वह देव

CHAPTER XIX

Gandhari continued, " Here lies, O Madhav, wise Vikarn cut into hundreds of parts by Bhim. He lies slain among elephants like the the winter moon surrounded by clouds. His good youthful wife is trying to keep away crows and vultures from his body, but finds it a difficult task to perform. The youthful, godlike warrior Vikarn, who lived a life of ease, sleeps on dust. The wealth of beauty does not leave him, although he has received arrow wounds in all his vital parts. 5, Valiant Durmukh the destroyer of foes fell a prey to the brave vow of Bhim How was invincible Durmukh, the winner of divine regions, slain by foes? Look at the dead figure of the great archer Chitrasen lying on the ground The lamenting women and a troop of flesh eaters are standing by his body decked with garlands

षतः । विविंशतिरसौ शेते ध्वस्त-पांशुषु माधव ॥ १० ॥ शरसंकृत्तवर्माणं वेशसने हतम । परिवार्यासते गृध्राः परिविंशतिं विविंशतिम ॥ ११ ॥ प्रविश्य वीरः पाण्डवानामनीकिनीम् । स वीरशयने शेते पुनः सत्पुरुषोचिते ॥ १२ ॥ दस्यैतद्भाति शरीरं संवृतं शरैः । गिरिरात्मरुहैः फुल्लैः कर्णिकारैरिवावृतः ॥ शातकौम्भ्या स्रजा भाति कवचेन च भास्वता । अग्निनेव गिरिः श्वेतो गता दुःसहः ॥ १४ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीविलापे
एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

ुका विजय करनेवाला दुर्मुख किसप्रकार शत्रुओंके हाथसे मारागया । ७ । हे सूदनजी इस धृतराष्ट्रके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेनकी मृतक वेंको देखो । ८ । शोकसे पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियों के समूहों समेत मदाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियतहैं । ९ । हेमाधवजी तरुण सदैव उत्तम स्त्रियोंमे सेवित देवतारूप विविंशती धूलमें पड़ासोताहै ।१०। श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्ध इस बाणों से टूटेकवच वीर विविंशति को बड़ी भूमि में घेरकर बैठे हैं । ११ । वहशूर युद्धमें पाण्डवों की सेनामें प्रवेश कर के सत्पुरुषों के योग्य वीरशय्या परसोताहै । १२ । दुस्सहका यह शरीर बाणोंसेयुक्त ऐसा शोभायमानहै जैसे कि अपने ऊपर वर्त्तमान कर्णिकार के पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत शोभाहै । १३ । यह मृतकभी दुःखसे सहने के योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमानहै जैसे कि अग्निसे श्वेतपर्वत प्रकाशितहोता है । १४।



and other ornaments. The youthful Vivinshati of god like form, who always enjoyed the society of good women, lies here on dust. 10, Vultures are standing round his body of which the armour is broken asunder by arrows, Having entered the *Pandav* army, that great warrior lies dead on the warlike bed. The body of Dussah, pierced through by arrows, looks glorious like a hill overgrown with the blooming Karnikars. With his gold garland and bright armour his body looks glorious like a white hill illumined by fire. " 14.

गान्धार्युवाच । अध्यर्द्धगुणमाहुर्यं बले शौर्ये च केशव । पित्रा त्वया च ... दृप्तं सिंहमिवोत्कटम् ॥ १॥ यो बिभेद चमूमेको मम पुत्रस्य दुर्भिदाम् । स भूत्वा ... मृत्युवशं गतः ॥ २ ॥ तस्योपलक्षये कृष्ण कार्ष्णेरमिततेजसः । ... हतस्यापि प्रभा नैवोपशाम्यति ॥ ३ ॥ एषा विराटदुहिता स्नुषा ... आर्त्ता बाला पतिं वीरं दृष्ट्वा शोचत्यनिन्दिता ॥ ४ ॥ तमेषा हि समासाद्य भर्त्तारमन्तिके । विराटदुहिता कृष्ण पाणिना परिमार्ज्जति ॥ ५ ॥ ... कर्षन्ति दुःखिताम् । उत्तरां मोघसङ्कल्पां मत्स्यराजकुलस्त्रियः ॥ ६ ॥ ... नामार्त्तामार्त्ततराः स्वयम् । विराटं निहतं दृष्ट्वा क्रोशन्ति विलपन्ति च ॥ ७॥ ... शरसंकृत्तं शयानं रुधिरोक्षितम् । विराटं वितुदन्त्येते गृध्रगोमायुवायसाः ॥

अध्याय २० ।

—गान्धारी बोली हे यादव केशवजी जिस अहंकारी और सिंहके समान मन्युको बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्यौढ़ाकहाहै । १। ... ने मेरे पुत्रकी सेनाको अकेले काटतामे चीरनेके योग्यथी वीरा वह दूसरोंका रूप होकर आपही कालके आधीनहुआ । २ । हे श्रीकृष्णजी मैं देखती हूं कि अर्जुन के पुत्र बड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेज नाशको नहीं पाताहै । यह विराटकी पुत्री और अर्जुनकी पुत्रवधू निर्दोष और पीड़ावान् इस ... वीरपति को देखकर शोचकरती है । ४ । हे श्रीकृष्ण यह विराटकी भार्य्या समीपमे उसपतिको ... हाथोंसे साफ करती है । ५ राजा विराट के कुलकी स्त्रियां ऐसे ... महादुःखी निष्फल सं... इस उत्तराको हटाती हैं । ६ । आपभी महापीड़ित वह स्त्रियां इस अत्यन्त पी... उत्तराको हटाकर मरेहुये विराटको देखकर पुकारती हैं विलाप करती हैं द्रोणाचार्य के शस्त्र और बाणों से टूटे अङ्ग रुधिरसेलिप्त सोनेवाले विराटको गिद्ध शृगाल और काग काटते हैं । ८ श्यामवक्षु पीड़ावान् स्त्रियां ...

CHAPTER XX.

Gandhari said, "Proud and lion-like Abhimanyu, who in str... and prowess was reported to be superior to his father Arjun and ... self, who alone entered the impregnable army of my son, that de... of foes lies dead here. I see, Krishn, that Arjun's son Abhima... is still glorious in death. Virat's daughter,- Arjun's daughter-law is lamenting the death of her youthful husband. She goes ... him and wipes his body with her hands The women of V... household try to remove her from the place. Those women in ... distress, see the dead body of Virat and lament his death. Pirerced cut by Drona's weapons, Virat's body is being eaten by jackals and crows. Seeing it thus destroyed by birds, the black

मानं विहगैर्विगाढमसिलेक्षणाः । न शक्नुवन्ति विवशा विवर्त्तयितुमातुराः ॥९॥
उत्तराभिमन्यु काम्बोजञ्च सुदक्षिणम् । शिशूने ताद् हतान् पश्य लक्ष्मणञ्च
दर्शनम् । आयोधनशिरोमध्ये शयाने पश्य माधव ॥ १० ॥

इति स्त्रीपर्वाणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये विंशोऽध्यायः २० ॥



गान्धार्युवाच । एष वैकर्त्तनः शेते महेष्वासो महाबलः । ज्वलितानलवत् संख्ये
शान्तः पार्थतेजसा ॥ १ ॥ पश्य वैकर्त्तनं कर्णं निहत्यातिरथान् बहून् । शोणितौघप
रिप्लुतं शयानं पतितं भुवि ॥ २ ॥ अमर्षी दीर्घरोषश्च महेष्वासो महारथः । रणे विनि

... होते विराटको देखकर पक्षियों के उड़ानको समर्थ नहीं होती हैं । ९ ।
उत्तर, अभिमन्यु काम्बोज, सुदक्षिण और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक
बालकोंको देखो हे माधवजी इन सब को युद्धभूमि में सोता हुआ देखो १० ॥



अध्याय २१ ॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुन के तेज
से युद्धमें ज्वलित अग्निके समान शान्त होगया । १ । बहुतसे रथियोंको मारकर
पृथ्वीपर पड़ा सोताहै और रुधिरलिप्त शरीर सूर्यके पुत्र कर्णको देखो । २ । यह
अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुषधारी पराक्रमीशूर युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारा
हुआ सोता है । ३ । मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके भयसे जिसको अग्रवर्त्ती करके

women try to scare them away, but their attempt is futile. Look at Uttar, Abhimanyu, Camboj, Sudakshin and beautiful Lakshman. All these youthful boys are lying dead, O Madhav." 10.



CHAPTER XXI

Gandhari said, " Here lies the great archer *Karan*, quenched like fire, slain in battle by Arjun. Look at the blood stained body of *Karan* the son of *Surya* who lies dead on earth after slaying many warriors. There lies slain by *Arjun* he who led the *Kauravas* to fight like an elephant chief leading his herd. He was slain by Arjun

हतः शेते शूरो गाण्डीवधन्वना ॥३॥ यं स्म पाण्डवमन्वासान्मम पुत्रा महारथाः
व्यघ्नन्त पुरस्कृत्य मातङ्गा इव यूथपम् ॥ ४ ॥ शार्दूलमिव सिंहेन समरे ...
मातङ्गमिव मत्तेन मातङ्गेन निपातितम् ॥ ५ ॥ समेताः पुरुषव्याघ्र निहतं शूरमाहवे
प्रकीर्णमूर्धजाः पत्न्यो रुदन्त्यः पर्युपासते ॥ ६ । उद्विग्नः सततं यस्मात्
युधिष्ठिर । त्रयोदशसमा निद्रां चिन्तयन्नाध्यगच्छत ॥७॥ ... शरणं रिपो ...
... माधव । भूमौ विनिहतः शेते वातरुग्ण इव द्रुमः ॥ ८ ॥ पश्य कर्णस्य पत्नीं
वृषसेनस्य मातरम् । लालप्यमानां करुणं रुदतीं पतितां क्षितौ ॥ ९ ॥ आचार्यशापो
गतो ध्रुवं त्वां यदग्रसच्चक्रमिदं धरा ते । ततः शरेणापहृतं शिरस्ते
युधमध्ये ॥ १० ॥ हा हा धिगेषा पतिता विसंज्ञा समीक्ष्य जाम्बूनदबद्धकक्षम् ।
महाबाहुमदीनसत्त्वं सुषेणमाता रुदती भृशार्ता ॥ ११ । सा वर्तमाना पतिता ...
मुत्थाय दीना पुनरेव चैषा कर्णस्य वक्त्रं परिजिघ्रमाणा रोरुद्यते पुत्रवधाभितप्ता ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी वाक्ये एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को वर्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं । ४ । वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से गिराया गया जैसे कि सिंहसे शार्दूल और मतवाले हाथी से दतवाला हाथी गिर जाता है । ५ । हे पुरुषोत्तम यह बिखरेहुयेबाल रोदन करती हुई स्त्रियां युद्ध में मरेहुए शूरके चारोंओर नियत हैं । ६ । हदेव जिससे व्याकुल और चिंता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्षतक निद्रा को नहीं पाया । ७ वह शिर दुर्योधनका रक्षाश्रयहोकर ऐसेमराहुआ पृथ्वीपरसोता है हेमाधवजैसेकि टूटाहुआवृक्ष होताहै । ८ । तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरी रोदन करतीहुई और शोककोप्राप्त करनेवाली को देखो । ९ । निश्चय करके गुरुका शाप तुमको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रथचक्रको दबालिया इससे युद्धकी शोभा देनेवाले अर्जुन के बाण से तेराशिर काटागया ।१०। हायरे यह रोदन करती अत्यन्त पीड़ावान् शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के बाजूबन्दसे अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है । ११ । पृथ्वीपर पड़ीहुई महादुःखी उठकर कर्णके मुखको सूंघती पुत्रके मरण शोकसे दुःखी रोती है १२॥

like a tiger slain by a lion or an elephant slain by an elephant. Lamenting women, with dishevelled hair, surround him. 6. He by whose fear Yudhishthir found no repose by day or night for thirteen years, lies here like a tree struck down by the wind. Look at Karan's wife, Vrishasen's mother, lamenting, crying and lying down on earth Surely it was the preceptor's curse which made the earth grasp thy car wheel and Arjun's arrows to cut off thy head. 10. Alas! Shursen's mother lies insensible at the sight of Karan. She smells Karan's mouth and weeps for the death of her son 12.

गान्धार्युवाच । आवन्त्यं भीमसेनेन भक्षयन्ति निपातितं । गृध्रगोमायवः शूरं दुबन्धुमबन्धुवत् ॥ १ ॥ तं शृगालाश्च कङ्काश्च क्रव्यादाश्च पृथग्विधा । तेन तेन विकर्षन्ति पश्य कालस्य पर्य्ययम् ॥ २ ॥ शयानं वीरशयने शूरमाक्रन्दकारिणम् । आवन्त्यं सहिता नार्यो रुदन्त्य पर्युपासते ॥ ३ ॥ प्रातिपेयं महेष्वासं हतं भल्लेन बाह्लिकम् । प्रसुप्तमिव शार्दूलं पश्य कृष्ण मनस्विनम् । ४ ॥ अतीव मुखवर्णोऽस्य निहतस्यापि शोभते । सोमस्येवाभिपूर्णस्य पौर्णमास्यां समुद्यतः ५ ॥ पुत्रशोकाभितप्तेन प्रतिज्ञां परिरक्षता । पाकशासनिना संख्ये वार्द्धक्षत्रिर्निपातितः ॥ ६ ॥ एकादश चमूर्भित्वा रक्ष्यमाणं महात्मना । सत्यं चिकीर्षता पश्य हतमेनं जयद्रथम् ॥७ ॥ सिन्धुसौवीरभर्त्तारं दर्पपूर्णं मनस्विनम् । भक्षयन्त्यशिवा गृध्रा जनार्दन जयद्रथम् ॥ ८ ॥ यदा कृष्णामुपादाय प्राद्रवत् केकयैः सह । तदैव वध्य पाण्डूनां जनार्दन जयद्रथ.

अध्याय २२ ।

गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनके गिराये हुये राजा अवन्तीको जोकि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाले भाइयों से रहितके समान खातेहैं । १ । शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको खैंचतेहैं समयकी विपरीतताको देखो ।२ । युद्ध करनेवाले शूरवीर शय्यापर सोनेवाले राजा अवन्तिके पास रोनेवाली स्त्रियां नियत हैं । ३ । हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी और भल्ल से मृतकप्रतीपवंशी बाह्लीक को शार्दूलके समान सोताहुआ देखो । ४ । इन मरेहुये काभी मुखका वर्ण ऐसा शोभादेताहै जैसे कि पूर्णमासीका पूर्ण चन्द्रमाहोताहै ।५। पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुन से युद्धमें जयद्रथ गिरायागया । ६ । प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको हटाकर महात्मासे रक्षित इस जयद्रथको मारा । ७ । हे जनार्दनजी देखो इस सिन्धुसौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी जयद्रथको शृगाल और गिद्ध खातेहैं । ८ । हे जनार्दनजी जब यह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्रौपदीको

CHAPTER XXII

Gandhari continued, " Vultures and jackals are eating the dead body of the p ince of Avanti. Jackals and birds of prey drag his body. This is the change of tim ! Women are weeping by the dead body of the prince. The great archer Vahlik of the family of Pratip sleeps like a tiger. His face looks like the full moon. 5. Jayadrath lies slain by Arjun, who slew him to fulfil his vow while he was protected by eleven akshauhinis. Look at Jayadrath's body which is being dragged by jackals and vultures. He deserved death at the hands of the Pandavas, when he, in company with the people of Kaikaya, seized Draupadi. They spared his life then out of their

॥ ९ ॥ दुःशलां मानयद्भिस्तु तदा मुक्तो जयद्रथः । कथमद्य न तां कृष्ण मानयन्ति स्म ते पुनः ॥ १० ॥ सैषा मम सुता बाला विलपन्ती सुदुःखिता । प्रमापयति चात्मानम् आक्रोशति च पाण्डवान् ॥ ११ ॥ किं नु दुःखतरं कृष्ण परं मम भविष्यति । यत् सुता विधवा बाला स्नुषाश्च निहतेश्वराः ॥ १२ ॥

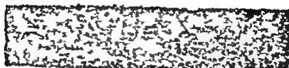
इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥



पकड़ कर भागा न भी पाण्डवोंके हाथसे मारने के योग्य था । ९ । उस समय दुःशला के माननेवाले पाण्डवों के हाथसे जयद्रथ बचाया है श्रीकृष्ण अब उन पाण्डवों ने उस बहनोईको कैसे नहीं माना । १० । यह मेरी पुत्री बालक दुखी विलाप करती और पाण्डवोंको पुकारती और अपने शरीरको घायल करती है । ११ । हे श्रीकृष्ण जी इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा जो बालक पुत्री विधवा मृतक पति वाली है । १२ ।



regard for Dushala [Gandhari's daughter married to Jayadrath]. Why did they not spare him this time? My young daughter is weeping for him and wounding herself What grief can be greater to me than the sight of my widowed daughter? 12.



गान्धार्युवाच। एष शल्यो हतः शेते साक्षान्नकुलमातुलः। धर्मज्ञेन सता तात धर्मराजेन संयुगे॥ १॥ यस्त्वया स्पर्द्धते नित्यं सर्वत्र पुरुषर्षभ। स एष निहतः शेते मद्रराजो महारथः॥ २॥ येन संगृह्णता तात रथमाधिरथेर्युधि। जयार्थं पाण्डुपुत्राणां तथा तेजोवधः कृतः॥ ३॥ हा हा धिक्पश्य शल्यस्य पूर्णचन्द्रसुदर्शनम्। मुखं पद्मपलाशाक्षं काकैरादष्टमव्रणम्॥४॥ युधिष्ठिरेण निहतं शल्यं समितिशोभनम्। रुदन्त्यः पर्युपासन्ते मद्रराजकुलस्त्रियः॥ ५॥ एष शैलालयो राजा भगदत्तः प्रतापवान्। गजांकुशधरः श्रेष्ठः शेते भुवि निपातितः॥ ६॥ येन ... किल पार्थस्य युद्धमासीत् सुदारुणम्। लोमहर्षणमत्यर्थं शक्रस्येव हि ... यथा॥ ७॥ योधयित्वा महाबाहुरेष पार्थं धनञ्जयम्। संशयं गमयित्वा च कुन्तीपुत्रेण पातितः॥ ८॥ यस्य नास्ति समो लोके

अध्याय २३॥

गान्धारी बोली हे तात युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजने मारा हुआ साक्षात् नकुलका मामा यह शल्य सोताहै। १। हे पुरुषोत्तम जो कि सदैव सर्वत्र तेरेसाथ ईर्षाकर ताथा यह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रकाराजा सोताहै। २। युद्धमें कर्णके रथको पकड़नेवाले जिन शल्यने पांडवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणकिया। ३। दुःखका स्थानहै और धिक्कार है कि शल्यके मुखको काकोंसे काटा हुआ देखो जोकि पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर दर्शन कमल पत्रके समान नेत्रधारी और स्वच्छथा। ४। सभा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियां इस युधिष्ठिर के हाथसे मरेहुये युद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियतहैं। ५। यह पहाड़ी श्रीमान प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अंकुश हाथमें रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है। ६। निश्चय करके इसकेसाथ पांडवोंका युद्ध बहहुआ जो कि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमांचोंका खड़ा करने वालाथा और इन्द्र औरवृत्रासुरके युद्ध के समान था। ७। यह महाबाहु पांडव अर्जुन से युद्ध कर के और संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिरायागया। ८। लोकमें जिसकी

CHAPTER XXIII

Gandhari said; "Slain by Yudhishthir, here lies Shalya the maternal uncle of Nakul. The valiant king of Madra who always bore enmity towards you, is dead. He who drove *Karan's* car and diminished his glory for the sake of the Pandavas, has been slain. It is matter of great grief that crows are eating awey his beautiful face. The women of his family are lamenting his death. 5. Bhagdatta the glorious hill king sleeps with elephant's hook in his hand. His battle with the Pandavas was like that of Indra and Vritrasur Having fought with Arjun, he was slain by Yudhishthir. Here lies Bhishm

शौर्य्ये वीर्य्ये च कश्चन । स एव निहतः शेते भीष्मो भीष्मकृदाहवे ॥९॥ पश्य शान्तनवं कृष्ण शयानं सूर्यवर्चसम् । युगान्त इव कालेन पतितं सूर्यमम्बरात् ॥ १० ॥ एष तप्त्वा रणे शत्रूञ्छस्त्रतापेन वीर्यवान् । नरसूर्योऽस्तमभ्येति सूर्योऽस्तमिव केशव ॥ ११ ॥ शरतल्पगतं वीरं धर्मे देवापिना समम् । शयानं वीरशयने पश्य शूरनिषेवितं ॥ १२ ॥ अनूलपूर्णांगामेयस्त्रिभिर्बाणैः समन्वितम् । उपधायोपधानाग्र्यं दत्तं गाण्डीवधन्वना ॥ १३ ॥ पालयानः पितु शास्त्रमूर्ध्वरेता महायशाः । एष शान्तनवः शेते माधवाप्रतिमो युधि ॥ १४ ॥ धर्मात्मा तात धर्मज्ञः पारम्पर्येण निर्णये । अमर्त्य इव मर्त्यः सन्नेष प्राणानधारयत् ॥ १५ ॥ नास्ति युद्धे कृपी कश्चिन्न विद्वान् न पराक्रमी । यत्र शान्तनवो भीष्मः शेतेऽद्य निहतः शरैः ॥ स्वयमेतेन शूरेण पृच्छ्यमानेन पाण्डवैः । धर्मज्ञेनाहवे मृत्युराख्यातः सत्यवादिना ॥ १६ ॥ धर्मेषु कुरवः कं नु परिप्रक्ष्यन्ति माधव ।

शूरता और बलपराक्रमके समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म्म करनेवाले यह भीष्मजी आसन्नमृत्यु होकर सोतेहैं । ९ । हे श्रीकृष्णजी इससूर्य्यके समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकाल में कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य्य होताहै । १० । हे केशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य्य युद्ध में शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको सन्तप्तकरके ऐसा अस्तंगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर वर्त्तमान सूर्य्य होताहै । ११ । इस वीर्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर वर्त्तमान शूरवीरों से सेवितवीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो । १२ । यह गङ्गाजी के पुत्र पंखसे रहित तीनबाणों से बने अर्जुन के दियेहुये तकियेको शिरके नीचे धरकर । १३ । पिताके आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम भीष्मजी सोते हैं । १४ । हे तात सब बातों के जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बलसे देवताओंकेसमान प्राणोंको धारणकियाहै पाण्डवोंसे पूछे हुये इस शूरधर्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया । १६ । हे माधवजी इस देवताके समान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्गवासी होनेपर कौरव लोग धर्मों के विषय किससे पूछेंगे । १७ । शोकि अर्जुनका शिक्षक और सात्यकी

the matchless warrior of the world. He is lying here like the sun fallen down at Pralaya. Having slain numerous warriors, he declines like a setting sun. 11. He is lying on the field of battle slain by Arjun. He observed a vow of celibacy and asceticism for his father's sake. This wise and virtuous being is sustaining his life by the power of the knowledge of Brahm, like a god. 15. Asked by the Paudavas, this truthful man pointed them out the manner of his death. *Whom* will the *Kauravas* consult in the matter of dharm, when Devabrat Bhishm is dead? Look at Dronacharya, the preceptor of Arjun, Satyaki and all the Kauravas, lying on earth. He was master of the knowledge

गते देवव्रते स्वर्गं देवकल्पे नरर्षभे ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य विनेतारमाचार्यं सात्यकेस्तथा तं पश्य पतितं द्रोणं कुरूणां द्विजसत्तमम् ॥ १८ ॥ अस्त्रं चतुर्विधं वेद यथैव त्रिदशेश्वरः । भार्गवो वा महावीर्यस्तथा द्रोणोऽपि माधव ॥ १९ ॥ यं पुरोधाय कुरवः आह्वयन्ते स्म पाण्डवान् । सोऽयं शस्त्रभृतां श्रेष्ठो द्रोणः शस्त्रैः परिक्षतः ॥ २० ॥ धनुर्मुष्टिरशीर्णश्च हस्तावापश्च माधव । द्रोणस्य निहतस्यापि दृश्यते जीवितो यथा ॥ २१ ॥ वेदा यस्माच्च चत्वारः सर्वास्त्राणि च केशव । अनपेतानि वै शूराद्यथैवादौ प्रजापतेः ॥२२॥ वन्दनार्हाविमौ तस्य बन्दिभिर्वन्दितौ शुभौ । गोमायवो विकर्षन्ति पादौ शिष्यशतार्चितौ ॥ २३ ॥ द्रोणं द्रुपदपुत्रेण निहतं मधुसूदन । कृपी कृपणमन्वास्ते दुःखोपहतचेतना ॥ २४ ॥ तां पश्य पतितामार्तां मुक्तकेशीमधोमुखीम् । हतं पतिमुपासन्तीं द्रोणं शस्त्रभृतां वरम् । २५ ॥ अग्निमाहृत्य विधिवच्चितां प्रज्वाल्य सर्वशः । द्रोण

हा गुरुहे उसकौरवों के उत्तमगुरु द्रोणाचार्य को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखो । १८ । हे माधवजी जैसे कि देवताओं के ईश्वरइन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुरामजी चारोंप्रकारके अस्त्र के ज्ञाताथे उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानतेथे । १९ । कौरवोंने जिसको अग्रवर्त्ती करके पांडवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोता है जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होती है । २० । हे माधवजी मृतक द्रोणाचार्य की धनुषकी मुष्टि और युद्धके हस्तत्राण बिना जुदेहुये रणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं । २१ । हेकेशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसे पृथक् नहींहुये जैसे कि आदिमें प्रजापति जीसे जुदेनहीं हुयेथे । २२ । उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खैंचते हैं जोकि दंडवत् के योग्य और बन्दीजनोंसे स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ो शिष्योंसे पूजितथे । २३ । हे मधुसूदनजी यह दुःखसे घायलबुद्धि कृपी इस धृष्टद्युम्नके हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास महादुःखी नियत है २४ । उनरोदन करनेवाली पीड़ावान् खुलेकेश नीचा शिरकिये शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य के समीप नियतको देखो । २५ । सामग ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्नियोंको धारण करके सब ओरसे चिताको अग्निमें प्रज्वलितकरके द्रोणाचार्यको उसमें रखकर मामवेदके तीनमन्त्रोंको गातेहैं।२६।मरे

of weapons like I[illegible] or Pa[illegible]shura[illegible] He, under whose leadership the Kauravas challenged the Pandavas, lies on earth like quenched fire. 20 Holding his bow in his gauntled hand, he looks like one living. The four Vedas and the weapons did not leave him as they did not leave Prajapati. His feet, venerated by hundreds of disciples and praised by bards, are being dragged by jackals. Kripi, much distressed laments the death of Drona slain by Dhrishtadyumn. She is standing by him with downcast head and dishevelled hair. Having put the body of Dronacharya on the funeral pile, the Brahmins set fire to it with

माचायगायन्तित्रीणिसामानि सामगाः ॥२६॥ सामभिस्त्रिभिरन्तस्थैरनुशंसन्ति चापरे अग्नावग्निमिवाधाय द्रोणं हुत्वा हुताशने ॥ २७ ॥ गच्छन्त्यभिमुखा गंगां द्रोणशिष्य द्विजातयः । अपसव्यां चितिं कृत्वा पुरस्कृत्य कृपीं तदा ॥ २८ ॥

इती स्त्रीपर्वाणि स्त्रीविलापपर्वाणि गान्धारी वाक्ये त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥



गान्धार्युवाच । सोमदत्तसुतं पश्य युयुधानेन पातितम् । वितुद्यमानं विहगैर्बहुभिर्माधवान्तिके ॥ १ ॥ पुत्रशोकाभिसन्तप्तः सोमदत्तो जनार्दन । युयुधानं महेष्वासं गर्हयन्निव दृश्यते ॥ २ ॥ असौ हि भूरिश्रवसो माता परमदुःखिता । आश्वासयति

शिष्य अग्निमें अग्निको धारण करके और द्रोणाचार्यको अग्निमें हवनकरके अन्तमें नियत होकर तीन सामगन्त्रोंको गातेहैं । २७ । द्रोणाचार्यके शिष्य यह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आगे करके श्रीगंगाजीके सम्मुखजातेहैं २८॥



अध्याय २४ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी सम्मुखही सात्यकी के हाथ से गिरायेहुये और बहुत से पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रको देखो। १ । हे जनार्दनजी पुत्रशोक से दुःखी सोमदत्त मानों बड़े धनुषधारी सात्यकी की निन्दाकरता हुआ देखताहै । २ । यह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःखसे पूर्ण अपने पति सोमदत्त को मानो विश्वास करातीहै । ३ । कि हे महाराज प्रारब्ध से इस भरतवंशियों के भयानक

the hymns of the Samved Other disciples pour libations into fire an sing the three hymns of the Samved in the end. Having burnt h[is] body, his disciples follow Kripi to the Ganges." 28.



CHAPTER XXIV

Gandhari continued, "Yonder lies Somdatta's son slain by Satyaki and surrounded by numerous birds The great archer Somdatta is looking as if in contempt of Satyaki. Bhurishrava's mother is lamenting as though she were consoling Somdatta her husband in these words — "It is lucky, King, that you donot see the great des

ीरं सोमदत्तमनिन्दिता ॥ ३ ॥दिष्ट्या नैनं महाराज दारुण भरतक्षयम् । कुरु
ध्वनं घोरं युगान्तमनुपश्यसि ॥ ४ ॥ दिष्ट्या यूपध्वजं वीरं पुत्रं भूरिसहस्रदम् ।
क्रतुयज्वानं निहतं नाथ पश्यसि ॥ ५ ॥ दिष्ट्या स्नुषाणामाक्रन्दे ,घोरं विलापिनं
। न शृणोषि महाराज सारसीनामिवार्णवे ॥ ६ ॥ शल्यं विनिहतं संख्ये भूरिश्रवस
च । स्नुषाश्च विधवाः सर्वा दिष्ट्या नाद्येह पश्यसि ॥ ७ ॥ एता विलप्य बहुल
: शोकेन कर्षिताः । प्रतन्त्यभिमुखा भूमौ कृपणं तव केशव ॥ ८ ॥ बीभत्सुरनिधी
ं कर्मेदमकरोत् कथम् । प्रमत्तस्य यद्च्छेत्सीद्बाहुं शूरस्य यज्वन ॥९॥ ततःपापतरं
। कृतवानपि सात्यकिः । यस्मात् प्रायोपविष्टस्य प्राहार्षीत् संशितात्मनः ॥ १० ॥
नु वक्ष्यसि संसत्सु कथासु च जनार्दन । अर्जुनस्य महत् कर्म स्वयं वा स किरी
ान् ॥ ११ ॥ गान्धारराजः शकुनिर्बलवान् सत्यविक्रमः । निहतः सहदेवेन भागिने
। मातुलः ॥ १२ ॥ यः पुरा हेमदण्डाभ्यां व्यजनाभ्यां स्म वीज्यते । स एष पक्षिभिः
। शयान उपवीज्यते ॥१३॥ मायया निकृतिप्रज्ञो जितवान् यो युधिष्ठिरम् ।सभायां

शको और कौरवों के घोर प्रलयकाल के समान रोदन करने को तुम नहीं
खतेहो । ४ । और प्रारब्धसे इन हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन
रनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो ।५। हे महाराज प्रारब्धसे
णभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर
ारसियों के शब्द होते हैं । ६ । अब यहां युद्धमें मृतक भूरिश्रवा और शल्यको
और पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो । ७ । हे केशवजी दुःखकी बातहै कि पतिशोक
े पीड़ावान यह स्त्रियां दुःखका विलाप करके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं । ८ ।
ै अर्जुन तुमने बीभत्सुनामहो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञकरनेवाले अचेत
ूरकी भुजाको काटा ।। ९ । सात्यकिने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि
रीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्णबुद्धिका शिरकाटा । १० । हे
जनार्दनजी सत्पुरुषोंके मध्य में और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या
कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहेगा । ११ । यह बलवान और सत्यपराक्रमी
शकुनी गान्धारदेशका राजा मामा अपने भानजे सहदेव के हाथसे मारागया ।१२ ।
जोकि पूर्वसमय में सवर्ण दण्डीवाले पंखोंसे वायुकियाजाताथा वह अब सोता

---

truction of the Kauravas and a weeping and crying like that of pralaya.
It was by good luck that you did not see the death of your warrior
son who had performed many sacrifices with large donations 5. It
is by good luck that you donot hear the lamentations of your daughters-
in-law crying like cranes. You donot see the dead bodies of Bhuri-
shrava and Shalya and the women weeping over them. It is very
hard to see these widowed women fall on earth with grief. Arjun is
called Bibhatsu and yet he committed the grievous sin of cutting the
arm of an insensible and vow-observing warrior, Satyaki did a greater

विपुलं राज्यं स्म पुनर्जीवितं जितः ॥ १४ ॥ यथैव मम पुत्राणां लोकाः शस्त्रजिता विभो। एवमस्यापि दुर्बुद्धे लोकाः शस्त्रेण वै जिताः ॥ १५ ॥ कथन्वनायं तत्रापि पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह। विरोधयेदजुसमानृजुर्मधुसूदन ॥ १६ ॥

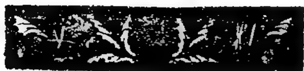
इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥



हुआ पक्षियों के परों से वायु कियाजाताहै । १३ । जिस छलीने सभा में मा से जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्यको विजय किया अन्त में वह पराजित । १४ । हे मधु जैसे कि मेरे पुत्रों के लोकशस्त्रों से विजयहुये उसीप्रकार इ दुर्बुद्धीकेभी लोकशस्त्रों से विजय होगये । १५ । हे मधुसूदनजी यह कुटिलबुद्धि वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे १६ ॥



fault in as much as he beheaded the wise warrior who had resigne himself to death. 10. What will you say, Vasudev, about this dee of Arjun's in the assemblies of good men ! This powerful Shakuni o true prowess, the king of Gandhar was slain by Sahadev the son o his sister in-law. He who was served with gold handled fans, is no being fanned by the wings of birds. He who deceitfully won Yu hishthir and his great kingdom, was at last conquered. He we good regions by means of arms like my sons. I fear he will sprea quarrel among my well-meaning sons in the other world too."61.



गान्धार्युवाच । काम्बोजं पश्य दुर्धर्षं काम्बोजास्तरणोचितम् । शयानमृषभस्कन्धं हतं पांसुषु माधव ॥ १ ॥ यस्य क्षतजसन्दिग्धौ बाहू चन्दनरूषितौ । अवेक्ष्य कृपणं भार्या विलपत्यतिदुःखिता ॥ २ ॥ शयानमभितः शूरं कालिङ्गं मधुसूदन । पश्य दीप्ताङ्गदयुगप्रतिबद्धमहाभुजम् ॥ ३ ॥ मागधानामधिपतिं जयत्सेनं जनार्दन । परिवार्य प्ररुदिता मागध्यः पश्य योषितः ॥ ४ ॥ अस्य गात्रगतान् बाणान् कार्ष्णिबाहुबलार्पितान् । उद्धरन्त्यसुखाविष्टा मूर्च्छमानाः पुनः पुनः ॥ ५ ॥ आसां सर्वानवद्याङ्गा ... आतपेन परिश्रमात् । प्रम्लाननलिनाभानि भान्ति वक्त्राणि माधव ॥ ६ ॥ द्रोणेन निहताः शूरा शेरते रुचिराङ्गदा । धृष्टद्युम्नसुताः सर्वे शिशवो हेममालिनः ॥ ७ ॥ ... निहताः शूराः शेरते रुचिराङ्गदाः । द्रोणेनाभिमुखाः सर्वे भ्रातरः पञ्च केकयाः ... सिंहेन महता ॥ ८ ॥ द्रोणेन दुर्दं संख्ये पश्य माधव पातितम् । महाद्विपमिवारण्ये

अध्याय २५ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले ... कम्बोज के राजा को देखो जोकि अनेक उत्तम स्कन्धयुक्त होकर काम्बोज देशी ... पुरुषों के योग्य है । १ । वह भार्या जिसकी रुधिर भरी चन्दन से लिप्त ... को देखकर महादुःखी होकर दुःखका विलाप करती है । २ । हेमधुसूदनजी ... र सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा ... शोभित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृत है । ३ । हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओरसे ... स जयत्सेन राजा मगधको घेरकर अत्यन्त रोदन करती हुई व्याकुलहैं ।४। ... र बारम्बार अचेत और दुःखसे पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे मारे और उसके अंगों में लगेहुये बाणोंको निकालती हैं । ५ । हेमाधवजी इन सब निर्दोष स्त्रियोंके मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलाये हुये कमल होते हैं । ६ । धृष्टद्युम्न के सब पुत्र बालक सुवर्णकी माला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य के हाथसे मरे हुये सोतेहैं। ७ । उसीप्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले केकयदेशी पांचों शूर भाई सम्मुखतामें द्रोणाचार्य के हाथसे मरेहुये सोते हैं । ८ । हे माधवजी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे गिराये हुये

CHAPTER XXV

Gandhari said, " Look at the king of Camboj who is lying dead on dust O Madhav. He was an excellent warriors of broad shoulders like the good soldiers of Camboj. His wife is weeping at his bleeding arm pasted with sandal Look O Madhusudan, at the dead warrior king of Kaling whose long arms are decked with a briliant pair of armlets. Women are weeping round Jayatsen, the king of Magadh and extract the arrows shot by the powerful arms of Abhimanyu all through his body. 5. The faces of all these women look like with-

हतम् ॥ ९ ॥ पाञ्चालराजो विमलं पुण्डरीकाक्ष पाण्डरम् । आतपत्रं समाभाति शरदीव निशाकरः ॥ १० ॥ एनास्तु द्रुपदं वृद्धं स्नुषा भार्य्याश्च दुःखिताः । दग्ध्वा गच्छन्ति पाञ्चाल्यं राजानमपसव्यतः ॥ ११ ॥ धृष्टकेतुं महेष्वासं चेदिपुंगवमङ्गनाः । द्रोणेन निहतं शूरं हरन्ति हतचेतसः ॥ १२ ॥ द्राणाहंपुत्रकं वीरं शयानं सत्यविक्रमम् । अरोपयांके रुदत्यश्चेदिराजं वराङ्गनाः ॥ १३ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ पतितौ पश्य केशव । हिमान्ते पुष्पितौ शालौ मरुता गलिताविव ॥ १४ ॥ अवध्याः पाण्डवाः कृष्ण सर्व एव त्वया सह । ये मुक्ता द्रोणभीष्माभ्यां कर्णाद् वैकर्त्तनात् कृपात् ॥१५॥ दुर्य्योधनात् द्रोणसुतात् सैन्धवाच्च महारथात् । सोमदत्ताद्विकर्णाच्च शूराच्च कृतवर्मणः ॥ १६॥ ये हन्युः शस्त्रवेगेन देवानपि नरर्षभाः त इमे निहताः सर्वे पश्य कालस्य पर्य्ययम् ॥ १७ ॥ तथैव निहताः कृष्ण मम पुत्रास्तरस्विनः । यदैवाकृतकामस्त्वमुपप्लव्यं

द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वनमें बडे सिंहसे मारेहुये बड़े हाथी को देखते हैं।९। राजा द्रुपदका श्वेत निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमानहै जैसे कि शरदऋतुमें चन्द्रमा होताहै । १० । यह दुःखी भार्य्या और पुत्रवधू पांचालके वृद्ध राजा द्रुपदकोदाह देकर दाहिनी ओरसे जातीहैं । ११ । अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथसे मारेहुये इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टद्युम्नको उठातीहैं । १२ । हे श्रीकृष्णजी राजा चंदेरी की यह उत्तम स्त्रियां इस सत्य पराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले अपने पौत्र को बगल में लेकर रोती हैं । १३ । हे श्रीकृष्णजी इन अवान्ति देशके राजा विन्दानुविन्दको ऐसेदेखो जैसे कि हिमऋतुके अन्तपर वायुसे गिरायेहुये दोपुष्पित शालवृक्षोंका देखते हैं । १४ । हे श्रीकृष्णजी सब पांडव आपके साथ मारनेके अयोग्य है जो कि द्रोणाचार्य भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचेहुये हैं दुर्य्योधन अश्वत्थामा, सिन्धु का राजा जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त और शूर कृतवर्मासे भी बचे । १६ । जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णता से देवताओंकोभी मारसक्ये

ered lotus flowers on account of toil and the heat of the Sun. All the youthful sons of Dhrishtadyumn, slain by Dronacharya, are sleeping here on earth. Similarly, the five Kaikeya brothers, slain by Drona, sleep in death. Drupad, slain by Drona in battle, looks like a great elephant slain by a lion in a forest. His white umbrella shines like the moon in winter. 10. His distressed wife and daughter-in-law have burnt Drupad the old king of Panchal and are going away. The insensible women lift up the king of Chanderi who was slain by Drona. The women of Chanderi have taken up their brave grandarn in their arms and are weeping over him. Look at Vind and Anuvind the two princes of Avanti lying down like two flowering sal trees uprooted by the wind at the end of winter. The Pandavas as well as you, O *Krishn*,

गतः पुनः ॥ १८ ॥ शान्तनवेनैव पुत्रेण प्राज्ञेन विदुरेण च । तदस्नेहान्निन मा स्नेहं कुरु पुनः ॥ १९ ॥ तयोर्न दर्शनं तात मिथ्या भवितुमर्हति । अचिरेणैव पुत्रा मे भस्मसाद्भविष्यति ॥ १९ ॥ तयोर्न दर्शनं तात मिथ्या भवितुमर्हति । इत्युक्त्वा न्यपतद्भूमौ गान्धारी शोककर्षिता जनार्दन ॥२०॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वा न्यपतद्भूमौ गान्धारी शोकमूर्छिता । दुःखोपहतविज्ञाना धैर्यमुत्सृज्य भारत ॥ २१ ॥ ततः कोपपरीताङ्गी पुत्रशोकपरिप्लुता । जगाम शौरिं दोषेण गान्धारी व्यथितेन्द्रिया । २२ ॥ गान्धार्युवाच । पाण्डवा धार्तराष्ट्राश्च दग्धाः कृष्ण परस्परम् । उपेक्षिता विनश्यन्तस्त्वया कस्माज्जनार्दन ॥ २३ ॥ इत्थमुपेक्षितो नाश कुरूणां मधुसूदन । यस्मात्त्वया महाबाहो फलं तस्मादवाप्नुहि ॥ २४ ॥ पतिशुश्रूषया यन्मे तपः किञ्चिदुपार्जितम् । तेन त्वां दुरवा

यह सब इस युद्धमें पारस्पर इन विपरीत समयको देखा । १७ । हे श्रीकृष्णजी मेरे वेगवान पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट मार्ती से रहित उपप्लव्य स्थानको लौटकर गये । १८ । उसी समय मुझको भीष्म पितामह और ज्ञानी विदुरजी ने समझाया था कि अपने पुत्रों पर प्रीति मतकरो । १८ । उन दोनोंकी वह दूरदर्शिता मिथ्या होनेके योग्य नहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये । २० । वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब कहकर शोकसे मूर्छावान दुःख से व्याकुल बुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथ्वीपर गिर पड़ी । २१ । फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्रशोक में डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोषलगाया । २२ । गान्धारी बोली हे श्रीकृष्णजी पांडवों के और धृतराष्ट्रके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन तुमने किसहेतु से इन विनाशहोनेवालों को त्याग किया । २३ । हे महाबाहु मधुसूदनजी जिसकारण

are indestructible as you scaped death from the hands of Drona-
charya, Bhishm, Karan, Kripacharya, Duryodhan, Jayadrath, Vikarn
Somdat and valiant Kritvarma. The heroes, who could slay even
gods with their sharp and powerful weapons, have died in this war;
the times are so changed. 17. I held my sons as dead from the
time you returned from your useless mission of peace to Upap'arya.
Bhishm the grandfather and wise Vidur told me then that I should
love my sons no more Their foresight could not be wrong, O
Janardan, and therefore my sons were slain." 20 Vaishampayan
says that having talked as above, Gandhari lost her senses and patience
with grief and fell down on earth. Then with his body full of rage
and her organs out of control, she blamed Sari Krishn, saying, "The
sons of the Pandavas and Dhrishtadyumn were all slain at once. Why
did you leave them in the lurch? You will be punished for your
wilfully looking at the destruction of the Kauravas By the virtue
of the asceticism which I have performed in attending on my husband

पेन शार्ङ्गेन चक्रगदाधरः ॥ २५ ॥ यस्मात् परस्परं घ्नन्तो ज्ञातयः कुरुपाण्डवाः । उपे
क्षितास्ते गोविन्द तस्माज्ज्ञातीन् वधिष्यसि ॥ २६ ॥ त्वमप्युपस्थिते वर्षे षट्त्रिंशे मधु
सूदन । हतज्ञातिर्हतामात्यो हतपुत्रो वनेचरः ।कुत्सितेनाभ्युपायेन निधनं समवाप्स्यसि
॥ २७ ॥ तवाप्येवं हतसुता निहतज्ञातिबान्धवाः । स्त्रियः परिपतिष्यन्ति यथैव भरत
स्त्रियः ॥ २८ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं वासुदेवो महामनाः ।
उवाच देवीं गान्धारीमीषदभ्युत्स्मयन्निव ॥ २९ ॥ संहर्ता वृष्णिचक्रस्य नान्यो मद्विद्यते । जानेऽहमेतदप्येवं चीर्णं चरसि सुव्रते । ३० ॥ अवध्यास्ते नरैरन्यैरपि वा देव

से तुझइच्छावान ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिया इसहेतुसे तुमभी उसके फलको पाओगे । २५ । पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपपाया किया उस दुष्प्राप्य तपके द्वारा तुझचक्र गदाधारी को शापदेतीहूं । २६ । हे गोविन्दजी जो कि तुमने परस्पर जातवालेको मारनेवाले कौरव और पाण्डवोंको नहीं रोका इसहेतुसे तुम भी अपनी जातवालों को मारोगे ।२६ । हेमधुसूदनजी तुमभी छत्तीसवां वर्ष वर्त्तमान होनेपर मरेहुये मंत्री पुत्रज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले अज्ञातरूप लोकोंमेंगुप्त अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणको पावोगे । २७ । इसीप्रकार तेरीस्त्रियां भी जिनके पुत्रबांधव और ज्ञातिवाले मारेगये ऐसे चारोंओरको दौड़ेंगी जैसे कि यह भरतवंशियोंकी स्त्रियां दौड़ती हैं । २८ । वैशम्पायनबोले कि बड़े साहसी वासुदेवजी इनघोर वचनको सुनकर मंदमुसकान करतेहुये उन देवी गांधारीसे बोले हे क्षत्रियाणी मैं जानताहूं कि तू मेरे कर्म के समान कर्मकोभी अपने तपके नाशक लिये करतीहै यादवलोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें संदेह नहींहै । ३० ।हेशुभ की यादवलोग अन्य मनुष्य देवता और दानवोंसेभी अवध्यहैं परस्पर विनाश को

I curse you. Because you did not stop the mutual carnage of the *Kauravas* and the Pandavas, you will destroy your own kinsmen too. After thirty six years your ministers, sons and kinsmen being slain, and you hiding in a forest will die an ignominous death. *The* women of your family will run here and there like these Kaurav women," Vaishampayan says that brave Vasudev smiled slowly at these, words of Gandhari, and said, "I know, *Kshatrya* woman that you have done a deed like mine to destroy the merit of your asceticism. *The* Yadavas are sure to die of God's will. They are indestructible by the gods and Danavas and therefore they shall die

नबे। परस्परकृतं नाशं यत प्राप्स्यथ यादवाः। ३१ ॥ इत्युक्तवति दाशार्हे पाण्ड ॥ भ्रान्तचेतसः। बभूवुर्भृशसंविग्ना निराशाश्चापि जीविते ॥३२॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये पंचविंशोऽध्यायः २५ ॥



भगवानुवाच। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गान्धारि मा च शोके मनः कृथाः। तवैव ह्यपराधेन कुरवो निधनं गताः ॥ १ ॥ यस्त्वं पुत्रं दुरात्मानमीर्षुमत्यन्तमानिनम्। दुर्योधनं पुरस्कृत्य दुष्कृतं साधु मन्यसे ॥२॥ निष्ठुरं वैरपुरुषं वृद्धानां शासनातिगम्। कथमात्मकृतं दोषं मय्याधातुमिहेच्छसि ॥ ३ ॥ मृतं वा यदि वा नष्टं योऽतीतमनुशोचति। दुःखेन लभते दुःखं द्वावनर्थौ प्रपद्यते ॥ ४ ॥ तपोऽर्थीयं ब्राह्मणी धत्ते गर्भं गौर्वोढार

पावेंगे। ३१। श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहने पर पाण्डवलोग भयभीत चित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवनमें निराशा युक्तहुये। ३२।



अध्याय २६ ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारी उठो उठो शोकमें चित्तको मतकरो तेरेअपराध से कौरवोंने नाशको पाया। १। जो तुम दुर्बुद्धी अत्यन्त अहङ्कारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानतीहै। २। जो कि कठोर वचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाले मनुष्य और वृद्धोंकी आज्ञाके विपरीत विरुद्धकर्म करनेवाला था यहां तू अपने कियेहुये दोषको कैसे मुझमें लगाना चाहती।३। जो मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःखसे दुःखकोपातीहै अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुःखोंको पाती है। ४। ब्राह्मणी तपके निमित्त उत्पन्न

fighting with one another." The Pandavas were terrified at these words of Shri Krishn and lost all hope of life in their distress " 32



CHAPTER XXVI

Shri Krishn said to Gandhari, " Rise up and donot give yourself up to grief The Kauravas were destroyed by your own fault. You made proud and envious Duryodhan headstrong and yet call your wicked deed good He loved enmity and despised the advice of old men, and yet you wish to lay your own fault on my shoulders. You mourn at this great destruction and are doubly distressed, A Brahman

धावितारं तुरंगी । शूद्रा दासं पशुपालञ्च वैश्या यधार्थीब त्वद्विधा राजपुत्री ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य पुनरुक्तं वचोऽप्रियम् । तूष्णीं बभूव गान्धारी शोकव्याकुलचेतना ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रस्तु राजर्षिर्निगृह्याबुधिजं तमः । पर्यपृच्छत धर्मात्मा धर्मराजं युधिष्ठिरम् । जीवतां परिमाणज्ञः सैन्यानामपि पाण्डव । हतानां यदि जानीषे परिमाणं वदस्व मे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच दशायुतानामयुतं सहस्राणि च विंशतिः । कोट्यः षष्टिश्च षट्चैव येऽस्मिन् राजन् मृधे हताः ॥ ९ ॥ अलक्ष्याणान्तु वीराणां सहस्राणि चतुर्दश । दश चान्यानि राजेन्द्र शतं षष्टिश्च पञ्च च ॥ १० ॥ धृतराष्ट्र उवाच । युधिष्ठिर गतिं कान्ते गताः पुरुषसत्तमाः । आचक्ष्व मे महाबाहो सर्वज्ञो ह्यसि मे मतः ॥ ११ । युधिष्ठिर उवाच । यैर्हुतानि शरीराणि हृष्टैः परमसंयुगे। देवराजसमांल्लोकान् गतास्ते सत्यविक्रमाः ॥ १२ ॥ ये त्वहृष्टेन मनसा मर्तव्यमिति

होनेवाले गर्भको धारण करती है गो भार लेचलने वालेको घोड़ी दौड़ानेवाले को शूद्रा दास को वैश्या पशुपालको राजपुत्री क्षत्रिया युद्धके अभिलाषी गर्भको । ५। वैशम्पायन बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अप्रियऔर दुबारा कहेहुये वचनको सुनकर मौनहोगई । ६ । फिर राजऋषि धृतराष्ट्रने अज्ञान से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर से पूछा । ७। कि हे पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकी संख्याके जाननेवाले हो और जोमृतक शूरबीरों की संख्याको जानते हो तो मुझसे कहो । ८ । युधिष्ठिर बोले हे राजा इस युद्धमें दश करोर बीसहजार शूरवीर मारेगये । ९ । हे राजेन्द्र दृष्टि न आनेवाले वीरों कीसंख्या चौबीस हजार एकसौ पैंसठ है । १० । धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर उन्होंने किस गतिको पाया वह मुझसे कहो मेरे विचारसे तुम सब बातों के जानने वालेहो । ११ । युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्न चित्तों ने बड़े युद्धमें अपने शरीरको नाश किया वह सत्य पराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये ।१२ । हेभरतवंशी जो अप्रसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्व लोकको गये । १३ । और

woman produces offspring for asceticism, a cow to carry load, a mare to produce a runner, a shudra woman produces a slave, a Vaishya woman produces one who rears beasts; but a kshatrya woman produces fighting men." Vaishampayan says that on hearing these words of Vasudev, respeated again and again and unpleasant to hear, Gandhari distressed with grief became silent. Then Dhritrashtra the [illegible], checking his passions, which were the outcome of ignorance, [illegible] of Yudhishthir the wise the number of the warriors slain, and [Yudh]ishthir said that the dead warriors amounted to ten crores and twenty thousands and that twenty four thousands, one hundred [and] sixty five were invisible. Dhritrashtra then questioned about

त । युध्यमाना हताः संख्ये ते गन्धर्वैः समागताः ॥ १३ ॥ ये च संग्रामभूयिष्ठा ॥चमाना. परांमुखाः । शस्त्रेण निधनं प्राप्ता गतास्ते गुह्यकान्प्रति ॥ १४ ॥ पीड्यमाना रैर्येतु ह्रियमाना निरायुधाः । ह्रीनिषेवा महात्मान परानभिमुखा रणे ॥ १५ ॥ छिद्य माना. शितैः शस्त्रैः क्षत्रधर्मपरायणाः । गतास्ते ब्रह्मसदनं हता वीराः सुवर्चसः ॥ १६ ॥ ये तत्र निहता राजन्नन्तरायोधनं प्रति । यथाकथञ्चित्ते राजन् संप्राप्तास्तू त्तरान् कुरून् ॥ १७ । धृतराष्ट्र उवाच । केन ज्ञानबलेनैवं पुत्र पश्यासि सिद्धवत् । तन्मे वद महाबाहो श्रोतव्यं यदि मन्यसे ॥ १८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । निदेशाद्भवतः पूर्वं वने विचरता मया । तीर्थयात्राप्रसङ्गेन संप्राप्तोऽयमनुग्रहः ॥ १९ । देवर्षिर्लोमशो दृष्टस्ततः प्राप्तोस्म्यनुस्मृतिम । दिव्यं चक्षुरनुप्राप्तं ज्ञानयोगेन वै पुरा ॥ २० ॥ धृत राष्ट्र उवाच । येऽनाथा जनस्यास्य सनाथा ये च भारत । कच्चित्तेषां शरीराणि

और रणभूमि में नियत याचना करते परांङ्मुख होकर शस्त्रोंसे मारेगये वह गुह्यकों के लोकोंको गये । १४ । जो पात्यमान असख्य लज्जासे युक्त और बड़े साहसी युद्धमें शत्रुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरके क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेज शस्त्रों से मारेगये वह निस्संदेह ब्रह्मलोकको गये । १६ । हे राजा जोमनुष्य यहां रणभूमि के मध्यमें जिस किसी प्रकारसे मारेगये वह उत्तर कौरवदेशको गये । १७। धृतराष्ट्र बोले हे पुत्र तुम सिद्धोंके समान किस ज्ञानबल से इस प्रकार देखते हो हे महाबाहु वह मुझसे कहो जो मेरे सुनने के योग्यहै । १८ । युधिष्ठिर बोले कि पूर्वसमय में आपकी आज्ञानुसार वनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अ. नुग्रहको प्राप्त किया । १९ । देवऋषि लोमसऋषि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको पाया और निश्चयकरके पूर्वसमयमें ज्ञान योगसे दिव्य नेत्रों को पाया । २० । धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथ लोगों के शरीरोंको विधि के अनुसार दाह करोगे । २१ । जिन्हों का संस्कार करने के योग्य नहीं हैं

their fate hereafter, and Yudhishthir said, "Those who died cheerfully have gone to the region of Indra; those who were cheerless, joined the Gandharvas; those who begged for mercy and turned back, were turned into Guhyakas; those who were deprived of their weapons and yet faced the enemy and were slain, have surely gone to the regions of Brahm. All those who died in this field of battle, under any circumstance, have gone to the country of Uttar-Kurus." Dhritarashtra then asked him how he could see all that like siddhas, and Yudhishthir said, "Roaming by your order in forests, I got this faculty by visiting holy places. I saw Lomash the divine sage and got from him the knowledge as well as divine sight." 20. Dhritarashtra then said, "Will you burn these bodies which have none to look after? We should save the bodies from being dragged and eaten

पश्यन्ति विधिपूर्वकम ॥ २१ ॥ न येषां सन्ति कर्त्तारो न च येत्राहिताग्नयः । वयञ्च कस्य कुर्य्याम बहुत्वात्तात कर्मणः ॥२२॥ यान् सुपर्णाश्च गृध्राश्च विकर्षन्ति ततस्ततः तेषान्तु कर्मणा लोका भविष्यन्ति युधिष्ठिर ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तो महाप्राज्ञः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । आदिदेश सुधर्माणं धौम्यं सूतञ्च सञ्जयम् ॥ २४॥ विदुरञ्चमहाबुद्धिं युयुत्सुञ्चैव कौरवम् । इन्द्रसेनमुखांश्चैव भृत्यान् सूतांश्च सर्वश ॥ २५॥ भवन्तः कारयन्त्वेषां प्रेतकार्य्याण्यनेकशः । यथा चानाथवत् किञ्चिच्छरीरं न विनश्यति ॥ २६ ॥ शासनाद्धर्मराजस्य क्षत्ता सूतञ्च सञ्जयः । सुधर्मा धौम्यसहित इन्द्रसेनादयस्तथा ॥२७॥ चन्दनागुरुकाष्ठानि तथा कालीयकान्युत । घृतं तैलञ्च गन्धांश्च क्षौमाणि वसनानि च ॥ २८ ॥ समाहृत्य महार्हाणि दारुणाञ्चैव सञ्चयान् रथांश्च मृदितांस्तत्र नानाप्रहरणानि च ॥ २९ ॥ चिताः कृत्वा प्रयत्नेन यथामुख्यान्नराधिप । दाहयामासुरव्यग्रा विधिदृष्टेन कर्मणा ३० ॥ दुर्य्योधनञ्च राजानं भ्रातृंश्चास्य

और यहां जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात कर्मों की अधिकता से हम किसका क्रिया कर्मकरें जिन्होंको सुवर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधर से खैंचते हैं हे युधिष्ठिर क्रियाकर्म से उन्हीं के लोकहोंगे । २३ । वैशम्पायन बोले हे महाराज इस वचनको सुनकर कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने दुर्योधन के पुरोहित सुधर्मा,धौम्यऋषि सूत संजय, बड़े बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युयुत्सु इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत । २५ । इन सबलोगोंको आज्ञाकरी कि आप सबलोग इन्हीं के सब प्रेतकार्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न पावे । २६ । धर्मराजकी आज्ञा से विदुर सूतसंजय सुधर्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयन । २७ । चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक घृत, तेल, सुगन्धियां बहुमूल्य क्षौमवस्त्र । २८ । लकड़ियों के ढेर और वहां पर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके । २९ । सावधानों ने बड़े उपायों से चिताओंको बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र विहित कर्मों के द्वारा दाह किया । ३० । राजा दुर्योधन उसके सौ भाई शल्य राजाशल भूरिश्रवा । ३१ ।

away by the birds of prey and should burn them in accordance with the religious rites. 23. Vaishampayan said that on hearing Dhritrashtra's words, Yudhishthir asked Sudharma the priest of Duryodhan, Dhaumya, Sanjaya, wise Vidur, Yuyutsu the Kaurav and Indrasen and other servants and drivers to perform the funeral rites and let no corpse be destroyed for want of care. 26. By Yudhishthir's order Vidur, Sanjaya, Sudharma, Dhaumya the priest, Indrasen and Jaya collected sandal, agur wood, ghee, oil, perfumes, clothes, heaps of fuel, broken cars and weapons. They then made funeral piles and burnt over them the bodies of chief kings with religious rites. 30. Prince Duryodhan with his hundred brothers, Shalya,

शताधिकान् । शलं शलञ्च राजानं भूरिश्रवसमेव च ॥ ३१ ॥ जयद्रथञ्च राजानं
मभिमन्युञ्च भारत । दौःशासनिं लक्ष्मणञ्च धृष्टकेतुञ्च पार्थिवम् ॥ ३२ ॥ बृहन्तं
सोमदत्तञ्च सृञ्जयांश्च शताधिकान् । राजानं क्षेमधन्वानं विराटद्रुपदौ तथा ॥ ३३ ॥
शिखण्डिनञ्च पाञ्चाल्यं धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् । युधामन्युञ्च विक्रान्तमुत्तमौजसमेव च
॥ ३४ ॥ कौशल्यं द्रौपदेयांश्च शकुनिञ्चैव सौबलम् । अचलं वृषकञ्चैव भगदत्तञ्च पार्थि
वम् ॥ कर्णं वैकर्त्तनञ्चैव सहपुत्रममर्षणम् । केकयांश्च महेष्वासांस्त्रिगर्त्तांश्च महारथान्
॥३६॥ घटोत्कचं राक्षसेन्द्रं बकभ्रातरमेव च । अलम्बुषं राक्षसेन्द्रं जलसन्धञ्च पार्थि
वम् ॥३७॥ अन्यांश्च पार्थिवान् राजन् शतशोऽथ सहस्रशः । घृतधाराहुतैर्दीप्तैः पावकैः
समदाहयन् ॥ ३८ ॥ ये चाप्यनाथास्तत्रासन्नानादेशसमागताः । तांश्च सर्वान् समा
नाय्य राशीन् कृत्वा सहस्रशः ॥ ३९ ॥ चित्वा दारुभिरव्यग्रैः प्रभूतैः स्नेहपाचितैः ।
दाहयामास विदुरो धर्मराजस्य शासनात् ॥ ४० ॥ कारयित्वा क्रियास्तेषां कुरुराजो
युधिष्ठिरः । धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य गङ्गामभिमुखोऽगमत् ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि युद्धमृतानामौर्ध्वदैहिके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

राजा जयद्रथ, अभिमन्यु दुश्शासन के पुत्र लक्ष्मण राजा धृष्टकेतु । ३२ । बृहन्त सोम
दत्त सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, विराट द्रुपद । ३३ । शिखण्डी धृष्टद्युम्न
पराक्रमी युधामन्यु उत्तमौजस कौशल्य द्रौपदीके पुत्र सौवलका पुत्र शकुनी,
अचल वृषक राजा भगदत्त । ३५ । क्रोधयुक्त सूर्य्य का पुत्र कर्ण पुत्रों समेत बड़े
धनुषधारी केकयदेशी महारथी त्रिगर्त्तदेशी । ३६ । राक्षसाधिप घटोत्कच बकका
भाई राक्षसोंकाराजा अलम्बुष राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजा।३७।
ओंको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छे प्रकारसे दाह
किया । ३८ । वहांपर नानाप्रकार के देशोंसे आनेवाले जो अनाथ भी थे उन
सबको इकट्ठा करके ।३९। सीधे स्निग्धयुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं
से विदुरजीने राजाकी आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर
उन्होंकी क्रियाओंको कराके धृतराष्ट्रको आगे करके श्रीगङ्गाजी के सम्मुख गये ४१

Shal, Bhurishrava, Jayadrath, Abhimanyu, Dushasan's sons, Lakshman, Dhrishtaketu, Vrihant, Somdatta, the Srinjayas, Kshemdhanwa, Virat, Drupad, Shikhandi, Dhrishtadyumn, valiant Yudhamanya, Uttamaujas, Koeala, the sons of Drupad, Shakuni the son Suval, Achak, Vrishak, king Bhagdatta, 35. rash Karan the son of Surya, the Kaikaya warriors and their sons the warriors of Trigart, Ghatotkach the prince of rakshases, Vak's brother Alamvush, Prince Jalsndh and other great warriors by thousands were burnt with libations of ghee. Other warriors from different countries, having no freinds, were collected together and burnt with libations of oil by Vidur. Having performed their funeral ceremonies, Yudhishthir and Dhritrashtra went to the Ganges. " 41.

वैशम्पायन उवाच । ते समासाद्य गंगान्तु शिवां पुण्यजलोचिताम् । ह्रदिनीं वप्रसम्पन्नां महानूपां महावलाम् ॥ १ ॥ भूषणाण्युत्तरीयाणि वेष्टनाम्यवमुच्य च ततः पितृणां पौत्राणां भ्रातृणां स्वजनस्य च ॥२॥ पुत्राणामार्य्यकाणाञ्च पतीनाञ्च कुरुस्त्रियः । उदकञ्चक्रिरे सर्वा रुदन्त्यो भृशदु:खिताः सुहृदाञ्चापि धर्मज्ञाः प्रचक्रुः सलिलक्रियाः ॥ ३ ॥ ततः कुन्ती महाराज सहसा शोककर्शिता । रुदती मन्दया वाचा पुत्रान् वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ यः स शूरो महेष्वासो रथयूथपयूथपः । अर्जुनेन हतः संख्ये वीरलक्षणलक्षितः । ५ ॥ यं सूतपुत्रं मन्यध्वं राधेयमिति पाण्डवाः । यो व्यराजच्चमूमध्ये दिवाकर इव प्रभुः ॥ ६ ॥ प्रत्ययुध्यत यः सर्वान् पुरा वः सपदानुगान् । दुर्योधनबलं सर्वं यः प्रकर्षन् व्यरोचत ॥ ७॥ यस्य नास्ति समो वीर्ये पृथिव्यामपि कश्चन । यो वृणीत यशः शूरः प्राणैरपि सदा भुवि ॥८॥ सत्यसन्धस्य शूरस्य संग्रामेष्वपलायिनः । कुरु

अध्याय २७ ।

वैशम्पायन बोले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जलों से पूर्ण श्रीगङ्गाजी को और बड़ी रूपवान् स्वच्छजल रखनेवाली ह्रदिनीको पाकर । १ । उत्तरीयवस्त्र और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजनपुत्र और नानाओं के जलदानोंको किया । २ । अत्यन्त दु:खी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियोंने अपने पतियोंको जलदान किया ३। तबशोकार्त कुन्ती अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह वचन बोली । ४ । किजो वह बड़ा धनुषधारी महारथी वीरोंके चिह्नों से चिह्नित युद्ध में अर्जुनके हाथ से विजय हुआ । ५ । हे पांडव तुम जिसको सूत और राधाका पुत्र मानते हो और जो समर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्य में विराजमान हुआ प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियों से युद्ध किया और जो दुर्योधनकी सब सेनाको खैंचता शोभामान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहींहै और जिस शूरने सदैव इसपृथ्वीपर शुभ कीर्त्ति को प्राणोंसे भी अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले । सुगमकर्मा अपने भाई

CHPTER XXVII

Vaishampayan said, "Going to the Ganges, the best of rivers and waters, they put off their clothes and offered water to the manes of their elders, sons, kinsmen and friends. The lamenting Kaurav women offered water to the manes of their husbands. Then Kunti, distressed with grief, said to her sons, 'The great archer defeated by Arjun, known to you as the son of Sut and Radha, who shone like the sun in the field of battle, the foremost of your opponents, who led the Kaurav forces, who was the strongest of the princes of the world, who preferred fame to life, was your truthful and invincible brother and therefore you must offer water to his

स्वमुदकं तस्य भ्रातुरक्लिष्टकर्मणं ॥९। स हि च पूर्वजो भ्राता भास्करान्मय्यजायत। कुण्डली कवची शूरो दिवाकरसमप्रभः॥ १० ॥ श्रुत्वा तु पाण्डवाः सर्वे मातुर्वचनमप्रियम्। कर्णमेवान्वशोचन्त भूयश्चार्त्ततराभवन्॥ ११ ॥ ततः स पुरुषव्याघ्रः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः। उवाच मातरं वीरो निश्वसन्निव पन्नगः॥१२॥यस्येषुपातमासाद्य नान्यस्तिष्ठेद्धनञ्जयात्। सवत्यःस कथं पुत्रो देवगर्भः पुराभवत्॥१३॥ अहो भवत्या मन्त्रस्य गूहनेन वयं हताः। निधनेन हि कर्णस्य पीडितास्मि सबान्धवाः॥ १४॥ अभिमन्योर्विनाशेन द्रौपदेयवधेन च। पांचालानांच नाशेन कुरूणां पतनेन च। १५॥ ततः शतगुणं दुःखमिदं मामस्पृशद्भृशम्। कर्णमेवानुशोचन् हि दह्याम्यग्नाविवाहितः ॥ १६॥ एवं विलप्य बहुलं धर्मराजो युधिष्ठिरः। विनदन्, दुःखितो राजा चकाराऽस्योदकं प्रभुः॥ १७॥ तत आनाययामास कर्णस्य सपरिच्छदाः। स्त्रियः कुरुपतिर्धीमान

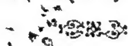
कर्ण का जलदान करो।९। वह तुम्हारा बड़ाभाई सूर्यदेवता से मुझमें उत्पन्न हुआ था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य के समान तेजस्वी था। १०। सब पांडव माता के उस अप्रिय वचनको सुनकर कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ावान् हुये। ११। इसकेपीछे सर्प के समान श्वासलेता वह कुन्तीका पुत्र पुरुषोत्तम वीर युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला। १२। अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी वाणवृष्टी को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका पुत्र हुआ। १३। दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करने से हम बान्धवों समेत कर्ण के मरनेपै हम बान्धवों समेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये। १४। अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र पांचालों के नाश और कौरवों के गिरने से भी हम पीड़ावान् हुये परन्तु उनसबसेभी सौगुने इस दुःखने अब मुझको दबाया है मैं कर्णकाही शोच ताहुआ मानों अग्नि में नियत होकर जलता हूं। १६ हे राजा इसप्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उसप्रभुने उसका जलदान किया।१७। इसके पीछे उस बुद्धिमान कौरवपति युधिष्ठिरने भाई के प्रेमसे

manes. He was the off-p ing of Surya and myself, born with armour and ear-rings and glorious l k the Sun." 10. Hearing these unwelcome words of their mother all the brothers were much grieved for Karan. Yudhishthir then said to his mother, "How could he, whose shower of arrows none but Arjun could oppose, be your son? Alas! we are undone by your keeping the matter a secret and have to suffer the pangs of Karan's death. We are distressed for the death of Draupadi's sons and Panchals; but hundred times greater has been Karan's death. I burn for *Karan's* death." 19 Thus Yudhishthir wept much for Karan's death and offered water to his manes. Then for fraternal love he sent for all the women of

भ्रातुः प्रेम्णा युधिष्ठिरः ॥ १८ ॥ स ताभिः सह धर्मात्मा प्रेतकृत्यमनन्तरम् । कारयामास गाङ्गेयः सलिलाद्याकुलेन्द्रियः ॥ १९ ॥

इति स्त्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि कर्णस्य गूढपुत्रत्वकथने सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

॥ समाप्तंच श्राद्धपर्व स[illegible] ॥



कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसमेत बुलालिया ॥ १८ ॥ उस धर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिरने उन्हीं के साथ निस्सन्देह विधिपूर्वक प्रेतक्रियाको किया ॥ १९ ॥

इति स्त्री पर्व्व समाप्त ॥

Karna's family and joined with them in [illegible] p forming his funeral ceremonies [illegible]

